www.iqbalkalmati.blogspot.com

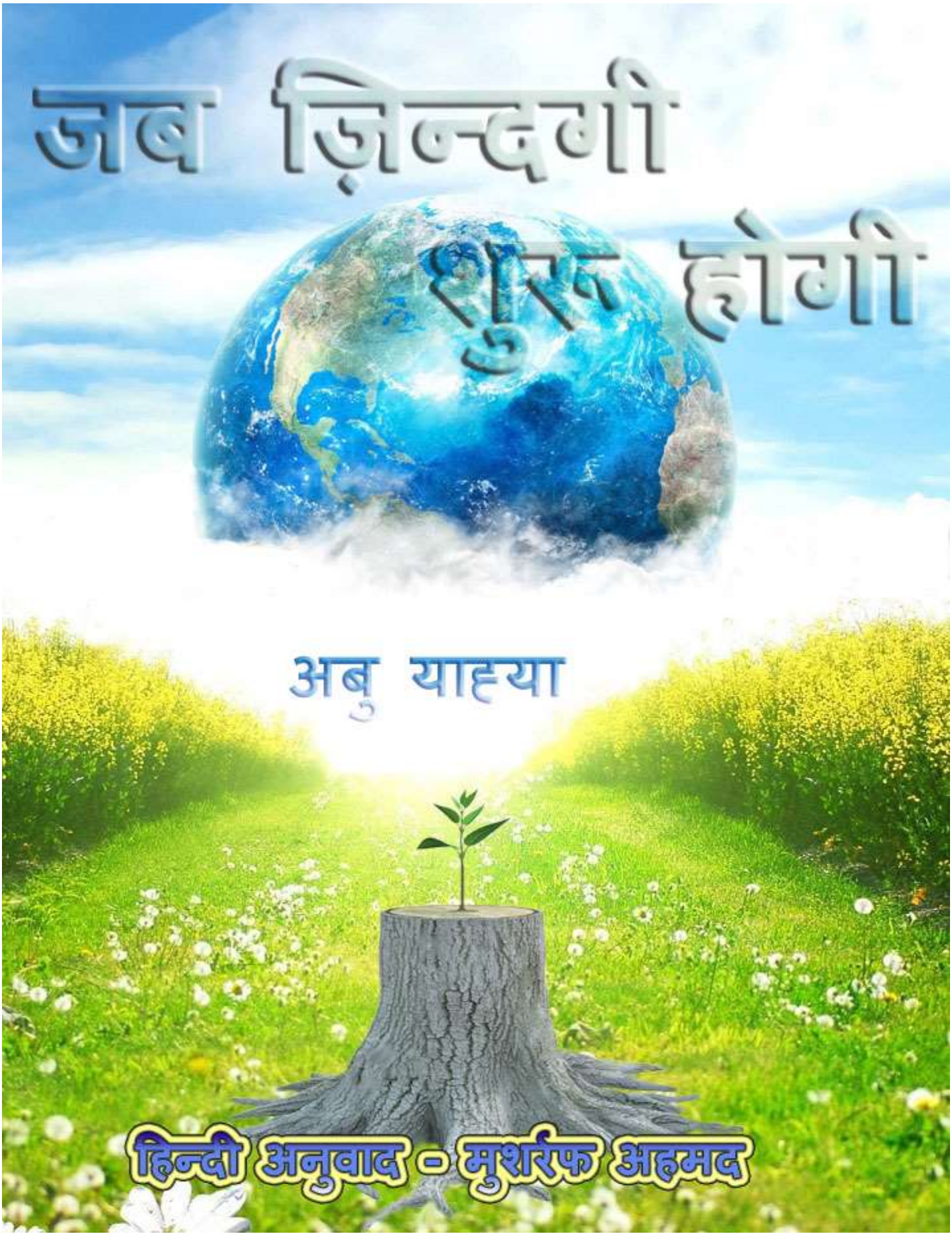

www.iqbalkalmati.blogspot.com

जब ज़िन्दगी शुरू होगी

अबू याह्या

किताब का नाम _____ जब ज़िन्दगी शुरू होगी

लेखक _____ अबू याह्या

हिन्दी अनुवाद _____ मुशर्रफ अहमद

वेब साईट _____ www.inzaar.org

मूल्य _____

मिलने का पता _____

®सर्वाधिकार लेखक के पास सुरक्षित हैं.

®All rights are reserved to the author.

www.iqbalkalmati.blogspot.com

विषय सूची   पृष्ठ संख्या

- ❖ परिचय >>> 5
- ❖ कुछ स्पष्टीकरण, कुछ क्षमायाचना >>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>> 8
- ❖ क़यामत का दिन >> 12
- ❖ अर्श के साए में >>> 27
- ❖ हश्र का मैदान >> 38
- ❖ नाएमा >> 57
- ❖ दो सहेलियां >> 73
- ❖ आज हुकूमत किसकी है ? >>> 87
- ❖ हजरत ईसा (अ) की गवाही >> 98
- ❖ होज़े कौसर पर >>> 114
- ❖ नूह की कौम और दीन (धर्म) बदलने वाले >>>>>>>>>>>>>>>>>>>> 127
- ❖ हिसाब किताब और जहन्नम वाले >>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>> 139
- ❖ आखिर कार.... >> 158
- ❖ बनी-इस्राइल (यहूदी) और मुसलमान >>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>> 171
- ❖ आखिरी अंजाम की तरफ रवानगी >>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>> 186
- ❖ जन्नत की बादशाही में दाखिला >>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>> 196
- ❖ जब ज़िन्दगी शुरू होगी >>> 215

परिचय

उन्नीसवीं सदी का ज़माना था। यूरोप के मज़हबी लोगों और वैज्ञानिकों के बीच कशमकश अपने चरम पर पहुंच चुकी थी। पिछली तीन सदियों से चर्च, वैज्ञानिकों को दबाते चले आए थे। आधुनिक सोच के समर्थकों जिनमें गैलीलियो, लियोनार्डो दा विंसी और न जाने कितने ही दूसरे थे, जो चर्च वालों की हिंसा का निशाना बने थे। इन कार्रवाइयों ने मज़हब को तो कोई फायदा न पहुंचाया लेकिन आधुनिक सोच के समर्थक लोगों में मज़हब के खिलाफ बिना वजह की नफरत पैदा कर दी। इसका नतीजा यह निकला कि लोगों ने हीले-बहाने से ईश्वर के अस्तित्व से इन्कार करना शुरू कर दिया। मज़हब से नफरत की यह लहर कोलोनियल आकाओं से मुसलमानों के अंदर भी दाखिल हुई लेकिन इसमें ज़्यादा कामयाब न हो सकी और मुसलमानों की भारी संख्या धर्म से जुड़ी रही।

बीसवीं सदी की वैज्ञानिक खोजों ने ज्ञान और अकल रखने वाले इंसानों को इस बात पर मजबूर किया कि कायनात का एक खुदा है और वही इस प्रणाली को चला रहा है, लेकिन इसी हकीक़त का दूसरा हिस्सा कि इंसान को उसके सामने अपने कर्मो के लिए जवाबदेह होना है, नज़रों से ओझल हो कर रह गया। इस सदी को अमेरिका की सदी कहा जा सकता है। अमेरिका की ज़्यादा आबादी नास्तिक नहीं बल्कि ज्यादातर धर्म की मानने वाली है मगर इन लोगों ने खुदा के साथ अपने संबंध को बस संडे तक सीमित करके रख दिया है और जीवन की सबसे बड़ी इस सच्चाई को कि हमें अपने रब के सामने एक दिन जवाब देना है, कहीं पीछे चली गई है। अमेरिका के प्रभुत्व के साथ यह ख्याल दुनिया के बाकी हिस्सों में भी एक्सपोर्ट हुआ जिसमें अमेरिकी अवधारणाओं से प्रभावित मुस्लिम दुनिया भी शामिल थी। अब स्थिति यह है कि हम मुसलमान अल्लाह पर ईमान रखते हैं और आखिरत की ज़िन्दगी पर भी यकीन रखते हैं मगर कंज्यूमर ऐज और भौतिकवाद की दौड़ ने हमें ज़िन्दगी की इस सबसे बड़ी सच्चाई से बेपरवाह कर दिया है।

हमारे यहाँ हालाँकि किताब से संबंध टूटता जा रहा है और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने लोगों का ध्यान ज़्यादा खींच लिया है लेकिन फिर भी ऐसे कई लोग हैं जो अभी भी किताबें पढ़ते हैं। हालांकि इस मामले में आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन मेरा अनुभव है कि इंटरनेट के विकास के

साथ हजारों किताबें फ्री उपलब्ध हो जाने से किताब पढ़ने का शौंक लोगों में बढ़ा है। इसकी वजह यह है कि किसी भी इंसान के मानसिक विकास में किताब जो योगदान कर सकती है, वह इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के बस की बात नहीं है।

किताब पढ़ने वाले लोग दो तरह के होते हैं: एक वे जो गंभीर ज्ञानवर्धक किताबें पढ़ते हैं और दूसरे वे जो हल्के फुल्के साहित्य पढ़ने पर संतोष करते हैं। हमारे विद्वान वर्ग ने पहली श्रेणी के लोगों के लिए बहुत कुछ लिख दिया है और लिखते रहते हैं मगर दूसरी तरह के लोगों के लिए ऐसा साहित्य न के बराबर है जिसमे पाठक के मनोरंजन के साथ साथ कुछ सुधार और ज्ञान की बात कही जा सके। अपने कुछ दोस्तों के अलावा मैंने भी "सफ़र नामा" जैसी किताबों को इस मकसद के लिए इस्तेमाल करने की कोशिश की है। मेरे एक दोस्त अबू याह्या ने इस संदर्भ में उपन्यास के रूप को अल्लाह तआला का संदेश पहुंचाने के लिए शायद पहली बार इस्तेमाल किया है जिसके लिए वे प्रशंसा के पात्र हैं।

हालांकि साहित्य के इतिहास में नसीहत और नैतिक सुधार के लिए उपन्यास का प्रयोग नया नहीं है। डिप्टी नज़ीर अहमद इस संदर्भ में एक सफल प्रयास पहले ही कर चुके हैं मगर अबू याह्या ने अपने उपन्यास के लिए ऐसा मैदान चुना है जो इससे पहले शायद किसी के गुमान में भी न आया होगा। इस मैदान का विषय है इंसान की असल ज़िन्दगी। यह बात तो तय है कि हम सिर्फ साठ सत्तर बरस की जो यह ज़िन्दगी गुजार रहे हैं, यह असल ज़िन्दगी नहीं है बल्कि सिर्फ एक इम्तिहान की ज़िन्दगी (Test Life) है, जिसमें हमें अपनी असल ज़िन्दगी जीने के लिए परखा जा रहा है। हम मौत को ज़िन्दगी का अंत समझते हैं मगर हकीक़त यह है कि इससे हम अपनी असल ज़िन्दगी की शुरुआत कर रहे होते हैं। यही वजह है कि लेखक ने इस किताब का शीर्षक ही रख दिया है कि "जब ज़िन्दगी शुरू होगी"।

उपन्यास की थीम यह है कि कंज्यूमर ऐज और भौतिकवाद की जिस दौड़ ने हमें करोड़ों अरबों वर्ष बल्कि इससे भी ज़्यादा अपनी असल ज़िन्दगी से अनजान करके इस छोटी सी इम्तिहान की ज़िन्दगी को सारी हकीक़त बनाकर रख दिया है, इससे लोगों को झिन्जोड़ कर जगाया जाए और बताया जाए कि असल ज़िन्दगी यह नहीं है जिसके पीछे हम भाग रहे हैं बल्कि असल ज़िन्दगी वो है जिसे हम भूल बैठे हैं। हमारा दीन (धर्म) हमें दुनिया छोड़ने और सन्यास लेने की हिदायत नहीं करता और न ही कंज्यूमर ऐज और भौतिकवाद के सेलाब में बहने की इजाज़त देता है।

दीन और दुनिया में सही संतुलन पैदा करना ही इंसानियत का विकास है। इस उपन्यास के किरदार और उनकी बातचीत इतनी जानदार है कि इंसान खुद को उनके आसपास महसूस करता है।

यह एक परिवार की कहानी है जिसका हर व्यक्ति अपनी अपनी दुनिया में मगन था। परिवार का मुखिया दीन (धर्म) का एक दाई था जिसकी औलाद उसके नक्शेकदम पर नहीं चल सकी। अचानक उन सभी की इम्तिहान की ज़िन्दगी का अंत हो गया और फिर, वह अपनी असल ज़िंदगी में दाखिल हो गए। यहाँ उनके साथ क्या कुछ हुआ इस के विवरण के लिए आप को इस उपन्यास का अध्ययन करना होगा।

अबू याह्या सिर्फ एक उपन्यासकार ही नहीं बल्कि कुरआन और सुन्नत के एक विद्वान हैं। उनके लेखन हालांकि आम शैली का प्रतिनिधित्व नहीं करता लेकिन उन्होंने इस नाजुक विषय पर कलम उठाते समय जिस स्तर पर इस बात का ध्यान रखा कि उनकी कोई बात कुरआन और हदीस के खिलाफ ना जाए, इस पर वह दाद के हकदार हैं। लेखक अपने पाठकों के साथ मुहब्बत और अपने पन के जिस स्तर पर हैं, उन्होंने यह कोशिश की है कि अपने पाठकों को उनकी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी सच्चाई से अवगत कराते चलें ताकि वे इस इम्तिहान की ज़िन्दगी में अपनी असल ज़िन्दगी के लिए सामान इकट्ठा कर सकें। अल्लाह से दुआ है कि लेखक की इस कोशिश को अपनी बारगाह में क़बूल करे और इसकी मदद से पाठकों को अपनी असल ज़िन्दगी की तैयारी की तौफ़ीक़ अता फरमाए।

मुहम्मद मुबश्शिर नज़ीर

कुछ स्पष्टीकरण, कुछ क्षमायाचना

वॉल्टेयर (1694-1778) की गिनती यूरोप के आधुनिक विचारकों में उन महत्वपूर्ण लोगों में होती है जिनके विचारों पर पश्चिमी सभ्यता की मौजूदा इमारत की नींव रखी हैं। वॉल्टेयर के ज़माने में पुर्तगाल के शहर लिस्बन में एक ज़लज़ला आया जिसके साथ आने वाले सुनामी तूफान और शहर में फैलने वाली आग ने क़यामत मचा दी। लाखों की आबादी वाला शहर पूरी तरह तबाह हो गया। इस त्रासदी ने पूरे यूरोप को हिला कर रख दिया। ना केवल राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक स्तर बल्कि दर्शन और विचारधारा की दुनिया पर भी इस तबाही के जबरदस्त प्रभाव हुए। वहां धार्मिक विद्वानों ने आदत के अनुकूलन इसे खुदा का अज़ाब करार दिया, मगर अब ज़माना बदल रहा था, इसलिए जबरदस्त प्रतिक्रिया हुई। इस घटना की पृष्ठभूमि में वॉल्टेयर ने पहले एक कविता Poem on the Lisbon Disaster और फिर Candide के नाम से एक उपन्यास लिखा। इस का बुन्यादी संदेश यह था कि नई दुनिया में ईसाइयत के ऐसे खुदा की अवधारणा की कोई गुंजाइश नहीं जिसके अज़ाब में बेगुनाह और गुनाहगार बिना किसी फर्क के मारे जाते हैं।

शुरू में वॉल्टेयर का यह काम प्रतिबंध का शिकार हुआ, लेकिन जल्द ही इस में पेश की हुई विचारधारा समय की ज़ुबान बन गई। धीरे धीरे खुदा की ओर लगाई गई गलत अवधारणा की प्रतिक्रिया लोगों को नास्तिकता तक ले गई। फिर एक समय ऐसा आया कि पश्चिमी समाज में खुदा का नाम लेना एक मूर्खतापूर्ण बात बन गई। अकबर इलाहाबादी मरहूम ने इस स्थिति को अपने एक शेर में इस तरह बयान किया है:

रक़ीबों ने रपट लिखवाई है जा जा के थाने में

कि अकबर नाम लेता है खुदा का इस ज़माने में.

बाद के ज़माने में खुदा के अस्तित्व को तो किसी न किसी रूप स्वीकार कर लिया गया लेकिन परलोक की वह अवधारणा जो खुदा के पूरे इन्साफ का सबूत और दुनिया में पाई जाने वाली असमानता की असल वजह है, कभी आम न हो सकी। वॉल्टेयर ईसाई पृष्ठभूमि रखता था जहां

परलोक की अवधारणा बहुत धुंदली और तर्कहीन है। इसलिए उसे अपने मन में पैदा होने वाले सवालों के सही जवाब नहीं मिल सके और वह नास्तिकता के उस आंदोलन का संस्थापक बन गया जो अब पूरी धरती पर अपने पैर पसार चुकी है।

सौभाग्य से मुसलमानों के पास कुरआन जैसी किताब है जो यह बताती है कि दुनिया की कहानी का दूसरा और अंतिम अध्याय इसके बाद है जिसके बिना जीवन और ब्रह्मांड के बारे में किसी तथ्य को सही रूप में नहीं माना जासकता। आज मुस्लिम समाज में भी यूरप के उस दौर की तरह धार्मिक कट्टरता और बेलगाम आधुनिक सोच के बीच एक मुठभेड़ जारी है। इससे पहले कि इस मुठभेड़ में हमारे यहाँ कोई वॉल्टेयर उठे, रब्बे आलम की इनायत से उपन्यास ही के रूप में मानव जीवन की कहानी के दूसरे और अंतिम अध्याय के कुछ विवरण पाठकों के सामने प्रस्तुत हैं।

मुझे इस तफसील की ज़रूरत इसलिए हुई कि लोग आमतौर पर जासूसी, रोमांस, ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भों में लिखे गए उन उपन्यासों से ही परिचित हैं जो परंपरागत रूप से हमारे यहाँ लिखे और पढ़े जाते हैं। हालांकि उपन्यास का दायरा दरअसल इससे कहीं अधिक व्यापक होता है। हर उपन्यास की प्रष्टभूमि, उसके किरदार, घटनाओं और संवाद उपन्यासकार की उस विशेष सोच पर निर्भर होता है जिस पर वह उपन्यास आधारित होता है। "जब ज़िन्दगी शुरू होगी" ऐसा ही एक गैर पारंपरिक उपन्यास है। मगर अपरंपरागत होने के बावजूद यह एक कल्पना ही है। हर उपन्यास एक कल्पना ही होता है जो अवधारणाओं की दुनिया में संभावनाओं की इमारतें निर्माण करता है। हालांकि यह कल्पनाएँ कितने ही आसमान छूलें, लेकिन उनकी बुन्याद हकीक़त की ज़मीन पर ही रखी जाती है। मेरा यह उपन्यास अपने मुख्य किरदार और उसके साथ पेश आने वाली निर्धारित घटनाओं के संदर्भ में एक कथा है, लेकिन यह कल्पना संभावनाओं की जिस दुनिया से आपको अवगत कराएगी वह ब्रह्मांड की सबसे बड़ी सच्चाई है। दुर्भाग्य से आज यह हकीक़त इंसान की आंखों से ओझल है, लेकिन अब वह समय दूर नहीं रहा जब संभावनाओं की यह दुनिया एक हकीक़त बनकर सामने आ जाएगी।

बात अगर सिर्फ इतनी ही होती तब भी इस उपन्यास का अध्ययन दिलचस्पी से खाली नहीं था, लेकिन हकीक़त यह है कि अभी या कुछ देर से इस उपन्यास का हर पाठक और दुनिया का हर इंसान खुद इस कहानी का हिस्सा बनने वाला है और इसकी किसी न किसी भूमिका को निभाना

उसका मुकद्दर है। यही वह त्रासदी है जिसने मुझे कलम उठाकर इस मैदान में उतरने पर मजबूर किया है।

मेरा मक़सद सिर्फ यह है कि अनदेखी के परदे में छिपी संभावनाओं की उस दुनिया को कहानी के माध्यम से एक जिन्दा हकीक़त बनाकर आम लोगों के सामने पेश कर दिया जाए। यह एक बहुत मुश्किल और नाजुक काम है। इसलिए कि आने वाली इस दुनिया की कोई वास्तविक तस्वीर हमारे सामने नहीं है और ना इस मकसद के लिए कल्पना के घोड़े बेलगाम दौड़ाए जा सकते हैं। मगर सौभाग्य से आखिरी रसूल (ﷺ) की शिक्षाओं में हमें आने वाली इस दुनिया की वह तस्वीर मिल जाती है जिनके आधार पर मैंने उस दुनिया का एक नक्षा खींचने की कोशिश की है। इस के लिए उपन्यास की ज़रूरतों के आधार पर बातचीत, सवाल जवाब और शब्दों से कुछ दृश्य दिखाना भी ज़रूरी थे। हालांकि यह नाजुक काम करते समय हर कदम पर अल्लाह तआला की सिफात (गुण) से संबंधित कुरआन के बयान और अल्लाह के रसूल (ﷺ) के कथन मेरे सामने रहे। फिर भी यह एक नाजुक मामला है जिसमें गलती की संभावना है। मैं अपने रब से उसकी शान के आधार पर मेरी गलतियों को अनदेखी करने उम्मीद रखता हूँ।

यहाँ पाठकों को मैं अपने इस अहसास में भी शामिल करना चाहता हूँ कि मैं शुरू में इस उपन्यास को आम लोगों के लिए प्रकाशित नहीं करना चाहता था। मैं तो बस क़यामत के दिन के हवाले से अपने कुछ जज्बातों को शब्दों का रुप देने बैठा था, लेकिन देखते ही देखते इस उपन्यास के शुरुआती आठ अध्याय कुछ ही दिनों में पूरे हो गए। उसके बाद उन्हें पढ़ना शुरू किया तो मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि जो कुछ लिखा है उसे आम लोगों के लिए प्रकाशित करना सही नहीं। फिर कुछ मित्रों को यह अध्याय पढ़ने के लिए दिए। उनकी राय मुझसे न केवल बिल्कुल विपरीत थी बल्कि पढ़ने वालों पर इस के असाधारण प्रभाव हुए। उनमें से ज्यादातर के लिए यह एक झंझोड़ कर रख देने और ज़िन्दगी को बदल देने वाला अनुभव था। उनका बहुत आग्रह था कि इस उपन्यास को पूरा करके प्रकाशित किया जाए।

इसके बाद मैं खुद अपने आप को इसे पूरा लिखने के लिए तैयार नहीं कर पा रहा था, मगर जब दोस्तों का आग्रह बहुत बढ़ा तो मैंने बाकी उपन्यास पूरा करने से पहले इस्ताखारा करना शुरू किया। इसके नतीजे में ध्यान एक बार फिर एक जगह जम गया और मैंने उपन्यास पूरा कर लिया। साथियों के आग्रह पर यह उपन्यास पूरा तो हो गया, मगर इसके प्रकाशन के लिए मैं फिर

www.iqbalkalmati.blogspot.com : مزید کتب پڑھنے کے لئے آج ہی وزٹ کریں

भी तैयार नहीं था। मगर उपन्यास पूरा करने के कुछ दिनों बाद मुझे पता चला कि एक घातक रोग ने अस्तित्व के दरवाजे पर मौत की दस्तक दे दी है। उसी समय तय हो गया कि यह उपन्यास इन्शाअल्लाह अब जरूर प्रकाशित होगा।

लोग मुझे आलिम (विद्वान) और लेखक समझते हैं, लेकिन हकीक़त में मेरे पास किसी साहित्यकार का कलम है और न किसी आलिम का दिमाग। मेरी कुल पूंजी बस एक दर्द दिल है। यह दर्द जब बहुत बढ़ा तो इस उपन्यास के रुप में ढल गया। इस नाजुक मैदान में उतरने की मेरी वजह सिर्फ यही है। यह दर्द बारगाहे इलाही में क़ुबूल हो सकता है, अगर मैं इंसानों के रब को उसकी खोई हुई कुछ भेड़ें लौटाने में सफल हो जाऊं। आज के दौर में लोग गैब की किसी पुकार को सुनने का समय रखते हैं न रुचि मगर शायद यह कहानी ही उन्हें अपने रब की बात सुनने के लिए तैयार कर दे। शायद इसी तरह खुदा को उसका कोई बंदा या बंदी मिल जाए। शायद जहन्नम की ओर बढ़ते हुए किसी के कदम वापस लौट आएं। शायद जन्नत की दुनिया में एक इंसान और बढ़ जाए। ऐसा हुआ तो यही मेरी मेहनत का फल होगा।

आवाज दे के देख लो शायद वो मिल ही जाए

वरना यह उमर भर का सफ़र राएंगा तो है....

अबू याह्या

क़यामत का दिन

ज़मीन के सीने पर एक सिलवट भी बाकि न रही थी, दरया और पहाड़, खाई और टीले, समंदर और जंगल कुछ भी नहीं, धरती का हर नक्शा मिट चुका था हर ऊंचाई बराबर हो चुकी थी। दूर तक बस एक चटयल मैदान था और ऊपर आग उगलता आसमान, मगर आज इस आसमान का रंग नीला न था, ये लाल हो गया था। ये लाली सूरज की दहकती आग के बजाए जहन्नम के उन भड़कते शोलों का एक असर थी जो किसी अजदहे की तरह मुंह खोले बार बार आसमान की तरफ लपकते और सूरज को अपनी गिरिफ्त में लेने की कोशिश करते, जहन्नमी शोलों की लपक का ये खोफनाक मंज़र और भड़कती आग के दहकने की आवाज़ दिलों को लरज़ा रही थी।

लरजते हुए ये दिल मुजरिमों के दिल थे ये बेपर्वाहों, घमण्डियों, जालिमों, कातिलों, और फसाद करने वालों के दिल थे।

ये ज़मीन के फिरोनों और कुव्वत वालों के दिल थे, ये अपने दौर और अपने ज़माने में खुद ही को खुदा समझने वालों के दिल थे।

ये दिल उन लोगों के थे जो गुज़री हुई दुनिया में ऐसे जिये जैसे मरना न था, मगर जब मरे तो ऐसे हो गए जैसे कभी धरती पर बसे ही न थे। ये खुदा की बादशाही में खुदा को नज़र अंदाज़ करके जीने वालों के दिल थे, ये खुदा की मखलूक (रचना) पर अपनी खुदाई कायम करने वालों के दिल थे, ये इंसानों के दर्द और खुदा की याद से खाली दिल थे।

तो आज वो दिन शुरू हो गया जब इन बेपरवाह दिलों को जहन्नम के भड़कते शोलों और ख़त्म न होने वाले अज़ाबों का निवाला बनजाना था।

वो अज़ाब जो अपनी भूक मिटाने के लिए पत्थरों और इन पत्थर दिलों के इन्तिज़ार में थे, आज इन अज़ाबों के लिए तो ईद का दिन था के उनकी जनम से भड़की भूक मिटने वाली थी। उन अज़ाबों के डर से खुदा के ये मुजरिम किसी पनाह की तलाश में भागते फिर रहे थे, मगर इस मैदान (मैदान-ए-हश्र) में कैसी पनाह और कौन सी राहत ?

हर जगह आफत मुसीबत और सख्ती थी, और उन पत्थर दिल मुजरिमों की खत्म न होने वाली नहूसत थी।

……..

पता नहीं इस हाल में कितने बरस कितनी सदयाँ गुज़र चुकी हैं। ये हश्र का मैदान और क़यामत का दिन है। नई ज़िन्दगी शुरू हो चुकी है, कभी खत्म न होने के लिए। मैं भी हश्र के इस मैदान में गुम सुम खड़ा खाली आखों से ये सब कुछ देख रहा हूँ, मेरे सामने अनगिनत लोग भागते, दौड़ते, गिरते पड़ते चल रहे हैं। फिज़ा में शोलों के भड़कने की आवाज़ के साथ लोगों के चीखने, चिल्लाने, रोने, पीटने की आवाजें गूंज रहीं हैं, लोग एक दूसरे को बुरा भला कह रहे हैं, गालियाँ दे रहे हैं, लड़ झगड़ रहे हैं, एक दूसरे पर इलज़ाम लगा रहे हैं, आपस में गुत्तम गुत्ता हैं।

कोई सर पकड़े बैठा है, कोई मुहँ पर मिट्टी मल रहा है, कोई चहरा छुपा रहा है, कोई शर्मिंदगी उठा रहा है, कोई पत्थरों से सर टकरा रहा है, कोई सीना पीट रहा है, कोई आपने माँ बाप, बीवी बच्चों, दोस्तों और लीडरों को अपनी इस हालत का जुम्मेदार ठहरा कर उन पर बरस रहा है।

उन सब का मसला एक ही है क़यामत का दिन आ गया है और उनके पास इस दिन की कोई तैय्यारी नहीं। अब ये किसी दूसरे को इलज़ाम दें या खुद को बुरा भला कहें, रोएँ चिल्लाएँ या सब्र करके बैठ जाएँ अब कुछ नहीं बदल सकता, अब तो सिर्फ इन्तेज़ार है काएनात के मालिक के ज़ाहिर होने का, जिस के बाद हिसाब किताब शुरू होगा और इन्साफ के साथ हर इंसान की क़िस्मत का फैंसला हो जाएगा।

अचानक से एक आदमी मेरे पास चला आया:

"हाए इस से तो मौत अच्छी थी, इस से तो कब्र अच्छी थी!"

मैं आस पास की दुनिया से कट चुका था के ये चींख जैसी आवाज़ मुझे सोच की वादियों से हकीकत के इस मैदान में ले आई जहाँ मैं बहुत देर से गुम सुम खड़ा था।

पल भर में मेरे दिमाग में शुरू से आखिर तक सब कुछ ताज़ा हो गया। अपनी कहानी, दुनिया की कहानी, ज़िन्दगी की कहानी, सब फिल्म की रील की तरह मेरे दिमाग में घूमने लगी।

……..

इस भयानक दिन के शुरू में मैं अपने घर में था, पर ये घर मेरा दुनयावी घर नहीं था बल्के ज़ाहिर नज़र से देखने वालों के लिए ये क़ब्र का अँधेरा घड़ा था, मगर दरअसल ये आखिरत की असल दुनिया का पहला दरवाज़ा और बरज़ख (दुनिया और आखिरत के बीच) की दुनिया थी, वो दुनिया जिसमे मेरे लिए ख़तम न होने वाली राहत थी। उस दिन मुझ से मेरा हमदम मेरा प्यारा दोस्त "सालेह" मिलने आया हुआ था। सालेह वो फ़रिश्ता था जो दुनिया की ज़िन्दगी में मेरे दाएं हाथ पर रहा, उस का साथ मौत के बाद की ज़िन्दगी में मेरे लिए हमेशा सुकून की चीज़ रही थी और आज भी हमेशा की तरहा हमारी मजेदार बातें चल रही थीं, बात चीत के दौरान मैंने उससे पुछा:

'यार ये बताओ की तुम्हारी ड्यूटी मेरे साथ क्यूँ लगाई गई है ?'

"बात ये है अब्दुल्लाह कि मैं और मेरा साथी दुनिया में तुम्हारे साथ ड्यूटी किया करते थे। वो तुम्हारी बुराइयाँ और मैं नेकियाँ लिखता था, तुम मुझे दो मिनट चैन से ना बैठने देते थे। कभी अल्लाह का ज़िक्र, कभी उसकी याद में आँसू, कभी इंसानों के लिए दुआ, कभी नमाज़, कभी अल्लाह की राह में खर्च, कभी लोगों की सेवा, कुछ और नहीं तो तुम्हारे चहरे पर हर समय दूसरों के लिए मुस्कराहट रहती थी। इसलिए में हर समय कुछ ना कुछ लिखता ही रहता था, तुमने मुझे थका कर मार ही डाला था, लेकिन हम फ़रिश्ते तुम इन्सानों की तरह तो होते नहीं के बुराई का बदला बुराई से ही दें, इसलिए तुम्हारी इस बुराई के जवाब में भी देखलो के मैं तुम्हारे साथ हूँ और तुम्हारा ख्याल रखता हूँ।" सालेह ने बड़ी गम्भीरता से मेरी बात का जवाब दिया।

मैंने उसकी बात के जवाब में उसी गंभीरता से कहा:

'तुम से ज़्यादा बुराई मैंने बाएँ हाथ वाले के साथ की थी, वो मेरा गुनाह लिखता, मगर मैं उसके बाद फ़ौरन तौबा कर लेता, फिर वो बेचारा अपने सारे लिखे लिखाए को बैठ कर मिटाता और मुझे बुरा भला कहता के तुम ने मिटवाना ही था तो लिखवाया क्यूँ था। आखिर कार उसने तंग आकर अल्लाह से दुआ की के इस आदमी से मेरी जान छुड़ाएं, इस लिए मौत के बाद से अब तुम ही मेरे साथ रहते हो'

ये सुन कर सालेह खूब हँसा, फिर कहने लगा:

"फ़िक्र न करो हिसाब किताब के समय वो फिर आजाए गा, कानून के मुताबिक हम दोनों मिलकर ही तुम्हें अल्लाह के सामने पेश करेंगे"

ये कहते कहते उसके चहरे पर गंभीरता दिखाई देने लगी, वो बोलते बोलते चुप हुआ और सर झुका कर एक घहरी ख़ामोशी में डूब गया। मैंने उसका ये रूप आज तक नहीं देखा था, कुछ देर बाद उसने सर उठाया तो उसके चहरे पर हमेशा रहने वाली शोखी और मुस्कान कहीं दूर चली गई थी और उसकी जगह दहशत और खौफ के सायों ने ले ली थी। मुझे देखकर वो मुस्कुराने की नाकाम कोशिश करते हुए बोला:

"अब्दुल्लाह! इस्राफील (क़यामत का फ़रिश्ता) को हुक्म मिल चुका है, अल्लाह का वादा पूरा होने का समय आ गया है, ज़मीन पर बसने वालों को दी हुई मोहलत खत्म हो गई है, तुम कुछ देर और बरज़ख (दुनिया और आखिरत के बीच की दुनिया) के इस परदे में अल्लाह की रहमतों के साए में रहोगे, मगर अब मैं जा रहा हूँ। अब मैं तुम से उस वक़्त मिलूँगा जब ज़िन्दगी शुरू होगी, तुम्हारी आँख खुलेगी तो क़यामत का दिन शुरू हो चुका होगा, मैं उस दिन तुमसे दौबारा मिलूँगा"

.....

ज़िन्दगी के हंगामे जारी थे, बाजारों में वही चहल पहल और गहमा गहमी थी। न्यूयार्क, लॉस अन्जिलिस, लन्दन, पैरिस, शंघाई, दिल्ली, मोस्को, कराची हर जगह रौनक मेले लगे हुए थे। रात को दिन कर देने वाली रोशनियों में 20,20 क्रिकेट मैच और फुटबॉल वर्ल्ड कप के मुकाबले, उनको देखते और तालियाँ बजाते दर्शक, नाईट कलब और बार में शराब पीते और नशे में नाचते लोग। होलीवुड और बोलीवुड की एक्शन और थिलर फिल्मों में एक्ट्रेस के जलवे और उन जलवों के शोकीन दर्शक फिल्मों, ड्रामों, इस्टेज़, टीवी, और फैशन शोज़ में थिरकती मटकती अपने जिस्म की नुमाइश करती मोडल्स और एक्ट्रेस और उन नुमाइश से अपने अकाउंट भरते बिजनिस मैन। नए दौर की नई दुनिया को जीत लेने वाले, मल्टी नेशनल कंपनियों के मालिक और उन को अपना ज्ञान और प्रतिभा बेंच कर अपने भविष्य के सपने बुनने वाले नौवजवान। मिडिया की चमक धमक, पत्रकारिता के मिर्च मसाले। सियासत के बाज़ार के कम न होने वाले धोके फरेब के हंगामे। बाजारों में घूमते और खरीदारी करते मर्द और औरतें, और उनको अपनी और आकर्षित करती दुकाने और दुरानदार। अमीरों की महफ़िलों में गूँजती गाने बजने की

आवाज़े, गरीबों के झोपड़ों में भूक और मजबूरी। शादियों की महफ़िलों में बजते खुशयों के नगमे, ईश्वर के नाम पर अपने फायदों की हिफाज़त करते धर्म के ठेकेदार। गरीबों और उनके मसलों से हमेशा की तरह बेपरवाह बड़े लोग, रिश्वत की नापाक कमाई से अपनी जेबें भरते सरकारी लोग। जनता का शोषण करते नेता और दुनिया पर अपना कब्ज़ा रखने की साजिशें करती बड़ी ताकतें, सब अपने अपने कामो में मगन थे।

ज़मीन पर रहने वाले जो हमेशा से करते आए थे वही सब कर रहे थे। ज़ुल्म और फसाद की दस्ताने, धोका और फरेब की कहानियां, एक दूसरे से आगे बढ़ने की दौड़, एक दूसरे से बेपरवाही और धोके। अल्लाह और आखिरत को भूलजाना, सियासी हंगामे, कारोबार के लिए भाग दौड़, मज़हबी झगड़े, फिरकों की लड़ाई, हर चीज़ हमेशा की तरह जारी थी। पैग़म्बर तो सदयों पहले आने बन्द हो गए थे, एग्रीकल्चर ऐज इंडस्ट्रीएल ऐज से बदली और इंडस्ट्रीएल ऐज इन्फोर्मेशन ऐज से, मगर इंसानी रवय्ये नहीं बदले। उन के गम भी नहीं बदले, वही कारोबार और रोज़गार की परेशनियाँ, वही इश्क और मुहब्बत की नाकामयां, वही मौत और बिमारी के मसले। इस वक़्त भी इंसानों के यहाँ हर गम था सिवाए आखिरत के गम के, हर डर था सिवाए अल्लाह के डर के, आसमान की आँख ये देख रही थी के खुदा की ज़मीन को ज़ुल्म और फसाद से भर देने वाला इन्सान अब धरती के लिए उसका बोझ बरदाश्त से बहार हो चुका है, तो इन्सान को बार बार हिलाया गया। आखरी नबी की भविषवाणी पूरी होने लगीं, नंगे पाओं बकरियां चराने वाले अरबों ने दुनिया की सबसे ऊँची बिल्डिंगें बनाली, मगर इंसानियत होश में नहीं आई।

नूह के तीसरे बेटे याफ़िस की औलाद यानि याजूज माजूज की नस्ल दुनिया के फाटकों की मालिक बन गई। अजमत की हर बुलंदी से यही याजूज माजूज दूसरी दुनिया पर यलगार करने लगे। ब्रिटेन, रूस, अमेरिका और चीन एक के बाद एक दुनिया की हुकूमत की गददी पर बैठते गए। आसमानी किताबों की सारी भविष्यवाणी पूरी हो गई, मगर इन्सानयत फिर भी होश में न आई। सुनामी आए, सेलाब आए, ज़लज़ले आए, मगर इन्सानयत बेपरवाह ही रही, अल्लाह ने इन्फोर्मेशन टेक्नोलोजी पैदा कर दी, उसके गैर अरबी बन्दों ने नबी-ऐ-अरबी के पैगाम को उठाया और इंसानियत पर हुज्जत (अल्लाह की बात को पूरी तरहे साबित कर देना) पूरी करदी, मगर इन्सान फिर भी न संभले। क़यामत से पहले क़यामत के नज़ारे दिखा कर इन्सानियत को झिंझोड़ दिया गया, मगर लोगों के रवय्यों में कोई बदलाव नहीं हुआ। सो जिसे आखिर कार

आना था वो आ गई, इस्राफील ने खुदा का हुक्म सुना और सूर हाथ में उठा लिया, देखते ही देखते क़यामत आ गई।

सूरज की दिशा बदल दी गई, तारे बे नूर होंने लगे, हिमालय जैसे पहाड़ हवा में रुई की तरह उड़ने लगे, समन्दरों ने पहाड़ जितनी ऊँची लहरे उठाना शुरू करदी। मैदान समंदर बन गए, ज़मीन ने अपने ज्वालामुखी बाहर उगल दिये, वादियों में आग के दरया बहने लगे, धरती ने अपने सारे भूकम्प बाहर निकाल दिये, ज़मीन उलट पुलट हो गई, शहर खंडरों में बदल गए, इमारते राख होने लगीं, आबादियाँ कब्रिस्तानों जैसी होने लगी।

कमज़ोर इन्सान की भला हैसियत ही क्या थी, वो जो कुछ देर पहले नए घर बनाने की योजना बना रहे थे, नई दुकान नए कारोबार के बारे में सोच रहे थे, शादी और निकाह की उम्मीदें कर रहे थे, नई कार नए कपड़ों की खरीदारी कर रहे थे, औलाद के आने वाले कल की सोच में गुम थे, अपने सारे इरादे सारी महत्वाकांक्षा भूल गए। माँएं अपने दूध पीते बच्चे छोड़ कर भागीं, घर्भवती औरतों के गर्भ गिर गए, ताकतवर कमजोरों को कुचलते और नौजवान बूढों को छोड़ कर भागने लगे। सोना चांदी बिखरे पड़े हैं, नोट हवा में उड़ रहे हैं, कीमती सामान बिखरा पड़ा है, मगर कोई लेने वाला समेटने वाला नहीं। घर, कारोबार, रिश्तेदार, दोस्त सब बे कीमत हो चुके हैं, हर जान बस अपनी फ़िक्र में है।

आज इन्सान सब को भूल चुका है सिर्फ एक ईश्वर को पुकार रहा है, मगर कोई जवाब नहीं आता। शिर्क (एक ईश्वर के साझी बनाना) करने वाले भी और नास्तिक भी सब खुदा की दुहाई दे रहे हैं, मगर इस मुसीबत से कोई पनाह नज़र नहीं आती। बर्बादी के साए पीछा नहीं छोड़ रहे, मौत हर जगह तांडव कर रही है, मुसीबत ने हर तरफ से घेर लिया है, आखिर कार ज़िन्दगी मौत से हार गई, ज़िन्दगी ख़त्म हो गई, मगर इस लिए के ज़िन्दगी को अब शुरू होना था।

.....

हवा की तेज़ सर सराहत मेरे कानों में आने लगी थी, बारिश की कुछ बूँदें मेरे चहरे पर गिरी, मुझे होश आने लगा। मैं बहुत देर तक उठने की कोशिश करता रहा, मगर मेरा दिमाग अभी पूरी तरह होश में नहीं आया था, काफी देर मैं इसी हाल में रहा, अचानक मेरे कानों में एक जानी पहचानी आवाज़ आई:

"अब्दुल्लाह ! उठो जल्दी करो।" ये मेरे दोस्त मेरे कब्र के साथी सालेह की आवाज़ थी, उसकी आवाज़ ने मुझ पर जादू कर दिया और मैं एक दम से उठ खड़ा हुआ,

'मैं कहाँ हूँ ?' बेचैनी में मेरा ये पहला सवाल था।

"तुम भूल गए, मैंने तुम से क्या कहा था, क़यामत का दिन शुरू हो गया है, इस्राफील (क़यामत का फरिश्ता) दूसरा सूर फूँक रहे हैं। इस वक़्त उस की आवाज़ बहुत हल्की है, अभी उस की आवाज़ से सिर्फ वो लोग उठ रहे हैं जो पिछली ज़िन्दगी में खुदा के फरमाबरदारों में से थे।" उसने मेरा कन्धा थपकते हुए कहा।

'और बाकि लोग ?' मैंने उसकी बात काट कर कहा।

"थोड़ी ही देर में इस्राफील की आवाज़ तेज़ होती चली जाएगी और उसमे सख्ती आ जाएगी। फिर ये आवाज़ एक धमाके में बदल जाएगी, उस समय बाकि सब लोग भी उठ जाएँगे, मगर वो उठना बहुत मुसीबत और तकलीफ का उठाना होगा, हमें उससे पहले ही यहाँ से चले जाना है।" उसने तेज़ी से जवाब दिया।

'मगर कहाँ ?' ये सवाल मेरी आँखों से झलका ही था के सालेह ने उसे पकड़ लिया।

"तुम खुशनसीब हो अब्दुल्लाह ! हम अर्श की तरफ जा रहे हैं।" वो तेज़ी से कदम उठाता हुआ बोला, फिर और ज़्यादा खोल कर बात बताते हुए उसने कहा:

"इस वक़्त सिर्फ अम्बिया (नबी का बहुवचन), शहीद और नेक लोग ही अपनी कब्रों से बहार निकले हैं। ये वो लोग हैं जिनकी कामयाबी का फैंसला दुनिया ही में हो गया था, ये वो लोग हैं जिन्होंने खुदा को बिन देखे मान लिया था, उसे छुए बगैर पा लिया था और उस की आवाज़ उस वक़्त सुनली थी जब कान उस की नहीं सुनते थे। ये लोग उसके रसूलों पर ईमान लाए और उन की मदद की और उनकी बात मानी, उनकी वफादारी अपने धर्म के बड़े लोगों, अपने लीडरों, अपने फिरके के बड़े आलिमों और अपने बाप दादा के अकीदों (मान्नेताओं) से ना थी बल्के सिर्फ और सिर्फ एक खुदा और उस के रसूलों से थी। उन्होंने एक खुदा की इबादत के लिए हर दुःख झेला, हर ताना सुना और हर ज़ुल्म बरदाश्त किया। उन्होंने बहतरीन अख्लाक़ और बहतरीन किरदार (उच्च नैतिकता उच्च गुणवत्ता) को अपनी ज़िन्दगी बनाया, खुदा से मुहब्बत खुदा की

मखलूक पर रहम के साथ ज़िन्दगी गुज़ारी। अब्दुल्लाह! आज उन लोगों के अच्छे बदले का वक्त है, और ये है उनके बदले की शुरुआत।"

सालेह की बातें सुनते हुए मेरे चहरे से हैरत और उसके चहरे से ख़ुशी टपक रही थी।

'मगर मैं तो जन्नत में था और....' सालेह ने हँसते हुए मेरी बात काट कर कहा:

"शहजादे वो बरज़ख का जमाना था, सपने की ज़िन्दगी थी, असल ज़िन्दगी तो अब शुरू हुई है। जन्नत तो अब मिलेगी, वैसे वो भी हकीक़त ही थी, देखलो तुम्हारी और मेरी दोस्ती वहीँ शुरू हुई थी।"

मैं अपना सर झटक कर उसे देखने लगा, कुछ कुछ मेरी समझ में आ रहा था और बहुत कुछ समझना अभी बाकि था, मगर इस समय मैंने अपने आप को सालेह के हवाले करना ज़्यादा बेहतर समझा।

.....

सालेह से मेरी दोस्ती उस वक़्त हुई थी जब मैंने मौत के बाद या यूँ कहूँ तो ज़्यादा सही होगा के ख़त्म होने वाली दुनिया के धोके से निकल कर हकीक़त की दुनिया में कदम रखा था। लोग मौत से बहुत डरते हैं, मगर मेरे लिए मौत एक बहुत ही ख़ुशी का और अच्छा तजुर्बा था। मौत के फ़रिश्ते "इज़राइल" का नाम दुनिया में डर की एक निशानी समझा जाता है, मगर मेरे सामने वो एक बहुत ख़ूबसूरत शक्ल में आए थे। उन्होंने बहुत ही मुहब्बत और शफकत से मेरी शख्सियत यानि मेरी रूह (आत्मा) को मेरे जिस्म से अलग किया। मेरा जिस्मानी वुजूद (अस्तित्व) पिछली दुनिया में रह गया और मेरी असल शख्सियत को उन्होंने इस नई दुनिया में जिसका नाम आलम-ए-बरज़ख था भेज दिया। बरज़ख का मतलब पर्दा होता है, मौत के फरिश्ते के ज़ाहिर होते ही मेरे और पिछली दुनिया के बीच एक पर्दा सा आ गया, जिसकी वजह से उस दुनिया से मेरा रिश्ता खत्म हो गया था। मैं नहीं जानता था के मेरी जुदाई के गम में मेरे घर वालों पर क्या गुज़र रही थी, पर मुझे मेरी तरबियत (संस्कार) की बुन्याद पर यकीन था के वे खुदा की मर्ज़ी पर सब्र और शुक्र करेंगे। मैं अपनी असल शख्सियत समेत अब एक नई दुनिया में था, ये बरज़ख की दुनिया थी, इस नई दुनिया में मौत के फ़रिश्ते इजराईल ने मुझे जिस के हवाले किया वो यही सालेह था। उस के साथ बहुत से खूबसूरत शक्ल वाले खूबसूरत कपड़े पहने

हुए फरिश्ते थे, उन सब के हाथों में गुलदस्ते थे और जुबान पर मुबारकबाद और सलामती की दुवाएं थी, मुबारक और सलामती के इस माहोल में वह सब मिल कर मुझे यकीन दिला रहे थे के आज़माइश (परीक्षा) के दिन अब ख़त्म और जन्नत की अज़ीम कामयाबी के दिन शुरू हो गए हैं। उस वक़्त सालेह ने मुझे ये खुशखबरी दी के बरज़ख की ज़िन्दगी के शुरू होने पर मेरे लिए पहले इनाम के तौर पर ज़मीन व आसमानों के मालिक के सामने पेश होना है। उसने मुझे बताया कि ये इनाम हर इंसान को नहीं मिलता! मेरे लिए ये खुशखबरी जन्नत की खुशखबरी से भी ज़्यादा कीमती थी।

उन सब की देख रेख में मेरा सफ़र शुरू हुआ।

ये नई दुनिया थी, जहाँ दूरी, फांसले, जगह, टाइम, ज़माने और अंतरिक्ष के मतलब इस तरह बदल गए थे कि वो शब्दों में किसी तरह बयान नहीं किये जा सकते। मैं ख़ुशी और हैरत के आलम में ये सफ़र तय कर रहा था कि एक जगह हम रोक दिए गए। ऐलान हुआ ज़मीन के फरिश्तों की हद आगई, सब यहाँ रुक जाएँ, सिर्फ सालेह को मेरे साथ आगे बढ़ने की इजाज़त मिली। आसमानों की दुनिया का सफ़र शुरू हुआ, कुछ ही देर में हम एक और जगह पहुँच कर रुक गए, यहाँ जिब्राइल अमीन (फरिश्तों के सरदार) खास तौर पर मेरे स्वागत के लिए आए थे। मुझे देख कर वो कहने लगे:

"अब्दुल्लाह! तुम मुझ से पहली बार मिल रहे हो, मगर मैं तुम से पहले भी कई बार मिल चूका हूँ,"

फिर धीरे से मेरा कन्धा थपथपाते हुए बोले:

"आक़ा के हुक्म पर कई बार मैंने तुम्हारी मदद की थी, मगर ज़ाहिर है तुम उस वक़्त ये नहीं जानते थे,"

आक़ा के शब्द से मेरे चहरे पर एक रौशनी सी फूटी, जिसे नूर से बने जिब्राइल ने जुबान पर आने से पहले ही पढ़ लिया और कहा:

"आओ चलो! मैं तुम्हें तुम्हारे अन्न दाता से मिलाता हूँ, नबियों के अलावा ये इज्ज़त बहुत कम लोगों को मिलती है के वो इस तरह खुदा के हुज़ूर पेश किये जाएँ, तुम वाकई बहुत खुश नसीब हो।"

www.iqbalkalmati.blogspot.com : مزید کتب پڑھنے کے لئے آج ہی وزٹ کریں

हम आगे बढ़े तो मेरे मन में एक सवाल पैदा हुआ जिस का पूछ लेना ही मैंने बहतर समझते हुए जिब्राइल अमीन से अर्ज़ किया:

"क्या हम सिद्रातुल मुन्तहा की तरफ जा रहे हैं?"

"नहीं...." जिब्राइल अमीन ने जवाब दिया, फिर आगे बोले कि:

"लगता है कि तुम्हारे मन में मैराज वाली बात है, वो नबियों का रास्ता है, नबियों के खुदा के हुज़ूर पेश होने कि जगह बहुत आला (उच्च) होती है, और फिर उन्हें कई निशानियाँ दिखाई जाती हैं। तुम्हारा रास्ता बिल्कुल अलग है, तुम्हे सिर्फ खुदा के हुज़ूर सजदा करने की इजाज़त है जो एक बड़ा इनाम है, और मेरे ख्याल से सालेह को भी तुम्हारी वजह से यहाँ तक आने की इजाज़त मिली है।"

उस लम्हे मैंने सालेह को देखा जिस का चेहरा ख़ुशी से दमक रहा था, जिब्राइल अमीन ने बात को जारी रखते हुए कहा:

"खुदा की हस्ती ला महदूद (यानि जो किसी जगह या स्पेस में नहीं समां सकती) है, उसके मकामात भी ला महदूद हैं। तुम्हारी दुनिया में उन मकामात का कोई अंदाज़ा नहीं किया जा सकता, जो कुछ तुम दुनिया में जानते थे वो बहुत थोड़ा और कम था। आज मरने के बाद तुम्हारी आखें खुली हैं, अब तुमने वो दुनिया देखना शुरू किया है जिसके कमालात (नामुमकिन को मुमकिन होते देखना) की कोई हद नहीं।"

मैं जो कुछ देख रहा था वो वाकई जिब्राइल अमीन की बातों की सच्चाई का सुबूत था। मैंने दिल में सोचा के खुदा का शुक्र है कि मैं कुफ्र (इन्कार) और नाफ़रमानी की हालत में नहीं मरा, वरना आँख तो उस वक़्त भी खुलती, मगर जो कुछ देखने को मिलता वो बहुत ज़्यादा बुरा और भयानक होता।

जिब्राइल अमीन की देख रेख में हम कई मंज़िलें तय करते हुए अर्श के फरिश्तो के पास पहुंचे। यहाँ नूर, रंग और रौशनी का एक ख़ूबसूरत और हैरत अन्गेज़ मिश्रण छाया हुआ था जो अल्फाज़ में बयां नहीं किया जासकता। अर्श को उठाने वाले फ़रिश्ते सर झुकाए हुए थे, चहरे पर डर का असर था और साथ ही इतमिनान (संतुष्टि) का नूर फैला हुआ था, जिब्राइल अमीन ने बताया:

"खुदा की बारगाह का हर हुक्म इन्ही फरिश्तों के ज़रये से नीचे जाता और नीचे वालों का हर काम इन्ही के ज़रये से आलम के परवरदिगार के हुज़ूर पेश किया जाता है।"

मैं खुदा के करीब रहने वाले उन फरिश्तों और उन के इस मकाम को हसरत की निगाहों से देख रहा था। उन्होंने भी नज़र उठा कर मुझे देखा और लम्हा भर के लिए उन के चहरे पर मुस्कराहट आई, मेरा होंसला बढ़ा, मैंने कदम अर्श की तरफ बढ़ाऐ। मेरे रोएँ रोएँ से उस हस्ती की हमद व सना (स्तुति) होने लगी जिससे मिलने की ख्वाहिश में मैंने सारी ज़िन्दगी गुज़ारी थी।

फिर चलते चलते मुझ पर न जाने क्यूँ खौफ (डर) सा तारी होने लगा। खुदा से मिलने की बहुत ज़्यादा ख्वाहिश पर उसकी अज़मत (महानता) का एहसास हावी हो गया। इस पल मुझ पर इतना रोब तारी हुआ कि मैं घबरा कर वापस पीछे हटने लगा। हालांकि अर्श अभी बहुत दूर था, लेकिन अर्श के मालिक की अज़मत (महानता) के एहसास से मेरी हिम्मत टूट गई। मुझे लगा कि उस पल मेरा वुजूद (अस्तित्व) पारा पारा होकर फिज़ा में बिखर जाएगा। शायद यही होता, लेकिन ऐसे में मेरे कानों में जिब्राइल अमीन की आवाज़ आई:

"यहीं सजदे में गिर जाओ, इस जगह से आगे सिर्फ अम्बिया हज़रात जाते हैं।"

मैं और सालेह दोनों सजदे में चले गए। जिसे बिन देखे सजदा किया था, आज पहली बार उसे देखकर सजदा किया। देखा तो खैर क्या था, बस आसार देख लिए थे। यह सजदा कितना लम्बा और कितना सुकून देने वाला था, मुझे नहीं याद। जिसने सूरज को रौशनी और चाँद को नूर बख्शा, फूलों को महक और तितलियों को रंग का लिबास पहनाया, तारों को चमक का लहजा और कलयों को चटक की आवाज़ दी, आसमान को ऊँचाइयों का ताज और समन्दरों को घहराइयों का तख़्त दिया, ज़मीन को पैदा करने की शक्ति और नदियों को बहाव का हुस्न दिया, जिसने इंसान को बयान (अपनी बात कहने) का गुण और कुरआन का सौभाग्य दिया। उसके क़दमों में गुज़ारा हुआ एक पल किसी खुश हाल राजा के राज्य से बढ़कर था, लेकिन उस पल को भी ख़त्म होना ही था। अर्श के फरिश्तों की आकर्षक आवाज़ गूंजी:

"वो अल्लाह है जिस के अलावा कोई ईश्वर नहीं।"

यह इस का ऐलान था कि खुदा बात कर रहा है:

आवाज़ आई: "मैं अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई ईश्वर नहीं।"

हर सुर से ज़्यादा अच्छी इस आवाज़ का वह जादू था कि मेरा वुजूद सरापा गोश हो गया। मेरा पूरा शरीर और उसकी हर शक्ति कानों और आवाज़ को सुनने में सिमट आई। मैं कुछ और सुनने के इंतज़ार में था, मगर बातचीत में अंतराल आ गया था। मुझे अहसास हुआ कि शायद अब मुझे कुछ कहना चाहिए, जो पहली बात मेरी ज़ुबान पर आई वह यह थी:

'मालिक! ज़िन्दगी में बस यही एक सच्चाई तो जानी है।' (कि आप के सिवा कोई रब नहीं)

मेरी यह बात मेरे अपने कान मुश्किल से सुन सके। पर हाज़िर और गायब के जानने वाले और दिलों के भेद जानने वाले तक पहुंच गई थी। जवाब मिला:

"मगर यह बात जानने वाला हर इंसान यहाँ तक नहीं आता... जानते हो अब्दुल्लाह! तुम यहां तक कैसे आ गए?"

इस बार मेरे बादशाह कि आवाज़ में अपनाईत का रंग झलक रहा था।

"इसलिए कि तुम्हारी ज़िन्दगी का मकसद लोगों को मेरे बारे में बताना था, मेरी मुलाकात से खबरदार करना था। तुमने मेरी याद को ... मेरे काम को अपनी ज़िन्दगी बना लिया, यह उसका बदला है।"

आसमान और जमीन के मालिक की बात और आवाज सुनते रहना मेरी सब से बड़ी ख्वाहिश (इच्छा) बन चुकी थी, मगर एक बार फिर जहानों के मालिक अपनी बात कहने के बाद ठहर गए। मुझे लगा कि मेरा रब मुझे बोलने का मौका दे रहा है। मैंने अर्ज़ किया:

'क्या मैं आपके पास यहां रुक सकता हूं?'

"मुझसे कोई दूर नहीं होता, न किसी से मैं दूर होता हूँ। मेरा हर बंदा (भक्त) और मेरी हर बंदी जो मेरी याद में जिये, वो मेरे पास रहता है ... और कुछ..."

अंतिम बात से मुझे अंदाज़ा हुआ कि मुलाकात का समय खत्म हो रहा है। मैंने पूछा:

'मेरे लिए क्या हुक्म है?'

"हुक्म का समय चला गया है, अब तो तुम्हें हुक्म देने वाला बनाने का समय आ रहा है। फिलहाल तुम वापस जाओ, अभी ज़िन्दगी शुरू नहीं हुई।"

मैंने चलते चलते पूछा:

'आप क़यामत के दिन मुझे भूलेंगे तो नहीं, मैंने उस दिन की वहशत और आपके नाराज़ होने का बहुत चर्चा सुन रखा है।'

फिज़ा में जैसे मुस्कराहट का हुस्न बिखर गया। खनकते हुए अंदाज़ में आवाज़ आई:

"भूलने कि आदत तुम इंसानों में होती है। राजाओं का राजा ... तुम्हारा मालिक, तुम्हारा रब कुछ नहीं भूलता। रहा मेरा गुस्सा, तो वह मेरे रहम पर कभी काबू नहीं पाता। तुमने तो ज़िन्दगी भर मुझे उम्मीद (आशा) और डर के साथ याद रखा है। मैं भी तुम्हें दरगुज़र (गलतियों को छोड़ देना) और रहमत के साथ याद रखूंगा... लेकिन..."

एक पल ठहर ने के बाद इरशाद हुआ:

"तुम्हारी तसल्ली के लिए में सालेह को तुम्हारे साथ भेज रहा हूं, यह हर जरूरत के समय पर तुम्हारा ध्यान रखेगा।"

यह थी मेरी और सालेह की पहली मुलाक़ात की दास्तान और मेरे साथ रहने कि असल वजह। आलमे बरज़ख में मेरे जिंदगी शरीर के बिना थी। इसमें मेरे अहसास, जज़्बात और मेरा देखना सब वैसे ही थे जैसे सपने में होते हैं (यानी गैर भौतिक)। मगर सोच समझ (चेतना) से भरपूर इस ज़िन्दगी में मुझे इन नेमतों का पूरा अहसास रहता जो स्वर्ग में मुझे मिलने वाली थीं। सालेह मेरी इच्छा पर समय समय पर मुझसे मिलने आता रहा। हर बार वह मुझे नित नई चीजों के बारे में बताता रहता और मेरे सवाल का जवाब देता। धीरे धीरे हमारी दोस्ती बढ़ती गई, फिर आखरी मुलाकात में उसने मुझे बताया था कि ज़िन्दगी शुरू होने जा रही है।

और अब मैं उसके साथ मैदाने हश्र (आखरी अदालत का मैदान) में तेजी के साथ अर्श की ओर बढ़ रहा था।

.....

चलते चलते मैंने आसपास देखा तो नज़र कि हद तक चटयल मैदान नज़र आया। माहौल कुछ ऐसा हो रहा था जैसे फजर (सुबह) की नमाज़ के बाद सूरज निकलने से पहले होता है। यानी हल्का हल्का उजाला हर ओर फैला हुआ था। उस समय इस क्षेत्र में कम ही लोग नज़र आ रहे थे, मगर जो थे उन सब की मंजिल एक ही थी। मेरे दिल में सवाल पैदा हुआ कि उनमें से कोई नबी या रसूल है? मैंने सालेह को देखा। उसे पता था कि मैं क्या पूछ रहा हूँ, वह कहने लगा:

"वह सब पहले ही उठ चुके हैं, हम उन्हीं के पास जा रहे हैं।"

'क्या उनसे मुलाकात का मौका मिलेगा?' मैंने बच्चों की तरह बड़े शौक से पूछा।

वह चलते चलते रुका और धीरे से बोला:

"अब उन्हीं के साथ ज़िन्दगी गुज़रेगी अब्दुल्लाह! तुम अभी तक नहीं समझ पाए कि क्या हो रहा है। आज़माइश (परीक्षा) खत्म हो चुकी है, धोके खत्म हो चुके हैं, अब असल ज़िन्दगी शुरू हो रही है जिसमें अच्छे लोग अच्छे लोगों के साथ रहेंगे और बुरे लोग हमेशा बुरे लोगों के साथ रहेंगे।"

असल में बात यह थी कि अभी तक मैं शॉक (Shock) से नहीं निकल सका था। दरअसल अभी तक नई दुनिया कि सारी जान पहचान आलमे बरज़ख में हुई थी। वो एक तरह की रुहानी (आध्यात्मिक) दुनिया थी, मगर यहाँ हश्र में तो सब कुछ माद्दी (भौतिक) दुनिया जैसा था। मेरे हाथ पाँव, अहसास, ज़मीन आसमान सब कुछ वही था, जिसका मैं पिछली दुनिया में आदी था। वहाँ मेरा घर था, घर वाले थे, मेरा मोहल्ला, मेरा इलाका, मेरी कौम ....

यह सब सोचते सोचते मेरे मन में एक धमाका हुआ। मैंने रुक कर सालेह को दोनों हाथों से पकड़ लिया:

'मेरे घर वाले कहाँ हैं? मेरे रिश्तेदार, मेरे दोस्त सब कहाँ हैं? उनके साथ क्या होगा? वह क्यों नज़र नहीं आ रहे?'

सालेह ने मुझसे नज़रें चुराकर कहा:

"जिन सवालों का जवाब मुझे नहीं पता वह मुझसे मत पूछो। आज हर इंसान अकेला है, कोई किसी के काम नहीं आ सकता। अगर उनके आमाल (कर्म) अच्छे हैं, तो विश्वास रखो वह तुमसे आ मिलेंगे, उनके साथ कोई नाइंसाफी नहीं होगी। और अगर ऐसा न हुआ तो...."

सालेह बात अधूरी छोड़कर चुप हो गया। उसकी बात सुन कर मेरा चेहरा भी बुझ गया। उसने मेरे कंधे पर हाथ रखकर मेरा हौसला बढ़ाया और कहा:

"अल्लाह पर भरोसा रखो, तुम अल्लाह कि फ़ौज में लड़ने वाले सिपाही थे। इसलिए पहले उठ गए हो। बाकी लोग अभी उठ रहे हैं, इंशाल्लाह वे भी खैर के साथ तुम से मिल जाएंगे, अभी तो तुम आगे चलो।"

इस तसल्ली से मुझे कुछ साहस हुआ और मैं उसके साथ चलने लगा।

****

अर्श के साए में

हम हवा के नरम और तेज झोनकों की तरह आगे बढ़ रहे थे। इस चलने में कोई परेशानी न थी बल्कि मज़ा आ रहा था। न जाने हमने कितना फासला तय किया था, तभी सालेह कहने लगा:

"अर्श इलाही के साये में मामून इलाक़ा शुरू होने वाला है, वो देखो! आगे फरिश्तों की एक भीड़ नजर आ रही है। उनके पीछे एक ऊँचा दरवाजा है, यही अंदर जाने का दरवाज़ा है।"

मैंने सालेह के कहने पर सामने गौर से देखा तो वाकई फ़रिश्ते और उनके पीछे एक दरवाजा नज़र आया। लेकिन यह अजीब दरवाजा था जो किसी दीवार के बिना ही खड़ा था, या शायद दीवार न दिखने वाली थी क्योंकि दरवाजे के पीछे और कुछ नज़र नहीं आ रहा था, जैसे एक नज़र न आने वाला पर्दा था जो दरवाजे के पीछे के हर नज़ारे को ढक रहा था।

खैर, उसकी बात सुनते ही मेरे कदम तेज़ हो गए और दूरी तेजी से घुटने लगी। दरवाज़ा अभी दूर ही था, लेकिन फरिश्ते साफ नज़र आने लगे थे। यह बहुत कठोर ऊंचे और तड़ंगे फरिश्ते थे जिनके हाथ में आग के कोड़े देख कर मैं घबरा गया। मैंने सालेह का हाथ मजबूती से पकड़ कर उसे रोकते हुए कहा:

'तुम शायद गलत दिशा में जा रहे हो, यह तो अज़ाब के फरिश्ते लगते हैं।'

"चलते रहो।" उसने रुके बिना जवाब दिया।

मजबूर था मुझे भी उसके पीछे जाना पड़ा, लेकिन मैंने ये किया कि उससे दो कदम पीछे चलने लगा ताकि अगर पलट कर भागने की नौबत आए तो उससे आगे ही रहूँ। सालेह को मेरे अहसासों का अंदाज़ा हो चुका था, उसने बात को साफ़ करना ही सही समझा:

"यह बेशक अज़ाब ही के फरिश्ते हैं।"

मैंने उसकी बात बीच ही में से उचक कर कहा:

'और यहां इसलिए खड़े हैं कि आगे बढ़ने से पहले मेरी पिटाई करके मेरे गुनाह झाड़ें।?'

वह मेरी बात सुन कर जोर जोर से हंसने लगा और बोला:

"यार देखो अगर पिटाई होनी ही है तो तुम्हे भगने से कोई फायदा नहीं होगा, कोई इंसान इन फरिश्तो की रफ़्तार और ताकत का मुकाबला नहीं कर सकता। वैसे तुम्हारी जानकारी के लिए बतादूँ कि यह तुम्हारे लिए यहाँ नहीं खड़े हैं, बल्कि इसलिए खड़े हैं ईश्वर का कोई अपराधी अगर इस तरफ आने की कोशिश करे, तो उसे इतना मारें कि वह दोबारा इस ओर आने की हिम्मत न करे।"

हमारे करीब पहुंचने से पहले ही उन्होंने दो भागों में बट कर हमारे लिए रास्ता बना दिया, और उस पर एक इनायत ये भी की के कोड़ों को अपने पीछे छिपा लिया। मेरा ख्याल था कि शायद अब ये हमें देखकर मुस्कुराएँगे और ख़ुशी का इज़हार करेंगे, लेकिन मैं कोशिश के बावजूद भी उनके चेहरे पर कोई मुस्कान न ढूँड सका। सालेह कहने लगा:

"इनके यहाँ होने का एक मकसद तुम्हें अल्लाह की नेमत का एहसास दिलाना है कि किस तरह के फरिश्तों से तुम्हें बचा लिया गया।"

आप से आप मेरी जुबान से खुदा की बड़ाई और शुक्र अदा होने लगा।

उनके बीच से गुजर कर हम दरवाजे के पास पहुंचे तो वह खुद ब खुद खुल गया। उसके खुलते ही मेरी नज़रों के सामने एक सुहाने मौसन की जगह आ गई। यहां से वो जगह शुरू हो रही थी जहां अर्श इलाही की रहमतें साया कर रही थीं। रूह तक उतर जाने वाली ठंडी हवाएं और सुकून देने वाली खुशबू मुझे छूने लगी थीं।

हम दरवाज़े से अन्दर दाखिल हुए तो देखा कि दूर तक फरिश्ते कतार लगाए खड़े थे। उनके चेहरे बेहद आकर्षक और इससे कहीं अधिक ख़ूबसूरत मुस्कान उनके चेहरे पर थी, यह हाथ बांधे अदब के अंदाज़ में खड़े थे। हम जैसे ही उनके बीच से गुज़रे, दुआ और सलाम और स्वागत है के शब्दों से हमारा स्वागत शुरू हो गया। उनके व्यवहार और शब्दों की तासीर मेरी रूह की गहराई में उतर रही थी और उनके वुजूद (अस्तित्व) से उठने वाली खुशबुएँ मेरे अहसास को और ज़्यादा खुशनुमा बना रही थी।

यहां दाखिल होते ही मुझे यह लगा कि मेरे अंदर कोई असाधारण बदलाव आया है, लेकिन उस समय मेरा सारा ध्यान फरिश्तों और यहां के आकर्षक माहौल की तरफ था इसलिए मैं ज़्यादा

ध्यान नहीं दे सका कि मेरे साथ क्या हुआ है। मैंने इस हालत को बस यहाँ के माहौल का असर समझा। चलते चलते मुझे कुछ ख्याल आया तो मैंने सालेह के कान में हलके से कहा:

'यार यह तो ठीक है कि लोग मुझे कोई बख्शा हुआ इंसान मान कर मेरा स्वागत कर रहे हैं, लेकिन यहाँ मेरा निजी जानकार तो कोई नहीं है, क्या यहाँ तुम्हारा कोई परिचित है?'

मेरी बात सुनकर सालेह हँसते हुए बोला:

"अब्दुल्लाह! आज हर इन्सान अपने माथे से पहचाना जाएगा कि वह कौन है, तुम्हें पता नहीं लेकिन तुम्हारा पूरा परिचय तुम्हारी माथे पर लिखा है। तुम देखते जाओ आगे क्या होता है।"

कतार के आखिर पर खड़ा एक फ़रिश्ता, जो अपने ढंग से इन सब का सरदार लग रहा था, मेरे पास आया और मेरा नाम लेकर उसने मुझे सलाम किया। मैंने सलाम का जवाब दिया। फिर वह बहुत नरमी और प्यार से बोला:

"हमेशा बाक़ी रहने वाली कामयाबी मुबारक हो!"

मैंने जवाब में धन्यवाद किया था कि वो बोला:

"क्या आप आईना देखना पसंद करेंगे?"

मेरी समझ में नहीं आया कि उसने यह बात मज़ाक में कही थी या गंभीरता से, क्योंकि तब आईना देखने की कोई सही वजह मुझे समझ में नहीं आ रही थी। लेकिन उसने मेरे जवाब का इंतजार नहीं किया, एक फरिश्ते को इशारा किया और अगले ही पल मेरे सामने एक इन्सान के कद के बराबर बड़ा आईना था। मैंने इस आईने को देखा और मुझे विश्वास हो गया कि उसने मेरे साथ मजाक किया था। क्योंकि यह आईना नहीं बल्कि एक बहुत सुंदर और ज़िन्दगी से भरपूर पेंटिंग थी जिसमें एक सुंदर युवा बल्कि शहजादा शाही लिबास पहने खड़ा था। यह तस्वीर किसी भी तरह से तस्वीर नहीं लग रही थी बल्कि यूं लग रहा था कि जैसे आईने के सामने कोई आदमी खड़ा हुआ है।

मैंने उस फरिश्ते की ओर देखा और मुस्कुरा कर कहा:

'आप अच्छा मजाक करते हैं, लेकिन पेंटिंग उससे भी अच्छी कर लेते हैं। चित्रकार तो आप ही लगते हैं, लेकिन इसमें मॉडल कौन है?'

फरिश्ते ने बहुत गंभीरता से मेरी बात का जवाब दिया:

"चित्रकार तो सारी सूरतें बनाने वाला इज्ज़त वाला सारे जहानों का मालिक है, लेकिन मॉडल आप हैं।"

इसके बाद उसने सालेह को इशारा किया। वो मेरे पास आया और मेरा सर घुमाकर फिर पेंटिंग की ओर कर दिया। इस बार पेंटिंग में युवा के साथ सालेह भी दिख रहा था। मैं हैरत से कभी सालेह को देखता और कभी उस आईने में खड़े दूसरे व्यक्ति को जिसके बारे में दोनों की समान राय यह थी कि यह मैं ही था।

'मगर यह तो मैं नहीं हूँ !" मैंने ज़ोर से कहा।

जवाब में सालेह ने एक मिसरा पढ़ दिया:

"ऐ जान-ए-जहां ये कोई तुम सा है कि तुम हो"

'लेकिन यह कैसे मुमकिन है? मैं तो एक बूढ़ा इन्सान था और जवानी में भी कम से कम ऐसा तो बिल्कुल नहीं था!'

इस बार मेरी बात का जवाब दुसरे फरिश्ते ने दिया:

"आप नामुमकिन की दुनिया से मुमकिन की दुनिया में आ गए हैं, आप इंसानों की दुनिया से खुदा की दुनिया में आ गए हैं। आज हर इन्सान वैसा नहीं दिखाई देगा जैसा वह दुनिया में दूसरे इंसानों को नज़र आता था। बल्कि आज हर इन्सान वैसा दिखेगा जैसा वह अपने मालिक (ईश्वर) को नज़र आता था। और मालिक की नज़र में इन्सान की सूरत गिरी उनके हड्डी, मांस और खाल से नहीं बल्कि उनके ईमान और अखलाक (नैतिकता) और आमाल (कार्यों) के हिसाब से होती थी। आप उसे दुनिया में जैसे लगते थे, वैसा ही आज उसने आपको बना दिया है। वैसे यह आरजी इंतजाम (अस्थायी व्यवस्था) है। आपकी असल शख्सियत (व्यक्तिव) उस समय सामने आएगी, जब जन्नत में आपके दर्जों (वर्गों) का फैसला अंतिम रूप में होगा। फिलहाल तो आप आगे जाइये, कई अन्य लोग आपका इंतज़ार कर रहे हैं।"

www.iqbalkalmati.blogspot.com : مزید کتب پڑھنے کے لئے آج ہی وزٹ کریں

.....

हम आगे की ओर बढ़ने लगे। मुझे अंदाजा हो चुका था कि अंदर दाखिल होते ही मुझे जिस बदलाव का एहसास हुआ था वो क्या था, मेरी चाल में बहुत विश्वास था। शायद यह आईने का असर था कि अब मुझे यकीन आने लगा था कि रब ने मुझे इज्ज़त वालों में करके मेरे नसीब को हमेशा की लिए जगा दिया है। मेरी ज़िन्दगी के रात और दिन और उन में आने वाली मुश्किलें अब मेरे लिए ख्वाब और ख्याल हो चुके थे। पिछली दुनिया की गरीबी, सब्र (धैर्य) और महनतें कभी इस तरह भी रंग लाएँगी, मुझे इसका बिल्कुल अंदाजा नहीं था। क़ुरआन और हदीसों में अगली दुनिया का बहुत कुछ पढ़ा था, मगर आँख जो कुछ देख सकती है, कान सुनते हैं और मन महसूस करता है वह शब्दों से बहुत ही कम समझ में आता है। आज जब यह सब सच्चाइयाँ सामने हैं तो यकीन नहीं होता कि .... मुझे यह अंदाज़ा तो ज़िन्दगी ही में हो चुका था कि परलोक की बाजी में जीत जाऊँगा। लेकिन इस जीत का मतलब इतना शानदार होगा, इसका मुझे बिल्कुल भी अंदाज़ा नहीं था।

"तुम्हें अब भी पूरा अंदाजा नहीं है।"

सालेह पता नहीं कैसे मेरे ख्याल पढ़ लेता था, उसके बोलने ने मुझे चोंका दिया। उसने अपनी बात जारी रखी:

"असल ज़िंदगी तो अभी शुरू ही नहीं हुई, अभी तो तुम हश्र के शुरूआती मरहले (चरण) में हो। असल ज़िंदगी तो हकीकत में जन्नत में शुरू होगी, तब खुदा का इनाम देखना, तब खुदा को दाद देना। फिलहाल तो आगे देखो, हम कहां खड़े हैं।"

उसकी बात से मुझे एहसास हुआ कि मैं अपने माहोल से बिल्कुल बेखबर होकर चल रहा था। मैंने नज़र उठाकर देखा, इस समय हम एक विशाल और हरे भरे मैदान में थे। आसमान पर सूरज चमक रहा था, इसमें रोशनी थी पर धूप न थी। आसमान पर कहीं बादल नहीं थे, लेकिन ज़मीन पर हर जगह जैसे छाँओं थी ज़मीन हरी थी। शायद इसी के असर से आसमान हल्के नीले के बजाय हल्का हरा हो रहा था। मैदान के बीच में एक गगनचुम्बी पहाड़ था। मुहावरतन नहीं, सचमुच गगनचुम्बी। क्योंकि उसकी चोटी जहां हम खड़े देख रहे थे, आसमान में जमी हुई लग रही थी। वातावरण में हर तरफ भीनी भीनी खुशबू महक रही थी, यह खुशबू हर ऐतबार से

बिल्कुल नई थी मगर बहुत महसूस होने वाली थी। हमारे कान हमें उन नेमतों का एहसास दिला रहे थे जो कानों में रस घोलने वाले जैसे संगीत के साथ चारो तरफ बिखरे हुए थे। मुझे यह लग रहा था कि यह खुशबू और ये आवाजें मेरी नाक और कान के रास्ते से नहीं बल्कि सीधे मेरे दिल तक पहुंच रही हैं। उसकी तासीर में महक और आराम और सुरूर इस खूबसूरत अनुपात में इकट्ठा थे कि मुझे अपना अन्दर झूमता हुआ महसूस होने लग रहा था।

मैं एक जगह रुक कर खड़ा हो गया और आंखें बंद करके इस माहौल में खो गया। सालेह ने मेरी एकाग्रता देखकर कहा:

"इस पहाड़ का नाम आराफ है, आओ इसके आसपास चक्कर लगाते हैं। मैं साथ साथ तुम्हें यहां की सारी जानकारी से अवगत करता रहूंगा।"

मैं जवाब दिए बिना बेसुध की सी हालत में सालेह के साथ हो लिया। हमने दाईं ओर से अपना सफर शुरू किया, हम कुछ दूर ही चले थे कि पहाड़ के एक हिस्से पर 'आदम की उम्मत' लिखा हुआ नज़र आया। मैंने सालेह से पूछा:

'क्या यहां आदम अलैहिस्सलाम हैं?'

"नहीं, सारे नबी पहाड़ के ऊपर वाले हिस्से पर हैं। तुम देखोगे कि हर थोड़ी थोड़ी देर बाद इसी तरह किसी न किसी नबी और उसकी उम्मत का नाम लिखा नज़र आएगा। हर उम्मत के निजात याफ्ता (मुक्ति प्राप्त) लोग... तुम्हारे जैसे बख्शे हुए लोग... यहाँ आकर जमा होंगे।" उसने जवाब दिया।

'क्या मुझे उम्मत मुहम्मदी के शिविर में जाना होगा?' इस पर मैंने गंभीरता से पूछा।

सालेह ने ना में सर हिलाया और बोला:

"इन जंगहों पर बख्शे हुए लोग खड़े होंगे और हिसाब के आखिर से यहीं से जन्नत में जाएगें। तुम्हें पहाड़ के ऊपर जाना होगा, वहां सारे नबी और उनकी उम्मतों के वो लोग इकट्ठा हैं जिन्होंने नबियों की पैरवी में लोगों को हक की दावत दी। ये लोग यहीं से इंसानों के बारे में खुदा का फैसला देखते रहेंगे। उसी जगह से उन्हें इंसानों पर गवाही देने के लिए बुलाया जाएगा। हर नाकामयाब आदमी जहन्नम की ओर, और हर कामयाब आदमी पहाड़ के नीचे अपने अपने

नबी के शिविर में आता जाएगा। फिर हर उम्मत यहीं से समूह बना कर जन्नत में जाएगी। यह वह जगह है जहां से खुदा की अदालत में हो रहे सभी फैंसलों को सीधे देखा जा सकता है। स्वर्ग और नरक भी यहां से दिखाई देता है।"

हम ये बातें कर रहे थे और एक एक करके सभी नबियों की उम्मतों की जंगहों से गुजरते जा रहे थे, तब तक हर जगह बहुत कम लोग थे। मैंने सालेह से कहा:

'शायद अभी सभी लोग नहीं आए।'

उसने कहा:

"नहीं यह बात नहीं, दूसरे नबियों की उम्मत से बख्शे हुए लोग हैं ही बहुत कम। ज़्यादा तर लोग बनी-इसराइल (यहूदी) में से हैं और सबसे ज़्यादा उम्मते मुहम्म्मादिया में से हैं। दोनों गिरोह अभी तक नहीं आए, लेकिन फ़िलहाल वहां भी ज़्यादा लोग नहीं हैं, लेकिन थोड़ी देर में हो जाएगें। आओ अब ऊपर चलते हैं, इस पहाड़ का चक्कर तो बहुत लंबा हो जाएगा।"

.....

मुझे ऊँचे स्थानों पर चढ़ने का हमेशा से शौक रहा है। लेकिन शायद यह मेरी ज़िन्दगी की सबसे अजीब ऊंचाई थी, ये देखने में बहुत ऊँची और आसमान तक थी। मगर हम ज़मीन को इस तरह देख रहे थे जैसे कुछ मंजिल ही ऊपर खड़े हों। नीचे से जो जगह एक चोटी की तरह लग रही थी वह एक सीधी सतेह थी, इस के बाद इस ज़मीन पर थोड़ी थोड़ी दूर पर किलों के जैसी ऊँची ऊँची और भव्य छतें बनी हुई थीं, लेकिन उनके आसपास कोई दीवार न थी और न उनमें दरवाजे ही मौजूद थे, इसलिए बाहर से भीतर देखा जा सकता था। यहां हर तरफ शाही अंदाज के नज़ारे थे, आलीशान गद्दियों पर ताज पहने हुए बहुत बावकार (प्रतिष्ठित) हस्तियां बैठी हुई थीं, उनके आसपास उसी शान के लोग शाही सीटों पर बिराजमान थे। मैंने सालेह से इन ऊँचे निर्माण के बारे में पूछा तो उसने कहा:

"यह अलग अलग नबियों की आरजी (अस्थायी) आराम करने की जगह हैं, इसी आधार पर इस पहाड़ को आराफ़ कहा जाता है। तुम तो जानते हो कि आराफ़ का मतलब बुलंदियों का मजमुआ (ऊँचाइयों का संग्रह) है।"

मैंने हाँ में सर हिलाया तो वह बातचीत का सिलसिला जारी रखते हुए बोला:

"सिंहासन पर बैठे हुए हज़रात अम्बिया हज़रात हैं, और उनके आसपास बैठे लोग उनकी उम्मत के शोहदा (गवाही देने वाले) और सिद्दिकीन (सच कर दिखाने वाले) लोग हैं। सिद्दिकीन वह लोग हैं जिन्होंने नबियों के जीवन में उनका साथ दिया और शोहदा वह लोग हैं जिन्होंने नबियों के बाद उनकी दावत व पैगाम को आगे पहुंचाया। यह सब वे लोग थे जो दुनिया में ख़ुदा के लिए जिये और उसी के लिए मरे, उसी के सिले में इन लोगों को आज ये सम्मान और इज्ज़त मिली हैं जिसे तुम अपनी आँखों से देख रहे हो।"

'क्या यह मुमकिन है कि नबियों से मेरी मुलाकात हो सके?' मैंने पूछा।

"सब से मिलने का समय तो नहीं है लेकिन कुछ से जरूर मिल सकते हैं।"

उसने जवाब दिया और फिर एक एक करके खुदा के जलीलुल क़द्र (बड़े बड़े) पैग़म्बरों से मेरी मुलाक़ात करानी शुरू की। वह पैगम्बर जिन के लिए मेरे दिल में अज़मत ही अज़मत थी, आज मैं उनसे मिल रहा था। आदम, नूह, हूद, सालेह, इस्हाक़, याकूब, यूसुफ, शोएब, मूसा, हारून, यूनुस, दाऊद, सुलैमान, ज़करिया, याह्या, ईसा (अ) और सबसे बढ़कर अबू अल अम्बिया सय्यदना इब्राहीम अलैहिमुस्सलाम। सबने गले लगाकर और मेरा माथा चूम कर मेरा स्वागत किया और मुझे बधाई दी।

इन जलीलुल क़द्र (प्रतिष्ठित) हस्तियों से बात करने के बाद हम आगे रवाना हो गए, मगर मुझे बातचीत के दौरान यह महसूस हुआ था कि सब लोग एक तरह की परेशानी और फ़िक्र में हैं। रास्ते में सालेह से मैंने इसकी वजह पूछी तो वह बोला:

"तुम्हें नहीं मालूम इस समय हश्र के मैदान में क्या क़यामत बरपा है, इस समय हर नबी परेशान है कि इंसानों का क्या होगा। अल्लाह के अज़ाब की तीव्रता इतनी ज़्यादा है कि नबियों में से कोई भी नहीं चाहता कि उसकी उम्मत खुदा के अज़ाब का सामना करे, वह चाहते हैं कि अल्लाह लोगों को माफ़ कर दें। लेकिन फिलहाल इसकी कोई संभावना नहीं, ऐसी कोई ना दुआ की जा सकती है और ना इसकी इजाज़त है। लोग सैकड़ों साल से बदहवास और परेशान हैं और फ़िलहाल हिसाब किताब शुरू होने की भी कोई उम्मीद नहीं है।"

'सैकड़ों साल? क्या मतलब! हमें तो अंदर आए हुए मुश्किल से एक दो घंटे बीते होंगे।' मैंने चौंक कर आश्चर्य से कहा।

"यह तुम समझ रहे हो, आज का दिन सफल लोगों के लिए घंटों का है और बाहर मौजूद लोगों के लिए बहुत सख्ती और मुसीबत का एक बेहद लम्बा दिन है। बाहर सदियाँ गुज़र गई हैं, मगर तुम अभी यह नहीं समझोगे।" उसने स्पष्ट करते हुए जवाब दिया।

मैं इस बात को हजम नहीं कर सका, लेकिन जाहिर है मैं जिस दुनिया में था वहाँ सब कुछ मुमकिन था। और न जाने और कितनी ताज्जुब भरी बातें मेरे सामने आने वाली थीं।

.....

सहाबा हज़रात और मुहाजिरीन और अन्सार (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्लम के साथी) गोल दायरा बनाए अदब और सम्मान से बैठे थे। उम्मते मुहम्मद्या के पहले और आख़री लोगों की एक बड़ी संख्या मौजूद थी। शमा-ए-रिसालत के इन परवानों के बीच रिसालतमआब (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्लम) सर झुकाए तशरीफ़ फ़रमा थे। लगता था सब कुछ बिल्कुल ठीक है, मगर मैं महसूस कर सकता था कि यहां भी इसी तरह की बेचैनी फैली हुई थी जिसे मैं पहले देख आया था।

"रसूल अल्लाह (ﷺ) इस समय बारगाह इलाही में दुआ (प्रार्थना) कर रहे हैं, हमें बैठकर इंतजार करना चाहिए।" सालेह पिछली सीटों की तरफ बढ़ते हुए बोला।

हम पिछली सीटों पर बैठ गए, यहां से यह अंदाज़ा करना मुश्किल था कि आगे क्या हो रहा है। मैंने हलके से सालेह से पूछा:

'यह हिसाब किताब कब शुरू होगा?'

"मुझे क्या मालूम, किसी को भी पता नहीं है।" उसने जवाब दिया।

उसकी बात सुनकर मैं चुप हो गया और सीट के पीछे सर टिकाकर आँखें बंद करके बैठ गया। न जाने कितना समय बीता था कि सालेह की आवाज़ मेरे कान में आई:

"अब्दुल्लाह उठो! देखो तुम से कौन मिलने आया है, उसकी आवाज़ पर मैं चौंक कर खड़ा हो गया। सामने देखा तो एक बहुत प्रतिष्ठित हस्ती मेरे सामने खड़ी थी। उनके चेहरे पर मुस्कान और आंखों से प्यार के आसार झलक रहे थे। इससे पहले कि सालेह और कुछ कहता, उन्होंने नरम लहजे में अपना परिचय देते हुए कहा: "मरहबा अब्दुल्लाह! मेरा नाम अबू बक्र है। रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ से मैं तुम्हारा स्वागत करता हूँ।"

यह कहते हुए उन्होंने अपने दोनों हाथ फैला दिए, मैं उत्साहित अंदाज में उनसे गले मिला। हाल चाल पूछने के बाद वे मुझे लोगों से ज़रा दूर ले कर एक सीट पर जा बैठे। मैंने बैठते ही उनसे पूछा:

'मैं रसूल अल्लाह (ﷺ) से कब मिल सकता हूँ?।'

"रसूल अल्लाह इस समय बारगाह इलाही में शुक्र और दुआ में व्यस्त हैं, तुम उनसे बाद में मिल सकते हो। इस समय बताने की खास बात यह है कि अल्लाह की बारगाह में हुज़ूर की यह दुआ कुबूल हो गई है कि लोगों का हिसाब किताब शुरू हो। इस कुबूलियत की घड़ी में तुम ने भी दुआ की थी, तुम फिर हश्र के मैदान में जाकर वहां के हालात देखना चाहते थे? तो तुम्हें भी इसकी इजाज़त मिल गई है। हिसाब किताब कुछ देर बाद शुरू होगा, तब तक तुम लोगों के हालात देख सकते हो। यह संदेश दे कर ही रसूल अल्लाह (ﷺ) ने मुझे तुम्हारे पास भेजा था।"

यह सुनकर मेरे चेहरे पर खुशी के आसार ज़ाहिर हुए, जिन्हें देख कर रसूल के खलीफा के चेहरे पर भी मुस्कान आ गई। एक अंतराल के बाद वे फिर बोले:

"बाहर बहुत सख्त माहौल है, सालेह हालांकि तुम्हारे साथ होगा, मगर फिर भी तुम यह पीते जाओ। यह शरबत तुम्हें बाहर के मौसम से सुरक्षित कर देगा।"

यह कहकर उन्होंने पास रखा सुन्हेरे रंग का जगमगाता हुआ एक गिलास मेरी ओर बढ़ाया। मैंने दोनों हाथ आगे बढ़ाकर यह गिलास उनके हाथों से लिया और अपने होठों से लगा लिया।

गिलास होठों से लगाते ही एक अजीब घटना हुई, मैं हालांकि बिल्कुल प्यासा नहीं था और न किसी तकलीफ़ और बेचैनी में था, लेकिन जो संतोष मुझे मिला वह शायद सदियों के किसी प्यासे को पानी का पहला घूंट पीने पर भी नहीं मिलता होगा। इस शरबत का एक घूंट हलक से उतरते ही स्वाद, सुकून, आसूदगी, मिठास और ठंडक के शब्द अपने ऐसे मतलब के साथ मुझ

पर स्पष्ट हुए जो अनुभव मुझे तो क्या, किसी इन्सान को कभी नहीं हुआ होगा। इस शरबत का एक एक कतरा मेरी जुबान से गले, गले से सीने और सीने से पेट तक उतरता रहा और मेरी रग रग को सुकून पहुंचाता गया। मेरा दिल तो चाहा कि एक ही घूंट में पूरा गिलास पी जाऊं, मगर जिस हस्ती के सामने बैठा था, उसके अदब और इज्ज़त की वजह से न पी सका। मैंने हल्के से सवाल किया:

'यह क्या चीज़ है?'

"यह नया जीवन और नई दुनिया का पहला परिचय है, यह जाम-ए-कौसर है। इसे पीने के बाद हश्र में गर्मी और प्यास तुम्हें नहीं सताएगी।"

यह शब्द सुनते ही मुझे समझ में आ गया कि मुझ पर शरबत का असाधारण असर क्यों हुआ था? यह जन्नत की नहर कौसर का पानी था और बेशक वह सभी गुण रखता था जिनका ज़िक्र मैं हमेशा सुनता रहा था। उस पल मुझे यह भी अंदाज़ा हुआ कि जन्नत की नेअमतें क्या होंगी, पिछली दुनिया में खाने पीने का मज़ा दो चीजों में छुपा था। एक यह कि इंसान को बहुत तेज़ भूख और प्यास लगी हो और दूसरे उसे खाने पीने के लिए बहुत लज़ीज़ (स्वादिष्ट) चीज़ मिल जाए। लेकिन जन्नत की हर चीज़ अपने आप में बहुत स्वाद के साथ साथ इंसान को बिना भूख और प्यास के वह स्वाद और सुकून भी देगी, जो एक बहुत भूखे और प्यासे इंसान को मिल सकती है। अब मुझे मालूम हो गया कि जन्नत में न भूख होगी और न प्यास, लेकिन इसके बावजूद इंसान जितना चाहेगा शौक से खाएगा। और उसकी कोई खाने की चीज़ ऐसी न होगी जो उसे बुरी लगे या पेट भारी करदे।

****

हश्र का मैदान

हम दोनों एक बार फिर तेजी से चल रहे थे। अर्श की हदों से निकलते ही एक बहुत गर्म और वहशत से भरपूर माहौल से वास्ता पड़ा, लगता था कि सूरज नौ करोड़ मील से सवा मील पर आकर दहकने लगा है। हवा बिल्कुल बंद थी, लोग पसीने में डूबे हुए थे, पानी का नाम व निशान नहीं था। मुझ पर कौसर के जाम का असर था वरना इस माहौल में तो एक लम्हा बिताना नामुमकिन था, मगर मैं देख रहा था कि अनगिनत लोग इसी माहौल में बदहाल घूम रहे थे। चेहरों पर वहशत, आंखों में डर, बाल धूल से भरे, शरीर पसीने से नहाता हुआ, वुजूद (अस्तित्व) मिट्टी से अटा हुआ, पैरों में छाले और उन छालों से रिसता हुआ खून और पानी। इतनी बड़ी तादाद में इतने ज़्यादा परेशान लोगों का यह मन्ज़र मैंने ज़िन्दगी में पहली बार देखा था। हर तरफ अराजकता छाई हुई थी, हर किसी को अपनी पड़ी थी। मेरी नज़रें किसी ऐसे व्यक्ति को खोज रही थीं जिसे मैं जानता हूँ। पहला इंसान जो मुझे नज़र आया जिसे मैं जानता था वो थे मेरे उस्ताद (गुरु) फरहान अहमद। उन्होंने दूर से मुझे देखा और तेजी के साथ मेरी आँखों से ओझल होने की कोशिश करने लगे। मैंने सालेह से कहा:

"उन्हें रोको! यह मेरे उस्ताद हैं, मैं उनसे बात करना चाहता हूँ।"

मगर उसने मुझे उनकी ओर बढ़ने से रोक दिया और गुस्सा और नफरत भरे लहजे में बोला:

"देखो अब्दुल्लाह! अपने उस्ताद के अपमान को और ज़्यादा मत बढाओ। इस समय यहां अगर किसी का हाल खराब हो रहा है तो समझ लो कि उसके साथ इन्साफ हो चुका है। वह खुदाई कसौटी पर खोटा सिक्का निकला, इसलिए इस हाल में है।"

मैं तड़प कर बोला:

'मगर हमने तो खुदा परस्ती और परलोक की सोच और अच्छे अखलाक की सारी बातें उन्हीं से सीखी थी।'

"सीखी होंगी।" सालेह ने बेपरवाई से जवाब दिया।

"मगर उनका इल्म (ज्ञान) उन का व्यक्तित्व नहीं बन सका। देखो! खुदा के सामने किसी इंसान का फैसला उसके इल्म (ज्ञान) के आधार पर नहीं होता, उसका का अमल (कर्म), सीरत और किरदार ही बुनियादी चीज़ें है। इल्म (ज्ञान) केवल इसलिए होता है कि इंसान सही आधार पर अपने आप को सँवार सके। इल्म ज़ाहिर तक रहे तो साँप है और अन्दर उतर जाए तो दोस्त बन जाता है।

यही तुम्हारे उस्ताद के साथ हुआ है, वह एक अच्छे लेखक थे, बातें भी अच्छी करते थे। लेकिन उनकी सीरत और किरदार उनकी बातों के अनुसार न थी। वास्तव में तुम्हारे उस्ताद साँप पाल रहे थे, आज इल्म के इन सांपों ने उन्हें डस लिया है। आज यहां जब तुम लोगों को देखोगे तो उन्हें उनके ज़ाहिर और उनकी बातों के अनुसार नहीं पाओगे, बल्कि उनके व्यक्तित्व को ठीक वैसे ही देखोगे जैसा कि वो अन्दर से थे। याद रखो! ख़ुदा लोगों को उनके ज़ाहिर और उनकी बातों पर नहीं परखता, वो अमल और किरदार को देखता है। खासकर अहले इल्म (ज्ञानी) की पकड़ आज के दिन बहुत सख्त होगी, जो बातें दूसरे लोगों के लिए फाएदे मंद बन जाएगी आज आलिम (ज्ञानी) के लिए फाएदा न दे सकेंगी।"

'मगर उन्होंने बड़ी कुर्बानियां दी थीं।' मैंने हार न मानते हुए कहा।

"हां लेकिन उनका बदला उन्हें दुनिया में मिल चूका है।" सालेह ने जवाब दिया।

"इल्म की ग़लतियाँ माफ हो सकती है, लेकिन किरदार की कमजोरी आज के दिन इसी हाल में पहुंचाएगी जिस हाल में तुम्हारे उस्ताद हैं। खैर अभी तो यह दिन शुरू हुआ है, देखो आखिर तक इनका क्या होता है।"

मैं सदमे की हालत में देर तक गुमसुम खड़ा रहा। मैं एक यतीम इंसान था जिसका कोई रिश्ता नाता न था, मेरे लिए जो कुछ थे मेरे उस्ताद ही थे। उन्होंने मेरी देख भाल की, मुझे इल्म सिखाया, और जीवन में लक्ष्य दिया। जो आदमी मेरे लिए पिता से ज़्यादा कीमती था, उसे इस हाल में देख कर मुझे एक शॉक (Shock) लगा था। इस हाल की वजह से मैं अपने आस पास के माहौल से बे खबर हो गया था।

मेरे सामने अनगिनत लोग भागते, दौड़ते, गिरते पड़ते चले जा रहे थे। वातावरण में आग की लपटों के दहकने की आवाज़ के साथ लोगों के चीख़ने चिल्लाने और रोने पीटने की आवाजें गूंज

रही थीं। लोग एक दूसरे को बुरा भला कह रहे थे, गालियां दे रहे थे, लड़ झगड़ रहे थे, आरोप प्रत्यारोप कर रहे थे, आपस में गुत्थम गुत्था थे।

कोई सर पकड़ के बैठा था, कोई मुँह पर मिटटी डाल रहा था, कोई चेहरा छिपा रहा था, कोई शर्मिंदगी उठा था, कोई पत्थरों से सर टकरा रहा था, कोई अपना सीना पीट रहा था, कोई खुद को कोस रहा था, कोई अपने माँ बाप, पत्नी बच्चों, दोस्तों और अपने बड़ों को अपनी तबाही का जिम्मेदार ठहराकर उन पर बरस रहा था। इन सब का मुद्दा एक ही था.... क़यामत का दिन आ गया और उनके पास इस दिन की तैयारी नहीं थी। अब यह किसी को आरोप दें या खुद को बुरा भला कहें, मातम करें या सब्र का दामन थामें, अब कुछ नहीं बदल सकता, अब तो इंतजार था तो बस जहानों के मालिक के ज़हूर का। जिसके बाद हिसाब किताब शुरू होना था और पूरे इन्साफ के साथ हर व्यक्ति के भाग्य का फैसला किया जाना था।

मगर मैं इस सबसे बेखबर न जाने कितनी देर तक इसी तरह गुमसम खड़ा रहा। अचानक मेरे बिलकुल करीब एक आदमी चिल्लाया:

"हाय.... इससे तो मौत अच्छी थी... इससे तो कब्र का गढ़ा अच्छा था।"

यह चीख जैसी आवाज़ मुझे वापस अपने माहौल में ले आई, पल भर में मेरे मन में शुरू से आखिर तक सब कुछ ताजा हो गया।

.....

मैंने गर्दन घुमा कर सालेह की ओर देखा। उसका चहरा हर प्रकार के हाव भाव से खाली था और वह लगातार मुझे देखे जा रहा था। मेरा ध्यान अपनी ओर आकर्षित पाकर वह बोला:

"अब्दुल्लाह! तुम हश्र के मैदान का हाल जानने के शौक में अपनी जगह छोड़ कर यहां आए हो तो ऐसे कई मंज़र (दृश्य) अब तुम्हें और देखने होंगे। मैं तुम्हें और ज़्यादा सदमे से बचाने के लिए अभी से यह बता रहा हूँ कि तुम्हारी पत्नी, तीन बेटियों और दो बेटों में से तुम्हारी एक बेटी लैला और बेटा जमशैद इसी मैदान में परेशान घूम हैं।"

सालेह की यह बात सुनकर मेरे पैरों के नीचे से ज़मीन निकल गई, मुझे चक्कर सा आया और मैं सर पकड़ कर बैठ गया। सालेह भी मेरे साथ ही जमीन पर चुप चाप बैठ गया।

मेरी आँखों से लगातार आँसू बह रहे थे मगर यहाँ किसी को किसी की कोई परवाह नहीं थी। कोई क्यों बैठा है? क्यों खड़ा है? क्यों लेटा है? कोई क्यों रो रहा है? क्यों चीख रहा है? क्यों मातम कर रहा है? यह किसी का सवाल नहीं था, आज सबको अपनी ही पड़ी थी। ऐसे में कोई रुक कर मुझसे मेरा ग़म क्यों पूछता? लोग हमारे पास से भी बेपरवाह हो कर चले जा रहे थे, कुछ देर बाद मैंने सालेह से पूछा:

'अब क्या होगा?'

"जाहिर है हिसाब किताब होगा, फिर उसके बाद ही कोई अंतिम बात सामने आएगी।"

उसका जवाब दो टूक था, फिर वह अपनी बात की व्याख्या करते हुए बोला:

"जिन लोगों ने आज के दिन की हाज़री को अपने लिए एक ज़रूरी मसला बना लिया था और उसी के लिए जिये, चाहे वह ईमान और अख़लाक़ की ज़रूरतों को पूरी करने वाले नेक लोग हों या ख़ुदा के दीन की मदद को अपनी ज़िन्दगी बनाने वाले इमानदार, सब के सब इस तरह उठाए गए हैं कि उनकी निजात (मुक्ति) का फैसला हो चुका है। इन लोगों ने ज़िन्दगी में सिर्फ नेकयाँ कमाई थी। खुदा और मखलूक (प्राणी) के हक़ (अधिकार) पूरे किए थे। इसलिए उनकी मौत ही उनका परवाना-ए-निजात बनकर सामने आई थी और हश्र के दिन उन्हें शुरू से ही पनाह नसीब हो गई।"

'मगर गुनाह तो सब करते हैं, तो क्या इन लोगों ने कोई गुनाह नहीं किया था?' मैंने पूछा।

"हां गुनाह उन्होंने भी किए थे, मगर उनके छोटे छोटे गुनाह उनकी नेकियों ने खत्म कर दिए और अगर कभी किसी बड़े गुनाह से दामन दागदार हुआ तो उन्होंने फ़ौरन तौबा के आंसुओं से दागों को धो दिया था। ऐसे सभी साफ पवित्र लोग इस समय अर्श के साये के नीचे हैं, इन लोगों का औपचारिक हिसाब किताब होगा जिसके बाद उनकी कामयाबी का ऐलान कर दिया जाएगा।

इसके अलग जिन लोगों के खाते में कोई बड़ा गुनाह हुआ जो ईमान को ही बेफाएदा कर दे जैसे कुफ़्र (इश्वर का इन्कार), शिर्क (एक इश्वर के साथ औरों को भी पूजना), मनाफकत (दोगला पन), हत्या, व्यभिचार, बलात्कार, कमजोरों का माल खाना, खुदा की बनाई हुई हदों को पार करना और इसी प्रकार अन्य अपराध आदि, तो इन्साफ की तराजू में ऐसे लोगों के पापों का

पलड़ा भारी होगा और उन्हें नरक की सज़ा सुनादी जाएगी।" सालेह ने कानून की खोल कर व्याख्या की।

'लेकिन इंसान तो इन दो हदों के बीच भी होते हैं, उनका क्या होगा?' मैंने सवाल किया तो सालेह ने जवाब दिया:

"हां इन दो हदों के बीच वह लोग हैं जिनके पास ईमान और कुछ न कुछ अच्छे काम का खज़ाना भी है, मगर वह दुनिया में पाप करते रहे और तौबा भी नहीं की। ऐसे लोगों को अपने पापों के बदले हश्र के दिन की सख्ती झेलनी होगी, उसके बाद मुक्ति की कोई संभावना पैदा हो सकती है। आज जो लोग मैदान हश्र में फंसे हुए हैं वह या तो मुजरिम हैं जिन्हें आखिरकार जहन्नम में फेंका जाएगा या फिर ईमानदार है जिनका दामन थोड़े बहुत गुनाहों से दागदार है। सो जिसके गुनाह जितने अधिक और जितने बड़े होंगे आज के दिन उसे उतनी ही सख्ती झेलनी होगी। कम गुनाह करने वालों को हिसाब किताब के शुरू में ही निजात मिल जाएगी लेकिन जैसा कि मैंने कहा कि दुनिया की ज़िन्दगी के हिसाब से सैकड़ों साल तो यहाँ गुज़र चुके हैं। उन लोगों को हिसाब के शुरू में निजात भी मिली तो यह हश्र की सख्ती दुनिया की साठ साल की ज़िन्दगी में किये हुए गुनाहों के बदले के लिए काफी है। जबकि जिनके गुनाह ज़्यादा हैं उन्हें तो न जाने अब कितने हजार या लाख साल तक इस सख्ती और इस डर को झेलना होगा।"

सालेह की बात सुनकर मैंने दिल में सोचा कि दुनिया में गुनाह कितने मामूली लगा करते थे, लेकिन आज यह किस मुसीबत में ढल गए हैं। काश लोग अपने गुनाहों को छोटा ना समझते और फ़ौरन तौबा करने को ज़रूरी बना लेते। वह लोगों की बुराई करने, चुगल खोरी करने, कमजोरों पर ज़ुल्म करने, दिखावा और प्रदर्शन करने, झूंटे आरोप लगाने आदि को मामूली चीज़ ना समझते। खुदा और बन्दों के हक़ को पामाल करने को छोटा न समझते, खुदा की नाफ़रमानी (अवज्ञा) से बचते और रसूल की बात मानते तो आज यह दिन न देखना पड़ता जहां एक गुनाह का थोड़ा सा मज़ा (आनन्द) आज सैकड़ों साल की रुसवाई और अज़ाब में बदल चुका है।

फिर मैंने उससे पूछा:

'क्या इस समय किसी को पता है कि उसकी निजात (मुक्ति) होगी या नहीं, और अगर होगी तो कैसे होगी?'

सालेह ने जवाब दिया:

"यही तो सब से बड़ी मुसीबत है, यहाँ किसी को यह नहीं पता कि उसका भविष्य क्या है। निजात की उम्मीद है या नहीं? यह कोई नहीं जानता सिवाय एक ईश्वर के। इसलिए रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और अन्य नबी लगातार दुआ कर रहे थे कि हिसाब किताब शुरू हो जाए। इसके परिणामस्वरूप इमानदार लोगों को यह फायदा होगा कि वह मुजरिमों से अलग होकर हिसाब किताब के बाद निजात (मुक्ति) पाजाएँगे। तुम जानते हो आज के दिन अपनी मर्जी से न किसी के लिए कोई अपनी जुबान से एक बोल निकाल सकता है और न इसकी कोई गुंजाइश है। और खुशी की बात यह है कि रसूल अल्लाह की यह दुआ क़ुबूल हो चुकी है, यह बात खलीफा-ए-रसूल अबू बक्र सिद्दीक़ ने तुम्हें खुद बताई थी।

'मगर अभी तक हिसाब किताब तो शुरू होता नजर नहीं आता।' मैंने आश्चर्य से पूछा तो सालेह बोला:

"दुआ क़ुबूल हुई है, लेकिन इस पर अमल खुदा अपनी हिकमत और मसलहत (रणनीती और सब के हितों) के तहत ही करेंगे। हो सकता है कि अभी तक पूरी दुनिया से लोग यहां पहुंचे ही नहीं।"

'क्या मतलब लोग इतने वर्षों में यहां तक नहीं आए?'

"तुम्हारा क्या ख्याल है कि आज लोग विमान, रेलों, बसों और मोटरों में बैठ कर यहां तक आयेंगे? आज सब पैदल दौड़ते आ रहे हैं। इस्राफील के सूर ने लोगों को इस दिशा में आने के लिए मजबूर कर दिया था। आज समुन्द्र पाट दिए गए हैं और पहाड़ ढाह दिए गए हैं, इसलिए लोग सीधा यहां आ रहे हैं, लेकिन जाहिर है पैदल आते हुए समय तो लगेगा। लेकिन नेक लोगों के साथ फरिश्ते थे जो उन्हें तुरंत यहाँ ले आए, बहरहाल जब तक हिसाब किताब शुरू नहीं होता हम यहाँ मौजूद लोगों के हाल देख लेते हैं। वैसे शायद तुम इसी मकसद के लिए यहां आए थे।"

सालेह ने ये शब्द कहे और मेरे जवाब का इंतज़ार किए बिना मेरा हाथ थामे आगे बढ़ने लगा। इस समय गर्मी से चेहरे तप रहे थे, हर तरफ गर्द व ग़ुबार उड़ रहा था। लोग ग्रुप के रूप में भी और अकेले भी इधर से उधर परेशान घूम रहे थे। मेरी खोजी नज़रें अपने किसी परिचित को खोज रही थीं, मगर कहीं कोई जानी पहचानी सूरत नज़र नहीं आ रही थी। अचानक कहीं से एक

लड़की आई और इससे पहले कि मैं उसकी शक्ल देख पाता मेरे कदमों पर गिरकर बेबसी से रोने लगी। मैंने परेशान नज़रों से सालेह की ओर देखा।

उसने सपाट लहजे में लड़की से कहा:

"खड़ी हो जाओ!"

उसके अंदाज़ में न जाने क्या था कि मेरी रीढ़ की हड्डी में सनसुनाहट होने लगी, लड़की भी सहम कर खड़ी हो गई। मैंने उसका चेहरा देखा, यह चेहरा डर, अनदेशे और गम के साए से काला पड़ चूका था। चेहरे और बालों पर मिट्टी पड़ी हुई थी, प्यास के मारे होंठों पर पपड़ियाँ जमी हुई थीं और डरी हुई आंखों में भय और आतंक का रंग छाया हुआ था।

रहम और प्यार की एक लहर मेरे वजूद के अंदर उतर गई। मैंने इस चेहरे को जब पहली बार देखा था तो भी ख़ुशी से चश्मे बद्दूर कहा था। गोरा रंग, बारीक नाक नक्शा, किताब सा चेहरा, गुलाबी होंठ, नीली आंखें और गहरे काले बाल। ख़ुदा ने इस चेहरे को प्राकृतिक सौंदर्य से इस तरह सज़ाया था कि सजने सवरने की उसे ज़रुरत न थी। लेकिन आज यह चेहरा बिल्कुल बदल चुका था, अतीत की ख़ूबसूरती को वर्तमान के हालात ने हश्र के दुखों में कहीं दफन कर दिया था। हसरत, डर, वहशत, दुःख (यातना) और शर्म से भरा हुआ यह अस्तित्व किसी और का नहीं मेरे चहेते बेटे जमशैद की पत्नी और मेरी बड़ी बहू हुमा का था जो हसरत और डर की एक जिन्दा तस्वीर बनकर मेरे सामने खड़ी थी।

"अब्बू जी मुझे बचा लीजये, मैं बहुत तकलीफ में हूँ, यहां का माहौल मुझे मार डालेगा। मैंने सारी ज़िंदगी कोई तकलीफ नहीं देखी, लेकिन अब लगता है कि मेरी ज़िन्दगी में कोई आसानी नहीं आएगी। खुदा के लिए मुझ पर रहम करें, आप खुदा के प्यारे बन्दे हैं। मुझे बचा लीजये"

यह कहते हुए हुमा हिचकियां लेकर रोने लगी।

'जमशैद कहां है?' मैंने डूबी हुई आवाज़ में पूछा।

"वो यहीं थे, वो भी आप को ढूंढ रहे हैं। लेकिन यह इतनी बड़ी जगह है और इतने सारे लोग हैं कि किसी को ढूँढ पाना नामुम्किन है। उनका हाल भी बहुत बुरा है, वह मुझसे बहुत नाराज़ थे। उन्होंने मिलते ही मुझे थप्पड़ मार कर कहा कि तुम्हारी वजह से मैं बर्बाद हो गया। अब्बू मैं

बहुत बुरी हूँ, मैं खुद भी बर्बाद हो गई और अपने परिवार को भी बर्बाद कर दिया। प्लीज़ मुझे माफ़ कर दें और मुझे बचालें, खुदा का अज़ाब (प्रकोप) बहुत भयानक है। मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती।"

हुमा फरियाद कर रही थी और उसकी आंखों से आंसुओं की धारा बह रही थी। मेरे दिल में दबी प्यार की भावना जोश मारने लगी, वह बहरहाल मेरी बहू थी। लेकिन इससे पहले कि मैं कुछ कहता, सालेह उसी सपाट लहजे में बोला:

"यह तुम्हें दुनिया में सोचना चाहिए था हुमा बीबी! आज तुम्हारी अक्ल ठिकाने आ गई है। मगर याद है दुनिया में तुम क्या थीं? तुम्हें शायद याद न आए.... मैं याद दिलाता हूँ।"

यह कहते हुए सालेह ने इशारा किया और अचानक एक मंज़र (दृश्य) सामने नज़र आने लगा। यह जमशैद और हुमा का कमरा था, मुझे लगा कि मेरे आसपास का माहौल गायब हो चुका है और मैं इसी कमरे में इन दोनों के साथ मौजूद हूँ और सीधे सब कुछ देख और सुन रहा हूँ।

.....

"जमशैद अब इस देश में मैं नहीं रह सकती। अब हमें किसी वेस्टर्न कंट्री में शिफ्ट हो जाना चाहिए।"

ड्रेसिंग टेबल के सामने बैठी हुई हुमा ने अपने कटे हुए बालों को ब्रश करते हुए कहा। जमशैद बैड पर लेटा टीवी देख रहा था, उसने कोई जवाब नहीं दिया।

"तुमने सुना जमशैद मैंने क्या कहा?"

'यस मैंने सुन लिया, लेकिन मेरा पूरा परिवार यहाँ है, मैं उन्हें छोड़ कर कैसे जाऊँ?'

"बिल्कुल वैसे ही जैसे तुम उनका घर छोड़ कर मेरे साथ अलग हो चुके हो।"

'यहां की बात और है। में सप्ताह में एक बार जाकर उससे मिल तो लेता हूँ, दूसरा यह कि फौरेन ट्रिप तो हम हर साल कर ही लेते हैं, फिर हमें बाहर शिफ्ट होने की क्या जरूरत?'

"नहीं अब बच्चे बड़े हो रहे हैं, मैं चाहती हूँ कि उनकी परवरिश बाहर ही हो।"

'लेकिन मैं यह चाहता हूँ कि मेरे बच्चे मेरे माँ बाप की सोहबत (साथ) का लाभ उठाएं। मैं तो अपने माँ बाप की नेकी का कोई हिस्सा नहीं पा सका, लेकिन कम से कम मेरी औलाद तो नेक हो।'

"उन्हीं की सोहबत से तो मैं अपने बच्चों को बचाना चाहती हूँ। मेरे एक बच्चे को भी अगर अपने दधिहाल की हवा लग गई तो उसकी ज़िन्दगी खराब हो जाएगी।"

इसके साथ ही फोन की घंटी बजी। जमशैद ने फोन उठाया, दूसरी ओर से कुछ कहा गया। जमशैद ने अच्छा कहकर रिसीवर नीचे रख दिया और हुमा को संबोधित करके कहा:

'तुम्हारे पापा हमें नीचे बुला रहे हैं।' फिर हुमा की बात का जवाब देते हुए बोला:

'तुम आखिर मेरे माँ बाप के बारे में इतनी निगेटिव क्यों हो? उन्होंने मेरी खुशी के लिए तुम्हें बहू के रूप में स्वीकार किया। हालांकि तुम्हारी शैली और अंदाज़ उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं थे। तुम मुझे लेकर अलग हो गई तब भी उन्होंने बुरा नहीं माना।'

"बस बस रहने दो।" हुमा तुनक कर बोली।

"उन्हें मेरे स्टाइल और तौर तरीके नापसंद थे, लेकिन तुम मेरे प्यार में दीवाने हो रहे थे। इसलिए उन्होंने मजबूरन तुम्हें मुझसे शादी की इजाज़त दी। तुम उनसे अलग होकर यहां ज़्यादा अच्छी ज़िन्दगी गुजार रहे हो। पापा के व्यापार में शामिल हो, करोड़ों में खेलते हो। जमशैद मुझसे शादी करके तुम सरासर फाएदे में रहे हो। तुमने कोई नुकसान नहीं उठाया।"

'पता नहीं क्यों तुम्हारी बातें सुनकर कभी कभी अब्बु की याद आती है कि फाएदे और नुक्सान का फैसला आखिरत के दिन होगा।'

"यार यह बेकार की धार्मिक बातें बंद करो, मुझे इनसे चिढ़ आती है। कोई क़यामत आदि नहीं आनी है, लाखों साल से दुनिया का सिस्टम ऐसे ही चल रहा है....

If you are smart, powerful and wealthy you are the winner, All the others are loosers and idiots, And you know this judgment day is nothing but a rabbish,"

वैसे तुम्हारी जानकारी के लिए बतादूँ, मेरे पापा ने अपने पीर साहब से यह गारंटी ले रखी है कि क़यामत में वो उन्हें बख्शवा देंगे। उन्हें बहुत पैसा देते हैं मेरे पापा।"

'हां हम जिस तरह गैर कानूनी मुनाफा ख़ोरी, कानून का उल्लंघन और कई हराम तरीकों से पैसा कमाते हैं, उसे कहीं तो पाक करना होगा। मुझे सब मालूम है तुम्हारे पापा और चौधरी मुख़्तार साहब कई व्यापार में भागीदार हैं और दो नंबर के हथकंडों से पैसा कमाते हैं।'

"अच्छा.... इतना ही हलाल हराम मानते हो तो छोड़ दो पापा का व्यापार।"

'व्यापार तो छोड़ दूं, मगर तुम्हें कैसे छोडूं, मुझे पता है कि इसके बाद नौकरी करने से न तुम्हारे खर्च पूरे होंगे और न मैं तुम्हारा लिविंग स्टैंडर्ड मैनटेन कर सकूँगा। तुम्हारे प्यार ने मुझे कहीं का न छोड़ा, वरना जिस परिवार से मैं हूँ वहाँ हलाल और हराम ही सब कुछ है।'

"इसीलिए इतना मध्यम वर्गीय जीवन गुजार रहे हैं वे। अच्छा हुआ तुम मेरे साथ आ गए वरना अपने भाइयों की तरह मोटरसाइकिल पर घूमते या 800 सीसी गाड़ी चलाते किसी फ्लैट में सड़ी हुई ज़िन्दगी गुजार कर मर जाते।"

'ज़िन्दगी अच्छी गुजारें या बुरी, मरना तो हमें है ही। पता नहीं आखिरत (परलोक) में हमारे साथ क्या होगा?'

"बेफ्रिक रहो कुछ नहीं होगा, वहां भी हम ठाट से रहेंगे। मेरे पापा के पीर साहब के सामने तो तुम्हारे अल्लाह मियां भी कुछ नहीं बोल सकते।"

'कुफ़्र तो मत बको.... और अल्लाह मेरा कहाँ है। जब मैं अल्लाह का नहीं रहा तो वह मेरा कैसे रहेगा।'

यह बात कहते हुए जमशैद का लहजा भररा गया और उसकी आँखों में नमी आ गई। मगर हुमा उसके आंसुओं को नहीं देख सकी, उसका सारा ध्यान आईने की ओर था। वह अपना मेकअप पूरा कर चुकी थी, इसलिए ड्रेसिंग टेबल के सामने से उठते हुए बोली:

"अच्छा छोड़ो यह बेकार की बातें! नीचे चलो, पापा इंतज़ार कर रहे होंगे।"

.....

सालेह ने फिर इशारा किया और मंजर (दृश्य) ख़त्म हो गया, लेकिन साथ ही हुमा की हर उम्मीद को खत्म कर गया। सालेह ने इसी सपाट और गुस्से से भरे लहज़े में सख्ती से कहा:

"तुमने देखा! तुम्हारी ज़ुबान से निकला हुआ एक एक शब्द रिकॉर्ड किया गया है। तो जाओ हुमा बीबी अपने पीर साहब को ढूँडो जो तुम्हें बख्शवा सकते हैं और जिनके सामने खुदा भी...."

सालेह ने वाक्य तो अधूरा छोड़ दिया, लेकिन हुमा के शब्द दोहराते समय उस के लहजे में जो गुस्सा आ गया था, उससे मैं खुद दहल कर रह गया। हुमा भी बुरी तरह डर गई, इससे पहले कि सालेह कुछ और कहता वह रोती चीखती हुई वहां से भाग गई।

इस मंज़र (दृश्य) में जमशैद को देखकर मेरी हालत फिर डांवा डोल हो गई थी। जाहिर है कि हुमा की तरह वह भी सख्तियों भरे मैदान में परेशान हाल घूम रहा होगा। मैं सोच रहा था कि जमशैद उसी हाल में मेरे सामने आ गया तो मैं क्या करूँगा, मैं इसी सोच में था कि सालेह ने मेरी कमर थपथपा कर कहा:

"आओ चलते हैं।"

न जाने इस थपकी में क्या बात थी कि मैंने महसूस किया कि मेरे ऊपर तारी होने वाली परेशानी की हालत बहुत हल्की हो गई है, मैं उसके साथ चलने लगा। आसपास फिर वही परेशान और वहशत में पड़े लोगों की हलचल थी, हम कुछ दूर आगे चले थे कि सामने से चौधरी मुख़्तार साहब आते दिखाई दिए। उन्होंने शायद मुझे देख लिया था और मेरी ओर आ रहे थे। चौधरी साहब मेरे बेटे जमशैद के ससुर के व्यापार में भागीदार थे, इस वजह से मेरी उनसे औपचारिक जान पहचान थी। मेरे पास आते ही उन्होंने मुझसे गले मिलने की कोशिश की जिसे सालेह ने हाथ आगे बढ़ा कर यह कहते हुए नाकाम बना दिया:

"दूर रह कर बात करो।"

उसका बोलने का अंदाज़ इतना बुरा था कि मुझे भी इससे अजनबीयत महसूस होने लगी। अपने अपमान के बावजूद चौधरी साहब के जोश में कमी नहीं आई, वह कहने लगे:

"मुझे यकीन था अब्दुल्लाह साहब! आप मुझे ढूंढते हुए जरूर आएंगे। आपको याद है अब्दुल्लाह साहब! मैंने एक मस्जिद निर्माण कराइ थी जिसमें आप भी नमाज़ पढ़ा करते थे। इसके अलावा भी मैं ग़रीबों और मोहताजों की मदद किया करता था।"

'मुझे याद है चौधरी साहब।' मैंने धीरे से उन्हें जवाब दिया।

"बस तो अब आप मेरी सिफारिश कर दीजिए, बहुत देर से परेशान घूम रहा हूँ, यहाँ तो जिसे देखो अपनी ही पड़ी है, न कोई कुछ बताता है न सीधे मुंह बात करता है।"

यह आखिरी बात कहते हुए उन्होंने भी एक नज़र सालेह की ओर देखा, मैंने भी गर्दन घुमाकर सालेह की ओर देखा। उसने पल भर के लिए मुझे देखा और चौधरी साहब के चेहरे पर नज़रें गाड़ते हुए बोला:

"आपने मस्जिद ज़रूर बनवाई थी, लेकिन खुदा के लिए नहीं बल्कि अपनी नेक नामी के लिए। जब पैसे अल्लाह को दिए जाते हैं तो गर्दन झुकी होती है, हाथ बंधे होते हैं, अंदाज़ झुका हुआ होता है और दिल में आजज़ी और डर होता है। लेकिन आपके मामले में ऐसा नहीं था, आप अपना नाम चाहते थे, सो दुनिया में नाम हो गया। अब तो आपको हिसाब देना होगा कि यह पैसा कमाया कैसे था।

और हां.... अच्छे कामों पर तो कभी कभी ही पैसे खर्च करते थे। यह क्यों नहीं बताते कि देश की एक मशहूर अभिनेत्री का साथ पाने के लिए आपने करोड़ों रुपये खर्च कर दिए थे। आपके खाते में ज़िना (व्यभिचार) का गुनाह है, एक बार नहीं बल्कि बार बार का गुनाह। अलग अलग महिलाओं के साथ ज़िना (व्यभिचार) का गुनाह। देश की मशहूर अभिनेत्रियों और फैशन मॉडल के साथ आपके संबंध थे, खर्च को छोड़ो आप की तो आमदनी में भी हराम की मिलावट थी। आप मिलावट करते थे, आम ज़रुरत की चीज़ को कीमत बढ़ाने के लिए जमा खोरी करते थे, फिर लोगों से हद से ज़्यादा मुनाफा लेकर चीजें बेचते थे। बिजली चोरी, धोखाधड़ी, कर्मचारियों के अधिकार में डंडी मारना, यह आपके कारोबार के बुनियादी उसूल थे। अपने कारोबार की ऊंचाईयों पर पहुंचकर आपने मीडिया समूह बना लिया था जिसके एक टीवी चैनल पर आप लोगों को खुश करने वाले धार्मिक कार्यक्रम दिखाते और अन्य पर कला और इंटरटेनमेंट के नाम पर समाज में बेशर्मी और बुरा व्यवहार आम कर रहे थे। आप जानते थे कि दुनिया में सफलता का राज़ लोगों

को खुश करना है.... काश आप जान लेते कि दुनिया और आखिरत में सफलता का राज़ लोगों को नहीं ईश्वर को खुश करना है।"

सालेह लगातार बोल रहा था और शब्दों के उसकी जुबान से तीर बनकर निकल रहे थे। उनका सामना करना चौधरी साहब के लिए मुमकिन न था, मगर उनके लिए कोई भागने की राह भी न थी। वह गर्दन झुकाए सुनते रहे, सालेह के लब और लहजे की सख्ती ने चौधरी साहब के चेहरे पर अँधेरी फेलादी थी। लेकिन उसने इस पर बस नहीं किया और कहने लगा:

"ज़रा पीछे देखिये चौधरी साहब आपके पीछे आपकी प्रेमिका भी खड़ी है।"

चौधरी साहब घबरा कर वापस पलटे, मैंने भी नजर उठाकर चौधरी साहब के पीछे देखा। सामने एक बहुत बुरी शक्ल व सूरत की बूढ़ी औरत खड़ी थी जिसके शरीर से गंध उठ रही थी। सालेह ने मेरी पीठ पर हाथ रखा जिसके बाद मुझे यह असहनीय बदबू आना बन्द हो गई, लेकिन चौधरी साहब के लिए यह गंध अभी तक बाकी थी। वह बद शकल बुढ़िया चौधरी चौधरी कहते हुए आगे बढ़ी, इस बुढ़िया के करीब आने के डर से भयभीत होकर चौधरी साहब पीछे हटने लगे और फिर बेतहाशा भागने लगे। वह औरत या बुरी बला जो कुछ थी उनके पीछे हाथ फैलाकर दौड़ने लगी।

'यह औरत कौन थी?' उनके दूर जाने के बाद मैंने सालेह पूछा।

"यह चौधरी साहब की रखैल और तुम्हारे जमाने की मशहूर अभिनेत्री और मॉडल चम्पा थी।" सालेह ने बदशकल औरत का परिचय कराया तो मैंने हैरत से कहा:

'चम्पा? मगर वह तो बहुत खूबसूरत थी और लोग उसके हुस्न की मिसाल दिया करते थे।'

"हां मिसाल देने के अलावा उसे अपना आइडियल भी बनाते थे। अब देख लो लोगों के आइडियल के रूप को कैसी हो चुकी है। यह औरत अपने भड़कीले और अर्ध नग्न कपड़ों से समाज में अश्लीलता फैलाती थी। अब ख़ुदा का फैसला है कि यह जिन दिलों पर राज करती थी, नरक में उन्हीं लोगों पर उसे अज़ाब बनाकर थोप दिया जाए।" सालेह ने हंसते हुए जवाब दिया।

मैं दिल में सोचने लगा कि मेरे ज़माने में अश्लीलता शायद मानव इतिहास में सबसे ज़्यादा बढ़ चुकी थी। टी-वी ने घर घर इस तरह की अभिनेत्रियों के जलवे बिखेर दिए थे। इस दौर के सभी

समुदायों ने अश्लीलता और नग्नता फैलाने वाली ऐसी महिलाओं को इज्ज़त के बुलंद मुकाम पर बिठा दिया था। फिल्म कम्पंयों और टीवी चैनलों के मालिकों के पास यह महिलाएं माल कमाने का सबसे सस्ता और आसान रास्ता थीं जिनके अश्लील सीन, दिलबर अदाओं और कम कपड़ों के सीन को बेच कर ये लोग अपनी दौलत बढाया करते थे। युवा उनके दीवाने थे और अपनी होने वाली पत्नियों में उनकी शक्लें और नखरे खोजते थे। लड़कियां उन्हीं के अंदाज और ड्रैस की नक़ल करके खुद को संवारा करती थीं। उन्हीं की वजह से शरीफ पर आम शक्ल व सूरत वाली कितनी ही लड़कियां समाज में बेकीमत हो गई थीं। उनमें से कितनी थीं जो अपने आंगन में बहारों की राह तकते तकते सफेद बालों तक जा पहुँचीं और कितनी थीं जो समाज की नाकदरी के दाग को शराफत की चादर में छिपाए दुनिया से विदा हो जाती थीं।

मेरे चेहरे पर दुख के आसार साफ़ थे, यह आसार सालेह ने पढ़ लिए थे। वह मेरा हाथ थामे चुप चाप एक तरफ बढ़ने लगा। कुछ देर बाद एक जगह ठहर कर बोला:

"खुदा ने तुम्हारे दुखों को दूर करने का एक इन्तिज़ाम किया है, लेकिन बेहतर होगा कि उसे देखने से पहले गुजरी हुई दुनिया का यह मंज़र (दृश्य) भी देख लो।"

उसकी जुबान से शब्द निकले ही थे कि मेरे सामने एक मंज़र फिल्म स्क्रीन की तरह चलने लगा। मुझे लगा कि मैं इस मंज़र का एक हिस्सा हूँ और बताए बिना हर सच्चाई समझ रहा हूँ।

.....

सुबह की रोशनी खिड़की पर पड़े पर्दों में से पार होते हुए कमरे में दाखिल होने लगी थी। कॉलेज जाने का समय हो रहा था, मगर शाहिस्ता की हिम्मत नहीं हो रही थी कि सर्दी में बिस्तर से निकले और कॉलेज जाने की तैयारी करे। वह आमतौर पर फज्र (सुबह) की नमाज़ पढ़कर कुछ देर कुरआन पढ़ा करती थी और फिर कॉलेज की तैयारी, पर आज वह नमाज़ पढ़ कर फिर बिस्तर में लेट गई थी, कल रात से ही उसकी तबियत कुछ ख़राब थी।

"नहीं! मुझे कॉलेज जाना होगा वरना स्टुडेंटस का बहुत नुकसान होगा.... और फिर अम्मी अब्बू के लिए नाश्ता भी तो बनाना है।"

उसने दिल में सोचा और हिम्मत करके बिस्तर से उठ गई। धीरे से चलते हुए बराबर वाले कमरे की तरफ गई जो उसके माता पिता का था। उसने धीरे से दरवाजा खोल कर देखा, दोनों गहरी नींद में सो रहे थे। उसके चेहरे पर एक संतोषजनक मुस्कान आ गई।

शाहिस्ता ने अपनी सारी जिंदगी अपने परिवार के नाम कर दी थी। उसके पिता उसके बचपन में ही अपाहिज हो गए थे, वह तीन बहनों में सबसे बड़ी थी। मां ने सिलाई करके मुश्किल से उन्हें पढ़ाया था। पढ़ाई पूरी करके उसने पहले स्कूल और फिर एक प्राइवेट कॉलेज में पढ़ाना शुरू कर दिया, वह उसके सपने देखने के दिन थे। वह बहुत सुन्दर नहीं थी, लेकिन नौजवानी खुद एक हुस्न है। लेकिन उसके जीवन में नौजवानी का मतलब बस एक जिम्मेदारी था जिसमें सपनों और ख्वाहिशों की कोई गुंजाइश नहीं थी। घर का खर्च, पिता का इलाज, मकान का किराया और छोटी बहनों की शिक्षा। दोनों छोटी बहनें खूबसूरत थीं, बड़ी हुई तो आने वाले हर रिश्ते का रुख उन्हीं की ओर था। शाहिस्ता रास्ते की दीवार नहीं बनी और खुशी खुशी बहनों को उनके घर आबाद कर दिया। यह फ़र्ज़ पूरा करते करते उसकी जवानी ढलती चली गई और अब वह अपने बूढ़े माता पिता का बोझ उठाने के लिए अकेली रह गई थी।

इन हालात में उसका सहारा ईश्वर था। उसे खुदा से बहुत घहरा प्यार था इतनी मुहब्बत कि ज़िन्दगी में किसी कमी ने इसके अंदर मायूसी नहीं आने दी। नमाज़ रोज़े की पाबंद तो वह बचपन से थी, लेकिन ईश्वर प्रेम की यह मिठास उसे रूहानी (आध्यात्मिक) गुरू अब्दुल्लाह साहब की किताबें पढ़कर मिली थी। और अब उसके जीवन का मिशन था कि वह ईश्वर की उपासना और प्यार की यह मिठास अपने युवा छात्रों में भी विकसित करे। वह एक बेहतरीन शिक्षिका थी उसके छात्र उस की बहुत इज्जत करते थे, इसलिए वह उसकी बातें हमेशा ध्यान से सुनते और शाहिस्ता शौक से उन्हें पढ़ाती थी।

मगर आज न जाने क्यों उसका दिल बहुत उदास था, शायद खराब तबयत का असर था कि डिप्रेशन की सी हालत में थी। नाश्ते से निपट कर वह आईने के सामने खड़ी कॉलेज जाने के लिए तैयार हो रही थी। उसने अपने चेहरे को ध्यान से देखा, ढलती जवानी के सारे आसार अब साफ़ थे। एक आह के साथ मुस्कुराई और खुद को संबोधित करके धीरे से बड़बड़ाई:

"शाहिस्ता! तुम हार गई, तुम्हारे हिस्से में तनहाईयों के सिवा कुछ नहीं आया?"

यह कहते हुए उसने आंखें बंद कर ली, शायद यह हार को स्वीकार करना था। मगर उसी पल गुरु अब्दुल्लाह की बात उसके कानों में गूंजने लगी:

"जो खुदा से सौदा करता है वह कभी नुकसान नहीं उठाता।"

एक मुस्कान के साथ उसने आंखें खोलीं और ठहरे हुए लहजे में बोली:

"देखते हैं.... देख लेंगे.... अब समय ही कितना बचा है।

.....

मंज़र (दृश्य) ख़त्म हो गया, मैंने सालेह की ओर देख कर कहा:

'मैं तो उस लड़की को नहीं जानता।'

"अब जान लोगे, वैसे तुम जो कुछ लिखते थे, वह बहुत दूर तक जाता था।"

सालेह ने जवाब दिया और साथ ही मेरा हाथ थामे एक ओर आगे बढ़ने लगा। थोड़ी देर बाद हम एक ऐसी जगह पहुंचे जहां वैसे ही भयानक फरिश्ते दिखाई दिए जैसे अर्श की ओर आम लोगों को बढ़ने से रोकने के लिए खड़े थे, मगर सालेह को देख कर उन्होंने हमारा रास्ता छोड़ दिया। ज़रा दूर चल कर हमारे सामने एक दरवाज़ा आ गया, सालेह ने दरवाजा खोला और मेरा हाथ थामे अंदर चला गया। यह दरवाजा एक दूसरी दुनिया का दरवाजा था क्योंकि इसके दूसरी ओर हश्र के परेशान माहोल से उलट माहोल फैला हुआ था। मैं फ़ौरन बोला:

'सालेह! हम वापस नबियों के कैम्प की ओर तो नहीं आ गए?'

उसने मुस्कुरा कर कहा:

"हाँ.... तुम्हारा दुःख तो यहीं आकर दूर हो सकता है।"

हम चलते हुए एक शानदार कैम्प के पास पहुंचे। उनके दरवाज़े पर एक बहुत शानदार और रोशन चेहरे के एक साहब खड़े थे, यह मेरे लिए बिल्कुल अजनबी थे। करीब पहुंचकर सालेह ने उनसे मेरा परिचय कराया:

"यह अब्दुल्लाह हैं, मुहम्मद रसूल अल्लाह की उम्मत के आखरी दौर के उम्मती। और आप नहूर हैं, यर्मियाह नबी के बहुत करीबी साथी। नहूर आप इन्ही से मिलना चाह रहे थे ना?"

यह एक महान पैगम्बर के सहाबी (साथी) का मुझसे परिचय था और यह भी की मैं यहाँ क्यूँ हूँ।

मैंने नहूर से मुसाफाह करने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन नहूर ने उत्साहित अंदाज में मुझे अपने गले से लगा लिया। मैंने उसी हाल में कहा:

'यर्मियाह नबी से मुलाकात का सौभाग्य तो मुझे अभी तक नहीं हुआ लेकिन आपसे मिलना भी किसी सम्मान से कम नहीं है। यर्मियाह नबी के हालात और ज़िन्दगी मेरे लिए हमेशा बड़ी रहनुमाई (मार्गदर्शन) वाली रही, मुझे उनसे मिलने का बहुत शोंक है।'

यह कहते हुए मेरे मन में बनी-इसराइल (यहूदी) के इस महान पैगंबर की ज़िन्दगी घूम रही थी। छटी सदी ईसा पूर्व में बनी इसराइल (यहूदी) बहुत बुरी आदतों और रस्मों के शिकार थे, और इसी आधार पर अपने ज़माने की महाशक्ति इराक के शासक बख्त नस्र के हाथों राजनीतिक हार के खुदाई अज़ाब से ग्रस्त हो चुके थे। मगर उनके नेताओं ने कौम में सुधार करने के बजाय उनके हां राजनीतिक रुतबे की सोच आम कर दी। यर्मियाह नबी ने इस्राइलियों (यहूद्यों) को उनकी अख्लाकी (नैतिक) और इमानी गुमराहियों पर चेताया और उन्हें समझाया कि समय की महाशक्ति से टकराने के बजाय अपना सुधार करें। मगर उनकी उम्मत ने सुधार करने के बजाय उन्हें कुएं में उल्टा लटका दिया और बख्त नस्र के ख़िलाफ़ बग़ावत कर दी। इसके बाद बख्त नस्र अज़ाब इलाही बन कर उतरा और उसने येरुशलम (बैतुल मुक़द्दस) की ईंट से ईंट बजादी। छः लाख यहूदी क़त्ल हुए और छह लाख को वह गुलाम बनाकर अपने साथ ले गया था।

मैं उसी सोच में था कि नहूर ने मेरी बात का जवाब देते हुए कहा:

"इन्शाअल्लाह उनसे भी जल्द मुलाकात हो जाएगी, लेकिन फ़िलहाल तो आप को किसी से मिलवाना चाहता हूँ।" यह कहते हुए वह मुझसे अलग हुए और कैम्प की ओर रुख करके किसी को आवाज़ दी:

"ज़रा बाहर आना! देखो तो तुम से कौन मिलने आया है?"

नहूर की आवाज़ के साथ ही एक लड़की खेमे से निकल कर उनके बराबर आखड़ी हुई। यह लड़की अपने हुल्ये से राजकुमारी और शक्ल व सूरत में परिस्तान की कोई परी लग रही थी। उस लड़की ने गर्दन झुका कर मुझे सलाम किया और मुझे संबोधित करके कहा:

"आप मुझे नहीं जानते पर मेरे लिए आप मेरे उस्ताद (गुरु) हैं और इस रिश्ते से मैं आपकी रूहानी (आध्यात्मिक) औलाद हूँ, मेरा नाम शाहिस्ता है। गुमराही के अंधेरों में खुदा के सच्चे धर्म की रोशनी मैंने आप से पाई थी, ख़ुदा से मेरा परिचय आपने कराया था। परमेश्वर के साथ इंसान का असल रिश्ता क्या होना चाहिए, यह मैंने आप ही से सीखा था। आज देखो! खुदा ने मुझ पर एहसान किया और अब मैं एक महान नबी के सहाबी (साथी) की पत्नी बनने जा रही हूँ।"

थोड़ी देर पहले सालेह ने इसी लड़की को मुझे दिखाया था लेकिन अब उसकी हालत में जो परिवर्तन आ चुका था उसे देख कर मैं दंग रह गया। लेकिन उसे इस तरह देख कर मुझे जितनी खुशी हुई, उसको शब्दों में बयान नहीं कर सकता। मैंने शाहिस्ता से कहा:

'मेरी तरफ से आप दोनों दिली बधाई क़ुबूल करें, उम्मीद है कि आप मुझे अपनी शादी में भी याद रखेंगे है।'

"क्यों नहीं, आपको तो बुलाने का मकसद ही नहूर को यह बताना था कि मेरे मैके वाले कोई मामूली लोग नहीं हैं।" उसने हंसते हुए जवाब दिया।

'फिर तो आपने गलत इंसान को बुला लिया है।'

मैंने तुरंत जवाब दिया। फिर अपना रुख नहूर की ओर करते हुए कहा:

'लेकिन शाहिस्ता की बात सही है। उनके मैके के लोग मामूली नहीं और हो भी कैसे सकते हैं। शाहिस्ता उम्मत-ए-मुहम्मदया में से हैं, नबी अरबी से नाम जुड़ने के बाद उनका मैका मामूली नहीं रहा।'

इस मौके पर सालेह बीच में आया और कहा:

"आप लोगों की इज्ज़त और दर्जे की बहस का फैसला बाद में होता रहेगा, फिलहाल मुझे अब्दुल्लाह को वापस लेकर जाना है। इसलिए हमें इजाज़त दें।"

नहूर और शाहिस्ता से इजाज़त लेकर हम दोनों वहां से विदा हो गए। वापसी पर सालेह मुझसे बोला:

"हो गई ना तुम्हारे दुखों की दवा?"

मैंने खुदा की अपने बन्दों पर इनायत का जो नमूना अभी देखा था उसने मेरी बोलने की शक्ति जैसे छीनली थी, इसलिए मैं चुप रहा। सालेह ने अपनी बात जारी रखी:

"यह लड़की अपने सब्र की वजह से इस ऊंचाई तक पहुंची है। ख़ुदा ने इस लड़की को सख्त हालात और मामूली शक्ल व सूरत के साथ आजमाया था। लेकिन उसने कमी होने के बावजूद सब्र, शुक्र और ईश्वर की सच्ची इबादत (पूजा) की राह ली थी। और आज तुमने देख लिया कि जो पिछली दुनिया में पाने से महरूम (वंचित) रह गए, उनका सब्र आज उन्हें किस इनाम का हकदार बना रहा है।'

मैं चलते चलते रुका, अपनी नज़रें उठाकर आसमान को देखा, आसमान वाले को अपनी मन की आखों से देखा और फिर अपनी गर्दन झुका ली।

****

नाएमा

हम चलते चलते उस दरवाजे के पास आ गए जहाँ से हश्र का रास्ता था। मैंने सालेह से पूछा:

'क्या अब हमें वापस हश्र के मैदान में जाना होगा?'

"क्यों वहां जाने का शौक खत्म हो गया?" उसने आश्चर्य के साथ पूछा।

'नहीं ऐसी बात नहीं, मैं सोच रहा था कि यहाँ आ गया हूँ तो अपने घर वालों से मिल लूँ। जब हम शुरू में यहां आए थे तो तुम मुझे सीधे ऊपर ले गए थे, अब तो मेरे घर वाले उम्मत-ए-मुहम्मद्या के कैम्प में पहुंच चुके होंगे?'

"तुम इंसान अपनी भावनाओं को तहजीब के लिफाफे में डाल कर दूसरों तक पहुँचाने के आदी होते हो। खुलकर क्यों नहीं कहते कि अपनी घरवाली के पास जाना चाहते हो, यह बार बार घर वालों के शब्द क्यों बोल रहे हो?"

सालेह ने मेरी बात पर हँसते हुए टिप्पणी की तो मैं झेंप गया। फिर वह मुस्कुरा कर बोला:

"शर्माओ नहीं यार हम वहीं चलते हैं, यह सेवक तुम्हारी हर इच्छा पूरी करने पर लगाया गया है।"

हम जिस दुनिया में थे वहां रास्ते, समय स्थान सबके मतलब (अर्थ) बिल्कुल बदल चुके थे, इसलिए सालेह की बात खत्म होने के साथ ही हम उसी पहाड़ के पास पहुंच गए जिसके आसपास सभी नबियों और उनकी उम्मतों के कैम्प लगे हुए थे।

"शायद मैंने तुम्हें पहली बार यहां आते समय यह बताया था कि इस पहाड़ का नाम 'आराफ़' है। इसी की ऊंचाई पर तुम गए थे और यह देखो उम्मत-ए-मुहम्मद्या का कैम्प करीब आ गया है।"

हम पहाड़ के जिस हिस्से में थे वहां उसका दामन बहुत बड़ा था, इस लिए वहां जगह की बहुत गुंजाइश थी, लेकिन वह पूरी जगह इस समय अनगिनत लोगों से भरी हुई थी। पहाड़ के आसपास इतना रश शायद किसी और जगह नहीं था।

मैंने सालेह से कहा:

'लगता है सारे मुसलमान यहाँ आ गए हैं।'

"नहीं बहुत कम हैं, उम्मत-ए-मुहम्मद्या की तादाद बहुत ज़्यादा थी इस लिए नेक लोगों की संख्या भी बहुत ज़्यादा है। वरना अधिकतर मुसलमान तो अभी हश्र के मैदान ही में परेशान घूम रहे हैं।"

'तो मेरे जमाने के मुसलमान भी यहां होंगे।?'

"बदकिस्मती (दुर्भाग्य) से तुम्हारे ज़माने में से बहुत कम लोग यहां हैं। रसूल अल्लाह (ﷺ) की उम्मत के शुरुआती हिस्से के लोगों की बहुत बड़ी संख्या यहां मौजूद है लेकिन आखरी समय के कम लोग ही यहां आ सके हैं। तुम्हारे ज़माने में तो अधिकांश मुसलमान दुनिया परस्त थे या फिरका परस्त (सांप्रदायिक), दोनों तरह के लोग इस समय मैदान-ए-हश्र में घूम रहे हैं। इसलिए तुम्हारे जानने वाले यहां कम होंगे और जो होंगे उनसे तुम जन्नत में जाने के बाद दरबार में मिल लेना। यहां तो हम सिर्फ तुम्हारे 'परिवार' से मिलकर तुम्हारी आँखें ठंडी करेंगे और तुरंत वापस लोटेंगे, खबर नहीं कब हिसाब किताब शुरू हो जाए।"

'यह दरबार क्या है?'

सालेह की बातचीत में जो बात समझ में नहीं आई थी मैंने उसके बारे में पूछा।

"हिसाब किताब के बाद जब सभी जन्नती जन्नत में चले जाएँगे तो उनकी अल्लाह के साथ एक बैठक होगी, उसका नाम दरबार है। इस बैठक में सभी जन्नतियों को उनके दर्जे और ओहदे औपचारिक रूप से बांटे जाएंगे, यह लोगों की उनके रब के साथ भेंट भी होगी और ख़ास लोगों के सम्मान का मौका भी होगा।"

मैं इस से ज़्यादा कुछ और पता करना चाहता था, लेकिन बातचीत में हम कैम्प के काफी नजदीक पहुंच चुके थे। यहाँ खेमों की एक लम्बी कतार लगी थी, इस बस्ती में लोगों को कैम्प अलग अलग ज़माने के हिसाब से बांटे गए थे। कुछ खेमों के बाहर खड़े उनके मालिक आपस में बातचीत कर रहे थे। यहीं मुझे अपने बहुत से साथी और करीबी दोस्त दिखाई दिए जिन्होंने ने दीन की दावत में मेरा भरपूर साथ दिया था। उन्हें देख कर मुझे इतनी खुशी हुई कि बयान से

बाहर है। ये वो लोग थे जिन्होंने अपनी जवानियाँ, अपने करियर, अपने परिवार और अपनी इच्छाओं को कभी सर पर सवार नहीं होने दिया था। इन सब चीज़ों को एक हद तक रखकर अपना बाकी समय, सलाहियतें (क्षमता), पैसा और जज्बा परमेश्वर के दीन (धर्म) के लिए समर्पित कर दिया था। उसी का फल है कि आज वे इस कभी ना ख़त्म होने वाली सफलता को सबसे पहले पाने में कामयाब हो गए जिसका वादा दुनिया में किया गया था।

यहीं हमें उम्मत-ए-मुहम्मद्या के इतिहास की कई मशहूर हस्तियां नजर आईं। हम जहां से गुजरते लोगों को सलाम करते जाते, हर व्यक्ति ने हमें अपने खेमे में आकर बैठने और कुछ खाने पीने की दावत दी, जिसे सालेह शुक्रिया के साथ मना करता चला गया। लेकिन मैं हर व्यक्ति से बाद में मिलने का वादा करता रहा।

रास्ते में सालेह कहने लगा:

"उनमें से हर आदमी इस काबिल है कि उसके साथ बैठा जाए, तुम अच्छा कर रहे हो कि उनसे अब मुलाकात तय कर रहे हो। इनमें से बहुत से लोगों से बाद में समय लेना भी आसान नहीं होगा।"

यह कहकर वह एक पल के लिए रुका और प्यार भरी नज़रों से मेरी ओर देखकर बोला:

"समय लेना तो तुम से भी आसान नहीं होगा अब्दुल्लाह! तुम्हें अभी पूरी तरह अंदाजा नहीं, इस नई दुनिया में तुम खुद एक बड़ी हैसियत के मालिक होगे, बल्कि हकीकत तो यह है कि खुदा की नज़रों में तुम हमेशा एक बड़ी हैसियत के आदमी थे।"

यह कहते हुए सालेह रुका और मुझे गले लगा लिया, फिर हल्के से मेरे कान में बोला:

"अब्दुल्लाह! तुम्हारे साथ रहना मेरे लिए बड़े सम्मान की बात है।"

मैंने अपनी निगाहें आसमान की ओर उठाई और धीरे से जवाब दिया:

'सम्मान की बात तो खुदा की इबादत (उपासना) करना ह, उसके बन्दों को खुदा की बात मानने को कहना है। यह मेरा सम्मान है कि खुदा ने रेत के एक बे कीमत ज़र्रे को दीन की सेवा का मौका दिया।'

यह कहते हुए एहसान मंदी की भावनाओं से मेरी आंखों से आंसू बहने लगे।

"हाँ यही बात ठीक है, खुदा ही है जो ज़र्रे को सूरज की सी ऊंचाई देता है, तुम सूरज की तरह अगर चमके तो यह खुदा की रहमत (कृपा) थी। लेकिन यह रहमत खुदा को मानने वालों पर होती है, सरकशों, फसाद फैलाने वालों और बेपरवाहों पर नहीं।"

हम एक बार फिर चलने लगे और चलते चलते हम एक खुबसूरत और कीमती खेमे के पास पहुंच गए। मेरे दिल की धड़कन कुछ तेज हो गई, सालेह मेरी ओर मुस्कुरा कर देखते हुए बोला:

"नाएमा नाम है ना तुम्हारी पत्नी का?"

मैंने हाँ में गर्दन हिलादी, सालेह ने उंगली से इशारा करके कहा:

"यह वाला कैम्प है।"

'क्या उसे पता है कि मैं यहां आ रहा हूं?, मैंने धड़कते दिल के साथ पूछा।'

"नहीं।" सालेह ने जवाब दिया, फिर हाथ से इशारा करके कहा:

"यह है तुम्हारी मंज़िल।"

मैं हौले हौले चलता हुआ खेमे के पास पहुंचा और सलाम करके अंदर दाखिल होने की इजाज़त चाही। अंदर से एक आवाज़ आई जिसे सुनते ही मेरे दिल की धड़कन तेज हो गई।

"आप कौन हैं?"

"अब्दुल्लाह...."

मेरी जुबान से अब्दुल्लाह का नाम निकलते ही पर्दा उठा और सारी दुनिया में जैसे अंधेरा छा गया। अगर रोशनी थी तो सिर्फ एक चेहरे में जो मेरे सामने था। समय, ज़माने, सदियाँ और पल सब अपनी जगह ठहर गए। मैं चुप चाप खड़ा टकटकी बांधे उसे देखता रहा। नाएमा का मतलब रौशनी होता है लेकिन रौशनी का मतलब यह होता है यह मुझे आज पहली बार पता चला था।

हम जब आखरी बार मिले थे तो ज़िन्दगी भर का साथ बुढ़ापे की साझेदारी में ढल चुका था। जब प्यार खूबसूरती और जवानी का मोहताज नहीं रहता पर नाएमा ने अपनी जवानी के सभी अरमानों और सपनों को मेरी भेंट कर दिया था। उसने जवानी के दिनों में उस समय मेरा साथ दिया था जब मैंने आसान ज़िन्दगी छोड़ कर अपने लिए काँटों भरे रास्ते चुन लिए थे। उसके बाद भी ज़िन्दगी के हर सर्द व गर्म और अच्छे बुरे हाल में उसने पूरी ताकत से मेरा साथ दिया था। यहां तक की मौत हम दोनों के बीच आड़े आ गई, मगर आज मौत का अस्थायी पर्दा उठा तो मेरे सामने चाँद का नूर, तारों की चमक, सूरज की रोशनी, फूलों की महक, कलयों की नाजुक, शबनम की ताजगी, सुबह का उजाला और शाम की ख़ामोशी सब एक साथ एक ही चेहरे में शामिल हो गए थे। मैं सालों की उसकी साझेदारी को कुछ पल में समेट कर देखने की कोशिश कर रहा था। नाएमा की आँखों में नमी आ गई थी जो उसके गालों पर बहने लगी, मैंने हाथ बढ़ाकर उसके गालों से नमी पोंछली और उसके हाथों को अपने हाथों में लेकर कहा:

'मैंने कहा था ना, थोड़ा सा इंतजार थोड़ा सा सब्र, यह लड़ाई हम ही जीतेंगे।'

"और मैंने कब आप का विश्वास नहीं किया था, और अब तो मेरा विश्वास हकीकत में बदल चुका है। मुझे तो बस ऐसा लग रहा है कि आप कुछ देर के लिए घर से बाहर गए थे और फिर आ गए। हमने थोड़ा सा सब्र किया और बहुत बड़ी लड़ाई जीत ली।"

'हमें जीतना ही था नाएमा, अल्लाह नहीं हारता अल्लाह वाले भी नहीं हारते। वह दुनिया में पीछे रह सकते हैं, मगर आखिरत (परलोक) में हमेशा सबसे आगे हैं।'

"और अब ?" नाएमा ने सवाल करते हुए आंखें बंद कर ली, शायद वह कल्पना की आँख से जन्नत की दुनिया की कल्पना कर रही थी जो अब शुरू होने वाली थी।

'हमने खुदा के पैगाम (संदेश) को आम करने के लिए अपनी छोटी सी ज़िन्दगी लगाई और बदले में खुदा जन्नत की हमेशा रहने वाली ज़िन्दगी और कामयाबी हमें देगा।'

यह कहते हुए मैंने भी अपनी आंखें बंद कर ली। मेरे सामने अपनी मेहनत और संघर्ष से भरपूर ज़िन्दगी का एक एक पल आ रहा था। मैंने अपनी नौजवानी और जवानी के बेहतरीन साल ख़ुदा के दीन (धर्म) की खिदमत के लिए खर्च कर दिए थे। अपनी अधेड़ उम्र, हुनर और बुढ़ापे की आखरी ऊर्जा तक उसी राह में झोंक दी थी। मैं एक असाधारण प्रतिभाशाली और अक्ल मंद

आदमी था जो अगर दुनिया की ज़िन्दगी को अपना मकसद बना लेता तो विकास और सफलता के ऊँची मंजिल तक आसानी से पहुंच जाता। लेकिन मैंने सोच लिया कि कैरियर, संपत्ति, रुतबा, सम्मान और ख्याति अगर कहीं हासिल करनी है तो आखिरत (परलोक) में हासिल करनी है। मैंने ज़िन्दगी में इच्छाओं के मैदान ही में खुद से जंग नहीं की थी बल्कि पक्षपात की भावनाओं से भी लड़ता रहा था। फिरकावारियत (सांप्रदायिकता), अपनों ही की बात को सच मानना और भेदभाव से मैंने कभी अपना दामन दागदार नहीं होने दिया। परमेश्वर के धर्म को हमेशा ईमानदारी और अक्ल से समझा और निष्ठा और सच्चे दिल से उस पर अमल किया, उस धर्म को दुनिया भर में फैलाया और कभी इस राह में किसी बुरा कहने वाले की बात की परवाह नहीं की। इस रास्ते में खुदा ने जो सबसे बड़ा सहारा मुझे दिया वह नाएमा का प्यार और उसका साथ था जिसने हर तरह के हालात में मुझे लड़ने का साहस दिया, और अब हम दोनों शैतान के खिलाफ अपनी जंग जीत चुके थे, मेहनत खत्म हो चुकी थी और जश्न का समय था। हम इसी हाल में थे कि सालेह ने खनकार कर हमें अपने होने का एहसास दिलाया और बोला:

"आप लोग आराम से बाद में मिलियेगा। अभी चलना होगा।"

उसके इन शब्दों से मैं वापस इस दुनिया में लौट आया। मैंने सालेह का नाएमा से परिचय कराया:

'यह सालेह हैं।' फिर हंसते हुए अपनी बात को बढ़ाया:

'यह किसी भी समय मुझे अकेला छोड़ने को तैयार नहीं होते।'

नाएमा ने सालेह को देखते हुए कहा:

"मैं इन्हें जानती हूं, मुझे यहाँ पर यही छोड़ गए थे और उसी समय आपके बारे में बताया था, वरना मैं बहुत परेशान रहती।"

मैंने सालेह की तरफ मुड़ते हुए कहा:

'तुम मुझसे अलग ही कब हुए जो नाएमा को यहाँ छोड़ने आगए थे।'

"तुम्हें शायद याद नहीं जब तुम ऊपर बैठे खुदा से मैदान-ए-हश्र में घूमने फिरने की दुआ कर रहे थे तब मैं तुम्हारे बराबर से उठ गया था। अब्दुल्लाह! यह तुम्हारी कमजोरी है और शक्ति भी कि जब तुम खुदा के साथ होते हो तो तुम्हें आसपास का होश नहीं होता।"

'होश तो मुझे थोड़ी देर पहले भी नहीं था, लेकिन इस समय तो तुम टले नहीं।'

"हाँ मैं अगर टल जाता तो फिर तुम से अगली मुलाकात हश्र के बाद ही होती, वैसे तुम इंसान बड़े नाशुकरे हो और भुलक्कड़ भी, भूल गए तुम्हें कहाँ जाना है?"

'ओहो, नाएमा! हमें चलना होगा, तुम यहीं रुको मैं कुछ देर में आता हूँ।'

"मगर हमारे बच्चे?"

'वह भी ठीक हैं, तुम उन्हें यहाँ तलाश करो पास में ही कहीं मिल जाएंगे, वरना मैं थोड़ी देर में सब को लेकर खुद आजाउंगा। अभी मुझे फ़ौरन हश्र में लौटना है। मिलना मिलाना उसके बाद उम्र भर होता रहेगा।'

नाएमा के इस आखरी सवाल के बाद यहाँ मेरे लिए रुकने की गुंजाइश खत्म हो चुकी थी। क्योंकि मुझे जवाब में उन दो बच्चों के बारे में भी बताना पड़ता जो यहाँ नहीं थे और यह बहुत तकलीफ देह (कष्टदायक) काम था।

नाएमा ने कुछ समझते हुए और कुछ न समझने के अंदाज़ में गर्दन हिला दी।

.....

वापसी पर मैंने सालेह से कहा:

'यहां के जीवन में तो परिवारों में बड़ी टूट फूट हो जाएगी, किसी की पत्नी रह गई और किसी का पति रह गया।'

"हां यह सब तो होगा, आगे बढ़ने का मौका तो वह दुनिया थी जो गुज़र गई। यहां जो पीछे रह गया सो रह गया, लेकिन यहां कोई अकेला नहीं रहेगा, रह जाने वालों के इंतजार में नहीं रुकेगा। नए रिश्ते नाते बन जाएँगे, नए जोड़े बन जाएंगे, नई शादियां हो जाएंगी।"

'मगर यहां वैसे परिवार तो नहीं होंगे जैसे दुनिया में होते थे।'

"तुम ठीक समझे हो, इंसान की कुछ कमजोरियों की बुन्याद पर दुनिया में परिवार बनाए गए थे, बच्चों की परवरिश और बूढ़ों की देखभाल इसका असल मकसद था। परिवार की मजबूती को बनाए रखने के लिए मर्दों को परिवार का मुखिया बनाया गया। इसी परिवार को जोड़े रखने के लिए औरतों को कई मामलों में मर्दों से कमज़ोर बनाया गया था, जबकि मर्दों को जरूरी तौर पर औरतों का मोहताज कर दिया गया था। वह मर्दों के लिए नेमत भी थीं और जरूरत भी। उसके बिना दुनिया का कामकाज चल नहीं सकता था। लेकिन अब यहाँ हालात अलग होंगे। औरतें मर्दों के लिए नेमत तो रहेंगी, लेकिन खुद उनकी मोहताज नहीं होंगी। इसीलिए उनकी कद्र ओ कीमत बहुत बढ़ जाएगी और उनका नख़रा भी।"

'इसका मतलब यह है कि इस दुनिया में औरत होना ज़्यादा फाएदे की बात है। औरत जब चाहेगी मर्द का ध्यान आकर्षित कर लेगी, लेकिन मर्दों का औरतों पर कोई ज़ोर नहीं होगा हालांकि वह उनके जरूरत मंद होंगे।'

"हां यह बात ठीक है।"

'तो हम मर्द तो फिर नुकसान में रहे।'

"हां नुकसान में तो तुम लोग रहोगे।"

'यह तो बड़ी समस्या है, इस समस्या का कोई हल है?'

"जन्नत की नई दुनिया में हर चीज का हल होता है, हूरें इसी समस्या का हल है।"

'मगर उनसे तो औरतों को जलन महसूस होगी।'

"नहीं ऐसा नहीं होगा, हूरें अपने स्टेटस और खूबसूरती में कभी जन्नती औरतों के बराबर नहीं आ सकतीं। इसलिए वह जन्नती औरतों के लिए कभी ईर्ष्या और जलन का कारण नहीं बनेंगी। जन्नत की औरतें अपने आमाल (कर्मों) की वजह से हूरों से कहीं ज़्यादा खुबसूरत और बहुत बड़े स्टेटस की मालिक होंगी। उन्हें इसकी परवाह नहीं होगी कि उनके पति की और रुचियां क्या हैं। वैसे भी जन्नत इंसानों की नहीं खुदा की दुनिया है, तुम जानते हो कि इंसान और खुदा की दुनिया में क्या अंतर हो सकता है?"

मैं चुपचाप सवालिया निगाहों से उसे देखता रहा, उसने अपने सवाल का खुद ही जवाब दिया:

"इंसानों की दुनिया में विरोधी से नफरत की जाती हैं मगर ख़ुदा की दुनिया में विरोधी भी महबूब होता है।"

'यह तो लाजवाब है, लेकिन इस समस्या का फैसला जन्नती औरतें ही कर सकती हैं।'

"जन्नत पाक (पवित्र) लोगों के रहने की जगह है उनकी पाकीज़गी (पवित्रता) खुदा की महरबानी से बुरे जज़्बात (नकारात्मक भावना) को उनके पास फटकने नहीं देगी।" सालेह ने मेरी बात का सीधा जवाब देने के बजाय एक उसूली बात बता दी और फिर उसको और ज़्यादा खोलते हुए कहा:

"दरअसल तुम अभी तक इंसानी दुनिया के असर से नहीं निकले हो। पिछली दुनिया आज़माइश की दुनिया थी, इसलिए वहाँ सकारात्मक भावनाओं के साथ नकारात्मक भावनाएँ भी रख दी गई थीं। यह नकारात्मक भावनाएँ हर इंसान के अंदर से उठती थी, हर ईश्वर को मानने वाले मर्द और औरत की यह जिम्मेदारी थी कि वह हर तरह के अच्छे और बुरे हालात और माहौल में रहने के बावजूद अपने अंदर पैदा होने वाली नकारात्मक भावनाओं पर काबू पाए। यह बिल्कुल ऐसा ही है जैसे पसीना, बदबू, पेशाब और मल वगैराह इंसानी शरीर से निकलने वाली गंदगियाँ थीं। लेकिन हुक्म था कि हर गंदगी से अपने वुजूद (अस्तित्व) को पाक रखो तो तुम लोग पानी से नहाते व तहारत करते थे। इसी तरह नकारात्मक भावना भी अंदर से पैदा होने वाली गंदगियाँ थीं। गुस्सा, नफरत, झूठ, जलन, घमंड, बैर, ज़ुल्म और उन जैसी सभी गंदगियों के बारे में हुक्म था कि सब्र के पानी से उन्हें धो डालो, ईश्वर को मानने वाले मर्द और औरत ज़िन्दगी भर यह तकलीफ उठाते रहे। लेकिन आज के दिन उन्हें हर ऐसी मेहनत से आज़ाद कर दिया जाएगा।"

'यानी?'

"मतलब यह कि न उनके शरीर से गंदगियाँ निकलेंगी और न उनके मन में नकारात्मक भावना और विचार ही पैदा होंगे। जन्नत खुबसूरत लोगों के रहने की एक खूबसूरत जगह है जहां कोई बदसूरत ख्याल भी बाकी नहीं रहेगा।"

'लेकिन मेरे हिसाब से इस बहस में रोचक बात यह सामने आई कि हूरें जन्नत की औरतों से कमतर हैं और बस गुज़ारे लायक हैं, तभी उनसे और औरतों को जलन नहीं होगी।'

फिर मैंने हँसते हुए अपनी बात को बढ़ाया:

'मुसलमान बिना वजह हूरों के हुस्न की तारीफ़ सुन कर उनके दीवाने बने और बेवजह लोगों के ताने सुनते रहे।'

मेरे मजाक के जवाब में सालेह ने गंभीरता से कहा:

"यह दोनों तुम्हारी गलत फहमियां हैं। बात यह है कि जन्नत में तुम मर्द, महिलाओं के लिए कोई कीमती चीज़ नहीं रहोगे जिस की वजह से वह किसी से नफरत करें। रही हूरें तो उनकी इतनी बेईज्जती मत करो कि उनके लिए 'काम चलाऊ' और 'गुज़ारे के लायक' जैसे शब्द बोलो। वह जन्नती औरतों जैसी तो नहीं, मगर फिर भी ऐसी नहीं है कि तुम उन्हें कम समझो।"

'अच्छा.... तो कैसी हैं वह?'

"मैं बताता हूँ वह कैसी है। वह हूरें इंसानी जमाल का आखरी नमूना और जिस्मानी खूबसूरती का आखरी शाहकार हैं। उनका बेमिसाल हुस्न और बाकमाल रूप गुलाबी पाउडर के सिंगार, गजरों के तार, मोतियों के हार और जेवरों की झनकार का मोहताज नहीं होता। उनके वुजूद (अस्तित्व) की बनावट के लिए काएनात अपना हर हुस्न वार देती है। फूल अपने रंग, हवा अपना अहसास, नदी अपना बहाव, ज़मीन अपना ठहराव, तारे अपनी चमक, कलियाँ अपनी महक, चाँद अपनी रोशनी, सूरज अपनी किरणे, आसमान अपना संतुलन, चौटयाँ अपनी ऊंचाई और वादियाँ अपने उतार चढ़ाओ जब जमा करते हैं तो एक हूर वुजूद (अस्तित्व) में आती है।

उनका हुस्न खूबसूरती के हर पैमाने को आखरी दर्जे में पूरा करता है। उनका कद लंबा और रंग हल्का गुलाबी गोरा है, पूरे शरीर की त्वचा बेदाग और साफ़ है, आँखें बड़ी बड़ी और गहरी काली हैं, लेकिन हर लिबास (ड्रैस) के हिसाब से उस के रंग में ढल सकती हैं। उनकी भवें कमान और पलकें बड़ी बड़ी हैं, उनकी नज़र आमतौर पर झुकी रहती है, मगर जब उठती है तो तीर की तरह दिल तक जा पहुँचती हैं। उनका चेहरा किताब, माथा विशाल, गाल गुलाबी, बोलने का अंदाज़ मीठा और होंठ गुलाब की तरह नाज़ुक और दांत मोतियों की तरह चमकदार हैं। उनके बाल रेशम की तरह मुलायम और चमकदार और उनके सफेद रंग के उलट गहरे काले पिंडलियों तक लंबे हैं। उनकी आवाज़ सुरीली है जो गाने की तरह कान में रस घोलती हैं, बातों से मोती झड़ते और मुस्कान से रुत हसीन हो जाती है। उनके वुजूद (अस्तित्व) में हया का इत्र और साँसों में

खुशबुओं की महक है। उनके लहजे में नरमी, चलने के अंदाज में दिलबरी और बोलने के तरीके में शान और प्रतिष्ठा है। उनके शरीर पर मखमली कपड़े और चमकते गहने बादलों से छिपते खुलते पूरे बड़े चाँद का मन्ज़र (दृश्य) पेश करते हैं।"

'तुमने हूरों को देखा है?'

"नहीं! उन्हें किसी ने नहीं देखा, सिर्फ उन के हालात सुने हैं, वही तुम्हें सुना रहा हूँ।"

यह कहते हुए उसने अपनी बात जारी रखी।

मैंने कहा:

'तुम्हारी बातें हकीकत नहीं, कहानियां और सपना लग रही हैं, लेकिन अगर सपना है तो बहुत खुबसूरत सपना है।'

"यह सपना अभी ख़त्म नहीं हुआ, सुनो! एक हूर का वुजूद (अस्तित्व) बल खाती नदी की तरह ढलता है जो आसमान की काली घटाओं से बर्फ जैसे सफ़ेद बादलों से अपना सफ़र शुरू करती, चोटियों पर डेरा डालती, झरनों और बूंदों की सूरत में निकलती, ढलानों में उतरती, मैदानों में ठहरती, बुलंदियों को छूती, उतार की ओर बढ़ती, टीलों को बहाती हुई वादी तक पहुंचती है और आख़िरकार नेकी, रहमदिली और तक़वा (गुनाहों से बचना) के इस समंदर पर अपना वुजूद निछावर कर देती है जो ज़िन्दगी सब्र (धैर्य) और तक़वा के साथ बिताया। यह इसलिए होता है कि यह नदी अपने पूरे सफर में किसी नापाकी या किसी प्रदूषण का शिकार नहीं होती। हर गैर निगाह से अपने आप को बचाती और स्पर्श से दूर रखती है, यह हज़ारों मील का सफ़र पाकदामनी के साथ तय करती है इसलिए पाकदामन से कम किसी को क़ुबूल नहीं करती और आखिरकार समंदर की मौज का सा उनका वुजूद (अस्तित्व) अपने समुद्र में हमेशा के लिए समाँ जाता है।"

'मुझे समझ नहीं आता कि तारीफ हूरों की करूँ या तुम्हारे बयान करने की।'

"तारीफ़ तो बस ईश्वर की होनी चाहिए।"

'इसमें तो कोई शक नहीं कि इबादत (पूजा) और तारीफ तो खुदा ही की होनी चाहिए लेकिन यह बताओ कि क्या यह हूरें इंसान ही होंगी?'

"हां यह भी इंसान हैं। इसी तरह जन्नतियों के वह नौकर जिन्हें गुलामान कहा जाता है, वह भी इंसान ही हैं। यह वह लड़के हैं जो हमेशा लड़के ही रहेंगे।"

'यह लड़के क्यों रहेंगे? नौकर और सेवक तो वह बेहतर होता है जो ज़्यादा उम्र का हो और ज़्यादा समझ रखता हो?' मैंने दिमाग में आने वाला एक ऐतराज़ जड़ दिया।

"नहीं ऐसा नहीं है, यह कम उम्र होने के बावजूद बला के समझदार और अच्छी आदत के होंगे। जन्नत वालों की महफ़िलों में जब किसी जन्नती का ड्रिंक खत्म होगा तो उसकी नज़र देखेंगे और बिना कुछ कहे सुने उसके गिलास में जरूरी ड्रिंक इतनी ही मात्रा में डालेंगे जितनी उसे जरूरत होगी। इसलिए उनकी समझ बूझ और अच्छे स्वभाव की तो कोई हद नहीं होगी लेकिन उन्हें लड़कों के रूप में इसलिए रखा जाएगा कि जिस्मानी तौर पर हर पल मुस्तैद रहें और पल भर में हर हुक्म बजालाएँ, और कम उम्र की वजह से तुम्हे उन्हें हुक्म देने में कोई संकोच ना हो। उनका लिबास (ड्रैस), रूप और हुलया उन्हें ऐसा बना देगा जैसे महफ़िल में कीमती मोती बिखरे हुए हैं। उनके कभी ना बढ़ने वाली कम उम्र के लड़के बनाए जाने की दूसरी वजह यह है कि कभी उन को वैवाहिक संबंध की जरूरत न हो, जबकि हूरें पुरे शबाब की उम्र को पहुंची हुई लड़कियां होंगी और जन्नतियों की पत्नियाँ होंगी।"

'क्या हूरे और गुलमान को जन्नतियों के लिए खास तौर से बनाया जाएगा?'

"यह एक लम्बी कहानी है।"

'हमारे पास समय की कौन सी कमी है, यह लंबी कहानी भी सुनाते जाओ।'

"तो सुनो! आज का दिन इंसानों का पहला हश्र का दिन नहीं है।"

'क्या मतलब! क्या क़यामत पहले भी आ चुकी है?'

"क़यामत तो पहले नहीं आई लेकिन सारे इंसान एक बार पहले भी पैदा किए जा चुके हैं।"

'यह कब हुआ था?'

"यह तो तुम अल्लाह से जन्नत में जाकर खुद पूछना, मुझे तो इतना मालूम है कि यह हुआ था। दरअसल जिस आज़माइश में इंसान को डाला गया था, यह पहला हश्र इस कहानी का दूसरा

भाग है। पहला भाग ये था कि अल्लाह ने सभी जीवों के सामने यह मौका रखा था कि वह जन्नत में खुदा के पास हमेशा के लिए रहने का सौभाग्य प्राप्त करें। लेकिन इसके लिए उन्हें दुनिया में कुछ वक़्त ऐसे बिताना होगा कि खुदा उनके सामने नहीं होगा सिर्फ उस के हुक्म उनके सामने आएंगे और उन्हें बिन देखे खुदा की इबादत (पूजा) और इताअत (आज्ञा पालन) का रास्ता अपनाना होगा। ज़मीन की हुकूमत कुछ समय के लिए अमानत के तौर पर उनको दे दी जाएगी और ज़मीन पर अपनी हुकूमत के दौरान उन को ये साबित करना होगा कि वह ताकत होने के बावजूद बिन देखे ख़ुद ईश्वर की बात और हुक्म मानने के लिए तैयार हैं। जिसने इस ताकत और अमानत का सही इस्तिमाल किया उसका बदला जन्नत में परमेश्वर के पास हमेशा रहने का मौका होगा, और गलत इस्तिमाल करने पर जहन्नम की सज़ा मिलेगी"

'तो फिर क्या हुआ?'

"फिर यह हुआ कि सब जीव डर के मारे पीछे हट गए, क्योंकि जन्नत जितनी खुबसूरत है, जहन्नम उतनी ही भयानक जगह है। हश्र की सख्ती को तो अभी तुमने अपनी आँखों से देखा है, उसके बाद कौन बुद्धिमान होता जो इस इम्तिहान में कूदने की कोशिश करता।"

'और शायद हम जज्बाती इंसान इस इम्तिहान में कूद पड़े।' मैंने बीच में कहा।

"हाँ यही हुआ था, लेकिन खुदाई अमानत उठाने का यह इरादा इंसानी रूहों ने मिलकर सामूहिक तौर पर किया था। इसलिए खुदा के इन्साफ की मांग थी कि हर इंसान से अलग अलग भी यह पता किया जाए कि वह किस हद तक इस इम्तिहान में उतरने के लिए तैयार है।

अब्दुल्लाह! यह इसलिए हुआ कि तुम्हारा रब किसी पर राई के दाने के बराबर भी ज़ुल्म नहीं करता। सो उसने सब इंसानों को पैदा किया सबके सामने अपना पूरा प्लान रखा, जाहिर है ज़्यादातर इंसान पहले ही इस मकसद (उद्देश्य) के लिए तैयार थे। इसीलिए पूरी समझ बूझ के साथ इस इम्तिहान में कूदने के लिए तैयार हो गए। लेकिन जिन लोगों ने यह जोखिम लेने से मना कर दिया, उन सब के बारे में यह फैसला हुआ कि इंसानों के घरों में जो बच्चे पैदा होंगे और बालिग होने से पहले मर जाएंगे, उन में इनकी रूह को भेजा जाएगा तो उन लोगों को यही भूमिका सौंप दी गई और यही बच्चे बच्चियां जन्नत की बस्ती में हूर और गुलामान बना दिए जाएँगे।"

'और बाकी लोग कड़े इम्तिहान में उतरने के लिए तैयार हो गए?'

"इसमें भी रहम करने वाले खुदा ने बहुत रहम किया था, तुम जानते हो कि दुनिया में सब का इम्तिहान एक जैसा नहीं होता। यह इम्तिहान भी उस दिन हर इंसान ने अपनी मर्ज़ी से चुन लिया था। जो बहुत साहसी लोग थे उन्होंने नबियों का समय चुन लिया, इन लोगों का इम्तिहान यह था कि चरों तरफ फैली गुमराही के दौर में नबियों की तस्दीक (पुष्टि) करके उनका साथ दें। उनकी कामयाबी के लिए असल शर्त यह थी कि वह पूरी तरह किये जा रहे विरोध में भी ईमान पर जमे रहे इस राह में हर मुश्किल को सहन करें और नबियों के पैगाम (संदेश) को आगे पहुँचाएँ। इसलिए उनका इनाम भी बड़ा रखा गया, लेकिन उन्हें नबियों की सीधे रहनुमाई (मार्गदर्शन) मिलने के आधार पर इन्कार करने की सूरत में अज़ाब भी उतना ही भयानक होता। इन्हीं लोगों में एक तरफ हज़रत अबू बक्र (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक साथी) जैसे लोग थे और दूसरी ओर अबू लहब (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक दुश्मन) जैसे सच्चाई के दुश्मन भी।

आज़माइश की दूसरी केटेगरी वह थी जिसमें लोगों ने मुसलमानों और नबियों के बाद उनकी उम्मत में शामिल होने का इम्तिहान चुना। इन लोगों की परीक्षा ये थी कि बाद के दिनों में पैदा होने वाली गुमराहियों, फिरका वारीयत (सांप्रदायिकता), बिदत (दीन में नई बातों को मिलाना) और बेपरवाही से बच कर शरयत (खुदाई क़ानून) की ज़रूरतों को हर हाल में निभाते रहें और समाज से कटने के बजाय लोगों में नेकी को फैलाएँ और बुराई से रोकें। यह जुम्मेदारियां उन पर इसलिए लगाई गईं थी कि उनके पास नबियों की शिक्षा थीं और वह जन्म से मुसलमान थे जिन्हें इस्लाम क़ुबूल करने के लिए किसी बड़ी परेशानी से नहीं गुजरना पड़ा। इसका मतलब यह था कि आम इंसानों की तुलना में उनकी रहनुमाई (मार्गदर्शन) ज़्यादा की गई, उन्हें ज़्यादा फल कमाने के मौके दिए गए, लेकिन बेपरवाही करने की सूरत में उनका हिसाब किताब इतना ही सख्त होना तय पाया।"

'मेरा और अन्य मुसलमानों का संबंध इसी गिरोह से था ना?'

"हां तुम ठीक समझे, तीसरा गिरोह उन लोगों का था जिन्होंने अपना इम्तिहान बहुत सादा रखा। ये सारे लोग नबियों की सीधी रहनुमाई (मार्गदर्शन) के बिना पैदा किए गए और उनका इम्तिहान फितरत में मौजूद एक इश्वर के होने की निशानी और निर्देश था। यानी एकेश्वरवाद और

अख्लाक़ (नैतिकता) का इम्तिहान, उन्हें आम मुसलमानों की तरह शरयत के इम्तिहान में नहीं डाला गया न नबियों का साथ देने के कड़े इम्तिहान में। जाहिर है कि उनका हिसाब किताब सबसे हल्का होगा, उनके ज़्यादा अज़ाब की आशंका भी कम है और फल पाने के मौके भी उसी हिसाब से कम हैं।"

'और नबियों का मामला क्या था?'

"उन्होंने सबसे सख्त इम्तिहान चुना इसलिए उनकी रहनुमाई (मार्गदर्शन) सीधे ईश्वर की तरफ से की गई और इसीलिए उनकी पकड़ का स्तर भी सबसे कठोर था। तुम्हें तो पता है कि हज़रत यूनुस (एक नबी) के साथ क्या हुआ था। उन्होंने कोई गुनाह नहीं किया था, अपनी अक्ल से एक फैंसला लिया था। लेकिन देखो उन्हें किस तरह खुदा ने मछली के पेट में बंद कर दिया था।"

फिर उसने इस लंबी बातचीत का खुलासा करते हुए कहा:

"असल कानून (मूल सिद्धांत) जो हर तरह के गिरोहों में काम कर रहा है वह एक ही है। ज़्यादा रहनुमाई, ज़्यादा सख्त हिसाब किताब और बड़ी सज़ा बड़ा इनाम। कम रहनुमाई (मार्गदर्शन), हल्का हिसाब किताब कम सज़ा कम इनाम। मगर कौन सा इन्सान किस गिरोह से होगा इस का फैसला इंसानों ने खुद किया है, खुदा ने नहीं।"

'इसका मतलब यह हुआ कि दुनिया में मेरी रहनुमाई ज़्यादा की गई थी तो यह हकीकत में मेरी अपनी मांग की वजह से की गई थी?।'

"हाँ बिल्कुल ऐसा ही है, इसी लिए तुम आज इतना ऊंचा दर्जा पाने में कामयाब हो गए। अगर तुम इस रहनुमाई की कद्र न करते तो तुम्हें उतना ही सख्त अज़ाब दिया जाता।"

'यार.... मैंने कितना बड़ा रिस्क ले लिया था।'

"यही तुम्हारी दुनिया का नियम था। No Risk No Gain"

मुझे इस पल एहसास हुआ कि मैंने क्या पा लिया है और किस खतरे से निकल गया, मैं आप से आप ही सजदे में गिर गया। देर तक मैं अपने रब का शुक्र अदा करता रहा जिसने मुझे इस महान परीक्षा में सफल कर दिया था। इतने में सालेह ने मेरी पीठ थपकते हुए मुझसे कहा:

"अब्दुल्लाह! उठो।"

मैं उठकर खड़ा हुआ और सालेह को दोनों हाथों से पकड़ कर बोला:

"सालेह अब में कभी नहीं मरूंगा, मेरी ज़िन्दगी में कभी कोई बीमारी, बुढ़ापा, डर, गम, उदासी और मायूसी नहीं आएगी। मेरा दिल चाह रहा है कि मैं उछलूं, कूदुं, नाचूं, जोर जोर से हंसू और दुनिया को चीख चीख कर बताऊँ कि लोगो मैं कामयाब हो गया। लोगो मैं कामयाब हो गया। आज मेरी बादशाहत शुरू होती है, आज से मेरी ज़िन्दगी शुरू होती है।'

सालेह चुप चाप मुस्कुराते हुए मुझे देखता रहा, मेरे चुप होने पर वह बोला:

"ज़िन्दगी तो शुरू होगी, अभी तो हमें वापस हश्र में लौटना है, कई तरह के हालात देखने हैं, ख़ुदा ने तुम्हें बड़ा खास मौका दिया है। आओ हश्र के मैदान में चलते हैं।"

****

दो सहेलियां

हम एक बार फिर हश्र के मैदान में खड़े थे। बच्चों के बारे में नाएमा का सवाल मेरे कानों में गूंज रहा था। मैंने सालेह से कहा:

'मैं अपने दोनों बच्चों से मिलना चाहता हूं जो यहां मौजूद हैं।'

"इसका मतलब है कि तुम मानसिक तौर से उन दोनों से उनके बुरे हाल में मिलने के लिए तैयार हो चुके हो।"

'हां शायद मैं पहले खुद में यह साहस नहीं पा रहा था। मेरे लिए तो अपने उस्ताद (गुरु) का दुख ही बहुत था, फिर अपनी बहू हुमा को बुरे हाल में देख कर मेरे होश उड़ गए थे, लेकिन अब मुझे अंदाज़ा हो चुका है कि इन बुरे हालात का सामना करने का समय आ गया है।'

"हां अभी हश्र का दिन है यह तो सिर्फ जन्नत में जाने के बाद ही होगा कि इंसान के लिए हर दुख और गम ख़त्म हो जाएगा।" सालेह ने मुझ पर होने वाले गम के असर को देख कर कहा।

'यही बात कुरआन में जन्नत के लिए लिखी है। वो जगह जहाँ अतीत का कोई पछतावा है और न भविष्य का कोई डर।' मैंने उसके समर्थन में कुरआन की एक आयत का हवाला दिया, जवाब में सालेह ने एक और जरूरी बात को बताते हुए कहा:

"हाँ जन्नत ऐसी ही जगह है। हिसाब जब शुरू होगा तो जन्नत और जहन्नम को करीब ले आया जाएगा। हर इन्सान के जन्नत या जहन्नम का जब फैसला होगा तो उसी समय उसे यह भी बताया जाएगा कि उसे क्या नहीं मिला, यानी उसे किस अज़ाब से बचा लिया गया या किस नेमत से महरूम (वंचित) कर दिया गया है।"

'क्या मतलब?' मेरी आँखों में तफसील (विवरण) जानने की ख्वाहिश थी।

"मतलब यह कि एक आदमी के बारे में अगर जन्नत का फैसला हुआ तो उसी समय उसे यह भी बताया जाएगा कि जहन्नम में उस आदमी का संभावित ठिकाना क्या था, जिससे उसे बचा

लिया गया है, इसी तरह फैसला अगर जहन्नम का हुआ तो उस गुनाहगार को यह भी बताया जाएगा कि जन्नत में उसके लिए संभावित ठिकाना क्या तैयार था जो उसने बुरे कामों से खो दिया।"

'यह तो खुद अपने आप में एक बहुत बड़ा अज़ाब होगा।'

"हां जन्नतियों के लिए सबसे बड़ी और पहली ख़ुशी जहन्नम से बचना होगी और जहन्नमयों के लिए सबसे पहला अज़ाब यह पछतावा कि उसने किस बड़ी नेमत और ऊँचे रुतबे से खुद को महरूम (वंचित) कर लिया है। तुम्हें कुछ देर पहले बताई हुई मेरी बात याद होगी कि इंसान ने पहले हश्र के दिन अपने लिए जन्नत में तरक्की का जितना बड़ा मौका चाहा, उसने जहन्नम की भी इतने ही ज़्यादा गहराइयों में जाने का जोखिम ले लिया था। सो आज इसका नतीजा यह निकलेगा कि जन्नत में ऊँचा रुतबा मिलने की ख़ुशी के साथ जहन्नम में सख्त से सख्त अज़ाब से बचने की ख़ुशी भी मिलेगी और जहन्नम में सख्त अज़ाब की मुसीबत के साथ जन्नत के ऊँचे रुतबे से महरूम (वंचित) रहने का अफ़सोस भी इसी हिसाब से ज़्यादा होगा।"

'ओ मेरे खुदाया!' मेरे मुंह से बे इख़्तियार निकला।

हम बात कर रहे थे और धीरे धीरे चलते जा रहे थे। हश्र के हालात अभी तक वही थे या शायद कुछ और कड़े हो चुके थे। वही रोना पीटना, वही परेशानी और बदहाली, वही हसरत और लज्जा, वही चिन्ता और बेचैनी, वही पाछतावा और निराशा। हर चेहरे पर सवाल था, लेकिन जवाब कहीं नहीं था, हर चेहरे पर थकावट थी, मगर आराम कहीं नहीं था। मैंने दिल में सोचा पता नहीं मेरी बेटी और बेटे पर क्या बीत रही होगी।

.....

इसी मैदान में एक जगह दो लड़कियां पथरीली ज़मीन पर बे यार व मददगार बैठी हुई थीं। दोनों की आँखें बुरी तरह सूज रही थीं, साफ लग रहा था कि रोते रोते उनकी यह हालत हो चुकी है। निढाल शरीर, परेशान चेहरा और मायूस आँखें, उनके दुख की कहानी उनके चेहरे पर दूर से पढ़ी जा सकती थी। इनमें से एक ज़्यादा बदहाल लड़की दूसरी से कहने लगी:

"लैला! मुझे विश्वास नहीं आ रहा कि यह सब कुछ सच है। इन्सान मौत के बाद दोबारा इस तरह जिन्दा हो सकते हैं, दुनिया के जीवन के बाद एक नई दुनिया शुरू हो सकती है। नहीं

नहीं.... मुझे यकीन नहीं होता, काश यह एक भयानक सपना हो, काश मेरी आंख खुले और मैं अपने ठंडे A/C रूम के नरम और नाजुक बिस्तर पर लेटी हुई हूँ। और कॉलेज आकर मैं तुम्हें बताऊँ कि आज मैंने एक भयानक सपना देखा है.... काश यह सपना हो, काश यह सपना हो।

यह कहते हुए वह बिलक बिलक कर रो पड़ी।

लैला ने रोती हुई आसमा से कहा:

"विश्वास करने न करने से अब क्या फर्क पड़ता है, यह सपना नहीं सच है। सपना तो वह था जो हम पिछली दुनिया में देख रहे थे। आँख तो अब खुली है आसमा! आँख तो अब खुली है, लेकिन अब आँखे खुलने का क्या फायदा?"

कुछ देर के लिए ख़ामोशी छा गई। फिर लैला हसरत के साथ आसमा से बोली:

"काश मेरी तुमसे दोस्ती न होती! काश मैं तुम्हारे रास्ते पर न चलती!"

"हाँ.... काश मैं तुम्हारे रास्ते पर चलती तो आज हम दोनों का यह हाल न होता। पता नहीं अब आगे क्या होगा।" आसमा का लहजा भी अफ़सोस भरा था।

कुछ देर खामोश रहने के बाद आसमा ने लैला से संबोधित होकर कहा:

"लैला यह बताओ दुनिया में हम कितने दिन रहे थे।"

"पता नहीं, एक दिन.... या दस दिन.... या शायद बस कुछ घंटे। तब तो यूँ लगता था कि ज़िन्दगी कभी खत्म नहीं होगी, लेकिन अब तो वह सब कुछ बस एक सपना लगता है।"

"मुझे तो उस सपने की झलक भी याद नहीं आ रही।"

यह कहते हुए आसमा अतीत के धुंद में खो गई। शायद वह अतीत की किताब के पन्ने उलट कर कोई ऐसा पन्ना खोज रही थी जिसकी याद आज तसल्ली का कुछ सहारा बन जाती। मगर उसकी याद में कोई ऐसा पन्ना नहीं आया, जो कुछ याद आया वह आज खुद एक शर्म की बात थी।

.....

"मैं आज क़यामत लग रही हूँ ना।"

आसमा ने एक अदा से शरीर को लहराया और किसी मॉडल के अंदाज में दो कदम चल कर लैला के सामने खड़ी हो गई। लैला अपने कॉलेज के बाहर पेड़ों की छाया तले बिछाई गई एक बैंच पर बैठी हुई जूस पी रही थी और उसके सामने उसकी सबसे प्यारी सहेली आसमा लहराती बल खाती अपने नए कपड़ों की नुमाइश कर रही थी। लैला चुप रही तो आसमा ने फिर कहा:

"मैं कैसी लग रही हूँ?"

'तुम कपड़े पहन कर भी नंगी लग रही हो।'

लैला ने बेपरवाही से जूस का सिप लेते हुए उसके कपड़ों पर टिप्पणी की।

"व्हाट!"

'सच कह रही हूँ। यह लॉन का प्रिंट है तो बहुत शानदार, लेकिन इस में से तुम्हारा पूरा शरीर झलक रहा है। आसतीने तो तुम पहनने की आदी वैसे ही नहीं हो, लेकिन इन कपड़ों में तो बाजुओं के साथ तुम्हारे कंधे भी खुले नज़र आ रहे हैं।'

"वेल वेल मैडम! डोंट कंडम मी, मैंने आपके कहने से ईस्टर्न ड्रेस पहना है, वरना मुझे केवल जींस और टी शर्ट पसंद है।"

'यह आधी बात है। पूरी बात यह है कि टाइट जींस और लैस टी शर्ट।'

"और क्या यहाँ बुर्क़ा पहनकर आया करूं?" आसमा ने व्यंग भरे अंदाज में पूछा।"

'आसमा यहाँ लड़के भी पढ़ते हैं, हमें सावधान रहना चाहिए, यह हमारी जिम्मेदारी है।' लैला ने उसे अपनाइयत के अंदाज में समझाते हुए कहा।

"सॉरी यह तुम्हारी राय है, वरना जिम्मेदारी तो लड़कों की है कि अपनी नज़रें झुका कर रखें, कोई मौलवी उन्हें यह क्यों नहीं बताता।"

'तुमने सच कहा यह उनकी जिम्मेदारी है, लेकिन क्या हमारी कोई जिम्मेदारी नहीं है?'

लैला के इस जवाब पर आसमा तंग हो कर बोली:

"क्या हम अपनी पसंद के कपड़े भी न पहनें? खुबसूरत भी ना दिखें?"

'जरूर पहनो और ज़रूर खुबसूरत लगो, लेकिन शर्म और हया के दायरे में रहते हुए।'

"बस करो यार, यहां एक मैडम शाहिस्ता हैं जो हर वक्त ऐसे ही मोडेसटी पर लेक्चर देती रहती हैं और दूसरी तुम हो। सुनो! उनके पद चिन्हों पर मत चलो वरना उनके जैसा ही अंजाम होगा, सारी ज़िन्दगी घर बैठी रह जाओगी मोडेस्ट बनकर, तुम्हारी भी कहीं शादी नहीं होगी।"

'आसमा! यह बुरी बात है, इतनी अच्छी और नेक टीचर हैं और तुम हो कि उनका मजाक उड़ा रही हो। उनकी शादी नहीं हुई तो उसमे उनकी मोडेसटी नहीं हमारा समाज दोषी है।'

"अरे छोड़ो यार यह बेकार की बहस, यह देखो यह जो लॉन का प्रिंट मैंने पहना है वह सुपर मॉडल एक्ट्रेस चम्पा ने लौंच किया है और इसका डिजाईनर भी दुनिया भर में मशहूर है, पता है एक सूट बीस हजार का है। तुमने तो एगजिबेशन में जाने से इन्कार कर दिया था, लेकिन वहां बड़ा मजा आया, आखिर में फैशन शो भी था, उसी में चम्पा ने यह स्टाइल पहना था जिसे मैंने कॉपी किया है, तुम भी एक बनवालो।"

'और उसके बाद मेरे घर वाले मुझे घर से निकाल देंगे।'

"डोन्ट वरी, मैं तुम्हें अपने हां रख लूंगी। वैसे भी तुम्हारे घर वाले बड़े पुराने ख्यालात के हैं, तुम्हारी अम्मी.... नाएमा आंटी हैं तो अच्छी औरत, बस हर समय नसीहत करती रहती हैं और तुम्हारे अब्बू.... अब्दुल्लाह अंकल.... वह तो लगता है कि सारी दुनिया में इस्लाम फैलाकर ही दम लेंगे, ऐसे ही तुम्हारे बाकी बहन भाई हैं। बस एक तुम्हारे बड़े भाई ज़मशैद ही ढंग के हैं, इसी लिए वह शायद तुम लोगों के साथ नहीं रहते।"

'अब्बू तो समझते हैं कि वही सबसे ज़्यादा उनसे दूर हो चुके हैं, और अम्मी कहती हैं के उन्होंने मुझे भी खराब कर दिया है।'

"क्या खराबी है तुम में, तुम तो मुझे वैसे ही बड़ी नेक लगती हो।"

'नेक और मैं? बस मारे बाँधे बचपन की आदत की वजह से रोज़ा नमाज़ कर लेती हूँ, बाकी मैं तुम्हारे साथ रहकर तुम्हारे जैसे ही काम करती हूं।'

"मगर यह तो देखो कि मेरे साथ मज़ा कितना आता है, पचास बरस की ज़िन्दगी है, खूब खाओ पियो और इन्जोए करो।"

'हां तुम्हारे साथ मज़ा तो आता है, लेकिन अब्बू कहते हैं कि आखिरत (परलोक) में अगर एक दिन के लिए भी पकड़ हो गई तो वहां एक दिन हजारों साल का होता है। इसमें पचास साला ज़िन्दगी का सारा नशा फुर्र हो जाएगा, उन ही की तरबियत (संस्कार) से मेरी अम्मी, बहनें और भाई अनवर सभी नेकी की ज़िन्दगी गुजारते हैं।'

"डोंट टोक अबाउट दैम.... वह नेकी की नहीं बोरियत की ज़िन्दगी बिताते हैं, उस बोर ज़िन्दगी के सोचने ही से मुझे वहशत होती है। मैंने इसी लिए तुम्हारे घर जाना अब कम कर दिया है। हर समय जन्नत की बातें, हर समय आखिरत (परलोक) और नेकी की बातें, इबादत (पूजा) करो, नमाज़ पढ़ो, रोज़ा रखो, दुपट्टा सीने पर रखो, सर ढांको, आई डोंट लाइक दीज़ रबिश।"

आसमा की इस बात से लैला के चेहरे पर कुछ नाराज़गी के आसार ज़ाहिर हुए। वह बोली:

'ऐसा मत कहो आसमा, मेरे घर वालों ने तुमसे कभी कुछ नहीं कहा, वह बेचारे जो करते हैं खुद करते हैं या मुझे हिदायत करते हैं, तुम से तो कुछ नहीं कहते। सिर्फ एक बार मेरे अब्बू ने तुमसे कहा था कि बेटा तुम मेरी बेटी की सहेली हो, देखो ऐसी सहेली बनना जो जन्नत में भी उसके साथ रहे, ऐसा न हो कि तुम दोनों खुदा को नाराज़ कर दो और किसी बुरी जगह तुम दोनों को साथ रहना पड़े, ऐसा न हो कि क़यामत के दिन तुम दोनों एक दूसरे को दोष दो कि तुम्हारी दोस्ती ने मुझे बर्बाद कर दिया।'

"सोरी भाई तुम तो बुरा मान गईं, लेकिन देखो तुमने अपने अब्बू का भाषण मुझे फिर सुना दिया, उन बेचारों के सर पर हर समय क़यामत सवार रहती है।"

आसमा की इस बात से लैला के चेहरे का रंग बदल गया। उसके तेवर देखकर वह फ़ौरन बोली:

"सोरी सोरी नाराज न होना, अब तुम्हारे अब्बू को कुछ नहीं कहूँगी। चलो कैंटीन चलकर कुछ खाते हैं, मुझे बड़ी भूख लग रही है।

.....

हश्र के मैदान में गजब की गर्मी थी। मैं सोच रहा था कि न जाने लोग प्यास से ज़्यादा परेशान होंगे या फिर अंदेशों से कि कहीं उन्हें जहन्नम की भड़कती हुई आग में न फेंक दिया जाए। इसी सोच में था कि सालेह की आवाज़ कानों से टकराई:

"अब्दुल्लाह! तैयार हो जाओ, मैं तुम्हें तुम्हारी बेटी से मिलवाने ले जा रहा हूं।"

घबराहट में मैंने अपना निचला होंठ अपने दाँतों में दबा लिया। हम कुछ कदम आगे चले तो खुरदुरी पथरीली सतह पर दो लड़कियां बैठी दिखाई दी। मैं दूर से इन दोनों को पहचान गया, उनमें से एक लैला थी, मेरी सबसे छोटी और चहेती बेटी। दूसरी आसमा थी, मेरी बेटी की सबसे करीबी सहेली।

इस माहौल में कड़ी गर्मी थी, लोगों के शरीर से पसीना पानी की तरह बह रहा था। भूख तो परेशानी की हालत में उड़ चुकी थी, मगर प्यास की शिद्दत (प्रकोप) ने सभी को परेशान कर रखा था। ये दोनों भी प्यास से निढाल बैठी थीं, आसमा की हालत बहुत खराब थी और प्यास की शिद्दत के मारे अपने हाथ से बहता हुआ अपना पसीना चाट रही थी। जाहिर है इससे प्यास क्या बुझती, उसने तो और भड़काना था। जबकि लैला अपना सर घुटनों में दिए बैठी थी।

आसमा एक बड़े अमीर परिवार की इकलौती चश्म व चिराग थी। ख़ुदा से हुस्न, माल, इज्ज़त सब कुछ मिला था, मां बाप ने अपनी चहेती बेटी को अच्छे कॉलेज में शिक्षा दिलाई। बचपन से उर्दू की हवा तक नहीं लगने दी गई, अरबी और क़ुरआन को समझ कर पढ़ने का तो कोई सवाल ही नहीं था। अंग्रेज़ी मीडियम स्कूलों का इतना प्रभाव था कि बच्ची अंग्रेजी अंग्रेजों से अच्छी बोलती थी, मगर ऐसे स्कूलों में भाषा, भाषा के रूप में नहीं बल्कि एक बड़ी संस्कृति (culture) की गुलामी के अहसास के साथ सीखी जाती थी। इस भाषा के साथ पश्चिमी सभ्यता अपने ज़्यादातर सामान सहित हमारे घर आजाती थी। सलाम की जगह हाय, कपड़ों में जींस शर्ट, अंग्रेजी संगीत और फिल्में वगैरह ज़िन्दगी का ज़रूरी हिस्सा थे। लेकिन आसमा खानदानी राईस थी, इसलिए कम से कम एक दिखावे की हद तक उसमे तहजीब, शराफत, बड़ों का अदब व लिहाज़ और रख रखाव पाया जाता था। इसलिए मैंने इस दोस्ती को गवारा कर लिया था कि शायद लैला के साथ से आसमा बेहतर हो जाए।

लैला से उसकी दोस्ती कॉलेज के ज़माने में हुई। पता नहीं कि दोनों के स्वभाव और कैमसट्री में क्या एक जैसा था कि पारिवारिक पृष्ठभूमि के इतना अलग होने के बावजूद कॉलेज का साथ उम्र भर की दोस्ती में बदल गया। मगर बदकिस्मती से दोस्ती में आसमा ने लैला का असर कम लिया और लैला ने उसका असर ज़्यादा ले लिया।

लैला मेरी बेटी ज़रूर थी, लेकिन बदकिस्मती से वह मेरे जैसी न बन सकी। मुझसे ज़्यादा अपने सबसे बड़े भाई, जमशैद की लाडली थी, वही भाई जो मेरा बड़ा बेटा था और इसी की तरह मैदान हश्र में कहीं भटक रहा था। एक ओर बड़े भाई का लाड प्यार और दूसरी ओर आसमा की दोस्ती, यह आसमा इकलौती होने के नाते खुद पिता की लाडली और नाजों में पली बढ़ी थी। नतीजा यह निकला कि आज हश्र में उसे इन मुसीबतों का सामना करना पड़ा। मेरे ज़माने की ज़्यादातर औलादों को उनके माता पिता के लाड प्यार ने बर्बाद करके रख दिया था।

औलाद हर दौर में माता पिता को प्यारी रही है, लेकिन मेरे समय में यह अजीब चीज़ शुरू हुई थी कि मां बाप अपने बच्चों की मुहब्बत में इस तरह गिरफ्तार हुए कि खुद उनके खिलौने बन गए। शायद यह कम बच्चों का असर था, पहले हर घर में आठ दस बच्चे होते थे। इसलिए माता पिता एक हद से ज़्यादा बच्चों पर ध्यान नहीं देते थे, मगर मेरे ज़माने में माता पिता के दो तीन ही बच्चे होते थे और उनकी ज़िन्दगी का एक ही मकसद बन गया था कि बच्चों के लिए सारे जहाँ की खुशियां समेट कर लादें। वह उनके नाज़ नखरे उठाते, उनकी तरबियत (संस्कार) के लिए उन पर सख्ती करने को बुरा समझते। उनकी हर इच्छा पूरी करने को अपना मकसद बना लेते, उन्हें अच्छी शिक्षा दिलाने के लिए अपना सब कुछ लुटा देते। यहां तक के उनके बेहतर भविष्य के लिए उन्हें दुसरे देशों में पढ़ाई के लिए भेज देते और आख़िरकार यह बच्चे बूढ़े माता पिता को छोड़कर विकसित देशों में सेट हो जाते, यह न भी हो तब भी ज़िन्दगी में मां बाप की कीमत कम ही रहती थी। लेकिन माँ बाप इस सबके बावजूद बहुत खुश थे।

माँ बाप के पास दीन (धर्म) की बुनयादी जरूरतों को समझाने से ज़्यादा जरूरी था कि बच्चों को अंग्रेजों की सी अंग्रेजी बोलना सिखादें। ईमान और अखलाक (नैतिक शिक्षा) देने से ज़्यादा ज़रूरी था कि बहुत महंगे स्कूलों में महंगी शिक्षा दलवादें। ईश्वर की सच्ची मुहब्बत, उसके बन्दों से प्यार, मानव सेवा और इंसानियत का भला चाहने के बजाय बच्चे अपने माँ बाप से सिर्फ लाभ कमाने की सीख लेते थे। बच्चों को परिवार के बुजुर्गों के बजाय टीवी के हवाले किया जाता जहां

तहजीब, शराफत, शर्म और अच्छे अख़लाक़ (नैतिकता) के बजाय बेशर्मी, अपने फाएदे के लिए कुछ भी कर गुज़रना और उग्रवाद का एक नया सबक हर दिन पढ़ाया जाता। आखिरत (परलोक) की कामयाबी के बजाय दुनिया और उसकी कामयाबी को ही मकसद बनाकर पेश किया जाता था। ईश्वर, धर्म और परलोक यह बस रस्मी सी बातें थीं। दीनदारी (भक्ति) की आखरी हद यह थी कि मौलवी साहब से बच्चे को कुरआन देख कर पढ़वा दिया जाता। रहा उसका तर्जुमा (अनुवाद) तो न वह मौलवी साहब को मालूम था न माँ बाप को और न कभी बच्चों ही को पाता चलता। यह लोग कभी समझ कर पढ़ लेते तो उन्हें पता होता कि कुरआन दुनिया की कामयाबी की बातों से उतना ही खाली है जितना उनकी जिन्दगियां आखिरत (परलोक) की बातों से। इसकी वजह पिछली दुनिया में किसी की समझ में आई हो या ना आई हो, पर आज साफ़ थी। जो दुनिया में गुज़री वह तो ज़िन्दगी थी ही नहीं, वह तो सिर्फ इम्तिहान का एक पेपर था या राह चलते मुसाफिर का किसी सराय में गुज़रा हुआ एक पहर। ज़िन्दगी तो यह थी जो ख़त्म न होने वाली एक बर्दाश्त से बहार हकीकत बनकर आज सामने आखड़ी हुई थी।

.....

हम ज़रा पास पहुंचे तो आसमा की नज़र मुझ पर पड़ी, उसने लैला को टहोका दिया। लैला ने घुटनों से सर उठाया, उसकी नज़र मेरी नज़र से चार हुई, उनकी आंखों में ऐसी बेबसी, वहशत और दुख था कि मेरा दिल कट कर रह गया। वह उठी.... भाग कर मुझसे लिपट गई और पूरी ताकत से रोने लगी। उस की जुबान से अब्बू ....अब्बू के सिवा कुछ नहीं निकल रहा था। मैं बड़ी मुश्किल से खुद पर काबू कर रहा था, मुझे लगा कि अगर वह रोती रही तो कहीं मेरे हौंसले का बाँध भी मेरा साथ न छोड़ दे। मैंने उसके सर पर हाथ फेर कर कहा:

'बेटा चुप हो जा, मैंने तुझे बहुत समझाया था ना, इस दिन के लिए जीना सीखो। दुनिया सिवाय एक भ्रम के और कुछ नहीं।'

"हां आप ठीक कहते थे, मगर मेरी आँखों पर पट्टी बंधी हुई थी।" यह कहते हुए उसकी सिसकियों की आवाज़ और तेज़ हो गई।

वो मेरे सीने से लगी हुई थी और मेरी नज़रों के सामने से उसके जन्म, बचपन, लड़कपन, जवानी और ज़िन्दगी भर की सारी तस्वीरें गुजर रही थीं। कभी बिस्तर पर पड़ी हुई वह गुड़िया

जिसके रोने से मैं बेचैन हो जाता था। कभी फ्रोक पहनी हुई वह परी जिस की एक अदा पर मैं जान निसार करता था। कभी स्कूल की ड्रैस में बैग लटकाए वह मासूम सी कली, कभी कॉलेज की ड्रैस में फूलों जैसी वह बच्ची और कभी शादी के जोड़े में सजी मेरे दिल वह टुकड़ा जो इस समय हसरत व मुसीबत की सूरत बने मेरे सीने से लगी तड़प रही थी।

मुझे लगा जैसे मेरा दिल फट जाएगा, मैंने उसे बाजुओं से पकड़ कर खुद से दूर कर दिया और अपना सर पकड़ कर खड़ा हो गया। लैला सिसकती हुई आवाज में बोली:

"मुझे अपने घर वालों में से यहाँ कोई नहीं मिला, न पति न बच्चे, न आप लोगों में से कोई मिला, सिवाय भैया के। उनकी हालत बहुत खराब है अब्बू! वह बहुत बेकरारी से आप को खोज रहे हैं, उन्हें बस आप ही से उम्मीद है।"

मैंने लैला की तरफ देखकर कहा:

'उस बेवक़ूफ़ ने दुनिया में गलत उम्मीदें बाँधी थीं और अब भी गलत उम्मीद बांध रहा है। दुनिया में उसे अपने कारोबार, पत्नी और बच्चों से सारी उम्मीदें थीं। उसका अंजाम वह अब भुगत रहा है, और अब वह मुझसे उम्मीद लगा रहा है, हालांकि मैं कुछ भी नहीं कर सकता।'

इतने में आसमा भी हमारे पास आकर खड़ी हो चुकी थी। मेरी आखरी बात सुनकर वह बोली:

"अंकल मुझे तो सारी उम्मीद आपसे थी, लेकिन अब आप भी निराश कर रहे हैं।"

'तुम्हें याद है आसमा! जब तुम लैला के साथ पहली बार मेरे घर आई थी तो मैंने तुमसे क्या कहा था।'

"मुझे याद है अब्बू आपने इससे क्या कहा था।" आसमा के बजाय लैला ने जवाब दिया।

"आपने कहा था कि बेटा तुम मेरी बेटी की सहेली हो। देखो ऐसी सहेली बनना जो जन्नत में उसके साथ रहे, ऐसा न हो कि तुम दोनों खुदा को नाराज़ कर दो और किसी बुरी जगह तुम दोनों को साथ रहना पड़े, ऐसा न हो कि क़यामत के दिन तुम दोनों एक दूसरे को दोष दो कि तुम्हारी दोस्ती ने मुझे बर्बाद कर दिया।"

आखरी शब्द कहते हुए लैला फिर रोने लगी, उसके साथ आसमा भी सिसकियाँ भरने लगी। मैंने गर्दन घुमाकर सालेह को देखा जो इस अरसे में चुप खड़ा हुआ था। मुझे ख्याल था कि शायद वह कोई उम्मीद जगाने की बात कह सके। मुझे अपनी ओर मुह किये हुए देखकर वह कहने लगा:

"अब्दुल्लाह! वैसे तो हर इन्सान का मामला सिर्फ खुदा के हाथ में है, इंसान का अमल (कर्म) अगर राई के दाने के बराबर था तब भी उसके आमाल नामे (वह फाइल जिस में कर्म लिखे जाते हैं) में होगा, हर अमल को आज परखा जाएगा। नीयत, वजह, हालात, स्थिति, प्रक्रिया और अमल के नतीजे (परिणाम) एक एक चीज़ की जांच होगी। फरिश्ते, दर व दीवार, शरीर के अंग और जर्रे हर चीज़ गवाह बन जाएगी, यहाँ तक के यह बिल्कुल तय हो जाएगा कि हर अच्छा या बुरा अमल किस इनाम या सज़ा का हकदार है। नेकी का बदला दस से सात सौ गुना तक सब्र और दीन (धर्म) के लिए किए गए कामों का बदला बे हद व हिसाब दिया जाएगा। जबकि बुराई का बदला उतना ही होगा जितनी बुराई की होगी। लेकिन शिर्क (ईश्वर के साथ किसी को मिलाना), हत्या, बलात्कार जैसे जुर्म अगर आमाल नामे में आ गए तो इंसान को तबाह कर देंगे। जबकि बे सहारों का माल खाना, विरासत का माल हड़प करना, झूँठा इलज़ाम लगाना आदि गुनाह इतने खतरनाक हैं कि सारी नेकियों को खाकर इन्सान को जहन्नम में पहुँचा सकते हैं।

यह सज़ा और इनाम के सामान्य नियम हैं, इन के आधार पर अल्लाह इन्साफ के साथ फैंसला करते हैं और विश्वास रखो कि किसी पर राई के दाने के बराबर ज़ुल्म नहीं होगा। तुम्हारे बच्चों के बारे में एक मात्र उम्मीद वाली बात जो मैं तुम्हें पहले ही बता चुका हूँ वह यह है कि तुम्हारे जैसे और सच्चे ईमान वालों की निज़ात (मुक्ति) का मामला जल्दी या देर से हो ही जाएगा, लेकिन तुम अपने बच्चों को मुझसे बेहतर जानते हो कि उनकी निजात (मुक्ति) की उम्मीद कितनी है।"

'मुझे ज़्यादा खतरा अपने बेटे का है।' मैंने जवाब दिया।

इस जवाब में मेरे सारे अंदाज़े, उम्मीदें और अंदेशे सब जमा थे, मैंने आगे कहा:

'उसे पैसे कमाने, गाड़ी, बंगले अमीर बनने का बहुत शौक था। यह शौक जिसे लग जाए, उसे किसी भी बुरे हाल में पहुँचा सकता है, उसके बाद लोग हलाल हराम और अच्छे बुरे की तमीज़

खो बैठते हैं। अगर हराम से बच भी जाएं तो घमंड, दिखावा और औरों को नीचा समझना जैसी बुराईयां इंसान को मुजरिम बना कर खुदा की अदालत में ला खड़ा करते हैं जहां से निजात (मुक्ति) बहुत मुश्किल हो जाती है।'

मेरी इस बात का जवाब आसमा ने दिया:

"यह सारी बातें लैला मुझे बताती थी, उसने आप की कुछ किताबें भी मुझे पढ़ने के लिए दी थीं, मगर मुझे उर्दू पढ़नी नहीं आती थी, मेरी बदकिस्मती कि मेरी सारी ज़िन्दगी बेपरवाही, दुनिया परस्ती, फैशन, दिखावे और नुमाइश और घमंड में गुज़र गई। मुझ पर खुबसूरत दिखने का भूत सवार था, मैंने लाखों रुपये जेवर, कपड़े और मेकप में बर्बाद कर दिए, लेकिन गरीबों पर कभी कुछ नहीं खर्च कर सकी। कभी किया भी तो बहुत बड़ा एहसान समझा, हालांकि अल्लाह ने हमें बहुत अमीर किया था।

यही नहीं मुझे जब गुस्सा आता था तो मैं उसे कमज़ोर नौकरों पर उतारती थी, शरीर को छुपाने वाले कपड़े पहनना मुझे गरीबी की निशानी लगता था। चुगली करना, बुराई करना, लोगों में ऐब ढूँढना मेरे लिए मामूली बातें थीं। यह मामूली बातें आज इतना बड़ा रोग बन जाएंगी मुझे नहीं मालूम था, मुझे नहीं मालूम था।"

यह कह कर एक बार फिर वह फूट फूट कर रोने लगी। लैला अफ़सोस के लहजे में बोली:

"इसके अम्मी अब्बू बहुत बुरे हाल में हम से मिले हैं, उनके साथ पता नहीं क्या होगा।"

फिर वह मुझे देख कर बोली:

"अब्बू मेरे साथ क्या होगा?" यह कहते हुए उसकी आंखों से आंसू जारी थे।

"बेटा इंतज़ार करो, उम्मीद है कि ज़्यादा देर न गुज़रेगी कि हिसाब किताब शुरू हो जाएगा। इस समय मुझे अल्लाह की रहमत से उम्मीद है कि इतनी सख्ती उठाने के बाद वह तुम्हारे वह गुनाह माफ़ कर देगा जो तुमने दुनिया में मामूली समझ कर किया थे।'

"काश अब्बू! काश अब्बू मैं आपका रास्ता अपनाती, आपने मुझे बहुत समझाया था कि ईमान ज़ुबान से कलमा पढ़ लेने का नाम नहीं, खुदा की हस्ती को अपनी ज़िन्दगी बना लेने का नाम है। रस्मी सी इबादत (औपचारिक पूजा) खुदा को नही चाहिए, उसे दिल की इमानदारी चाहिए,

उसे कुछ बे रूह सजदों की जरूरत नहीं, एक सच्चा बंदा (भक्त) चाहिए। ईमान मेरी ज़िन्दगी में तो था, लेकिन वह मेरे किरदार (व्यक्ति) में शामिल नहीं हो सका। मैंने आपके कहने से नमाज़े तो पढ़ी, लेकिन खुदा की याद मेरी ज़िन्दगी नहीं बन सकी। मैंने रोज़े तो रखे, लेकिन मुझ में सच्ची परहेज़ गारी पैदा नहीं हो सकी। ज़्यादा से ज़्यादा मुझे पचास साल वह सब करना पड़ता। यहां तो सदियाँ गुज़र गई हैं गर्मी और सख्ती में परेशान घूमते घूमते।"

लैला की बात सुनकर आसमा ने उसके कंधे पर हाथ रखकर सिसकते हुए कहा:

"बहन तुम मुझ से तो अच्छी ही हो, मैंने तो ज़िन्दगी में नमाज़ रोजा कुछ भी नहीं किया। बुरी आदतें, दिखावा, नुमाइश, बदतमीजी, घमंड और लोगों के हक मारना वगैरह गुनाह इसके अलावा हैं। मेरा क्या होगा, मुझे तो सिवाय जहन्नम के कोई नतीजा (परिणाम) नज़र नहीं आता।"

यह कहकर वह चीख चीख कर रोने लगी।

.....

इन दोनों की बातों से मेरा दिल कट रहा था, मुझमें अब उनके साथ रहने की हिम्मत नहीं रही थी। सालेह को मेरी हालत का अंदाज़ा हो चुका था, उसने उन दोनों से संबोधित होकर कहा:

"अब्दुल्लाह को अब यहां से विदा होना होगा, आप दोनों यहाँ बैठ कर अल्लाह के फैसले का इंतजार करें। ज़्यादा देर न गुज़रेगी कि हिसाब किताब शुरू हो जाएगा।"

यह कहकर वह मेरा हाथ पकड़ कर मुझे आगे ले गया। मैं चाहता था कि जाते जाते लैला को तसल्ली दे दूं, मैं वापस मुड़ा तो यह देखकर हैरान रह गया कि पीछे का मंज़र (दृश्य) बदल गया है, हम किसी और जगह खड़े थे।

"मुझे ज़रा तेजी से तुम्हें वहां से हटाना पड़ा, वरना तुम्हें और दुख होता। क्या तुम अपने बेटे से मिलना चाहोगे?"

'नहीं, मैं कुछ और देखने की ताकत नहीं रखता।' मैंने दो टूक कह दिया।

मेरा दिल अफ़सोस के गहरे समुद्र में डूब चुका था। मेरा बस नहीं चल रहा था कि मैं किसी तरह वापस दुनिया में लोटूं और लैला को सुधारने को अपनी ज़िन्दगी का सबसे बड़ा मकसद बना लूं।

मुझे एहसास हुआ कि यह मुमकिन नहीं, फिर एक भयानक अंदेशे के एक ज़हरीले साँप ने मेरे सामने सर उठाया। मैंने सालेह से कहा:

'सालेह! कहीं लैला की इस हालत का जुम्मेदार मैं तो नहीं?'

"नहीं ऐसा नहीं है, देखो! औलाद तो नूह अलैहिस्सलाम जैसे पैगम्बर की भी खुदा की पकड़ की चपेट में आई है। मगर जिम्मेदारी उनकी नहीं थी, इंसान का फ़र्ज़ (कर्तव्य) सिर्फ सही बात दूसरों तक पहुंचाना है, क़ुबूल करने न करने का फैंसला हमेशा दूसरे करते हैं। तुम्हारी बेटी लैला ने अपने फैसले खुद किए थे, इसलिए तुम उसकी तकलीफ के जिम्मेदार नहीं हो।"

मुझे लगा जैसे मुझ पर से एक बोझ उतर गया है, लेकिन अगले ही पल मुझे एक और दहशतनाक अंदेशा हुआ। अगर मेरी बेटी की वजह से मेरी पकड़ की नौबत आई तो क्या होगा? यही ना कि बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी प्यारी बेटी को जहन्नम में झोंक कर मैं अपनी जान बचाना पसंद करूंगा। क्योंकि आज के दिन का अजाब इतना सख्त है कि सारे रिश्ते और संबंध उस के आगे हीच हैं।

****

आज हुकूमत किसकी है ?

हश्र के मैदान में माहौल बहुत सख्त और दुखदाई था। एक ओर माहौल और हालात (परिस्थितियों) की सख्ती थी तो दूसरी तरफ लोगों को यह आशंका खाए जा रही थी कि आगे क्या होगा। निराशा और परेशानी के अलावा लोगों में भारी गुस्सा था, यह गुस्सा अपने आप पर भी था और अपने लीडरों और गुमराह करने वाले अपने बड़ों पर भी था। इसलिए जो गुमराह करने वाला साधू संत पीर अपने अनुयाईयों के हाथ आजाता वह लोग उसकी पिटाई शुरू कर देते थे, यह जैसे अज़ाब से पहले एक तरह का अज़ाब था।

ऐसे तमाशे इस समय इस मैदान में जगह जगह हो रहे थे। लोग अपने गुमराह करने वाले नेताओं को अपने गुरुओं को अपने आलिमों को अपने पीरों को और दरवेशों को भी बेदर्दी से पीट रहे थे और अपना गुस्सा निकाल रहे थे। मगर अब क्या फायदा था! लेकिन इस तरह परेशान और बादहाल लोगों को एक तरह का तमाशा देखने को जरूर मिल रहा था।

हम इस तरह के तमाशे देखते हुए आगे बढ़ते रहे। रास्ते में मैंने सालेह से कहा:

'मैं तो यह सोच कर परेशान हूँ कि दुनिया में कुछ देर गर्मी से हमारी हालत बहुत ख़राब हो जाती थी। यहां तो इतना लंबा समय हो चुका है लेकिन लोगों को इस मुसीबत से छुटकारा नहीं मिल रहा। तुम्हारे साथ होने की वजह से मुझे तो यहाँ गर्मी और तकलीफ बिल्कुल महसूस नहीं हो रही, लेकिन जो लोग यहाँ हैं, उनके साथ तो वाकई बहुत बुरा मामला हो रहा है।'

"अपने शब्दों को सही कर लो, बुरा नहीं हो रहा इन्साफ हो रहा है। हां मामला बेशक सख्त है और इसी वजह से बाकि जीवो ने इख़्तियार (अधिकार) और इक्तिदार (सत्ता) की इस अमानत के बार को उठाने और सज़ा जज़ा के कड़े इम्तिहान में खड़े होने से मना कर दिया था।"

'मेरी समझ में नहीं आता कि आम लोगों के साथ इतनी मुश्किल है तो जिन लोगों ने सारे इंसानों की तरफ से हुकूमत और अधिकार का बार उठाया उनके साथ क्या हुआ होगा।'

इस बात से मेरा इशारा जालिम बादशाहों नेताओं और जनता का माल हड़प कर जाने वाले अधिकारियों की तरफ था।

"तुम देखना चाहते हो कि उनके साथ क्या हो रहा है?"

मैंने हाँ में गर्दन हिलाई। सालेह एक ओर बढ़ते हुए बोला:

"अभी तक हम सिर्फ ऐसे इलाकों में घूम रहे थे, जहां वे लोग थे जिनका हिसाब किताब होना है। जिस तरह अभी पीछे वो खास नेक लोगों का मामला था कि अर्श के नीचे खुदा की नेमतों में खड़े हैं और उनका हिसाब किताब नहीं होना, सिर्फ औपचारिक तौर पर उनकी कामयाबी का ऐलान होना है। इसी तरह कुछ बदबखत (बहुत बुरे) लोग भी हैं जिनके बुरे कामों के आधार पर उनकी जहन्नम का फैसला पहले ही हो चुका है। हम उन्हीं की ओर जा रहे हैं।"

हम जैसे जैसे आगे बढ़ रहे थे गर्मी और बहुत तेजी से बढ़ती जा रही थी। मुझे इसका अंदाजा उस बढ़ते हुए पसीने से हुआ जो लोगों के शरीर से बह रहा था। लोगों के शरीर से पसीना बूंदों की सूरत में नहीं बल्कि धार के रूप में बह रहा था, मगर ज़मीन इतनी गरम थी कि पसीना ज़मीन पर गिरते ही गायब हो जाता था। प्यास के मारे लोगों की जुबान बाहर निकल आई थी और लोग किसी थके और प्यासे ऊँट की तरह हाँफ रहे थे। लेकिन पानी का यहां क्या सवाल?

उनके चेहरों पर परेशानी से कहीं ज़्यादा डर के साये थे। यह डर किस चीज़ का था यह भी थोड़ी ही देर में मालूम हो गया। अचानक लोगों के बीच एक अजीब हलचल मच गई, लोग इधर उधर भागने लगे, भीड़ छटी तो देखा कि एक आदमी के पीछे दो फ़रिश्ते दौड़ रहे हैं। यह वैसे ही फ़रिश्ते थे जैसे अर्श के साये की तरफ़ जाते हुए हमें दिखाई दिए थे। एक के हाथ में आग का कोड़ा था और दूसरे के हाथ में ऐसा कोड़ा था जिसमें कीलें निकली हुई थीं।

वह आदमी उनसे बचने के लिए जी तोड़ कोशिश कर रहे थे, लेकिन यह फ़रिश्ते उनका पीछा नहीं छोड़ रहे थे। साफ नजर आ रहा था कि फरिश्ते जानबूझ कर उन्हें थका रहे हैं। वह उनके पास पहुंचकर उन्हें एक कोड़ा मारते और कहते जाते थे कि ऐ बादशाह (शासक) उठ और अपने राज्य में चल। कोड़ा पड़ते ही वह व्यक्ति चीख़ता चिल्लाता गिरता पड़ता भागने लगता। फिर वह फरिश्ते उसके पीछे दौड़ने लगते।

मुझे उनका परिचय पाने के लिए ज़्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा। सालेह ने खुद ही बताया:

"यह तुम्हारे जमाने के देशो के बड़े अधिकारी हैं।"

कुछ ही देर में अधिकारी आग और कीलों वाले कोड़े खाकर ज़मीन पर गिर चुके थे। जिसके बाद फरिश्तों ने उन्हें एक लंबी जंजीर में बाँधना शुरू किया जिसकी कड़ियां आग में दहकाकर लाल की गई थी। बड़े बड़े नेता और मंत्री और गुमराह करने वाले धर्म गुरु बेबसी से तड़प रहे थे और रहम की भीक मांग रहे थे, लेकिन फरिश्तों को क्या पता था कि रहम और दया क्या है। वह बेदर्दी से उन्हें बांधते रहे, जब उनका पूरा शरीर जंजीरों से जकड़ गया तो इतने में कुछ और फ़रिश्ते आ गए। पहले फरिश्ते उनसे बोले:

"हमने सबसे बड़ों को पकड़ लिया है, तुम जाओ और इनके सारे चेले चांटों और साथियों को पकड़ लाओ जिन्होंने इनकी मदद की और इनके अत्याचार, भ्रष्टाचार और लोगों को झूंटी बाते बताने में शामिल थे।"

इसलिए लोगों में बड़े पैमाने पर वही हलचल, भाग दौड़ और मारपीट शुरू हो गई। थोड़ी ही देर में एक प्रभावी लोगों का गिरोह जिसमें मंत्रियों, अमीर, सलाहकार, जागीरदार, पूंजीपति और हर तरह के ज़ालिम जमा थे, गिरफ्तार हो गया। इसके बाद फरिश्तों ने सब को सर के बालों से पकड़ कर मुँह के बल घसीटना शुरू कर दिया। वह हमारे पास से गुज़रे तो उनकी खालों के जलने की बदबू हर तरफ वातावरण में बिखरी हुई महसूस हुई। इस बदबू का एहसास होते ही सालेह ने मेरी कमर पर हाथ रखा तो मेरी जान में जान आई। वे उनको हमारे सामने से खींचते हुए बाईं ओर ले गए, मैं उनके घसीटे जाने से जमीन पर बन जाने वाली लकीरों और उन पर पड़े खून के धब्बों को देखता रहा, जो उनके शरीर से रिस रहा था।

.....

यह खोफनाक मंज़र देखकर मेरे मुंह से आह निकली। मैंने दिल में सोचा:

'कहाँ गई उनकी सत्ता? कहाँ गए वो शानदार ऐश के दिन? कहाँ गए वो आलीशान महल, महंगे कपड़े, विदेशी दौरे, शानदार वाहन, इज्ज़त और शान व शौकत? आह! इन लोगों ने कितने छोटे और कितने कम समय के मज़ों के लिए कैसा बुरा अंजाम चुन लिया।'

सालेह बोला:

"यह सब ज़ालिम, भ्रष्ट और अय्याश लोग थे जिनकी बर्बादी का फैसला दुनिया ही में हो चुका था। लेकिन ये उनकी असल सज़ा नहीं, असल सज़ा तो जहन्नम में मिलेगी। जिस तरफ फरिश्ते उन्हें ले जा रहे हैं वहां से जहन्नम बिल्कुल करीब है, उसी जगह से उन्हें हिसाब किताब के लिए ले जाया जाएगा जहां उनकी हमेशा की ज़िल्लत और अज़ाब का फैसला सुनाया जाएगा। फिर उन्हें दोबाराह बाईं ओर लाया जाएगा। जहां से गिरोह दर गिरोह उन्हें जहन्नम (नरक) में डाल दिया जाएगा।"

हिसाब किताब की बात से मुझे भी समय का ख्याल आया तो सालेह से पूछा:

'सालेह! रसूल अल्लाह (ﷺ) की दुआ को क़ुबूल हुए लम्बा समय गुज़र गया है। लेकिन अब तक यह हिसाब किताब क्यों नहीं शुरू हुआ?'

"यह तुम समझते हो कि लम्बा समय हो गया है। मैदान-ए-हश्र में समय बहुत धीरे धीरे बीत रहा है, जिसकी वजह से यह लम्बा समय लगता है, मगर अर्श तले बहुत ही कम समय बीता है। तुम जानना चाहते हो कि जितना वक़्त भी लग रहा है वह क्यों लग रहा है?"

'तुम्ही ने बताया था कि जिन लोगों को माफ किया जाना है इस सख्ती को उनकी माफी की वजह बना दिया जाएगा।'

"हां यह एक वजह है, मगर दूसरी वजह लोगों को यह एहसास दिलाना है कि यहां सारा अधिकार खुदा के हाथ में है। बात यह है अब्दुल्लाह! इंसानों ने अपने करीम और मेहरबान खुदा की कद्र नहीं की। आज वह खुदा लोगों को यह एहसास दिला रहा है कि इंसान कितने ज़्यादा उसके मोहताज और उसके सामने लाचार हैं।

उसकी ताकत और अजमत (महिमा) का पहला इज़हार क़यामत का दिन था जब इंसानों की दुनिया बर्बाद हो गई और उनका सब कुछ तबाह हो गया था। इंसान की सारी ताकत उस क़यामत के होलनाक हादसे (दुर्घटना) से नहीं बचा सकी। दूसरा मौका आज हश्र का दिन है जब सबको मालूम हो चुका है कि खुदा के सामने किसी की कोई औकात नहीं है। तीसरा मौका अब आ रहा है यानी हिसाब किताब जब ईश्वर खुद आसमानों और ज़मीन का कंट्रोल अपने हाथ में ले लेंगे।"

'तो क्या अभी तक ऐसा नहीं हुआ?'

"नहीं अभी तक ऐसा नहीं हुआ। अभी तक काएनात (ब्रह्मांड) देखने में लगता है की फरिश्ते चला रहे हैं और खुदा सिर्फ उन्हें हुक्म (आदेश) दे रहे हैं। थोड़ी ही देर में सारे मामलों को ईश्वर खुद संभाल लेंगे, ताकि जिन, इन्सान और फरिश्तों सहित हर मखलूक (प्राणी) जान ले कि सारा अधिकार और हुकूमत सिर्फ खुदा ही के हाथ में है। सारी आकाश गंगाओं में बिखरा हुआ ब्रह्मांड जो बे हिसाब फ़ासलों पर फैला हुआ था, उस को समेटा जा रहा है। तुम्हें तो पता है कि अब तक ब्रह्मांड पल पल फैल रहा था। अब खुदा के हुक्म (आदेश) पर दूरी सिमट रही हैं और अनगिनत आकाश गंगाएं सितारे और ग्रह जो पूरे आसमान में फैले हुए हैं, फिर करीब आ रहे हैं।"

'ऐसा क्यों है?' मैंने हैरत (आश्चर्य) से पूछा।

"यह इसलिए है कि खुदा इन सब को जन्नत वालों में बतौर इनाम (पुरस्कार) बाँट देंगे। फिर उन जगोंह पर अल्लाह के इनाम याफता (पुरस्कार विजेता) बन्दों की हुकुमत कायम (सत्ता स्थापित) होगी। ब्रह्मांड को वापस समेटने का काम ही वह चीज़ है जिसे कुरआन करीम ने आकाश को परमेश्वर के दाहिने हाथ पर लपेट लेने से ताबीर किया है।"

फिर सालेह ने आसमान की ओर नज़र की और मैंने भी उसको देखते हुए ऊपर देखा।

सूरज दहक रहा था, मैंने पहली बार यह बात नोट की कि चाँद भी सूरज के पास मौजूद था, लेकिन वह बे नूर हो चुका था और बहुत धीरे धीरे सूरज की ओर बढ़ रहा था। यह देख कर सालेह ने कहा:

"आज आसमान और ज़मीन बदल कर कुछ के कुछ हो चुके हैं। ज़मीन फूल कर बहुत बड़ी हो चुकी है और यूं इसके क्षेत्रफल में कई गुना बढ़ोत्तरी हो चुकी है।"

'मुझे याद है कि पृथ्वी का व्यास पच्चीस हजार किलोमीटर था।'

"मगर अब यह कई गुना बढ़ चुका है, साथ ही यह ज़मीन अब उससे कहीं ज़्यादा हसीन और खुबसूरत है जितनी पहले थी। इस्राफील ने दो बार सूर फूंक था, पहली बार सब कुछ तबाह हो गया था जबकि दूसरे सूर पर इंसानों को ज़िन्दा कर दिया गया। इन दोनों के बीच में खुदा के हुक्म से जमीन बड़ी हुई और फरिश्तों ने उस पर जन्नत वालों के लिए बहतरीन घर, महल, बाग़ और उनके आराम और मनोरंजन के लिए बेहतरीन चीजें और तुम्हारे लिए जो तुम सोच भी

नहीं सकते इस हद तक खुबसूरत एक नई दुनिया बना दी है। हर जन्नती को उस का घर इसी जमीन में दिया जाएगा और रहने के लिए बड़े बड़े क्षेत्रफल दिए जाएंगे। पृथ्वी के बीच में दहकते हुए विस्फोटक अंगारों और खोलते पानी के चश्मों के बीच में जहन्नमयों (नरक वासियों) का ठिकाना होगा।"

मैंने उसकी बात को बढ़ाते हुए कहा:

'तुमने जो कुछ कहा कुरआन करीम में लिखी बातों से मुझे यह पहले ही अंदाज़ा था। कुरआन करीम के बयानों से यह मालूम होता था कि ज़मीन के वारिस खुदा के नेक बंदे होंगे और ज़मीन की सतेह बदल दी जाएगी जहां जन्नत वालों का ठिकाना होगा। जमीन के बीच जहन्नम वाले होंगे, जबकि आकाश के तारे और कहकशाएँ इनाम के रूप में और हुकूमत करने के लिए जन्नत वालों में बांटे जाएँगे। वैसे उनमें क्या होगा?'

"इस की तफसील (विवरण) तो दरबार वाले दिन पता लगेगी। दरबार वाली बात याद है ना?"

'हां तुमने बताया था कि हिसाब किताब के बाद जन्नत वालों की अल्लाह तआला के साथ जो सभा होगी उसका नाम दरबार है। उस सभा में सभी जन्नत वालों को उनके रुतबे और स्थान औपचारिक रूप में बांटे जाएंगे। यह लोगों की उनके रब के साथ मुलाक़ात भी होगी और खास लोगों के सम्मान का मौका भी होगा।'

"हां उस दिन पुरस्कार भी दिया जाएगा और काम भी बताया जाएगा।"

इतनी देर में बे नूर चाँद सूरज में समां गया। यह देखकर सालेह बोला:

"आसमान पर मौजूद ईश्वर की निशानियाँ बदल रही हैं। चाँद का सूरज में समां जाना इसी का एक संकेत है, इसका मतलब यह है कि सारे आसमान समेट लिए गए हैं। अब किसी भी पल खुदा का ज़हूर होगा और वह अदालत शुरू हो जाएगी जिसका इंतजार था। तब तुम्हें और सारी दुनिया को मालूम हो जाएगा कि अल्लाह जल जलालहु किस महान हस्ती का नाम है।" अभी सालेह की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि एक जोरदार धमाका हुआ, सब लोग घबरा कर रह गए। आवाज़ क्यूंकि आसमान की ओर से आई थी इसलिए हर निगाह ऊपर की ओर उठ गई।

मैं और सालेह भी लोगों के साथ ऊपर देखने लगे। एक हैरत अंगेज़ मंज़र (आश्चर्यजनक दृश्य) सामने था। आसमान में दरार पद चुकी थी और थोड़ी ही देर में वह बादलों की तरह फट कर टुकड़े हो गया। इन दरारों को देखकर ऐसा लगा कि आसमान में दरवाजे ही दरवाज़े बन गए हैं। हर दरार से फरिश्तों की सेना दर सेना ज़मीन की ओर उतरने लगी। उनकी संख्या इतनी ज़्यादा थी कि किसी तरह से भी उन की गिनती और अनुमान लगाना मुश्किल था। फरिश्तों के विभिन्न समूह थे और हर समूह की ड्रैस और आने का अंदाज़ अलग था। वह फरिश्ते हश्र के मैदान के बीच में एक जगह पर उतरने लगे और उन्होंने बीच में एक बड़ी और ऊँची जगह को अपने घेरे में ले लिया।

.....

फरिश्ते आसमान से उतरते जाते और दाएरा दाएरा करके हाथ बांध कर खड़े होते जाते। हर पल उनकी संख्या बढ़ती जा रही थी। इस दौरान लोगों की चीख और पुकार भी थम चुकी थी, हर इन्सान फटी आँखों से टकटकी बांधे उसी दिशा में देखे जा रहा था। अब फ़िज़ा में बस कुछ फुसफुसाहट ही बाकी रह गई थी। इसकी वजह यह थी कि हर व्यक्ति अपने बराबर वाले से पूछ रहा था कि क्या हो रहा है?

मुझे कुछ कुछ अंदाज़ा था कि यह क्या हो रहा है, लेकिन फिर भी मैंने सालेह से वजाहत (स्पष्टीकरण) चाही। उसने जैसा की मेरा अंदाजा था जवाब दिया:

"हिसाब किताब शुरू हो रहा है, अल्लाह का दरबार सज़ाया जा रहा है, यह पहला चरण है। फ़रिश्ते लगातार उतर रहे हैं और काफी देर तक उतरते रहेंगे। इसके बाद सबसे आखिर में अर्श को उठाने वाले उतरेंगे। तुम तो उनसे मिल चुके हो, उस वक़्त वे चार थे, अब चार और उनमें शामिल हो जाएंगे। कुल आठ फ़रिश्ते अर्श इलाही के साथ नाज़िल होंगे।"

'अर्श इलाही।?' सालेह ने स्पष्ट करते हुए कहा:

"तुम तो समझ सकते हो, अल्लाह अर्श पर बैठते नहीं हैं, वह इस तरह की सभी इंसानी सोचों से पाक (मुक्त) हैं। यह अर्श हकीकत में खुदा की तरफ रुख करने की जगह है। जैसे दुनिया में बैतुल्लाह (काबा) हुआ करता था क़िबला (दिशा) के तौर पर। अल्लाह के घर का मतलब यह नहीं था कि अल्लाह वहाँ रहते थे, लेकिन आदमी उसकी तरफ रुख करता था तो उसके लिए वो

जगह एक रुख बन जाता था। उसी तरह आज अर्श इलाही के द्वारा लोग अल्लाह के साथ बात चीत करेंगे।"

मैंने पूछा:

'तो क्या लोग अल्लाह की बात सुनेगें?'

सालेह ने कहा:

"हाँ, वैसे ही जैसे हज़रत मूसा (एक नबी) ने तूर पहाड़ की घाटी में एक पेड़ में से खुदा की आवाज़ आते हुए सुनी थी। और हां अब्दुल्लाह एक बहुत खास बात भी सुन लो।"

मेरा पूरा ध्यान तो उसकी तरफ था ही लेकिन अब मैं जैसे समर्पित हो कर उसे देखने लगा।

"अर्श उठाने वाले फरिश्तों के उतरने के साथ ही अर्श खुदा के नूर की तजल्ली (परछाई, भनक) से जगमगा उठेगा। जिसके साथ पूरी ज़मीन पर इस नूर का असर फैल जाएगा। इसका मतलब यह होगा कि जमीन अपने रब के नूर से रौशन हो जाएगी और मामले अब सीधे अल्लाह की निगरानी में अंजाम पाना शुरू हो जाएँगे। यह मतलब है क़ुरआन की इस बात का के ज़मीन को खुदा अपनी मुट्ठी में ले लेगा। उस वक़्त पहला हुक्म यह दिया जाएगा कि सब अल्लाह के सामने सजदे में गिर जाएँ। अब्दुल्लाह! उस समय बहुत हैरत अंगेज़ मंज़र (दृश्य) सामने आएगा। तुम देखोगे कि सारे फ़रिश्ते सजदे में होंगे। अर्श के दाहिने हाथ की ओर अर्श इलाही के साये में सारे नबी, शहीद और नेक लोग, सब सजदे में होंगे।"

मैंने पूछा:

'और यहाँ हश्र के मैदान में मौजूद लोग?'

"ज़्यादा अहम और हैरत अंगेज़ बात यह है कि यहां मौजूद कोई खुदा का इंकार करने वाला, मुनाफिक (ज़ुबान पर कुछ और दिल में कुछ और रखने वाला), खुदा का नाफरमान और कोई मुजरिम सजदे में नहीं जा सकेगा। यह लोग लाख कोशिश करेंगे कि सजदे में गिर जाएँ, लेकिन उनकी कमर और गर्दन तख्ता हो जाएगी। जमीन उन्हें अपनी ओर आने से रोक देगी।"

'और बाकी लोग?' मैंने पूछा।

सालेह बोला:

"वह लोग जिनके आमल (कर्म) मिले जुले और गुनाह कम होंगे वह सजदे में चले जाएंगे। और इसी वजह से इन सब को तुरंत हिसाब किताब के लिए बुला लिया जाएगा। बाकी जिसका ईमान यकीन जितना मज़बूत और अमल जितने अच्छे होंगे वह इतना ही झुक सकेगा। कोई रुकु में होगा, कोई आधा झुका होगा। कोई बस गर्दन ही झुका सकेगा। जो जितना कम झुके, वह उतना ही शर्मिंदा होगा।"

मैं बात समझते हुए सर हिला कर बोला:

'अच्छा इसका मतलब यह है कि लोगों को अपने पिछले कर्मों का एक हद तक अनुमान हो जाएगा।'

सालेह ने कहा:

"नहीं, तुम्हें ये बातें तो मैं बता रहा हूँ, उन्हें यह अंदाज़ा नहीं होगा। लेकिन सजदा न करने पर अपमान का अहसास और करने पर एक तरह का सुकून हो जाएगा। लेकिन लोग यह अच्छी तरह जान लेंगे कि खुदा कौन है? जिस हस्ती को भुला कर ज़िन्दगी गुज़री थी वह कौन है? आज लोगों को मालूम हो जाएगा कि राजाओं का राजा कौन है? शहंशाहों का शहंशाह कौन है? कौन सच्चा ईश्वर है? कौन है जिसकी ताक़त दुनिया पर छाई हुई है? कौन है जिसके हाथ में कुल भलाई और सभी खैर है? कौन है जिसके इशारे से तकदीर बनती और बिगड़ सकती है? कौन है जो हर किसी से हर अमल के बारे में पूछ सकता है मगर उससे उसके किसी निर्णय के बारे में कुछ नहीं पूछा जा सकता? कौन है जो हर तारीफ़, हर शुक्र, हर रुकु, हर सजदे, हर नज़्र व नियाज़, हर इज्ज़त, हर मुहब्बत, हर तसबीह और हर हर बड़ाई का हकदार है? बुलंद मर्तबा और शान वाला। अल्लाहुअकबर। अल्लाहुअकबर। अल्लाहुअकबर।"

यह शब्द कहते हुए सालेह के शरीर पर एक लर्जाह सा तारी हो गया और आखरी बार अल्लाहुअकबर कहते हुए वह सजदे में गिर गया। उसी पल मुझे महसूस हुआ कि ज़मीन पर एक खास तरह की रोशनी फैल चुकी है। माहौल एक खास नूर से जगमगा उठा है । इसके साथ ही कानों में फरिश्तों की तसबीह और तकबीर करने की आवाजें आने लगीं।

मुझे अंदाज़ा हो गया कि अर्श इलाही की तजलियात से माहौल मुनव्वर हो चुका है। लेकिन इस अरसे में मैं नज़र झुका कर खड़ा रहा था। डर के मारे मैंने अर्श की तरफ देखने की कोशिश ही नहीं की थी।

ज़्यादा देर ना गुजरी थी कि मेरे कानों ने जिब्राइल अमीन की जानी पहचानी मगर रोअब से भरपूर आवाज़ आई:

"(आज के दिन बादशाहत किसकी है?)।"

जवाब में सारे फ़रिश्ते पुकार उठे:

"(अकेले ग़ालिब रहने वाले अल्लाह की)"।

जिब्राइल अमीन यह सवाल बार बार दोहराते और हर बार फ़रिश्ते जोर की आवाज़ से यही जवाब देते। इस प्रक्रिया ने हश्र के मैदान में ऐसा हश्र बरपा कर दिया कि दिल लरज़ने लगे। आखिरकार एक सदा बुलंद हुई:

"रहमान खुदा के बन्दे कहाँ हैं? आलम के मालिक के गुलाम कहां हैं? अल्लाह ही को ईश्वर, अपना राजा और अपना रब मानने वाले कहाँ हैं? वह जहां भी हैं सारे आलम के रब के सामने सजदे में गिर जाएँ "

यह सुनना था कि मैं कुछ देखने की कोशिश किए बिना ही सालेह के बराबर में सजदे (प्रणाम) में पड़ गया।

.....

हश्र के मैदान में एक दम चुप्पी छा गई। ऐसा सन्नाटा कि सूईं ज़मीन पर गिरे तो उसकी आवाज़ भी सुनाई दे जाए। मैंने इस सजदे की हालत में जितनी दिली ख़ुशी महसूस की, ज़िन्दगी में कभी महसूस नहीं की थी। दूसरों का तो नहीं मालूम कि सजदे में क्या कह रहे थे, लेकिन मैं इस सजदे में रो रो कर अल्लाह से दरगुज़र (गुनाहों के बारे में ना पूछने) और माफी की दुआ कर रहा था।

न जाने कितनी देर तक यह आलम तारी रहा। इसके बाद अचानक एक जोर की आवाज़ आई:

"अल्लाह वो ईश्वर है जिसके सिवा कोई ईश्वर नहीं।"

मुझे पहले भी इसका अनुभव था कि अर्श को उठाने वाले फरिश्तों के इस ऐलान का मतलब सुनने वालों को यह बताना होता है कि अर्श का मालिक बात कर रहा है। आवाज़ आई:

"मैं अल्लाह हूँ। मेरे सिवा कोई ईश्वर नहीं।"

ये शब्द वही थे जो मैंने अर्श के पास सजदे में पहली बार सुने थे, लेकिन यह आवाज उस आवाज़ से बिल्कुल अलग थी। इस आवाज़ में जो हुक्म की सी सख़्ती थी वह अच्छे अच्छों के होश उड़ाने के लिए काफी थी। पल भर के लिए एक ख़ामोशी छाई जो चारों तरफ फैले सन्नाटे से पुर थी। उसके बाद बादलों की कड़क से कहीं अधिक सख्त और गरजदार सी आवाज हुई:

"मैं हूँ बादशाह। कहां हैं सरकशी करने वाले? कहाँ हैं अपने आप को बड़ा समझने वाले? कहाँ हैं ज़मीन पर राज करने वाले?"

यह शब्द बिजली बन कर गरजे। लोगों ने इस बात का जवाब तो क्या देना था हर तरफ रोना पीटना मच गया। इस आवाज़ में जो सख्ती, रोब और हैबत (डर) थी उसकी वजह से मुझ पर भी सन्नाटा छा गया। मुझे ज़िन्दगी का हर वह लम्हा याद आने लगा जब मैं खुद को ताकतवर, बड़ा और अपने घर में ही सही मगर खुद को प्रमुख समझता था। उस पल मेरी बहुत खुवाहिश हुई थी कि धरती फटे और मैं उसमें समा जाऊं। किसी तरह खुदा के कहर के सामने से हट जाऊं। बहुत बेबसी के आलम में मेरे मुंह से यह शब्द निकले:

'काश मेरी माँ ने मुझे पैदा ही न किया होता'।

इसके साथ ही मेरे दिल व दिमाग ने मेरा साथ छोड़ दिया और मैं बेहोश होकर ज़मीन पर गिर गया।

****

हजरत ईसा (अ) की गवाही

मेरी आँख खुली तो मैंने खुद को एक बहुत अच्छे और नरम और नाजुक बिस्तर पर पाया। नाएमा बिस्तर पर मेरे पास बैठी परेशान निगाहों से मुझे देख रही थी। मेरी आंखें खुलते देख कर एकदम से उसके चेहरे पर रौनक आ गई, उसने फ़ौरन पूछा:

"आप ठीक हैं?"

'मैं कहाँ हूँ?' मैंने जवाब देने की बजाय खुद एक सवाल कर दिया।

"आप मेरे पास मेरे कैम्प में हैं। सालेह आपको इस हाल में यहां लाए थे कि आप बेहोश थे।"

'वह खुद कहां है?'

"वह बाहर हैं, आप ठहरें, मैं उन्हें अंदर बुलाती हूँ।"

उसकी बात पूरी होने से पहले ही सालेह सलाम करता हुआ अंदर आ गया, उसके चेहरे पर इत्मिनान (संतोष) की मुस्कान थी। मैं उसे देखकर उठ बैठा और पूछा:

'क्या हुआ था?'

"तुम बेहोश हो गए थे।"

'ब-खुदा मैंने अपने रब का यह रूप पहली बार देखा था। खुदा के बारे में मेरे सभी अंदाज़े गलत थे, वह उससे कहीं ज़्यादा अज़ीम (महान) है जितनी मैं कल्पना कर सकता था। मुझे अपनी ज़िन्दगी के हर उस लम्हे पर अफ़सोस है जो मैंने खुदा की अजमत के अहसास में बसर नहीं किये।'

मेरी बात सुनकर सालेह ने कहा:

"यह ग़ैब और हाज़िर का फर्क (अंतर) है। दुनिया में ख़ुदा गायब में हुआ करता था, आज पहली बार था कि खुदा ने गायब का पर्दा उठाकर इंसान को संबोधित किया था। तुम नसीब वाले हो

कि तुमने ग़ैब में रह कर खुदा की अजमत को खोज लिया था और खुद को उसके सामने बे-ओकात कर दिया था। इसीलिए आज तुम पर अल्लाह का ख़ास करम है।"

"मगर यह बेहोश क्यों हुए थे?" नामह ने बातचीत में हस्तक्षेप करते हुए पूछा।

"दरअसल हुआ यह था कि हम अर्श के बाईं ओर मुजरिमों के हिस्से में खड़े थे, तभी फरिश्तों का आना शुरू हो गया और हिसाब किताब शुरू हो गया। अल्लाह ने चूंकि गुस्से के अंदाज़ में बातचीत की थी और नाराज़ी का असल रुख बाएं हाथ वालों तरफ ही था, इसलिए सबसे ज़्यादा उसका असर उसी बाईं ओर हो रहा था। अल्लाह तआला अपनी सिफात (गुणों) से कभी खाली नहीं होते, इसलिए गुस्से में होने के बावजूद भी उन्हें एहसास था कि इस समय उनका एक महबूब बन्दा बाएँ हाथ की ओर मौजूद है, इसलिए उन्होंने अब्दुल्ला को बेहोश कर दिया। वह ऐसा न करते तो अब्दुल्ला को उस कहर और गज़ब का सामना करना पड़ जाता जो बाईं ओर वालों पर उस समय हो रहा था।"

सालेह की बात सुनकर ना चाहते हुए भी मेरी आंखों से अपने करीम रब के लिए एहसान मंदी के आंसू जारी हो गए। मैं बिस्तर से उतरा और सजदे में गिर गया, मेरे मुँह से अपने आप यह शब्द निकलने लगे:

'ऐ मेरे माबूद (जिसकी पूजा की जाए) तूने मुझे कब कब याद नहीं रखा। माँ के पेट से आज के दिन तक तेरी किसी मसरूफियत (व्यस्तता) ने तुझे मुझसे ग़ाफ़िल नहीं किया और मैं? मैंने कभी तेरी करीम हस्ती की कद्र नहीं की, मैंने कभी तेरे किसी एहसान का शुक्र अदा नहीं किया, मैंने कभी तेरी बंदगी (उपासना) का हक़ अदा न किया। तू पाक (पवित्र) है, तो बुलंद है, हर तारीफ़ तेरे ही लिए है और हर शुक्र तेरा ही है। मुझे माफ कर दे और अपनी रहमतों के साये में ले ले, अगर तुने मुझे माफ नहीं किया तो मैं तबाह हो जाऊंगा, मैं बर्बाद हो जाऊंगा।'

मैं देर तक यही दुआ मांगता रहा, नाएमा ने मेरी पीठ पर हाथ फेर कर कहा:

"अब आप उठये, आपने तो उम्र भर खुदा की मर्ज़ी और पसंद का जीवन बिताया है, मैं आपको जानती हूँ।"

नाएमा की बात सुनकर मैं चुपचाप उठ खड़ा हुआ और उसे देखते हुए बोला:

'तुम अभी खुदा के अहसानों और उसकी अजमत (महानता) को नहीं जानतीं....वरना कभी ये शब्द नहीं कहतीं।'

"अब्दुल्लाह ठीक कह रहा है नाएमा।" सालेह ने मेरा समर्थन करते हुए कहा।

"इन्सान का बड़े से बड़ा काम भी खुदा की छोटी से छोटी इनायत की तुलना में कुछ नहीं। खुदा अब्दुल्लाह से जुबान छीन लेता तो यह एक शब्द नहीं बोल सकता था, हाथ छीन लेता तो यह लिख नहीं सकता था। हर नेमत और हर तौफीक उसी की थी, इंसान कुछ भी नहीं, सब कुछ ईश्वर का है"।

"आप ठीक कहते हैं, मैंने इस पहलू से गौर (विचार) नहीं किया था।" नाएमा ने बात को मानते हुए सर हिलाते हुए कहा।

'अब हमें कहाँ जाना है?' मैंने सालेह से पूछा।

"हिसाब किताब शुरू हो चुका है, तुम्हें वहां पहुंचना होगा, लेकिन पहले अच्छी खबर सुनो।"

'वह क्या है?'

"जब हिसाब किताब शुरू हुआ तो अल्लाह ने सबसे पहले मुसलमानों के हिसाब का फैसला किया है। और जानते हो इसमें तुम्हारी बेटी लैला को रिहाई मिल गई।"

'क्या?' मैं आश्चर्य और खुशी के मारे चिल्ला उठा।

"हाँ! सालेह ठीक कहते हैं।" नाएमा बोली।

"मैं उससे मिल चुकी हूँ, वह अपने बाकी भाई बहनों के साथ दूसरे कैम्प में है, वहां सब आपका इंतज़ार कर रहे हैं।"

'और जमशैद?' मैंने सालेह से अपने बड़े बेटे के बारे में पूछा।

जवाब में सोग वार ख़ामोशी छा गई, मुझे अपने सवाल का जवाब मिल चुका था, मैंने कहा:

'फिर मैं वापस हश्र के मैदान में जाना पसंद करूंगा, शायद कोई रास्ता निकल आए।'

"ठीक है।" सालेह बोला और फिर मेरा हाथ थाम कर खेमे से बाहर आ गया।

www.iqbalkalmati.blogspot.com : مزید کتب پڑھنے کے لئے آج ہی وزٹ کریں

.....

खेमे से बाहर आकर मेरा पहला सवाल यह था:

'मैं जमशैद के लिए क्या कर सकता हूँ?'

"तुम लैला के लिए कुछ नहीं कर सके तो जमशैद के लिए क्या कर सकते हो, क्या तुम अल्लाह को बताओगे कि उसे क्या करना चाहिए?"

'मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूँ, मेरा मतलब यह कतई नहीं था।' मैंने फ़ौरन जवाब दिया, मगर सालेह की बात पर जमशैद को बचाने का मेरा जोश ठंडा हो चुका था, कुछ देर ख़ामोशी के बाद मैंने पूछा:

'अच्छा यह बताओ कि मेरे बेहोश होने के बाद हश्र के मैदान में क्या हुआ?'

"तुम जब होश में थे तुम्हें तब भी पूरी तरह मालूम नहीं था कि वहां क्या हो रहा है। उसे पूछना है तो किसी मुजरिम से पूछो, उधर गिरोह दर गिरोह फरिश्ते नाज़िल हो रहे थे और इधर मुजरिमों की जान पर बन रही थी, फिर जब सजदे में जाने का हुक्म हुआ तो सारे लोग सजदे में थे लेकिन ज़्यादा बड़े गुनाहगार उस समय भी खुदा के सामने सीना ताने खड़े थे।"

'यह उनकी कमर तख्ता जैसी होने का नतीजा था?'

"हां यह उनकी सज़ा थी, इसके बाद जब खुदा ने पूछा कि मैं असल बादशाह हूँ। मेरे सिवा और राजा कहां है? उस समय भी यही अपराधी सीना ताने उसके सामने खड़े थे। काश! तुम देख सकते कि उस समय इन मुजरिमों के साथ क्या हो रहा था, उनके दिल कटे जा रहे थे, कलेजे मुँह को आ रहे थे, आँखें डर और आतंक से फटी हुई थी, दोषी बेबसी से उंगलियां चबा रहे थे, लेकिन मजबूर थे कि उस वक़्त भी सारी कायनात के बादशाह के सामने सीना ताने खड़े रहें।"

'फिर क्या हुआ?'

"जाहिर है हिसाब किताब तो एक एक करके होना था, लेकिन इस मौके पर अपराधियों के सामने उनका अंजाम बिल्कुल साफ़ कर दिया गया। वो इस तरह की जहन्नम का दरवाज़ा पूरी तरह खोल दिया गया, जिसके बाद हश्र के मैदान के बाएँ हिस्से का माहौल भयानक हो गया।

जहन्नम जैसे जोश के मारे उबली जा रही थी, ऐसा लग रहा था जैसे वह मुजरिमों को देखकर गुस्से से फटी जा रही हो। उसकी दहाड़ की आवाज़ें दूर तक सुनी जा रही थीं और शोले बेकाबू होकर बाहर निकले जा रहे थे। यह शोले इतने बड़े थे कि उनसे उठने वाली चिंगारियां बड़े बड़े महल जितनी बड़ी और ऊँची थीं, उनके ऊपर उठने से आसमान पर जैसे लाल चिंगारियों का झुण्ड बन गया था। न पूछो कि ये सब कुछ देख कर लोगों की हालत क्या हो गई, उन्हें लग रहा था कि इससे पहले हश्र की जो सख्तियाँ थी वह कुछ भी नहीं थीं।"

'और हिसाब किताब कैसे शुरू हुआ?'

"सबसे पहले हज़रत आदम को पुकारा गया जो पूरी मानवता के पिता और पहले नबी थे।

उन्होंने कहा:

'मैं हाज़िर हूँ और तेरे हुक्म का पाबन्द हूँ और सब भलाईयाँ तेरे दोनों हाथों में हैं।' हुक्म हुआ:

"अपनी औलाद में से जहन्नम में जाने वालों को अलग कर लो।"

'कितनों को अलग करूँ?' उन्होंने पूछा तो कहा गया।

"हर हजार में से नौ सौ निन्यानवे।"

"तुम अनुमान नहीं कर सकते अब्दुल्लाह! यह सुनकर हश्र के मैदान में कोहराम मच गया।"

'लेकिन इतनी बड़ी संख्या में लोगों की जहन्नम का फैसला क्यों?' मैंने पूछा।

"यह फैसला नहीं यह बात बताना था कि मैदान में जो लोग हैं, उनमें हजार में से एक ही इस काबिल है कि जन्नत में जा सके। दरअसल पूरी मानवता ईमान और अख़लाक़ (नैतिकता) की परीक्षा में बुरी तरह फैल हुई है। इसलिए खुदा के इन्साफ के तहत उसूली तौर से इतने ही लोग जहन्नम के हकदार हो चुके हैं। लेकिन जैसा कि रसूल अल्लाह (ﷺ) ने दुनिया ही में बता दिया था कि अल्लाह की रहमत (कृपा) के सौ हिस्से किए जाएं तो उसकी रहमत का एक हिस्सा दुनिया में ज़ाहिर (प्रकट) हुआ था और बाकी निन्यानवे हिस्से उसने आज के दिन के लिए रोक रखे थे। इसलिए उसकी रहमत का ज़हूर हुआ और उसने नाकाम लोगों की जहन्नम का फैसला

सुनाने के बजाय पहले चरण पर उन लोगों को बुलाने का फैसला किया जिनके कामयाब होने और निजात (मोक्ष) पाने की संभावना सबसे ज़्यादा थी।"

'यानी कुल मिलाकर अच्छे लोग?'

"हां, हर उम्मत के उन लोगों को जिन की कामयाबी बस एक औपचारिक सा हिसाब किताब करने की मांग करती है। और इस अमल (प्रक्रिया) की शुरूआत आखरी उम्मत से शुरू हो चुकी है फिर दूसरी उम्मतों का नंबर भी जल्दी ही आ जाएगा क्योंकि कुल इंसानी आबादी में ऐसे लोग सिर्फ एक प्रतिशत के लगभग ही है। बाकी लोगों का मामला वह बाद में देखेंगे। इसका फायदा यह होगा कि हश्र की सख्ती किसी के गुनाहों का बदल बन सकती है तो बन जाए।"

यह कहने के बाद सालेह पल भर को रुका और फिर बोला:

"वैसे मैं दूसरे लोगों के लिए ज़्यादा संभावना नहीं देखता।"

'क्यों?' मैंने पूछा।

"इसकी वजह शिर्क (एक ईश्वर के साथ औरों को भी भगवान मानना) है, खुदा शिर्क के मामले में बहुत गैरत मंद हैं। तुम जानते हो कि हर दौर में इंसानियत की सबसे बड़ी समस्या शिर्क ही रही है। इसी शिर्क की वजह से आज सबसे ज़्यादा लोग मारे जाएंगे, क्योंकि शिर्क की माफी की संभावना न के बराबर है। हाँ किसी के हालात और माहौल की कोई बड़ी मजबूरी हो तो खैर है वरना शिर्क करने वाले किसी इन्सान के लिए आज कामयाबी की मामूली सी भी कोई उम्मीद नहीं है।"

'चाहे वह मुसलमान हों?' मैंने पूछा।

"हां।" सालेह ने जवाब दिया।

"शिर्क जहन्नम की आग का शोला था, आज यह जरूर हर उस इन्सान को जलाएगा जिसने खुदा के साथ किसी और को उसकी ज़ात, सिफात (गुण) या हुकूक व इख़्तियार (अधिकार व ताकत) में साझी ठहराया था। ईश्वर के अलावा किसी और की भी इबादत (पूजा) की थी, उससे दुआ मांगी थी, उसे सजदा (प्रणाम) किया था, या उसे परमेश्वर का हिस्सा समझा था।"

'खुदा सबसे बड़ा है, उसके सिवा कोई ईश्वर नहीं।' मेरे मुँह से निकला।

.....

'एक बात मेरी समझ में नहीं आई।' मैंने चलते चलते सालेह से पूछा।

"वह क्या?"

'वह यह कि पहले से आखिर तक मुसलमानों की संख्या करोड़ों बल्कि अरबों में थी, तो लैला का नंबर बिल्कुल शुरू में कैसे आ गया?'

"तुम क्या समझते हो कि अल्लाह पहचान पत्र देखकर तय करते हैं कि कौन मुसलमान है और कौन नहीं?"

'मैं समझा नहीं कि तुम्हारी इस बात क्या मतलब है?'

"मतलब यह है कि मुसलमानों की ज़्यादा बड़ी तादाद ने अपने लिए मुसलमान होने की पहचान पसंद ही नहीं की। ज़्यादातर लोगों के लिए उनका अपना समुदाय अपने आलिम और अपना फिरका ही असल पहचान बना रहा। इसलिए आज के दिन जब मुसलमानों का हिसाब किताब शुरू हुआ तो पहले पहल सिर्फ उन लोगों को बुलाया गया जो सच्चे दिल के साथ एक खुदा के मानने वाले और हर तरह की फिरका वारियत (सांप्रदायिकता) से ऊपर उठकर सिर्फ रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपना रिश्ता जोड़ने वाले, हर तरह की बिदतों (धर्म में नई बात) और गुमराहियों से अपने दीन (धर्म) की हिफाज़त करने वाले लोग थे। यह वो लोग थे जिन्होंने कभी सच के मामले में अपनी मान्यताओं और अपने रिश्तों को अहमियत (महत्व) नहीं दी। जब कभी सच सामने आया उन्होंने खुले दिल से उसे क़ुबूल (स्वीकार) किया। ऐसे लोगों में अर्श के साये तले खड़े नेक लोग भी शामिल थे और वे भी जिनके अच्छे कामों के साथ बुरे रवय्ये (व्यवहार) भी मिले हुए थे और इसी आधार पर वह हश्र के मैदान में खड़े थे। लेकिन अल्लाह की ज़ात करीम ने उनके बुरे आमल को नज़र अंदाज़ कर दिया और नेक कामों के आधार पर कामयाबी का परवाना उनके हाथ में थमा दिया। ऐसे लोगों की संख्या बहुत कम थी, इसलिए तुम्हारी बेटी लैला का नंबर जल्दी आ गया, वो कम से कम इस मामले में बिल्कुल पक्की निकली थी। जो उसकी कमज़ोरियां थी वह हश्र की सख्ती झेलने की बिना पर और ज़्यादा

सज़ा देने के काबिल न समझी गई, बल्कि करीम रब ने कमाल इनायत से उसे भी तुम्हारे साथ कर दिया, हालांकि उसके अमल (कर्म) तुम्हारे जैसे नहीं थे।"

'मगर मेरा हिसाब किताब और फैसला तो अभी हुआ नहीं।'

"तुम इस समय जहां हो इसका मतलब यह है कि फैसला हो चुका है, लेकिन ऐलान अभी नहीं हुआ। और बेफिक्र रहो वह हश्र के दिन के आखिर पर सबसे आखिर में होगा।"

'ऐसा क्यों?' मैंने पूछा तो सालेह ने स्पष्ट किया:

"मैंने पहले तुम्हें बताया था कि चार तरह के लोग हैं जिनकी कामयाबी का फैसला मौत के समय ही हो जाता है यानी नबी, उनका साथ देने वाले, शहीद और खास नेक लोग।"

मैंने हाँ में गर्दन हिलाई। सालेह ने अपनी बात जारी रखी:

"इनमें से नबी और खास नेक लोग वह लोग हैं जिनका असल कारनामा आम लोगों पर सच्चे दीन की गवाही देना और एक खुदा व आखिरत (परलोक) की ओर लोगों को बुलाना है। आज क़यामत के दिन इन दोनों समूहों के लोग अपनी गवाही की दास्तान अल्लाह के सामने पेश करेंगे जो उन्होंने दुनिया में लोगों पर दी थी। इस तरह लोगों के पास यह कारण नहीं रह जाएगा कि हक़ और सच्चाई उन्हें पता नहीं चली, क्योंकि यह नबी और यह लोग सच्चाई को खोल खोल कर बयान करते रहे थे।

इसलिए इस गवाही के आधार पर लोगों से सवाल पूछा जाएगा और आखिर कार उनके भविष्य का फैसला कर दिया जाएगा। यह फैसले होते रहेंगे जब तक कि सारे इन्सान निपट नहीं जाएंगे और आखिर में तुम्हारे जैसे सारे गवाह लोगों को बुलाकर उनकी कामयाबी का ऐलान किया जाएगा। उसके बाद फिर कहीं जाकर लोगों को जन्नत और जहन्नम की ओर रवाना किया जाएगा।"

'तो इसका मतलब यह है कि लोग फ़ौरन जन्नत या जहन्नम में नहीं जाएंगे।'

"नहीं फ़ौरन नहीं जाएंगे। बल्कि एक एक आदमी का हिसाब किताब होता जाएगा। अगर वह पास है तो दाएँ हाथ की तरफ इज़्ज़त व आराम में और फैल है तो बाएँ हाथ की ओर अपमान

और अज़ाब में खड़ा कर दिया जाएगा। जब सब लोगों का हिसाब किताब हो जाएगा तो फिर लोग समूह समूह करके जन्नत और जहन्नम की ओर ले जाए जाएंगे।"

'और सबसे पहले?'

"सबसे पहले रसूल अल्लाह (ﷺ) जन्नत का दरवाज़ा खुलवाएँगे और जन्नत वाले स्वागत और सलाम के साथ जन्नत में दाखिल (प्रवेश) होंगे।

'इस समय रसूल अल्लाह (ﷺ) कहाँ हैं?'

"इस समय पैगम्बर होज़े कौसर के पास हैं, उनकी उम्मत में से जिस किसी का हिसाब किताब हो जाता है और वह सफल होता है तो उसे पहले पैगम्बर के पास लाया जाता है जहां कौसर के जाम से उसकी आतवाज़े होती है। जिसके बाद वह न सिर्फ ये के हश्र की सख्ती और प्यास भूल जाता है बल्कि फिर कभी प्यासा नहीं होता, वैसे तुम्हें तो जाम-ए-कौसर याद होगा?"

'क्यों नहीं?' मैंने जवाब दिया।

सालेह की बातें सुनकर मेरे दिल में रसूल अल्लाह (ﷺ) से मुलाकात की चाह पैदा हो गई, मैंने सालेह से कहा:

'क्यों न हम पहले बारगाह रिसालत में हाज़िर (उपस्थित) हों।'

अभी मेरी जुबान से यह वाक्य निकला ही था कि एक ऐलान होने की आवाज़ आई:

"उम्मत-ए-मुहम्मद्या के कामयाब लोगों का हिसाब पूरा हो गया है, अब उम्मत-ए-ईसवी का हिसाब शुरू हो रहा है, मरयम के बेटे ईसा, मसीह अलैहिस्सलाम, अल्लाह के रसूल और बनी इसराइल (यहूदियों) में से आखरी पैगम्बर (दूत) परवरदिगार आलम की बारगाह में हाज़िर हों।"

मैंने सवालिया नज़रों से सालेह को देखा तो उसने कहा:

"अब हज़रत ईसा अपनी क़ौम पर गवाही देंगे, वह अल्लाह के सवाल के जवाब में अपनी तालीमात (शिक्षाओं) का खुलासा पेश करेंगे है। यह अपनी क़ौम के मुजरिमों के खिलाफ उनकी गवाही होगी और सही अकीदे (आस्था) और अमल वालों के पक्ष में एक तरह की शिफारिश बन जाएगी। इसके बाद उनकी उम्मत (मौजूदा इसाई) से जिन लोगों के अकीदे (आस्था) बिल्कुल

हज़रत ईसा की शिक्षा के अनुसार हुए, उनकी गलतियां अल्लाह अनदेखी कर देंगे और सरसरी हिसाब किताब के बाद सब कामयाब करार पाएंगे।"

'क्या यही सब कुछ मुसलमानों के मामले भी में हुआ था?'

"हां सबसे पहले नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बुलाया गया था और उन्होंने गवाही दी थी। यह गवाही उनका इंकार करने और आपकी नाफ़रमानी करने वालों के खिलाफ एक गवाही बन गई। काश तुम वह मंज़र (दृश्य) देख लेते जब उनमे से हर एक आदमी की ख्वाहिश (इच्छा) यह हो गई थी कि धरती फटे और वो उसमें समाजाए। लेकिन यह गवाही लैला जैसे लोगों के हक़ (पक्ष) में सिफारिश बन गई। हालांकि कामयाबी की असल वजह तो यह थी कि उनका ईमान और अमल कुल मिलाकर पैगम्बर की गवाही के अनुसार था।"

'इसका मतलब है कि अभी मुसलमानों में से सिर्फ उन लोगों को निजात मिली है जो ईमान और अमल में पैगम्बर की शिक्षाओं के अनुसार थे?'

"हां उनकी गलतियां अनदेखी कर दी गई, और यही अन्य नबियों की उम्मतों के साथ होगा। नबियों की उम्मतों के उन लोगों को निजात मिल जाएगी जो ईमान और अमल में कुल मिलाकर अपने नबी की शिक्षाओं के अनुसार थे। उसके बाद मैदान में सिर्फ मुजरिम और नाफरमान ही फैसले के इन्तिज़ार में रह जाएंगे।"

'फिर क्या होगा?'

"इसके बाद आम हिसाब किताब शुरू होगा।"

'आम हिसाब किताब?' मैंने सवाल के अंदाज में पूछा तो सालेह ने कहा:

"सभी उम्मतों के हिसाब किताब का पहला चरण वह है जिसमें नेक लोगों की कामयाबी का ऐलान हो रहा है और लैला जैसे लोगों को औपचारिक हिसाब किताब के बाद छोड़ा जा रहा है, इसके बाद सामान्य हिसाब किताब शुरू होगा जिसमें आमाल (कर्मों) की पूरी जाँच पड़ताल के बाद फैसला होगा। जाहिर है इसके नतीजे में सारे मुजरिम चपेट में आ जाएंगे। लेकिन ईमान वालों में से बहुत से लोग अपने गुनाहों के बावजूद अल्लाह की रहमत से छोड़ दिए जाएँगे और

उनकी तराजू का दाँया पलड़ा भारी हो जाएगा। उनका हश्र के मैदान में परेशान होना उनकी माफी का बहाना बन जाएगा, इसी को मैं आम हिसाब किताब कह रहा हूँ।

लेकिन कुछ लोग होंगे जिनको आखिर समय तक के लिए रोक दिया जाएगा और हिसाब किताब के लिए नहीं बुलाया जाएगा। यह वो ईमान वाले होंगे जिन पर गुनाहों का बोझ बहुत ज़्यादा होगा। उन लोगों के लिए इन्तिज़ार (प्रतीक्षा) का यह बहुत लम्बा समय हजारों बल्कि शायद लाखों साल तक चलता चला जाएगा जिसमें उन्हें बहुत सख्तियाँ, मुसीबत और परेशानी झेलना होंगी। फिर कहीं जाकर उनकी माफ़ी की संभावना पैदा होगी।"

'वह संभावना क्या होगी?'

"वह संभावना अल्लाह की रहमत का ज़हूर है कि वह अपने इन्साफ के अनुसार लोगों को पूरी सज़ा देने के बजाय हश्र की सज़ा को उनके गुनाहों का बदला बना देगा और इसके बाद उनकी माफी की वजह अपने नबियों और खासकर रसूल अल्लाह (ﷺ) की दरख्वास्त (अनुरोध) को बना देगा कि उनका हिसाब किताब भी शुरू कर ही दिया जाए।'

'मगर हश्र की इतनी तकलीफ उठाना और फिर छुटकारा पाना तो कोई अच्छा तरीका नहीं हुआ।' मैंने शिकायत भरे लहजे में पूछा तो सालेह ने जवाब दिया:

"अच्छा तरीका बताने ही तो सारे नबी आए थे कि ईमान लाओ, नेक अमल करो कोई गलती हो तो माफी मांग लो। निजात (मुक्ति) का सबसे सरल और आसान तरीका यही था। लेकिन नबियों की बात किसी ने सुनी ही नहीं और उसका नतीजा आज भुगत लिया।"

मैंने उसका समर्थन करते हुए कहा:

'तुम ठीक कह रहे हो, यह तो बड़ी खराबी और बर्बादी के बाद माफी हुई। मैं तो लैला की परेशानी नहीं देख सका था जो शुरू ही में छुटकारा पा गई तो उन लोगों का क्या होगा जो आखिर तक इंतजार करते रहेंगे और हश्र के सख्तियाँ और मुसीबतें बर्दाश्त करते रहेंगे।'

"मेरे भाई तुमने लैला को जिन हालात में देखा था वह बहुत अच्छे थे। लेकिन अब मैदान में लोगों की दुर्दशा का माहौल बहुत भयानक हो चुका है। इस की वजह यह है कि जहन्नम का दरवाज़ा पूरी तरह खोल दिया गया है, जिसके बाद सिर्फ हश्र की गर्मी ही नहीं बल्कि जहन्नम

का नज़ारा और उसमें जाने की संभावना भी लोगों को मारे डाल रही है। अल्लाह का गजब मुजरिमों पर भड़क रहा है, लोग अपने सामने तबाही और अपमान के दरवाजे खुले देख रहे हैं। यह सब इतना होलनाक है कि इंसान की बर्दाश्त से बाहर है। सबसे बड़ी बात यह है कि किसी को नहीं पता कि उसके साथ क्या होगा। इसलिए इस वक़्त तुम हश्र वालों के डर और उनके मानसिक और शारीरिक तकलीफ का अंदाज़ा नहीं कर सकते।"

मैं दिल में सोचने लगा कि क्या यही वह तरीका था जिसके ज़रिये लोग निजात (मुक्ति) की आस लगाए बैठे थे? काश लोग दुनिया में समझ लेते कि निजात (मुक्ति) का होना सिर्फ ईमान और नेक कामों पर होगा। पैगम्बर ने सारी उम्र उसी की दावत दी थी, लेकिन लोगों की खुश फहमयों का क्या कीजये, नबियों की असल दावत को उन्होंने पीछे फेंक दिया और अपनी सोच की झूठी दुनिया आबाद कर ली। उनका मानना था कि कुछ न भी करें शिफारिश उन्हें बख्शवा देगी, लेकिन आज यह साबित हो चुका है कि बख्शिश ईमान और नेक कामों पर मिलेगी। हर वह बड़ा गुनाह जिसकी तौबा नहीं की, उसकी सज़ा आज हश्र की सख्ती और जहन्नम के भयानक साए तले भुगतनी पड़ेगी। ऐ काश कि लोगों को यह बात आज समझ आने के बजाय दुनिया ही में समझ आ जाती तो उनकी सारी जिंदगी तौबा करते बीतती।

मैं अपनी सोचों में गुम था कि सालेह ने मुझे देखकर कहा:

"मेरा ख्याल है कि होज़े कौसर पर जाने से पहले हज़रत ईसा (अ) की गवाही का मंजर देख लेते हैं, फिर रसूल अल्लाह (ﷺ) के पास चलेंगे।

.....

हम एक बार फिर हश्र के मैदान में आ चुके थे, मगर इस बार हम अर्श इलाही के दाहिने तरफ खड़े थे। अर्श इलाही की तजलियात से ज़मीन और आसमान नूर से भरे हुए थे, कामयाब लोगों के लिए तजलियात ख़ुशी और सुकून का पैगाम (संदेश) थीं जबकि मुजरिमों पर कहर बनकर नाज़िल हो रही थीं। अर्श इलाही के चारों ओर फरिश्ते हाथ बांधे गोल दाएरे बनाए खड़े थे। सबसे पहले अर्श को उठाने वाले फरिश्ते थे और उनके बाद दर्जा ब दर्जा दुसरे फरिश्ते, इन फरिश्तों की जुबान से खुदा की तारीफ़ और बड़ाई (स्तुति) के कलमे अदा हो रहे थे। हज़रत ईसा (अ) खुदा

की बारगाह में हाजिर हो चुके थे। जबकि पहले से आखिर तक सारे ईसाइयों को मैदान में मौजूद फरिश्तों ने धकेल कर अर्श के करीब कर दिया था, इरशाद हुआ:

"ऐ मरियम के बेटे ईसा पास आओ।"

फरिश्तों ने हज़रात ईसा के लिए रास्ता छोड़ दिया और वह चलते हुए अर्श इलाही के बिल्कुल पास आ खड़े हुए। उनके हाथ बंधे हुए और गर्दन झुकी हुई थी। इरशाद हुआ:

"ईसा तुमने अपनी क़ौम को मेरा पैगाम (संदेश) पहुंचा दिया था? तुम्हें क्या जवाब मिला?"

'मालिक मुझे कुछ पता नहीं, गायब की जानकारी तो सिर्फ तुझे ही है।'

उनकी यह बात इस हकीक़त का बयान थी कि हज़रत ईसा को पता न था कि उनकी उम्मत ने उनके बाद दुनिया में क्या क्या किया था। हज़रत ईसा के जवाब पर हश्र के मैदान में चुप्पी छा गई। कुछ पल बाद आसमान पर एक धमाका हुआ। सभी नज़रें आसमान की ओर उठ गईं, आसमान पर एक फिल्म सी चलने लगी। इस फिल्म में इसाई हज़रत ईसा और हज़रत मरियम की मूर्तियों के सामने सर टेक रहे थे। बाज़ारों में क्रूस पकड़े लोग जुलूस निकाल रहे थे, गिरजों में मसीह और मरियम की पूजा हो ही थी। मसीह को मुश्किल दूर करने वाला समझ कर उनसे मदद मांगी जा रही थी। उनकी तारीफ़ के नगमे गाए जा रहे थे, पादरी भाषणों में उन्हें परमेश्वर का पुत्र साबित करने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा रहे थे।

यह सीन देखता हुआ मैं सोच रहा था कि ईसाइयों ने मानव इतिहास के सबसे बड़े शिर्क को जन्म दिया था। हालांकि खुदा ने तो अपने पैग़म्बर हज़रत ईसा (अ) को एक खुदा ही की दावत (निमंत्रण) देकर भेजा था। उनके ज़माने में यहूदियों ने हज़रत मूसा के क़ानून में तरह तरह के बदलाव करके इस प्रक्रिया को बहुत मुश्किल बना दिया था। उन लोगों ने खुदा और इन्सान के ईमान (विश्वास) और प्यार से भरे रिश्तों को भी बिना आत्मा के कानूनी रिश्ते में बदल दिया था। इसलिए वह कुछ दिखाई देने वाले और छोटे कामों पर तो खूब ज़ोर देते मगर ईमान और नेक अमल से संबंधित सभी अख्लाकी अहकाम (नैतिक आदेश) के मामले में उन में बेपरवाही छाई हुई थी। ऐसे में उनकी ओर हज़रत ईसा (यीशु मसीह) को भेजा गया, उन्होंने बड़े जोर शोर से यहूद्यों की दिखावे की पूजा और अख्लाकी (नैतिक) दिवालिया पन की आलोचना की, अपने ज़माने के धार्मिक गुरुओं की आलोचना करते हुए उन्होंने कहा था:

"ऐ दिखावे बाजों, झून्ठों और बेशर्मों तुम पर अफसोस! कि तुम विधवाओं के घरों को दबा बैठते हो और दिखावे के लिए नमाज़ों को देर तक पढ़ते हो, तुम्हें ज़्यादा सज़ा होगी। ऐ कपटी कानून बाजों तुम पर अफसोस! कि पोदीना और सौंफ और जीरे पर तो देह (यानी: उत्पादन पर जकात) देते हो पर तुमने शरीयत (खुदा के कानून) की भारी बातों यानी इन्साफ और रहम (दया) और ईमान को छोड़ दिया है। तुम पर जरूरी था कि यह भी करते वह भी न छोड़ते। ऐ अंधे राह बताने वालों जो मच्छर को तो छानते हो और पूरे ऊंट को निगल जाते हो। ऐ कपटी दिखावे बाजों तुम पर अफसोस! कि प्याले और बर्तनों को ऊपर से तो साफ करते हो मगर वह अंदर लूट और बेपरवाही से भरे हैं। ऐ अंधे फरीसी पहले प्याले और बर्तनों को अंदर से साफ कर ताकि ऊपर से भी साफ हो। ऐ कपटी तुम पर अफसोस! तुम सफ़ैदी फेरी हुई कब्रों के समान हो जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं लेकिन अंदर मुर्दों की हड्डियों और हर तरह की गंदगियों से भरी हैं। इसी तरह तुम भी देखने में तो लोगों को धार्मिक दिखाई देते हो लेकिन अंदर से अधर्म घमंड और दिखावे से भरे हो।"

हज़रत ईसा (अ) कि इस आलोचना पर यहूदी आपके सख्त दुश्मन हो गए और यहां तक कि वो आप की हत्या पर उतारू हो गए। लेकिन अल्लाह ने आपको उनकी चाल से बचा कर अपनी ओर उठा लिया। दुर्भाग्य से हज़रत ईसा (अ) के बाद सेंट पॉल नामक आपके एक कट्टर यहूदी दुश्मन ने आप कि पैरवी (पालन) का लबादा पहन कर आप की पूरी शिक्षा को बदल करके रख दिया। एक तरफ उसने ऐलान किया कि शरियत (खुदा के क़ानून) का पालन सिर्फ यहूदियों के लिए जरूरी है, दुसरे लोगों के लिए नहीं। दूसरी ओर उसने हज़रत ईसा और उनकी माँ को खुदा के स्थान पर बैठा दिया। इसलिए धीरे धीरे ईसाई दुनिया का सबसे बड़ा शिर्क करने वाला धर्म बन गया। ईसाई हज़रत मसीह को परमेश्वर का पुत्र समझते, मुश्किल को दूर करने वाला समझ कर हर मुसीबत में उनका नाम लेते, लेकिन यह एक झूठ था जिस का झूठ होना आज बिल्कुल खुल गया है।

मैं यह सब सोच ही रहा था कि मैदान में ईसाइयों के रोने की आवाजें तेज़ होने लगी। ईसाइयों को अपने करतूत साफ नज़र आ गए थे और उनका भयानक अंजाम जहन्नम के रूप में मुंह खोले उनके सामने खड़ा था। अचानक बहुत से ईसाई चिल्लाने लगे:

"खुदा वंद हमने मसीह की शिक्षाओं का पालन किया था, तूने अपने मसीह को हमारी ओर भेजा। उसने बताया कि वह तेरा बेटा है जिसे तू ने हमारे उद्धार के लिए भेजा है।"

एक तेज डाँट वातावरण में तेज़ हुई और सब लोग ठिटक कर चुप हो गए, मसीह से पूछा गया:

"ईसा! क्या तुमने इन लोगों से कहा था कि अल्लाह को छोड़ कर मुझे और मेरी माँ को भगवन बना लो।"

हालांकि यह एक आसान सा सवाल था, लेकिन यह सुनते ही हज़रत ईसा पर घबराहट तारी हो गई, उनके पैरों के लिए उनका बोझ उठाना मुश्किल हो गया। यह देख कर अल्लाह तआला ने फरमाया:

"ईसा तुम मेरे प्यारे पैगंबर (दूत) हो, मेरे पैग़म्बर मेरे समक्ष डरा नहीं करते, इत्मीनान से मेरी बात का जवाब दो।"

इस वाक्य के साथ ही दो फरिश्ते हज़रत ईसा के पास आए और उन्हें सहारा देकर एक सीट पर बिठा दिया।

यह मंज़र (दृश्य) बहुत खौफनाक था। हज़रत ईसा परमेश्वर के एक बहुत प्रिय और महबूब पैगंबर थे, लेकिन दुर्भाग्यवश वही मानव इतिहास की ऐसी हस्ती बन गए जिन्हें सबसे बड़े पैमाने पर अल्लाह की तुलना में ला खड़ा किया गया। उनसे प्रार्थना और दुआ की जाती, उनकी तारीफ़ और बड़ाई की जाती, उनकी इबादत (पूजा) की जाती थी। मगर आज खुदा के सवाल पर उनकी जो हालत हो गई थी वह उन्हें भगवान समझने वालों को खून के आंसू रुलाने के लिए बहुत थी। आज सब ने जान लिया था कि खुदा की तुलना में किसी की कोई हैसियत नहीं है।

मैंने मन में सोचा कि एक एक करके खुदा के ऐसे ही अन्य नेक बंदे आएंगे जिन्हें दुनिया में लोग ऐसे नाम और गुणों से पुकारते थे जो सिर्फ खुदा के लिए ही ख़ास हैं, लेकिन आज उनमे से हर आदमी इन्कार कर देगा कि हमने लोगों से इस तरह की कोई बात कही थी। हर एक का हाल यह होगा कि मसीह की तरह किसी में भी खुदा के सामने खड़े होने की ताकत नहीं होगी। काश उनके नाम पर धोखा खाने वाले लोग खुदा की यह अजमत (महानता) पहले ही खोज लेते । काश लोग इंसानों को खुदा कि तुलना में न लेकर आते। इस दौरान हज़रत ईसा कि हालत में कुछ सुधार हुआ तो वह कुर्सी से खड़े हुए और गुज़ारिश करने लगे:

'आक़ा तू पाक (पवित्र) है! मेरे लिए ये कैसे मुमकिन था कि मैं वह बात कहूँ जिसका मुझे कोई हक़ नहीं। अगर मैंने यह बात कही होती तो तू उसे जानता होता.... मैंने तो उनसे वही बात कही जो तूने मुझे हुक्म दिया कि एक खुदा की इबादत (पूजा) करो जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है, और मैं उन पर गवाह रहा जब तक उन में मौजूद रहा। फिर जब तूने मुझे उठा लिया, तो तू ही उन पर निगाह रखने वाला रहा, और तू तो हर चीज़ पर गवाह है, अगर तू इनको सज़ा दे तो यह तेरे बंदे हैं और अगर तू उन्हें बख्श दे तो तू हर चीज़ पर ताकत रखने वाला और हर चीज़ कि हकीकत को जानने वाला है।'

यह सुन कर अल्लाह तआला ने फरमाया:

"आज सिर्फ सच्चाई अपने अपनाने वाले सच्चे लोगों को फाएदा दे सकेगी।"

फिर हज़रत ईसा को विदा कर दिया गया और फरिश्तों को हुक्म हुआ:

"ईसा की उम्मत में से जिस किसी का इल्म और अमल (ज्ञान और कर्म) ईसा के पैगाम के मुताबिक (अनुसार) हैं, उसे हमारे सामने पेश किया जाए।"

****

होज़े कौसर पर

हज़रत ईसा की गवाही का मंजर देखने के बाद हम दोनों ने होज़ कि तरफ बढ़ना शुरू कर दिया, मैंने रास्ते में सालेह से पूछा:

'हज़रत ईसा (अ) ने जो सिफारिशी शब्द कहे थे यानी अगर तू उन्हें बख्श दे तो तू हर चीज़ पर ताकत रखने वाला और हर चीज़ कि हकीकत को जानने वाला है, क्या इन शब्दों का कोई असर नहीं हुआ?'

"तुमने जवाब में अल्लाह तआला की बात नहीं सुनी थी कि आज सच्चों को उनकी सच्चाई ही फाएदा पहुंचाएगी।"

'हां सुनी, मगर उससे तो यह लगता है कि उनकी सिफारिश क़ुबूल नहीं हुई।'

"नहीं ऐसा नहीं हुआ, अल्लाह ने अपना कानून स्पष्ट कर दिया है। कानून यह है कि पैगंबर की लाई हुई शिक्षा को सच मान कर क़ुबूल करना और अपने अमल (कर्म) ऐसे ही बना कर उस कि पुष्टि करना सफलता और निजात की बुनियादी शर्त है। खुदा कि बात का मतलब यह था कि जिस किसी ने यह बुनियादी शर्त पूरी कर दी, उसके साथ अल्लाह तआला अब दरगुज़र (माफ़ करदेना) का मामला करेंगे। यानी जो गलतियां ऐसे लोगों से होती रहीं और उन्होंने उन की सुधार और तौबा नहीं भी की, उन पर अल्लाह अपनी रहमत से पकड़ नहीं कर रहे।

हर नबी अपनी उम्मत की इसी तरह दबे शब्दों में सिफारिश कर रहा है और करेगा। मगर इसके नतीजे में फ़िलहाल सिर्फ इतनी ही छूट मिल रही है, इस समय गलतियाँ माफ हो रही हैं, अपराध नहीं। और ऐसी गलतियाँ जिन्हें मामूली समझ कर तौबा नहीं की गई थी बहरहाल इसी तरह की शर्मिंदगी उसका कारण बनी हैं जो तुम्हारी बेटी लैला को उठानी पड़ी थी। बाकी जिन लोगों ने हर समय ईमान और नेक अमल और तौबा और सुधार करने के काम में लगे रहे वह तो पहले ही से सुकून में हैं, और जिन लोगों ने लगातार नाफ़रमानी और बड़े गुनाहों की राह अपनाई वो इस समय बदतरीन सख्ती का शिकार हैं।"

यह बातचीत करते हुए हम एक ऐसी जगह आ गए जहां फरिश्ते लोगों को आगे बढ़ने से रोक रहे थे। सालेह मेरा हाथ थामे उनके पास चला गया। उसे देखते ही फरिश्तों ने रास्ता छोड़ दिया। हम ज़रा दूर चले तो एक झील सी नज़र आने लगी, उसे देखते ही सालेह बोला:

"यही होज़े कौसर है।"

मैंने कहा:

'मगर यहां रसूल अल्लाह (ﷺ) तो नहीं हैं।'

"वह आगे की ओर हैं, हम दूसरी ओर से दाखिल हुए हैं। मैं तुम्हें इसे पूरी तरह दिखाना चाह रहा था इसलिए यहां से लाया हूं।"

सालेह की बात पर मैंने गौर से देखाना शुरू किया तो पता चला कि आम मायने में यह कोई होज़ नहीं है। मैंने आश्चर्य के साथ सालेह से कहा:

'यार यह तो झील बल्कि शायद समुद्र जितना बड़ा है जिसका दूसरा किनारा मुझे नज़र ही नहीं आता।'

"हां यह ऐसा ही है, तुम देख नहीं रहे कितने सारे लोग इसके किनारे खड़े पानी पी रहे हैं। अगर कोई छोटा मोटा होज़ हो तो फ़ौरन ही खाली हो जाएगा।"

उसने ठीक कहा था, यहां हर जगह बहुत सारे लोग मौजूद थे।

वैसे पिछली दुनिया में भी रसूल अल्लाह (ﷺ) के फरमान से मुझे अंदाज़ा था कि यह आम सा होज़ नहीं होगा बल्कि कोई सागर है। बल्कि पैगम्बर के इरशादात से मुझे ख्याल होता था कि यह वही जगह है जहां पिछली दुनिया में अरब व अफ्रीका को अलग करने वाला दरया (Red Sea) बहता था। मैंने अपने इस अनुमान को सालेह से बताया तो वह बोला:

"बड़ी हद तक यह अनुमान ठीक है, ज़मीन फैलकर हालांकि बहुत बड़ी हो चुकी है, लेकिन यह लगभग वही जगह है।"

'इसका मतलब है कि हश्र का मैदान अरब की धरती पर लगाया गया है?'

"हां तुम्हारे अनुमान ठीक हैं।"

मैं चुपचाप सोचने लगा कि कैसा समय था वो जब दुनिया आबाद थी। लोग उस समय दुनिया के हंगामों में गुम थे, काश उन्हें अंदाज़ा हो जाता कि असल दुनिया तो मौत के बाद शुरू होने वाली है। खुदा ने नबियों को भेज भेज कर पिछली दुनिया में तरह तरह से लोगों को समझाया, लेकिन लोग मान कर ही नहीं दिए। फिर खुदा ने नबियों में से कुछ को रिसालत के पद पर नियुक्त कर दिया, यह रसूल न केवल लोगों को सही रास्ते की ओर बुलाते थे बल्कि इससे एक कदम आगे बढ़ कर लोगों को चेतावनी भी देते थे कि अगर उनकी बात नहीं मानी गई तो खुदा क़यामत से पहले ही इस कौम पर अपना अज़ाब भेज देगा जिससे सिर्फ मानने वाले बचाए जाएंगे। इसी लिए नूह की कौम, आद की, समूद की, लूत की कौम, शुएब की कौम, फ़िरऔन की आल और खुद मक्का के कुरैश के साथ यही हुआ।

इन कौमों के रसूलों ने उन्हें अल्लाह के अज़ाब से डराया, लेकिन जब वह नहीं माने तो क़यामत से पहले ही दुनिया में उन्हें अज़ाब दिया गया। नूह की कौम और फ़िरऔन की आल को पानी में डुबो कर, आद को तुन्द आंधी, समूद की कौम और शुएब की कौम को एक कड़क से, लूत की कौम को पत्थर वाली हवा से, और मक्का के कुरैश को मुसलमानों की तलवारों से ख़त्म किया गया और ईमान वालों को बचाकर ज़मीन की हुकूमत उन्हें दे दी गई। खासकर मक्का के इन्कारियों और पैगम्बर का मामला तो इतिहास की रोशनी में हुआ और कुरआन में इसका रिकॉर्ड सुरक्षित कर दिया गया। और किसे मालूम नहीं था कि सहाबा इकराम (आखरी नबी के साथियों) को किस तरह कुछ वर्षों में ही दुनिया का हुक्मरान (शासक) बना दिया गया। यूँ सज़ा और इनाम का एक दुन्यावी नमूना इस तरह दिखा दिया गया कि कोई भी इसका इन्कार करने की ताकत नहीं रखता। फिर भी लोगों ने इस दिन की तैयारी नहीं की।

सबसे बढ़कर इस मिडल ईस्ट के इलाके में जहां आज हश्र का मैदान है, चार हजार साल तक इब्राहीम की औलाद के रूप में एक कौम के साथ लगातार सज़ा व जज़ा का मामला किया गया। इब्राहीम की औलाद की दो शाखाओं यानी बनी इस्माइल और बनी इसराइल के साथ खुदा का कानून यह रहा कि वह फरमाबरदारी करते थे तो खुदा की रहमत उन्हें दुनिया ही में मिलनी शुरू हो जाती और नाफ़रमानी करते तो दुनिया में राष्ट्रीय रूप में सज़ा पाते थे। बनी इसराइल को अपने इतिहास में अपने जुर्मों के नतीजे में दो बार बड़ी तबाही का सामना सज़ा के रूप में करना

पड़ा। एक बार इराक के बादशाह बख्त नस्र के हाथों और दूसरी बार रोमन जनरल टाईटस के हाथों से तबाही नाज़िल की गई। इसी तरह मुस्लिम उम्मत को उनके जुर्म के आधार पर दो बार बड़े पैमाने पर सज़ा दी गई, एक बार तातारियों के हाथों और दूसरी बार यूरोपीय कौमों के हाथों उन्हें तबाही और गुलामी के अपमान का सामना करना पड़ा।

इस सज़ा के साथ जब कभी वह तौबा करते तो उन पर हुकूमत और इनाम के दरवाजे खुल जाते। इसका एक उदाहरण वह था जब तातारियों के हाथों पूरी तरह बर्बाद होने के बाद मुसलमानों ने उन तक इस्लाम का पैगाम (संदेश) पहुंचाया तो थोड़े ही समय में बर्बाद हो चुके मुसलमान फिर से दुनिया की महाशक्ति बन गए। मगर अफसोस कि लोगों ने सज़ा और जज़ा के खुले मामले को देख कर भी क़यामत की सज़ा व जज़ा की हकीकत को गंभीरता से नहीं लिया। मेरे मुंह से एक ठंडी आह निकली और मैंने कहा:

'मेरे रब तू ने तो समझाने में कोई कसर नहीं छोड़ी, लेकिन इंसान बड़ा ही ढीट जीव था। इसीलिए उसे आज का यह कड़वा दिन देखना पड़ रहा है।'

सालेह ने मेरा वाक्य सुनकर पल भर के लिए मुझे देखा और बोला:

"नहीं! हर इंसान ऐसा नहीं था, देख लो तुम्हारे आसपास होज़े कौसर पर कितने सारे लोग हैं।

मैंने हाँ में सर हिलाया मगर कुछ बोला नहीं सका, वजह साफ जाहिर थी। सालेह यहां मौजूद लोगों को देख रहा था और मैं बाहर हश्र में मौजूद लोगों के ख्याल में था जिनमें मेरा अपना बेटा जमशैद भी शामिल था। मैं हश्र के मैदान में उसकी तलाश में लौटा था, मगर हज़रत ईसा (अ) की गवाही का मंजर देख कर मेरा हौसला जवाब दे चुका था, इसलिए फिलहाल उस का मामला मैंने खुदा पर छोड़ने का फैसला किया।

.....

हम आगे बढ़ रहे थे कि एक जगह पहुंचकर सालेह ने मुझसे कहा:

"चलो अब कौसर के VVIP लाउंज में चलते हैं।"

मैंने उसकी बात पर कोई टिप्पणी नहीं की, लेकिन मुझे अंदाज़ा था कि सालेह क्या कह रहा है। लेकिन उसने अपनी बात को खुद ही पूरा किया:

"आखिरत की कामयाबी हासिल करने वालों के दो दर्जे (वर्ग) हैं। एक वह जिन्होंने दीन को फ़र्ज़ और ज़रूरी समझ कर अपनाया, बन्दों और ईश्वर के हक़ अदा किये और ईश्वर के हर एक हुक्म को माना। यही लोग जन्नत की सफलता पाने वाले हैं। इनमें से कुछ लोग वह थे जिन्होंने फ़र्ज़ से भी बढ़कर कुर्बानी के तौर पर दीन को अपनाया, बुरे से बुरे हालात और मुश्किल मोकों पर सब्र किया और जमे रहे, नेकी और खैर के हर काम में बढ़त ली। हर हाल में सच को अपनाया और इसके लिए हर क़ीमत दी। ख़ुदा के दीन की मदद, उसकी नफिल इबादत, उसके बन्दों पर खर्च और सेवा को अपना जीवन बना लिया। यही वह लोग हैं जो आज आखिरत के दिन VIPs में शामिल किये जाएँगे। उनकी नेअमतें, उनके दर्जे, खुदा से उनकी करीबी और मक़ाम सब कुछ आम जन्नतियों से कहीं ज़्यादा है।

यह ऐसा ही है जैसे दुनिया में हर समाज में एक आम जनता की क्लास होती थी और एक ख़ास लोगों यानी elite हुआ करती थी। आज क़यामत के दिन यही हो रहा है, सफल लोगों को मैदान की सख्ती से बचाकर होज़े कौसर के सुहाने मौसम में ठहराया गया है और जन्नत में भी उन्हें अच्छी जगह मिलेगी। जाहिर है कि यह बहुत बड़ी सफलता है, मगर इस से भी ऊँचा एक दर्जा (स्तर) ख़ुदा के करीबियों के लिए है। यह जन्नत का सबसे आला दर्जा है, इस की हकीकत तो जन्नत में दाखिल होने के बाद ही सामने आएगी, लेकिन होज़े कौसर के पास भी यह इन्तिज़ाम किया गया है कि ख़ास जन्नतियों के टहरने की जगह भी अलग बनाई गई है। हम वहीं जा रहे हैं।"

वह पल भर के लिए ठहरा और मेरी आँखों में ध्यान से देखते हुए कहने लगा:

"क्यों कि हमारा अब्दुल्लाह आम जन्नतियों में से नहीं बल्कि एक सरदार और हर ऊँचे स्थान का हकदार है।"

मैंने उसकी बात सुनकर अपना सर झुका दिया।

.....

हम एक ऐसी जगह पहुंचे जहाँ की ख़ूबसूरती शायद शब्दों की पकड़ में नहीं आ सकती थी। झील का बर्फ की तरह सफेद और साफ़ पानी जमीन के फर्श पर चांदनी की तरह बिछा हुआ था। झील की सतह सुकून से भरपूर और बहुत बड़ी थी और देखने से निगाहों को अजब तरह की

ठण्डक मिल रही थी। झील के किनारे ऐसे चमकदार मोती के बने हुए थे जो अन्दर से खाली थे। किनारे के पास बहुत मुलायम कालीन बिछे हुए थे जिन पर चलते हुए तलवों को अजीब राहत मिल रही थी। उन पर शाही और आरामदायक सीटें मौजूद थीं, शीशे से ज़्यादा पारदर्शी मेजों पर सोने और चांदी के गिलास सितारों की तरह जगमगा रहे थे। झील से ऐसी महक उठ रही थी जिससे मेरा वुजूद मदहोश होकर रह गया।

मैंने एक सीट संभालते हुए सालेह से पूछा:

'यह इतनी अच्छी खुशबू कहाँ से आ रही है?'

"होज़ की तह में जो मिट्टी है वह दुनिया की किसी भी खुशबू से ज़्यादा खुशबूदार है, उसी का यह असर है।"

सालेह ने झील से एक गिलास भरा और मेरे सामने रखते हुए कहा:

"मजे करो।"

मैंने एक घूंट लिया, दुनिया में मैंने इसकी सिर्फ मिसालें सुनी थीं, दूध, शहद आदि। मगर ये उन सबसे कहीं ज़्यादा अच्छा था, हालांकि पहले भी मैं कौसर का जाम पी चुका था, लेकिन इस माहौल में पीने का मजा कुछ और था। बाहर हश्र में तेज़ चिलचिलाती धूंप थी मगर यहाँ ढलती हुई शाम का सा मंज़र (दृश्य) था। ठंडी और महकदार हवा चल रही थी, बिल्कुल सूरज डूबने से पहले का समां लगता था, सफेद आसमान पर हल्की सी लाली छाई हुई थ, आसमान के रंग झील के सफेद पानी पर अपने आप को यूँ फैलाए हुए थे कि जैसे कोई अपना रंग बिरंगा दुपट्टा हवा में लहरा रही हो। इसमें कोई शक नहीं कि यह एक बहुत आकर्षक और खुबसूरत मंज़र था।

मैंने अपने आसपास नज़र डाली। मुझे यह बिल्कुल किसी पिकनिक पॉइंट का मंज़र लग रहा था, लोग टोलियों में, अकेले अकेले और अपने परिवार के साथ इस झील या होज़ के किनारे खड़े और बैठे और आपस में खुश गप्पियां कर रहे थे। सब लोग बेहद खुश नजर आ रहे थे, उनके चेहरे पर फैला सुकून और इत्मीनान यह बताने के लिए काफी था कि उन लोगों ने बाज़ी मार ली है। यह मौत, दर्द, बिमारी, गम और दुख के हर खतरे से दामन छुड़ाकर हमेशा रहने वाली और सच्ची खुशी के महासागर के किनारे आ खड़े हुए हैं।

खत्म न होने वाली कामयाबी, फीकी नहीं पड़ने वाली खुशी, कम न होने वाली लज्ज़तें, फ़ना ना होने वाली ज़िन्दगी और वापस न ली जाने वाली ऐश आज उनके क़दमों में थीं। कितनी कम मेहनत करके कितना ज़्यादा सिला उन्होंने पा लिया था। इस सफलता का जश्न मनाते हुए उनके क़हक़हों की आवाज़ें दूर तक सुनी जा रही थीं। उनके चेहरों की मुस्कुराहटें हर तरफ बहार बनकर छा रही थीं।

उन्हें देख कर मुझे अपने पत्नी बच्चों का ख्याल आया।

सालेह ने मेरा ख्याल मेरे चेहरे पर पढ़ लिया था, वह बोला:

"आओ चलो लगे हाथों तुम्हें तुम्हारे घर वालों से भी मिलवा देते हैं, उन्हें भी यहीं बुलवा लिया गया है।"

.....

मुझे सबसे पहले लैला ने देखा, वह बाकी परिवार के साथ होज़ के किनारे एक सीट पर बैठी थी, मगर शायद उसकी खोजी निगाहें मुझे ही खोज रही थी। उसने मुझे दूर से देख लिया था, वह सीट से उठी और दौड़ती हुई मेरे पास आई और मुझसे लिपट गई। वह कुछ बोल नहीं रही थी बस रोए जा रही थी, मैं देर तक उसका कंधा थपकता रहा। फिर मैंने उसे खुद से अलग किया और उसकी शक्ल देखने लगा।

मैंने आखरी बार जब उसे हश्र के मैदान में देखा था तो वहां वह बहुत बदहाल थी। मगर अब मेरी बेटी परियों की तरह हसीन लग रही थी, उसे यूँ देख कर मैंने खुदा की रहमत का शुक्रिया किया, जिसकी बिना पर आज वह मुझसे आ मिली थी। मैंने उससे कहा:

'लैला! मुसीबत और तकलीफ के दिन खत्म, अब खुशी और राहत हमेशा तुम्हारा मुकद्दर (भाग्य) रहेगी।'

इतने में बाकी लोग भी मेरे पास आ चुके थे। मेरी अन्य दो बेटियां आरफा और आलया दोनों हमेशा की तरह खूबसूरत लग रही थीं, जबके मेरा छोटा बेटा अनवर अपनी माँ का हाथ पकड़े खड़ा था। मैंने सारे बच्चों को गले लगाया, फिर उन से कहने लगा:

'मेरे बच्चों मुझे तुम पर गर्व है, तुमने दुनिया की रनगीनियों के ऊपर अपने रब के वादों को तरजीह (प्राथमिकता) दी। तुमने नीच दुनिया के थोड़े से फ़ायदों को छोड़कर हमेशा की ज़िन्दगी को चुना। आज तुम्हारी अबदी कामयाबी (अनन्त सफलता) का दिन है। आओ इस दिन की सफलता की शुरुआत कौसर के जाम से एक साथ पी कर करें।'

यह कहते हुए मैं एक पास की सीट पर बैठ गया। बाकी लोग भी मेरे आसपास बैठ गए, मैंने बैठते ही लैला से कहा:

'बेटा मैं तुम्हारी दास्तान सुनना चाहता हूँ, लेकिन पहले अनवर, आलया, आरफा तुम बताओ! तुम लोग खैरियत से अपनी माँ तक पहुँच गए थे?'

तीनों ने एक ही जवाब दिया कि वह पहले ही से सुरक्षित थे और अलग अलग फरिश्तों ने हश्र के दिन की शुरुआत ही में उन्हें हिफाज़त से अर्श के साये तले पहुंचा दिया था। उनके बाद लैला बोली:

"अब्बू मैंने बहुत मुश्किल समय देखा है, मैं सूर की आवाज़ सुनकर जब कब्र से निकली तो अजीब वहशत का आलम था। सब लोग एक ही दिशा में भागे जा रहे थे, उस समय किसी के शरीर पर भी कपड़े नहीं थे, लेकिन डर ,खौफ और परेशानी का आलम यह था कि कोई किसी को न देख रहा था और न किसी को अपने नंगे पन की परवाह थी। मैंने आप सब लोगों को बहुत तलाश किया, लेकिन आप लोगों का कोई अता पता नहीं था। लाचार होकर में उसी दिशा में दौड़ने लगी जिस दिशा में सब लोग भागे जा रहे थे।

खबर नहीं इस हाल में मुझे चलते चलते कितना समय गुज़र गया। लगता था कि हर किसी को एक मंजिल पर पहुंचने का जुनून सवार है। लोग आतंकित थे, परेशान थे, लेकिन मजबूर थे कि एक ही दिशा भागते चले जाएं।"

मैंने उसकी बात काटकर कहा:

'यह इस्राफील के सूर का असर था कि हर आदमी हश्र के मैदान की ओर दौड़ने के लिए खुद को मजबूर पाता था। लोग दुनिया के किसी हिस्से में भी थे, मगर सब का रुख एक ही दिशा में कर दिया गया था।'

"जी हाँ अब्बू आप ठीक कह रहे हैं, सब लोग एक ही दिशा में जा रहे थे। चलते चलते मेरे पैरों में छाले पड़ गए, उनसे खून निकलने लगा, थकान से शरीर टूट रहा था, मगर अंदर कोई चीज़ थी जो रुकने नहीं देती थी। प्यास के मारे हालत खराब थी, मगर पानी का एक कतरा तक कहीं नहीं था। बला की गर्मी थी लेकिन कहीं कोई पेड़ और छाया न थी। अब्बू सारे रास्ते सिवाय चटयल मैदान के कुछ नहीं मिला। पहाड़, नदी, समुद्र, पेड़, खाई यहाँ तक कि न कोई उतार था न चढ़ाव। क्या बताऊँ कैसा तखलीफ़ से भरा सफ़र था, दुनिया होती तो मैं थक कर गिर जाती, मर जाती। मगर यहां न गिरना नसीब में था न मरना, लाचार दौड़ती रही।"

"फिर क्या हुआ?" अनवर ने घबराहट के लहजे में पूछा।

"इसी तरह चलते चलते न जाने कितने समय में मैं हश्र के मैदान तक आ पहुँची। मगर यहाँ एक दूसरी मुसीबत इंतजार कर रही थी, हर जगह अजीब भयानक फरिश्ते घूम रहे थे, उनकी शक्ल देख कर ही डर लग रहा था। मेरे साथ तो उन्होंने कुछ नहीं किया, लेकिन दूसरों को वह बेदर्दी से मार रहे थे, मगर मारपीट के इन मंज़रों को देख कर ही मेरी जान निकली जा रही थी।"

'आसमा तुम्हें कहाँ मिली?' मैंने पूछा।

"वह भी हश्र के मैदान में मुझे एक जगह रोती बिलकती मिल गई। अब्बू वह बड़े नाजों में पली हुई लड़की थी, उसे देख कर तो मैं अपना सारा दुःख भूल गई। उसके बाद हम दोनों साथ साथ रहे के कुछ हौसला रहे, मगर आप से मिलने के बाद उसका हौसला और निज़ात (मुक्ति) की उम्मीद बिल्कुल दम तोड़ गईं।"

आलया ने पूछा:

"आखरी बार वह तुम्हें कहाँ मिली थी?"

"जब सजदे का हुक्म हुआ था मैं सजदे में चली गई, उस समय वो मेरे बराबर में थी, मगर वह सजदे में नहीं जा सकी। वह दुनिया में हमेशा यही कहती थी कि अल्लाह को हमारी इबादत (पूजा), हमारी नमाज़ की ज़रूरत नहीं। अगर है भी तो वह बहुत माफ़ करने वाला है, वह हमें माफ कर देगा। वह रोज़ा यह कहकर छोड़ती थी कि मेरी खुबसूरत त्वचा खराब हो जाएगी।"

"तुम सजदे से उठी तो वह कहां थी?" आरफा ने पूछा।

"वह मेरे बराबर में ही थी, लेकिन जब खुदा ने हुक्म दिया कि हर हजार से नौ सौ निन्नावे लोगों को अलग किया जाए तो फरिश्ते उसे घसीटते हुए मेरे पास से ले गए। फिर मुझे हिसाब किताब के लिए खुदा के सामने पेश कर दिया गया।"

"वहां क्या हुआ?" इस बार नाएमा ने पूछा।

"मुझे तो लग रहा था कि अल्लाह तआला मेरा आमाल नामा (रिज़ल्ट) मेरे बाएं हाथ में पकड़ा कर मुझे अज़ाब के फरिश्तों के हवाले कर देंगे, मगर मैं क़ुर्बान जाऊँ अपने रब की रहमत के, उसने बड़ा करम किया। मुझ से ईमान (यकीन) और इबादत (पूजा) के बारे में सवाल हुए, मैंने बताया कि मैं हर बात पर ईमान रखती थी और सारी इबादत करती थी। फिर मोटे मोटे अख्लाकी मामलात (नैतिक मुद्दों) जैसे रहम करना और लोगों के हक (अधिकार) का सवाल हुआ, मैंने उनका जवाब भी दे दिया। उसके बाद मुझे यह डर हुआ कि खुदा आम ज़िन्दगी में होने वाली नाफर्मानियों और गुनाहों के बारे में सवाल न करलें। लेकिन इसके बाद उन्होंने मुझसे कोई सवाल ही नहीं किया।"

इस पर मैंने कहा:

'लैला बेटा! अगर अल्लाह तआला तुम से अगला सवाल कर लेते तो तुम मारी जाती। वह जिसे माफ़ करने का फैसला करते हैं, उससे कोई ऐसा सवाल नहीं करते जिसका जवाब ना में आना जरूरी हो, यह काम सिर्फ उन लोगों के साथ होता है जिनको पकड़ना मकसद होता है। उन्होंने तुमसे सिर्फ वो पूछा जिसका सही जवाब तुम्हारे आमाल नामे में लिखा था। बाकी तुम्हारे गुनाह हालांकि आमाल नामे में मौजूद थे, लेकिन उन्होंने जानबूझकर नज़र अंदाज़ कर दिए।'

"हां अब्बू उन्होंने एक बात मुझे आखिर में कही थी, वह यह कि तुम अब्दुल्लाह की बेटी हो, तुम्हें तो उसके साथ ही होना चाहिए। इसके बाद उन्होंने फरिश्तों से कहा कि इसका आमाल नामा दाहिने हाथ में देकर इसे इसके घर वालों के पास भेज दो। उस वक़्त मेरी खुशी का जो आलम था उसे मैं बता नहीं सकती।"

सालेह जो मेरे बराबर ही में बैठा था उसकी बात सुनकर कहने लगा:

"तुम्हे माफी अब्दुल्लाह की वजह से नहीं मिली है, लेकिन तुम्हारे दर्जे (वर्ग) तुम्हारे पिता की वजह से बड़े हो गए हैं। तुम इस समय होज़े कौसर के VVIP लाउंज में बैठी हो, जानती हो तुम और तुम्हारे भाई बहनों और मां पर यह महरबानी सिर्फ तुम्हारे पिता अब्दुल्लाह के कारण है। यह खुदा की खास इनायत है कि सफल लोगों में से जिस आदमी का दर्जा सबसे ऊंचा होगा उसके करीबी रिश्तेदारों को अल्लाह तआला उस एक के साथ जमा कर देंगे।"

इस पर आलया ने कहा:

"तभी हम भाई बहनों के परिवारों के किसी व्यक्ति को यहां आने की इजाज़त नहीं मिली। सिर्फ हम भाई बहनों और अम्मी को फरिश्तों ने यहां आने दिया है, बाकी लोग भी यहां हैं, लेकिन उन्हें पीछे ठहराया गया है।"

यह सुनकर नाएमा के चेहरे पर मुहब्बत के गहरे आसार ज़ाहिर हो गए, उसके अंदर की मां बोली:

"सिवाए जमशैद के।"

यह सुनकर एक चुप्पी छा गई, आखिर अनवर ने ख़ामोशी के इस पर्दे को यह कहकर तोड़ा:

"अब्बू मुझे तो आपके उस्ताद (गुरु) फरहान साहब के उस आर्टिकल ने बचा लिया जो मैंने आपसे अक्सर सुना था, उस आर्टिकल को मैंने अपनी ज़िंदगी बना लिया था।"

आरफा बोली:

"भाई! वह आर्टिकल क्या था? हमें भी सुनाओ।"

अनवर ने आंखें बंद कीं और बोलने लगा:

"हमारे दौर के सुधारक, लोगों के अन्दर से तरक्की की फितरी चाहत (इच्छा) को खत्म करना चाहते हैं। जबकि खुदा ऐसा नहीं करता। वह यह चाहता है कि इस चाहत का रुख दुनिया के बजाय आखिरत (परलोक) की तरफ मुड़ जाए। दुनिया में मशहूर और बड़े लोगों में शामिल होने के बजाय लोगों में यह इच्छा पैदा हो कि वह खुदा के करीबी और जन्नत के बड़े लोगों में शामिल हों। आप पूरे कुरआन की दावत (पुकार) पढ़ लें वह इसके सिवा इन्सान में कोई सोच

पैदा नहीं करना चाहता। कुरआन के सबसे पहले मुखातिबीन (श्रोता) सहाबा इकराम (हुज़ूर के साथी) इसी सोच के मालिक थे। अबु बक्र व उमर का खर्च करना, अब्दुर्रहमान और उसमान का खुला दिल और अली और अबू ज़र की सादगी आखिरत (परलोक) पर इसी ईमान की अलग अलग सच्ची कहानियां हैं। आखिरत पर ईमान आदमी में जो बदलाव लाता है उसे समझने के लिए कुरआन की इस आयत को देखें:

"तुम लोगों को जो कुछ भी दिया गया है वह सिर्फ दुनिया की ज़िन्दगी का सामान और उसकी सज़ावट है, और जो कुछ अल्लाह के पास है वह अच्छा और बाकी रहने वाला है। क्या तुम लोग अक्ल से काम नहीं लेते? भला वो आदमी जिस से हमने अच्छा वादा किया हो और वो उसे पाने वाला हो कभी उस आदमी की तरह हो सकता है जिसे हमने सिर्फ दुनिया की ज़िन्दगी का सामान दे दिया हो और फिर वह क़यामत के दिन सज़ा के लिए पेश किया जाने वाला हो?"(सूरेह अल कस्स)

आप बता दें कि जिस इन्सान के दिल में सिर्फ एक इस आयत पर पक्का यकीन हो उसकी ज़िन्दगी कैसे गुज़रेगी? ऐसा इन्सान माल कमाते समय खुदा की नाफ़रमानी का खतरा नहीं मोल ले सकता, जिसका नतीजा जहन्नम की आग है। वो अपने माल को अपनी ज़रूरत पूरी करने के बाद आखिरत (परलोक) की हमेशा रहने वाली और बेहतर ज़िन्दगी के लिए खर्च करेगा। वह दुनिया की किसी भी चीज़ को पाने के लिए आखिरत को कभी खतरे में नहीं डालेगा। वह दुनिया के घर से पहले आखिरत के घर की चिंता करेगा और दुनिया की गाड़ी से पहले आखिरत की सवारी की सोचेगा। वह औरतों के खुले ढके जिस्म पर निगाह डालने की थोड़ी देर की लज्ज़त के लिए उन हूरों से हाथ धोना गवारा नहीं करेगा जिनका चाँद सा चेहरा हो, दिलकश हुस्न हो और शबाब कभी ना ढलता हो।

घर वालों की ज़रुरत और खुवाहिश उसे कभी किसी ऐसे रास्ते पर नहीं ले जा सकती जो आखिरकार जहन्नम की कगार तक जा पहुंचती हैं। पत्नी बच्चों की मुहब्बत उसे मजबूर करेगी कि वह उन्हें भी जन्नत के रास्तों का मुसाफिर बनादे। उन्हें अच्छी बातें सिखाए, उन्हें वक़्त दे, उन्हें बताए कि जीना तो सिर्फ आखिरत का जीना है। सफलता तो जन्नत की सफलता है, यह दुनिया धोके के सिवा कुछ नहीं। इस जहान में हम से पहले भी अनगिनत लोगों का इम्तिहान हुआ और हमारा भी इम्तिहान हो रहा है। कुछ सालों की बात है, न हम रहेंगे न इम्तिहान के

यह सब्र आज़माने वाले पल, कुछ होगा तो खुदा की रहमत होगी, उसकी जन्नत होगी, ख़त्म न होने वाली नेअमतें होंगी, इज्ज़त (सम्मान) व इकराम की महफिले होंगी। लहजों में वकार होगा, चेहरों पर निखार होगा, नेक लोगों का साथ होगा, अपनों और दोस्तों का साथ होगा। हीरे जवाहरात के महल होंगे, तरह तरह की नहरें व बाग़ होंगे, खाने होंगे पीनी की चीज़े होंगी, हर तरह का ऐश होगा।

जहाँ कोई दुःख ना होगा, कोई गम न होगा, कोई मायूसी न होगी, कोई पछतावा न होगा, कोई कमी न होगी। बदनसीब वो नहीं जिसे दुनिया ना मिली, बदनसीब वो है जिसे ये जन्नत की ज़िन्दगी ना मिली।" इस आखरी बात पर अनवर की आवाज़ भर्रा गई। उसे शायद अपने भाई जमशैद का ख्याल आ गया था, लेकिन उसे मालूम नहीं था कि उसने यह आर्टिकल सुनाकर मेरे लिए जमशैद के सदमे के साथ मेरे उस्ताद फरहान साहब का सदमा भी जमा किया है। मैंने दिल में सोचा:

शायद हश्र के मैदान में हमें कुछ ग़म देखने ही हैं। यह सिर्फ जन्नत ही है जहां जाने के बाद हर गम और हर दुःख हमेशा के लिए खत्म हो जाएगा।

****

नूह की कौम और दीन (धर्म) बदलने वाले

उस्ताद फरहान अहमद और जमशैद की याद ने मेरे अंदर एक गहरी ख़ामोशी पैदा कर दी थी। सालेह को इसका अच्छी तरह अंदाज़ा था, उसने मेरा ध्यान एक दूसरी ओर बटाने के लिए कहा:

"तुम भूल गए हो कि हम असल में रसूल अल्लाह (ﷺ) से मिलने निकले थे, तुम बीच में बैठ गए, अब वह खुद तुम्हें याद कर रहे हैं।"

"क्या अब्बू अभी तक रसूल अल्लाह (ﷺ) से नहीं मिले।" अनवर ने आश्चर्य से कहा।

सालेह वजाहत (वर्णन) करते हुए कहने लगा:

"हर इन्सान जो हश्र के मैदान से सफल होकर आता है वह सीधा रसूल अल्लाह (ﷺ) के पास जाता है। वहां हुज़ूर अपने हाथों से उसे कौसर का जाम अता (प्रदान) करते हैं। उसके घर वालों को भी इस मौके (अवसर) पर वहीं बुलवालिया जाता है। इसके बाद वे शोर मचाते और मज़ा करते हुए कहना तुम्हारे पिता का के इस 'झील के किनारे किसी जगह आ बैठते हैं। मगर तुम्हारे पिता को हश्र के मैदान में घूमने का शौक था इसलिए पैगम्बर से मुलाकात से पहले ही इन्हें इनकी दुआ से फिर मैदान में भेज दिया गया। लेकिन अब पैगम्बर ने इन्हें खुद ही याद किया है।"

"खैरियत तो है! इस याद करने की कोई खास वजह?" नाएमा ने पूछा तो सालेह ने जवाब में कहा:

"बात यह है कि उम्मतों का हिसाब होते होते अब हज़रत नूह (अ।) की कौम का हिसाब किताब शुरू हुआ है। लेकिन उनकी उम्मत ने इस बात से इन्कार कर दिया है कि नूह ने उन तक ईश्वर का संदेश पहुँचाया था।"

"यह क्या बात हुई? वह यह कैसे कह सकते हैं कि उन तक खुदा का पैगाम (संदेश) नहीं पहुँचा? उनको तो दुनिया ही में इस गुनाह की वजह से डुबा दिया गया था कि उन्होंने हज़रत नूह के पैगाम को झुटलाया था। अल्लाह के इस फैसले के बाद अल्लाह के सामने खड़े होकर यह

कैसे कह सकते हैं कि हज़रत नूह ने उन तक खुदा का पैगाम नहीं पहुँचाया?" आरफा ने हैरानी से पूछा।

लैला ने उसकी बात को और बढ़ाते हुए कहा:

"और अगर वह झूठ बोलने के लिए जिद पर उतर ही आये हैं तो कुरआन में बयान हुआ था कि ऐसे लोगों के मुंह बन्द करके उनके हाथ पांव से गवाही ली जाएगी। तो वह यह कैसे कह रहे हैं?"

सालेह ने उन्हें समझाते हुए बात को साफ़ किया:

"यह बात कहने वाले लोग हज़रत नूह की वह कौम नहीं जिन पर अज़ाब आया था। यह उनकी औलाद के वे लोग हैं जो उन पर ईमान ले आए थे और फिर उन मानने वालों की औलादों ने दुनिया को आबाद किया था। मगर उन में एक बड़ी संख्या उन लोगों की थी जिनमें हज़रत नूह के बाद सीधे कोई पैगम्बर नहीं आया। ये लोग एक ईश्वर व आखिरत (परलोक) की उसी रहनुमाई (मार्गदर्शन) पर गुज़ारा करते रहे जो दरअसल हज़रत नूह की थी ... चाहे एक लंबे समय बीतने के आधार पर वह उसको ऐसे न जानते हों जैसे वो थी और चाहे उन्होंने उसकी शक्ल कितनी ही बिगाड़ दी हो ... इसीलिए वह हज़रत नूह की रहनुमाई (मार्गदर्शन) को मना करने वाले हो गए हैं।"

मैंने बातचीत के बीच में आते हुए सालेह की बात को और स्पष्ट किया:

'देखो बात यह है कि ज़्यादातर इन्सान हज़रत नूह ही औलाद में से है। उनमे से कई गिरोह ख़ासकर सामी पीढ़ी के लोग जो दुनिया के बीच में यानी मिडल ईस्ट और उसके आसपास आबाद रहे, वो हैं जिनमें पैगम्बरों के आने का सिलसिला लगातार जारी रहा। लेकिन बहुत से गिरोह में हज़रत नूह (अ) के बाद कोई पैगम्बर नहीं आया। खासकर हज़रत इब्राहीम के बाद तो हालत यह हो गई थी कि हज़रात इब्राहीम की पीढ़ी से बाहर कोई पैगम्बर आया ही नहीं। इसी लिए यही वह लोग हैं जो नूह की औलाद या नूह की कौम में से हैं। उन्ही उम्मतों के हिसाब किताब के मौके (अवसर) पर इन लोगों को भी हज़रत नूह की उम्मत के साथ पेश किया गया है। मगर ये लोग सीधे हज़रत नूह की शिक्षाओं को उनके नाम से इस तरह नहीं जानते जिस तरह आसमानी किताब वाले गिरोह यहूदी, इसाई या मुसलमान जानते थे। इसलिए उन लोगों ने

हज़रत नूह के पैगाम (संदेश) पहुंचाने का इंकार कर दिया और उनकी यह बात एक तरह से गलत नहीं है।'

सालेह ने मेरी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा:

"अब्दुल्लाह ने ठीक कहा, हकीकत यह है कि नूह (अ) की इस कौम तक खुदा का पैगाम असल में उम्मते मुहम्मद्या ने पहुंचाया था। इसलिए रसूल अल्लाह रसूल अल्लाह (ﷺ) की उम्मत से सभी पहले से आखिर गवाहों को बुलाया जा रहा है जिन्होंने पिछली दुनिया में लोगों को सही दीन (धर्म) की दावत दी थी। आज यह गवाह बताएंगे कि उन्होंने किसी न किसी तरह उन लोगों तक एक ईश्वर के होने का वो पैगाम (संदेश) पहुंचा दिया था जो हज़रत नूह की विरासत था और बाद के समय में बर्बाद हो गया था। पर आखरी रसूल के आने के बाद ताकयामत इस पैगाम को महफूज़ (सुरक्षित) कर दिया गया और मुसलमान उम्मत ने यह अमानत नूह की कौम तक पहुंचा दी थी।"

नाएमा ने मेरी ओर देखते हुए पूछा:

"तो फिर उन्हें उम्मते मुहम्मद्या के साथ क्यों नहीं किया गया?"

'वह इस्लाम क़ुबूल (स्वीकार) कर लेते तो ऐसा ही होता, लेकिन उन्होंने इस्लाम क़ुबूल नहीं किया और बदली हुई किताबों के साथ अपने बाप दादा के धर्म पर जमे रहे। आज हर उम्मत क्यूंकि अपने रसूल के साथ पेश की जा रही है तो ऐसे सारे लोग नूह की कौम के रूप में पेश किए गए हैं क्योंकि उनके बाप दादा हज़रत नूह पर ईमान लाए थे।' मैंने जवाब दिया और फिर बात को पूरी करते हुए कहा:

'अपनी क़ौम के शुरुआती लोगों को खुदा का पैगाम खुद हज़रत नूह (अ) ने पहुंचाया और आखरी लोगों को मुसलमानों ने पहुंचाया जो नूह समेत सभी रसूलों के पैगाम (संदेश) यानि एक ईश्वर के होने और आखिरत (परलोक) में हिसाब होने की अमानत को रखने वाले थे।'

"चलो भई अब बुलाया जा रहा है।" सालेह मुझसे संबोधित होकर बोला।

इसके साथ ही हम दोनों उठकर वहां से रवाना हो गए।

.....

हम एक बार फिर रसूल अल्लाह (ﷺ) की मजलिस में थे। वही नूर, वही जमाल, वही जलाल (महिमा)। मुझे ये महसूस होता था कि सदियों से पैगम्बर को जानता हूँ। मुझे लग रहा था कि जैसे आप की मुहब्बत मेरे दिल में बढ़ती जा रही है। मैं इस समय भी पैगम्बर की मजलिस में पिछली सीट पर बैठा टकटकी बांधे पैगम्बर के नूरानी चहरे को देखे जा रहा था। हुज़ूर तब तक अपने पास बैठे साथियों से बातचीत कर रहे थे, इसी बीच उनके पास आकर एक साहब ने उनके कान में कुछ कहा।

सालेह ने जो मेरे साथ बैठा हुआ था सरगोशी के अंदाज में मुझसे कहा:

"यह रसूल के सेवक हज़रत अनस हैं और पैगम्बर को तुम्हारे बारे में बता रहे हैं।"

इसके साथ ही पैगम्बर ने नज़र उठाकर मुझे देखा और दिलनवाज़ मुस्कुराहट के साथ मेरा स्वागत किया। इससे सालेह की बात की पुष्टि हो गई कि हज़रत अनस ने मेरे ही आने की खबर पैगम्बर को दी थी।

फिर मुस्कुराते हुए सब लोगों से कहा:

"अल्लाह के पैग़म्बर और इंसानों के बाप नूह (अ) की उम्मत ने उनकी गवाही को यह कहकर स्वीकार करने से इन्कार कर दिया है कि नूह ने उन तक सीधे कोई पैगाम (संदेश) नहीं पहुचाया। हकीकत यह है कि यह पैगाम मेरी उम्मत ने नूह की कौम तक पहुंचाया था। आप हज़रात चूंकि सभी नबियों के मानने वाले हैं और मेरे ज़रये से जो दीन (धर्म) आपको मिला वही नूह को भी मिला था। इसलिए आपकी यह जिम्मेदारी है कि हज़रत नूह की तरफ से आप लोग खुदा के हुज़ूर (सामने) पेश हों और यह गवाही दें कि ईमान और नेक कामों की जो दावत (पुकार) नूह ने दी थी और जो मैंने आप लोगों तक पहुंचाई थी, वह आप ने बिना कांट व छांट किये नूह की कौम के सामने पेश करके मेरे और नूह (अ) के मिशन को पूरा कर दिया था।"

यह कहते हुए पैगम्बर ने अपने बराबर बैठे हुए हज़रत अबू बक्र से कहा:

"अबू बक्र खड़े हो जाओ।"

यह सुनते ही वे खड़े हो गए, फिर आपने सब मौजूद लोगों से संबोधित होकर कहा:

"यह मेरे करीबी साथी हैं, इनके अलावा मेरे ज़माने से क़ियामत तक के सभी ज़माने के मेरे उम्मती यहाँ हैं। आप लोग अबू बक्र की कयादत (कमान) में अल्लाह की बारगाह में पेश हों और इस सच की गवाही दें जो आपके पास है।"

यह कहते हुए पैगम्बर खड़े हो गए और उनके साथ ही सभी लोग भी खड़े हो गए, अबू बक्र ने रसूल अल्लाह के हाथों को चूमा और आगे बढ़ गए। उनके बाद सभी मौजूद लोगों ने एक एक करके नबी करीम के हाथों का चूमा। मेरा नंबर सबसे आखिर में था। मैंने भी यह इज्ज़त हांसिल की और इसके बाद हम सब हज़रत अबू बक्र के नेतृत्व में हश्र के मैदान की तरफ़ रवाना हो गए।

.....

मैं इन बुजुर्ग हस्तियों के बीच सबसे पीछे चल रहा था, सालेह मेरे साथ नहीं था। पैगम्बर की मजलिस से उठते समय वह मुझसे यह कह कर अलग हो गया था कि यह गवाही का काम करने तुम्हें अकेले जाना होगा, लेकिन वहां से वापसी पर मैं तुम्हें मिल जाऊँगा।

मैं रास्ते में दिल ही दिल में सोच रहा था कि मैं इस काबिल नहीं कि ऐसी बा बरकत और बुजुर्ग हस्तियों के बीच उम्मते मुहम्मद्या की नुमाएंदगी (प्रतिनिधित्व) करूँ। मुझ पर यह अहसास इतना ग़ालिब होने लगा कि मैंने सोचा कि मैं चुपचाप इन लोगों के पास से निकल जाता हूँ। किसी को क्या पता चलेगा, अल्लाह तआला मेरे ज़माने के किसी और आदमी को बुलवा लेंगे। इस विचार से मैं धीरे धीरे वापस होने लगा। यहाँ तक कि मेरे और लोगों के बीच काफी दूरी हो गई। मैंने मौका गनीमत जाना और वापस कौसर की होज़ की ओर जाने के लिए मुड़ा ही था कि पीछे से अचानक आवाज आई:

"अब्दुल्लाह! यह क्या कर रहे हो?"

मैं घबरा कर पल्टा तो पीछे हज़रात अबू बक्र खड़े थे। मैं कुछ शर्मिंदा सा हो गया, मेरी हालत ऐसी हो गई जैसे मैं चोरी करते हुए पकड़ा गया। मैंने पहले सोचा कि कोई बहाना बना दूं, लेकिन ध्यान आया कि यह दुनिया नहीं हश्र है अल्लाह तआला उसी समय हकीकत खोल देंगे। इसलिए मैंने सही बात बताने ही में भलाई समझी, साथ में उनसे यह अनुरोध भी किया कि मेरी जगह किसी और को ले जाया जाए।

वे मेरी बात सुनकर हंसने लगे और बोले:

"गवाही के लिए लोगों को खुदा ने खुद चुना है, उसी ने एक फरिश्ते के ज़रये (द्वारा) मुझे यह बताया था कि अब्दुल्लाह किस वजह से वापस जा रहा है।"

उन्होंने धीरे से मेरा हाथ थाम लिया और आगे की ओर चलने लगे। रास्ते में मुझे समझाने लगे:

"देखो अब्दुल्लाह! इस गिरोह में हर आदमी का चयन खुदा ने खुद किया है। जानते हो कि वो किस मेयार पर लोगो को चुनता है?"

मैं चुपचाप उनकी शक्ल देखने लगा, उन्होंने अपने सवाल का खुद ही जवाब दिया:

"पक्षपात, भावनाओं और इच्छाओं से ऊपर उठ कर जिस व्यक्ति ने सच ही को मकसद बना लिया, और एक ईश्वर व आखिरत (परलोक) को अपने जीवन का मिशन बना लिया वही अल्लाह के पास इस गवाही के काम के सबसे ज़्यादा योग्य हैं। देखो तुम्हारे ज़माने के धार्मिक लोग इच्छाओं से तो शायद ऊपर उठ गए थे, लेकिन उनमें ज़्यादातर पक्षपात और भावनाओं से ऊपर नहीं हो सके। लोग अलग अलग फिरके (समुदायों) और मसलक के अधीन थे, वह सिर्फ उसी बात को मानते थे जो उनके हलके (क्षेत्र) के लोग करें। वह लोगों को अपने ही फिरके की ओर बुलाते थे, अपने ही आलिमों और धर्म गुरुओं कि बड़ाई के अहसास में जिया करते थे। जबकि तुम सिर्फ खुदा की बड़ाई के अहसास में ज़िन्दा रहे, तुमने सच्चाई को हर क़ीमत देकर क़ुबूल (स्वीकार) किया और हर भेदभाव से ऊपर उठकर अपनाया। ख़ुदा की तौहीद (एकेश्वरवाद) तुम्हारी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी तमन्ना थी और परमेश्वर से मिलने के लिए लोगों को तैयार करना तुम्हारी ज़िंदगी का सबसे बड़ा मकसद था। फिर तुमने दावत का काम सिर्फ अपनी कौम ही में नहीं किया बल्कि गैर मुस्लिम लोगों तक क़ुरआन का पैगाम (संदेश), तौहीद (एकेश्वरवाद) और आखिरत (परलोक) पहुंचाने के लिए एक लम्बी महनत की। यही सारी बातें आज तुम्हे चुने जाने की वजह बन गई हैं।"

.....

हज़रत नूह (अ) अर्श इलाही के दाईं ओर हाथ बांधे खड़े थे। हम सभी लोग हज़रत अबू बकर के नेतृत्व में उनके पीछे जाकर खड़े हो गए। सामने की ओर इंसानों का नज़र की हद तक फैला हुआ एक समुद्र सा था, इनमें से हर व्यक्ति बदहाल और परेशान नजर आता था। यह लोग सर झुकाए खड़े थे, उनके चेहरे डर के मारे काले पड़ गए थे। फिज़ा में हल्की सी फुसफुसाहट के सिवा कोई और आवाज न थी। यही हज़रत नूह की वह उम्मत थी जो दरअसल उनकी औलाद में जन्मे लोग थे।

कुछ देर में एक आवाज़ उठी:

"नूह के गवाह बारगाह इलाही में पेश हों।"

मेरा ख्याल था कि अब अबू बक्र आगे बढ़ कर कुछ कहेंगे, लेकिन उस समय मैंने देखा कि पीछे से नबी करीम तशरीफ़ लाये और अर्श इलाही के सामने खड़े हो गए।

कहा गया:

"कहो ऐ मोहम्मद! क्या कहना चाहते हो?"

रसूल अल्लाह ने बारगाह इलाही में अर्ज़ किया:

"परवर दिगार तूने मुझे नबुव्वत दी और अपना कलाम (कुरआन) मुझ पर नाज़िल किया। इस किताब में तू ने मुझे बताया कि नूह भी वही दीन (धर्म) तौहीद (एकेश्वरवाद) लेकर आए थे जो तू मुझे दे रहा है। इसी दीन की गवाही मैंने अपनी उम्मत पर दी और अब ये लोग तेरे सामने हैं ताकि यह गवाही दें कि इसी दीन को उन्होंने नूह की औलाद तक बिना कम और ज़्यादा किये पहुंचा दिया था।"

इरशाद हुआ:

"तुमने सच कहा, अपने उम्मतियों को पेश करो।"

इस पर हज़रत अबू बक्र ने आगे कदम बढ़ाने शुरू किए और हज़रत नूह के बराबर में जाकर खड़े हो गए। हम सब भी साथ साथ उनके पीछे जाकर ठहर गए,

आवाज़ आई:

"तुम कौन हो?"

हज़रत अबू बक्र ने अपना परिचय दिया और फिर हम में से हर व्यक्ति का नाम और ज़माना बता कर उसका परिचय कराया। फिर अर्ज़ किया कि हम उम्मते मुहम्मद्या में से हैं, हम पर आप के आखरी नबी मुहम्मद (ﷺ) ने सच की गवाही दी और यह बताया कि नूह भी इसी धर्म को लेकर आए थे। नूह और मुहम्मद का यही धर्म हम ने दुनिया की सारी कौमों को पहुँचाया। इन लोगों को भी हमने सच पहुंचा दिया था जो आपके सामने नूह की उम्मत के रूप में मौजूद हैं।"

इस गवाही के बाद नूह की उम्मत के लिए फरार के रास्ते बंद हो गए, यह बात साफ हो गई कि नूह का धर्म वही था जो मुहम्मद (ﷺ) का था और उम्मते मुहम्मद्या ने इस धर्म को दुनिया तक पहुंचा दिया था। अब नूह की उम्मत का हिसाब इसी गवाही की रोशनी में होना था, हमारा काम खत्म हो चुका था, इसलिए हम वापसी के लिए रवाना हो गए।

.....

हमारा काफिला वापसी के सफ़र पर था, इस बार क़ाफ़िले के सरदार खुद नबी करीम थे। हमारा काफिला फरिश्तों की देख रेख में हश्र के मैदान से गुज़रता हुआ होज़े कौसर की ओर जा रहा था। मैं अपमान के अंदेशे से थोड़ा पीछे ही चल रहा था, अचानक किसी ने मेरे कंधे पर हाथ रख कर कहा:

"भाई तुम कहाँ भागने की कोशिश कर रहे थे।"

मैंने पीछे मुड़कर देखा तो सालेह मुस्कुरा रहा था, मैं लज्जित होकर चुप रहा, वह हँसते हुए बोला:

"खुदा का शुक्र करो कि तुम्हारे क़ाफ़िले के सरदार अबू बक्र थे। उनकी जगह हज़रत उमर होते तो तुम्हें दो चार दुर्रे तो जरूर मारते।"

उसकी बात सुन कर मैं भी हंसने लगा, कुछ देर के बाद मैंने कहा:

'असल बात अबू बक्र या उमर की नहीं, उमर भी वही करते जो अबू बक्र ने किया। क्योंकि उन्हें भेजने वाली एक ही हस्ती थी, उस रब करीम की जो सारी ज़िंदगी मेरी बुराइयों को छुपाता रहा है।'

फिर एक डर मेरे मन में पैदा हुआ, मैंने सालेह से पूछा:

'तुम्हें मेरे बारे में कैसे पता चला, क्या सब लोगों को यह बात मालूम हो गई?'

"नहीं नहीं.... अबू बक्र बड़े सब्र वाले व्यक्ति हैं, उन्होंने किसी को नहीं बताया। रहा मैं तो अल्लाह तआला ने मेरे ही ज़रिये हज़रत अबू बक्र को तुम्हारे बारे में पैगाम भेजा था, इसलिए मुझे मालूम हो गया। वैसे तुमने सच कहा, जानते हो अल्लाह ने क्या कह कर मुझे अबू बक्र के पास भेजा था?"

मेरे जवाब का इंतज़ार किए बिना वह बोला:

"मेरे बंदे को संभालो, वह इन्कसारी (विनम्रता) में अपनी जिम्मेदारी को भूले जा रहा है।"

शर्मिंदगी और एहसान मंदी के मिले जुले अहसासों के साथ मैंने अपना सर झुका लिया। कुछ देर बाद मैंने सालेह से पूछा:

'यहां हश्र के मामले कैसे चल रहे हैं?'

"अलग अलग नबी की अपनी उम्मतों के बारे में गवाही देने का काम जारी है। हर नबी और रसूल अपनी उम्मत के बारे में यह गवाही दे रहा है कि उसने अपनी उम्मत तक रब का पैगाम पहुंचा दिया था। जिसके बाद हर वह आदमी जिस का अमल (कर्म) उस शिक्षा के अनुसार होता है, उसकी खताएं दरगुज़र करके उसकी जीत का ऐलान कर दिया जाता है।" सालेह ने जवाब दिया।

मुझे याद आ गया, सालेह ने बताया था कि हिसाब किताब के इस दौर के बाद सामान्य हिसाब किताब शुरू होगा। मुझे आस बंध गई कि शायद इस मरहले (चरण) में मेरे बेटे जमशैद की निजात का फैसला हो जाए, लेकिन जाहिर है मेरे हाथ में कुछ नहीं था, मैंने सालेह से पूछा:

'यहां क्या हालात (स्थिति) है?'

"हालात का न पूछो, किसी का कोई अच्छा हाल नहीं है, उस पर यह के किसी को नहीं पता कि उसके साथ क्या होगा।"

हम दोनों बातचीत करते हुए काफिले (दल) के पीछे पीछे चल रहे थे कि अचानक एक जोरदार शोर हुआ। इस शोर की वजह यह थी कि मुसलमानों का एक जनसमूह नबी करीम के नाम की दुहाई देता उनकी ओर बढ़ना चाह रहा था। लोग चीख रहे थे, रो रहे थे और गुहार कर रहे थे कि या रसूल अल्लाह हमारी मदद करें, हम आपके उम्मती हैं। जबकि फरिश्ते उन्हें मार मार कर दूर कर रहे थे, ये लोग हश्र की सख़्तियों से इतने तंग आ चुके थे कि मार खाकर भी रसूल अल्लाह की ओर बढ़ने की कोशिश किए जा रहे थे। उन्हें रसूल अल्लाह के रूप में मुश्किल से आशा की एक किरण नजर आई थी।

रहमत लिल आलमीन मुहम्मद (ﷺ) ने इस घटना को देखा तो फरिश्तों के सरदार को अपने पास बुलाकर पूछा कि ये लोग तो मेरे उम्मती, मेरे नाम लेवा, मेरे जैसा कलमा पढने वाले हैं, उनके साथ यह व्यवहार क्यों हो रहा है? फरिश्ते ने बड़े अदब से जवाब दिया:

"या रसूल अल्लाह! बेशक ये लोग आपके नाम लेवा हैं, लेकिन आप नहीं जानते कि उन लोगों ने आपके बाद आपके दीन (धर्म) में क्या क्या में नई चीजें पैदा कर दी थी।"

इस पर रसूल अल्लाह के चहरे पर कड़ी नाराजगी के आसार पैदा हुए और आपने कहा:

"ऐसे लोगों के लिए मुझ से दूरी हो जिन्होंने मेरे बाद मेरे लाए हुए दीन को बदल डाला।"

पैगम्बर यह कहकर वापस होज़े कौसर की दिशा में मुड़ गए और काफिले के लोग भी आपके पीछे पीछे चले गए। मैं भी आगे बढ़ना चाह रहा था कि सालेह ने कहा:

"रुको और देखो यहाँ क्या होता है।"

मैंने देखा कि फरिश्ते उन लोगों पर बुरी तरह टूट पड़े हैं, इसी बीच में मैदान के बाईं ओर से कुछ और ज़्यादा फ़रिश्ते भी आ गए। उन्होंने बहुत बेरहमी से लोगों को मारना शुरू कर दिया, फरिश्ते एक कोड़ा मारते और हजारों लोग उसकी चपेट में आकर चीख़ते चिल्लाते और दूर जा गिरते। थोड़ी ही देर में होज़ के पास का इलाक़ा साफ हो गया। मार खाते और बिलबिलाते हुए ये

लोग जिन्होंने इस्लाम में नई नई चीज़ें खुद से गढ़ ली थी, अपनी रुसवाई और कर्मों का मातम करते हुए वहां से विदा हो गए।

मैं सालेह के साथ खड़ा यह खतरनाक मंज़र (दृश्य) देख रहा था। मैं सोच रहा था कि वह बदनसीब हैं जिनके लिए कुरआन की हिदायत और रसूल अल्लाह (ﷺ) की सुन्नत (तरीका) काफी नहीं थे। इसलिए उन्होंने इसमें बढ़ा कर और परिवर्तन करके सच्चे दीन का चेहरा बिगाड़ने की कोशिश की। उनके पास अपनी हर गुमराही और बदअमली के बेजा तर्क मौजूद होते थे, जब कोई समझाने वाला उन्हें समझाने की कोशिश करता यह उसकी जान के दुश्मन हो जाते थे। जब उन्हें बताया जाता कि कुरआन से बाहर कोई अकीदा (आस्था) नहीं बनाया जा सकता और रसूल के तरीके के अलावा कोई और तरीका खुदा के हां क़ुबूल नहीं होगा तो यह इन बातों को बकवास समझते और अपनी गुमराहियों में मगन रहते थे। मगर इसका नतीजा उन्होंने आज भुगत लिया था, मैं यह सब सोच ही रहा था कि सालेह ने मुझसे कहा:

"अब्दुल्लाह! मैं इंसानों को समझ नहीं सका कि आखिर हर नबी की उम्मत ने सीधी राह और ईश्वर के निर्देश साफ़ रूप से पा लेने के बाद गलत तरीकों में इतनी दिलचस्पी क्यों ली?"

'तुमने अच्छा सवाल किया है, मैं भी ज़िन्दगी भर इस मसले पर सोचता रहा हूँ। मेरे ख्याल से इस की असल वजह हद से आगे बढ़ जाना है। इंसान बड़ी जज्बाती मखलूक (भावनात्मक प्राणी) है, वह किसी को कम किसी को ज़्यादा समझने का शिकार हो जाता है, नबियों का नाम लेवाओं के साथ भी यही हुआ, कुछ लोग खुद को बड़ा समझने के अपने रुझान के आधार पर नबियों की शिक्षाओं को छोड़ बैठे तो कुछ लोगों ने नबियों और नेक लोगों की मुहब्बत में हदे पार करके उनके मरने के बाद उन्ही से दुआ माँगना और पूजा करना शुरू कर दिया और खुद नए नए तरीके बना लिए।'

सालेह ने मेरी बात पर गर्दन हिलाते हुए कहा:

"इस मुहब्बत में ज़्यादा बढ़ने और हदे पार करने का सबसे बड़ा नमूना ईसाई थे। एक तरफ तो उनके यहाँ हज़रत मूसा की शरीयत (क़ानून) को छोड़ दिया गया, और दूसरी ओर रहबानियत (संन्यास लेना) का तरीका बना करके ऐसी ऐसी पूजा और रियाज़ दीन (धर्म) में शामिल कर ली कि किसी आम आदमी के लिए धार्मिक बनना और धार्मिक पहचान के साथ जीना मुश्किल हो

गया। आमाल के साथ उन्होंने ईमान को भी आखरी हद से पार बढ़ाया, उन्होंने नबियों की उम्मत होते हुए भी परमेश्वर की पत्नी और बेटा गढ़ लिया। मगर यार सच है कि तुम मुसलमान इस काम में कौन सा पीछे रहे हो।"

यह आखिरी बात उसने बहुत जोर देकर कही। मैंने बिना देर किये जवाब दिया।

"और आज उसका नतीजा भी भुगत लिया, ईसाइयों ने भी और मुसलमानों ने भी।"

यह कहते वक़्त मेरी नज़रों में कुछ देर पहले के मंज़र (दृश्य) घूम रहे थे।

****

हिसाब किताब और जहन्नम वाले

बिदअतियों (धर्म में नई चीज़ें बनाने वालों) की पिटाई की घटना के बाद दिल बहुत उदास हो चुका था। क्योंकि मैंने इस घटना में अपने ज़माने के अपने कई जानने वालों को देखा था। मेरी तबियत बहाल करने के लिए सालेह मुझे वापस होज़े कौसर की ओर ले गया था, वहां के खुशगवार माहौल में कुछ समय अकेले और ख़ामोशी में बिता कर मैं बेहतर हो गया तो वो मुझे मैदान में ले आया।

रास्ते में मुझे बताने लगा कि जब हम यहां थे तो उस अरसे में सारे नबियों की गवाही का काम पूरा हो गया, जिसके बाद सामान्य हिसाब किताब का दौर शुरू हो चुका था। इसकी शुरुआत भी मुहम्मद (ﷺ) की उम्मत से हुई जिसका बड़ा हिस्सा हिसाब किताब से गुजर कर अपने बारे में खुदा का फैसला सुन चुका है।

'इसका मतलब यह हुआ कि एक बहुत महत्वपूर्ण अवसर पर मैं यहाँ नहीं था?'

"हां ऐसा ही है, लेकिन जन्नत में जाने के बाद जब चाहो, इस हिसाब किताब की ऑडियो वीडियो रिकॉर्डिंग देख सकोगे।" उसने हंसते हुए मेरी बात का जवाब दिया।

'मगर भाई लाइव तो लाइव ही हुआ करता है।' मैंने भी मुस्कुराते हुए उसकी बात का जवाब दिया।

"एक बड़ी दिलचस्प बात जो यहाँ हुई वह मैं तुम्हें बता देता हूँ। हुआ यह कि जब रसूल अल्लाह (ﷺ) की उम्मत के मुशरिकीन (खुदा का साझी करार देने वाले) को उनके शिर्क पर पकड़ा गया तो एक बड़ी संख्या ने इन्कार कर दिया कि वह कभी शिर्क करते थे। इन्कार करने वालों में बाद के युग के लोग ही नहीं मक्का के काफ़िर भी थे जो बुतों की पूजा करते थे।"

'इसकी क्या वजह रही?'

"इसकी वजह यह थी कि आज सब ने अपनी आंखों से देख लिया है कि खुदा के अलावा किसी के हाथ में कुछ नहीं है। उन लोगों ने पहले पहल तो देवी देवताओं और पूर्वजों को पुकारा और

उन्हें खोजा, ज़ाहिर है की न कोई था और न किसी ने जवाब देना था। फरिश्तों और नेक बुजुर्ग, जिन्हें खुदा को छोड़ कर पुकारा जाता था, उन्होंने तो उन लोगों के शिर्क से साफ़ इन्कार कर दिया था। इसके बाद एक ही चारा बचा था कि लोग अपने शिर्क का इन्कार करदें, लेकिन जाहिर है इसका कोई फायदा नहीं हुआ। ऐसे सभी अपराधियों के लिए जहन्नम का फैसला हो गया।"

'इस समय किसका हिसाब किताब हो रहा है?' मैंने पूछा।

"इस समय तुम्हारे ज़माने के लोगों का नंबर आ चुका है, इसलिए मैं तुम्हें यहाँ ले आया हूँ। तुम देख सकते हो कि एक एक करके लोग हिसाब किताब के लिए बुलाए जा रहे हैं। हर व्यक्ति दो फरिश्तों के साथ बारगाह इलाही में पेश होता है। एक फरिश्ता पीछे चलता है और अपनी निगरानी में उसे अर्श तक पहुंचाता है जबकि दूसरा फरिश्ता आदमी के साथ उसका आमाल नामा (कर्मों का खाता) उठाए चलता है। इनमें से पीछे वाले फरिश्ते को 'साइक' और आमाल नामे के साथ चलने वाले को 'शहीद' कहा जाता है। साइक, वह फरिश्ता है जो आदमी को हश्र के मैदान से अर्श इलाही तक पहुंचाने का ज़िम्मेदार है जबकि 'शहीद' उसके आमाल (कर्मों) की गवाही देता है। यह वही दो फ़रिश्ते हैं जो ज़िन्दगी भर इंसान के दाएं और बाँई ओर मौजूद रहे, दाहिने वाला नेक काम और बाएं वाला बुरे काम लिखता था। उन्हें कुरआन में 'किरामन कातिबीन' कहा गया था।"

'मगर यहां आकर उनमें से कौन साइक और कौन शहीद बनता है?' मैंने पूछा।

"यह सिर्फ खुदा को पता होता है, वही बन्दे के पेश होने से पहले किरामन कातिबीन को खबर करता है कि दोनों में से किस को क्या करना है।"

हम वहां पहुंचे तो एक सरकारी अफसर खुदा की बारगाह में पेश था। उससे पूछा गया:

"क्या काम किया?"

उसने डरते हुए जवाब दिया:

"परवरदिगार मुझ से ज़िन्दगी में कुछ गलतियां हुई थीं, लेकिन बाद में मैंने तेरे लिए इबादत और तस्बीह की। ज़िन्दगी तेरे दीन के लिए खर्च कर दी।"

इसी बीच में उसके साथ खड़े फरिश्ते को इशारा हुआ। उसने कहा:

"परवरदिगार! इसने सच कहा है।"

पूछा गया:

"तुम एक सरकारी कर्मचारी थे, क्या तुमने रिश्वत ली? लोगों को तंग करके उनसे पैसे खाए, अवैध रूप से कानून सख्त करके लोगों को रिश्वत देने के लिए मजबूर किया?"

उसने कहा:

"यह मैंने किया था लेकिन मैंने तौबा कर ली थी।"

"तू ने तौबा कर ली थी?, बहुत ग़ज़बनाक आवाज़ में पूछा गया।"

उसके मुँह से जवाब में एक शब्द नहीं निकल सका। फरिश्ता आगे बढ़ा और उसने उसके आमाल नामे को पढ़ना शुरू किया। जिसके अनुसार उसने हराम की कमाई से घर बनाया सारी ज़िन्दगी उसी घर में रहा, निवेश करके उस माल को खूब बढ़ाया, बच्चों को इसी पैसे से उच्च शिक्षा दिलवाई, पत्नी को खूब गहने बनाकर दिए। यह उस माल से अपनी मौत तक फायदा उठाता रहा, लेकिन मुंह से तौबा जरूर की थी और रिटायरमेंट के बाद दाढ़ी, टोपी, नमाज़ आदि शुरू कर दी थी।

जैसे ही फरिश्ते की बात खत्म हुई हुक्म हुआ:

"इसका आमाल नामा तराजू में रखो।"

दाएँ हाथ के फरिश्ते ने उसकी नेकियाँ अलग करके इन्साफ की तराजू में दाहिने तरफ रख दीं और बाएं हाथ के फरिश्ते ने उस की बुराईयां बाईं तरफ रख दीं। वह सरकारी अफसर बहुत बेबसी और डर के साथ यह सब होता देख रहा था।

फरिश्तों ने अपना काम जैसे ही खत्म किया नतीजा सामने आ गया, बाएँ हाथ का पलड़ा पूरी तरह झुक गया था। उसने जुल्म, अन्याय और रिश्वत से जो हराम कमाया था और लोगों के साथ जो ज्यादतियां की थी वह उसके सारे नेक आमाल (अच्छे कामों) पर ग़ालिब आ गया। यह देखकर वह आदमी चीखने चिल्लाने लगा और रहम की भीख मांगने लगा।

इरशाद हुआ:

"जिन लोगों से तू रिश्वत लेता और उन्हें तंग करता था कभी उन पर तुझे रहम आया ? देख तेरी कमाई आज तेरे कुछ काम न आई, तेरा अंजाम जहन्नम है।" फिर एक फरिश्ते ने उसका आमाल नामा उसके बाएं हाथ में थमा दिया।

वह आदमी चीख चीख कर कहने लगा:

"मैंने अपने लिए कुछ नहीं किया, यह सब मैंने अपनी बीवी बच्चों के लिए किया था। अल्लाह के लिए मुझे छोड़ दो, मेरे बीवी बच्चों को पकड़ो।"

फरिश्तों ने जवाब दिया:

"तेरे बीवी बच्चों का हिसाब भी हो जाएगा पहले तू तो चल।"

फिर दोनों फ़रिश्ते उसे मारते और घसीटते हुए जहन्नम की ओर ले गए।

.....

अगला व्यक्ति पुलिस का एक वरिष्ठ अधिकारी था। खुदा ने उसके साथ आने वाले फरिश्ते से पूछा कि उसके आमाल नामे में क्या दर्ज है? इसके जवाब में फरिश्ते ने उसके सारी ज़िन्दगी के जुर्म बयान कर दिए। जिनमें निर्दोष लोगों पर अत्याचार, कुछ मासूमों का क़त्ल, जुए और फहाशी के अड्डों को चलवाना, फहाशी और शराब पीने, रिश्वत और अय्याशी जैसे बड़े जुर्म शामिल थे। जबकि नेकियों में केवल ईद की वह नमाज़ थी जो मजबूरी में बड़े लोगों के साथ ईदगाह में अदा की जाती थीं।

पूछा गया:

"तुम्हें अपनी सफाई में कुछ कहना है।"

उसने कहा:

"परवरदिगार! मेरे हालात ही कुछ ऐसे थे, हर तरफ रिश्वत का माहौल था। यह सब नहीं करना चाहता था लेकिन अधिकारियों का दबाव और हालत की मजबूरी के आधार पर मैं मजबूर हो गया।

बहुत सख्त आवाज़ में कहा गया:

"तो तुम मजबूर हो गए थे?"

फिर हुक्म हुआ कि उसके साथ काम करने वाले एक जूनियर अफसर को पेश किया जाए। थोड़ी ही देर में एक बहुत खुश शक्ल आदमी बहुत अच्छे कपडे पहने हुए हाज़िर हुआ। उससे पूछा गया:

"मेरे बंदे तू ने भी पुलिस में काम किया, फिर माहौल से मजबूर होकर अत्याचार और रिश्वत का रास्ता क्यों नहीं अपनाया?"

उसने जवाब दिया:

"मेरे रब मुझे आज के दिन तेरे हुज़ूर पेश होने का अंदेशा था, इसलिए मैंने कभी रिश्वत नहीं ली। जब साथ काम करने वालों ने मुझे मजबूर किया तो मैंने इन्कार कर दिया। मैंने सारी उम्र गरीबी में ज़िन्दगी गुज़री लेकिन कभी पैसे लेकर इन्साफ का खून नहीं किया।"

जवाब मिला:

"हाँ! उसी का बदला है तेरे बहुत कम अमल (कर्म) को मैंने बहुत ज़्यादा क़ुबूल किया है और तुझे इज्ज़त के साथ हमेशा रहने वाली जन्नत नसीब की है।"

फिर दूसरे पुलिस वाले से कहा:

"तेरे पास चुनाव यह नहीं था कि तू रिश्वत, अत्याचार और ज़ुल्म के रास्ते पर चले या गरीबी की ज़िन्दगी बिताए। तेरे पास चुनाव यह था कि तू ज़ुल्म करे या जहन्नम में जाए। सो तू ने जहन्नम को पसंद किया। यही हमेशा के लिए तेरा बदला है।"

वह पुलिस वाला हार मानने को तैयार न था। वह रोते हुए कहने लगा:

"परवरदिगार! मुझे शैतान ने गुमराह किया था।"

जवाब मिला:

"नहीं! असल में तो तू खुद एक शैतान था, हालांकि तू मेरे सामने एक मामूली चूंटी से भी कमज़ोर था। ऐ नीच इंसान! जिस समय तू इंसानों पर ज़ुल्म करता था तब भी मेरे सामने होता था, लेकिन मैंने तुझे मोहलत दी। तूने उस मोहलत का फाएदा नहीं उठाया, तू यह समझा था कि तुझे मेरे सामने पेश नहीं होना। देख तेरा सोचना गलत साबित हुआ।"

इधर गुस्से के यह शब्द गूँज रहे थे, उधर हश्र के मैदान के बाईं ओर जहन्नम के शोलो के भड़कने की आवाज़ें तेज हो रही थीं। इन आवाज़ों ने हर दिल को लरज़ा कर रख दिया था। हर इंसान पर कड़ी वहशत तारी थी, कलेजे मुँह को आ रहे थे, आंखें फटी हुई थी, लोगों के चेहरे एकदम काले पड़ चुके थे, दिलों की धड़कनें इतनी तेज थी कि मानो दिल छाती फाड़ कर बाहर निकल आएँगे, लेकिन आज भागने की कोई राह न थी। एक मुजरिम का फैसला हो रहा था और बाकि मुजरिमों की हालत खराब हो रही थी। अपने समय के फ़िरऔन, शक्तिशाली हस्तियां, जब्र करने वाले शासक, बेहद माल के खजानो के मालिक, सबसे प्रसिद्ध सैलेबरेटी, बहुत प्रभाव वाले लोग सबसे छोटे दासों बल्कि भेड़ बकरियों की तरह बेबसी से खड़े अपनी किस्मत के फैसले के इन्तिज़ार में थे और आज उन्हें बचाने वाला कोई नहीं था।

फिर उसका आमाल नामा तौला गया और जैसे कि उम्मीद थी बाएँ हाथ का पलड़ा भारी हो गया। फरिश्ते ने आगे बढ़कर आमाल नामे को उसके बाएं हाथ में थमाना चाहा, मगर उसने डर के मारे हाथ पीछे कर लिया। फरिश्ते के मुकाबले में उसकी क्या हैसयत थी, फरिश्ते ने उसके हाथ पीछे ही बांधकर उस के बंधे हुए हाथों में से बाएँ हाथ में आमाल नामा थमा दिया। फिर दोनों फ़रिश्ते उसे मारते पीटते उन शोलों की ओर बढ़ गए जहां बहुत बुरा अंजाम उसका इन्तिज़ार कर रहा था।

.....

अगला आदमी एक अमीर आदमी था। पूछा गया:

"दौलत के खजाने तो पीछे छोड़ आये हो। यह बताओ कि माल कैसे कमाया और कैसे खर्च किया था?"

उसने जवाब दिया:

"परवरदिगार! मैं व्यापार करता था। उससे जो माल कमाया वह गरीबों पर खर्च किया।"

फरिश्ते को इशारा हुआ, उसने विवरण करना शुरू किया जिसके अनुसार इस आदमी ने ज़िन्दगी में खरबों रुपये कमाए। ज़िन्दगी के शुरू में छोटे व्यवसाय से शुरुआत की। चीनी, आटा और दूसरी बुनियादी जरूरत की चीज़ों में मिलावट की और भंडार आदि करके बहुत लाभ कमाया और उसका व्यापार तेजी से फैल गया। इसके बाद उसने कई और व्यापार कर लिए, मगर इस बार माल कमाने के लिए उसने अपने जैसे कई अन्य लुटेरों को साथ मिलाकर एक कार्टल बना लिया। कार्टल का काम ही यह था कि बाजार को कंट्रोल करके अपनी मर्ज़ी की कीमत पर चीजें बेची जाएं। यह कार्टल जिसमे बहुत अमीर लोग शामिल थे अपने राजनीतिक संपर्कों और रिश्वत के ज़रये अपनी मर्ज़ी की कीमत तय कराता था। यूँ गरीब जनता महंगाई की चक्की में पिसती रही और इनका निवेश करोड़ों से अरबों और अरबों से खरबों में बदलता गया। समाज में अपनी पहचान बनाए रखने के लिए अपने खजाने में से कुछ दान करता और ढेरों वाह वाही कमाता।

फरिश्ते की बात के बाद कुछ कहने सुनने की गुंजाइश खत्म हो गई, मगर यह सेठ बहुत चालाक आदमी था। उसने चीख चीख कर कहना शुरू कर दिया कि यह सारा बयान बिल्कुल गलत है। मैंने कोई गलत काम नहीं किया, मैंने सब कुछ कानून के अनुसार किया है। बाजार की आवश्यकताओं के अनुसार व्यापार किया, मेरे खिलाफ कोई सबूत नहीं है, यह फरिश्ता झूठ बोल रहा है। वह लगातार चीखे जा रहा था।

आवाज़ आई:

"तो तुझे सबूत चाहिए, वह भी मिल जाएगा।"

इन शब्दों के साथ ही सेठ की आवाज़ बंद हो गई, अचानक उसके हाथ से आवाज आना शुरू हो गई। लगभग वही बयान दोहरादया गया जो फरिश्ते ने दिया था। फिर ऐसी ही गवाही उसके पैरों से आना शुरू हो गई। और धीरे धीरे पूरे शरीर ने उसके खिलाफ गवाही दी। यहां तक कि उसके सीने ने उसके दिल की वह नियत भी बयान करदी जो फरिश्तों के रिकॉर्ड में दर्ज नहीं थी।

इस गवाही के बाद कहने सुनने की सारी गुंजाइश खत्म हो गई और वही अंजाम सामने आगया जो पिछलों के सामने आया था। एक अतिरिक्त बात हुई वह यह कि फरिश्तों को हुक्म हुआ कि जहन्नम में दुसरे अज़ाबों के साथ उसके माल और खजाने को आग में दहकाया जाए और उसके

माथे और उसकी कमर को बार बार दागा जाए। इसके बाद फरिश्ते उसे मुंह के बल घसीटते हुए जहन्नम की ओर ले गए।

.....

एक एक करके लोग आते जा रहे थे और उनके मामलों निपटते जा रहे थे। कुछ लोगों का मामला बड़ा ही भयानक था। इनमें से पहला आदमी आया तो लगा कि उसके आमाल नामे में नेकियों के पहाड़ हैं। इबादत, रियाज़त, तस्बीह, नमाज़, रोज़ा, जकात, हज और उम्रों की लम्बी लाइन थी जो उसके आमाल नामे से ख़त्म नहीं हो रही थी। मगर उसके बाद फरिश्ते ने उसके आमाल नामे में उन कामों को पढ़ना शुरू किया जिनका संबंध लोगों के साथ था तो पता चला कि किसी को गाली दी है, किसी का माल दबाया है, किसी पर तोहमत लगाई है, किसी को मारा पीटा है। इस पर बारगाहे इलाही से फैसला हुआ कि सारे मज़लूमों को बुला लो जिन जिन पर इस ने ज़ुल्म किया है। इसके बाद हर मज़लूम को उसके हिस्से की नेकियाँ दे दी गई, यहाँ तक के उसकी सारी नेकियाँ ख़त्म हो गई। पर कुछ मज़लूम फिर भी रह गए तो हुक्म हुआ कि उनके गुनाह इसके खाते में डाल दो। इसके बाद जब आमाल का वज़न तौला गया तो बाएँ हाथ का पलड़ा बिल्कुल झुक गया। वह आदमी चीख़ता चिल्लाता रहा मगर उसकी एक न चली और फरिश्ते उसे खींचते हुए जहन्नम की ओर ले गए।

कुछ लोग ऐसे आए जिनका अंजाम देख कर मुझे अपनी चिंता होने लगी। उनमें से एक आलिम (ज्ञानी) था, वह पेश हुआ तो खुदा ने उसे अपनी सारी नेअमतें याद दिलाई जो दुनिया में उसको दी थी, और फिर उससे पूछा कि तुमने जवाब में क्या किया। उसने अपने इल्म (ज्ञान) और लोगों को दीन की दावत देने के कारनामे सुनाने शुरू किए। जवाब में उससे कहा गया कि तू झूठ बोलता है, तूने यह सब इसलिए किया कि तुझे लोग आलिम कहें, सो दुनिया में कह दिया गया। फैसले का नतीजा साफ था, इस पर फरिश्ते उसे भी मुँह के बल घसीटते हुए जहन्नम की ओर ले गए। ऐसा ही मामला एक शहीद और सखी (गरीबों को खूब देने वाला) के साथ हुआ, उनसे भी वही सवाल हुआ, उन्होंने भी अपने कारनामे सुनाए, लेकिन हर बार यही जवाब मिला कि तुमने जो कुछ किया दुनिया में लोगों को दिखाने और उनकी नज़रों में ऊँचा स्थान पाने के लिए किया। सो वही प्रशंसा तुम्हारा बदला है, तुमने न मेरे लिए कुछ किया ना ही मेरे पास तुम्हे देने के लिए कुछ है। उन्हें भी जहन्नम की ओर रवाना कर दिया गया। उन लोगों का

हिसाब किताब हो रहा था और मैं अपना हिसाब लगा रहा था कि मैंने कितने काम अल्लाह के लिए किए और कितने लोगों की नज़रों में ऊँचा और बड़ा बन्ने के लिए।

.....

खुदा के लोगों को पकड़ने में और फैसले करने में कुछ अजीब और कल्पना से बाहर की बातें सामने आ रही थीं। दुनिया में होने वालीं साजिशों, मशहूर लोगों की हत्या, घरेलू, दफ्तरी, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होने वाली घटनाओं के पीछे जिन जिन का हाथ था, और उन मुद्दों में शामिल लोग, गुप्त बैठकों की दास्तान, बंद कमरों की कानाफूसी, हर हर चीज़ आज के दिन खुल रही थी। इज्जतदार बेईज्ज़त हो रहे थे, शरीफ समझे जाने वाले लोग बदकार निकल रहे थे, मासूम समझे हुए गुनाहगार साबित हो रहे थे। लोग ज़िन्दगी भर जिस रब को भूल कर जीते रहे, वह उनके हर पल का गवाह था। कोई शब्द नहीं था जो रिकॉर्ड न हो और कोई नियत और विचार ऐसा न था जो उसके इल्म (ज्ञान) में न आया हो। राई के दाने के बराबर भी किसी का कोई अच्छा बुरा काम न था जो किया गया हो और उस को एक किताब में नहीं लिखा गया। और आज के दिन यह सब कुछ सब लोगों के सामने इस तरह खोल दिया गया था कि हर इंसान जैसे बिल्कुल बेपर्दा खड़ा हुआ था।

मैं यह सब कुछ सोच रहा था और मन ही मन में डर रहा था कि मेरी गलतियाँ और भूल चूक आज सामने आ गई तो क्या होगा? कोई सज़ा न भी मिले, इंसान को सिर्फ बेपर्दा ही कर दिया जाए, यही आज के दिन की सबसे बड़ी सज़ा बन जाएगी। सालेह ने शायद मेरे ख्यालों को पढ़ लिया था, वह मेरी पीठ थपथपाते हुए बोला:

"परवरदिगारे आलम की करीम हस्ती आज नेक बन्दों को रुसवा नहीं करेगी। उसकी करम नवाजी अपने नेक बन्दों की इस तरह पर्दापोशी करेगी कि उनकी कोई खता, कोई गुनाह और भूल लोगों के सामने नहीं आएगी। तुम बेफ्रिक रहो, ख़ुदा से ज़्यादा आला ज़र्फ़ हस्ती तुम किसी और की न देखोगे।"

'बेशक, मगर इस समय तो मैं खुदा की पकड़ देख रहा हूँ। इस तरह के जहन्नम की सज़ा सुनाने से पहले लोगों के चेहरे से शराफत और मासूमियत का नक़ाब नोच कर फेंका जाता है और फिर उनको अज़ाब की भेंट चढ़ा दिया जाता है।' मैंने डर के लहजे में जवाब दिया।

सालेह ने मुझे इत्मीनान दिलाते हुए कहा:

"यह सिर्फ मुजरिमों के साथ हो रहा है, जिस्मानी तकलीफ से पहले उन्हें बेईज्ज़ती की मानसिक तकलीफ दी जाती है। नेक लोगों के साथ यह हरगिज़ नहीं होगा।"

हम बात कर ही रहे थे कि एक और आदमी को बारगाहे इलाही में पेश किया गया। उसने पेश होते ही बारगाहे इलाही में कहा:

"परवरदिगार! मैं बहुत गरीब परिवार में पैदा हुआ था, बचपन बहुत गरीबी में बीता। जवानी में मुझसे कुछ गलतियां हो गईं थीं, लेकिन तू मुझे माफ़ करदे।"

फरिश्ते से पूछा गया:

"क्या वाकई उसे मैंने गरीबी से आजमाया था?

फरिश्ते ने बड़े अदब से कहा:

"मालिक! यह ठीक कहता है, लेकिन जिन्हें यह गलती कह रहा है वह इसके बहुत बड़े जुर्म हैं। यह जेब कतरा बन गया था, कुछ रुपए, नकदी और मोबाइल जैसी मामूली चीज़ें छीनने के लिए कई लोगों को मार डाला और कई लोगों को घायल किया था।"

"अच्छा!" अर्श के मालिक ने कहा।

इस 'अच्छा' में जो गजब था, उसमे इस आदमी का अंजाम साफ हो गया था। फिर कहर इलाही भड़क उठा:

"ऐ बदबख्त आदमी! मैंने तुझे गरीब तो पैदा किया था लेकिन अच्छी जिस्मानी सेहत और ताकत से यह मौका दिया था कि तू ज़िन्दगी में तरक्की की कोशिश करता। यह करता तो मैं तुझे माल देता, क्योंकि तुझे इतना ही मिलना था जो तेरे लिए मुक़द्दर था। पर तुने इस खाने को खून बहाकर और ज़ुल्म करके हांसिल किया। आज तेरा बदला यह है कि हर वो आदमी जिसे तूने क़त्ल किया और जिस पर ज़ुल्म किया, उनके गुनाहों का बोझ भी तुझे उठाना होगा। तेरे लिए हमेशा की जहन्नम का फैंसला है। तुझ पर लानत है, तेरे लिए ख़त्म न होने वाला दर्दनाक अज़ाब है।"

यह शब्द पूरे हुए ही थे कि फ़रिश्ते तीर की तरह उसकी ओर लपके और बहुत बेदर्दी से मारते पीटते और घसीटते हुए उसे जहन्नम की ओर ले गए।

.....

अगली बार जिसे हिसाब के लिए पेश किया गया उसे देख कर मेरी अपनी हालत खराब हो गई। यह कोई और नहीं मेरी बेटी लैला की सहेली आसमा थी। उसकी हालत पहले से भी ज़्यादा बदतर थी, उसे बारगाहे इलाही में पेश किया गया।

पहला सवाल हुआ:

"पांच वक्त की नमाज पढ़ी या नहीं?"

इसके जवाब में वह बिल्कुल चुप खड़ी रही, फिर कहा:

"क्या तू मजबूर थी? क्या तू खुदा को नहीं मानती थी? क्या तू खुद को ईश्वर समझती थी? क्या तेरे पास हमारे लिए समय नहीं था? या हमारे सिवा कोई और था जिसने तुझे दुनिया भर की चीज़े दी थी?"

आसमा को अपनी सफाई में पेश करने के लिए शब्द नहीं मिल रहे थे।

उसकी जगह फरिश्ते ने कहा:

"मालिक! यह कहती थी कि खुदा को हमारी नमाज़ की जरूरत नहीं है।"

"खूब! इसने ठीक कहा था, लेकिन अब इसे यह मालूम हो गया होगा कि नमाज़ की ज़रूरत हमें नहीं खुद इसको थी। नमाज़ जन्नत की चाबी है, इसके बिना कोई जन्नत में कैसे जा सकता है।"

इसके बाद आसमा से अगले सवाल शुरू हुए। ज़िन्दगी किन कामों में गुज़री? जवानी कैसे गुज़री? माल कहां से कमाया कैसे खर्च किया? इल्म (ज्ञान) कितना हांसिल किया फिर उस पर कितना अमल किया? जकात, इंसानों की मदद, रोज़ा, हज। यह और इन जैसे और सवाल एक के बाद एक किए जाते रहे मगर हर सवाल उसकी रुवाई और अपमान को बढ़ाता रहा।

आखिरकार आसमा चीखें मार कर रोने लगी, वह कहने लगी:

"परवरदिगार! मैं आज के दिन से बेपरवाह रही। सारी ज़िन्दगी जानवरों की तरह बिताई, उम्र भर दौलत, फैशन, दोस्तों, रिश्तों और मज़ों में रही। तेरी अजमत (महिमा) और इस दिन की मुलाकात को भूली रही। मेरे रब मुझे माफ़ करदे, बस एक बार मुझे फिर दुनिया में भेज दे, फिर देख मैं सारी ज़िंदगी तेरी इबादत करूंगी, कभी नाफ़रमानी नहीं करूंगी, बस मुझे एक मौका और दे दे।" यह कहकर वह ज़मीन पर गिर कर तड़पने लगी।

"मैं तुम्हें फिर दुनिया में भेज भी दूँ तब भी तुम वही करोगी। अगर तुम्हें और मौका दे भी दूँ तब भी तुम्हारे व्यवहार में बदलाव नहीं आएगा। मैंने अपना पैगाम (संदेश) तुम तक पहुंचा दिया था, मगर तुम्हारी आंखों पर पट्टी बंधी रही, तुम अंधी बनी रही। इसलिए आज तुम जहन्नम के अन्धेरे गड्ढे में फेंकी जाओगी, तुम्हारे लिए न कोई माफी है और न दूसरा मौका।"

फिर उसके के साथ भी वही कुछ हुआ जो इससे पहले लोगों के साथ हो चुका था।

.....

आसमा का अंजाम देखकर मेरी हालत खराब हो गई थी। मेरे मन में यह डर पूरी तरह जम गया था कि अगर इसी तरह मेरे बेटे जमशैद के साथ हुआ तो यह मंज़र (दृश्य) मैं देख नहीं सकूँगा। मैंने सालेह से कहा:

'मैं अब यहाँ और ठहरने की हिम्मत नहीं जुटा पारह, मुझे यहां से ले चलो।'

सालेह मेरी हालत को समझ रहा था, वह बिना कोई सवाल किए मेरा हाथ पकड़े एक ओर रवाना हो गया। रास्ते में जगह जगह बहुत भयानक मंज़र थे, अनगिनत सदियों तक हश्र के मैदान की सख्तियों को झेल कर और कड़े माहोल के थपेड़ों ने लोगों की हालत को बद से बदहाल कर दिया था। दौलत मंद, ताकत वर, अकल्मन्द, हसीन, सत्ता के मालिक और हर तरह की क्षमता के लोग इस मैदान में हाँफते फिर रहे थे। उनके पास दुनिया में सब कुछ था, बस ईमान (खुदा के होने का यकीन) और नेक काम का भंडार नहीं था। यह सब कुछ पाए हुए लोग आज सबसे ज़्यादा महरूम (वंचित) थे, यह खुश हाल लोग आज सबसे ज़्यादा दुखी थे। हजारों साल से यह परेशान लोग मौत की दुआएं करते, रहम की उम्मीद बांधे, कोई सिफारिश ढूंढते हुए परेशान हाल घूम रहे थे। कहीं अज़ाब के फरिश्तों से मार खाते, कहीं भूख और प्यास से निढाल होते, कहीं

धूप की शिद्दत (तेज़ी) से बेहाल होते, वे छुटकारा पाने के लिए कुछ भी करने को तैयार थे। अपनी ओलादों को अपने बीवी बच्चों को अपनी सारी दौलत को, सारी इंसानियत को भी बदले में दे कर आज के दिन की पकड़ से बचना चाहते थे। लेकिन यह मुमकिन नहीं था, वह समय तो गुज़र गया था जब कुछ रुपये खर्च करके, कुछ समय देकर जन्नत की नेमतों को हांसिल करना मुमकिन था। ये लोग सारी ज़िन्दगी, कैरियर, बच्चों और जाएदाद पर इन्वैस्ट करते रहे, काश ये लोग आज के दिन के लिए भी इन्वैस्ट कर लेते तो इस हाल को न पहुंचते।

मैदान में बार बार लोगों का नाम पुकारा जाता, जिसका नाम लिया जाता दो फरिश्ते तेजी से उसकी ओर झपटते और उसको लेकर खुदा के सामने पेश करते। लगता था कि फरिश्ते लगातार अपने शिकार पर नजर रखे हुए हैं और लाखों करोड़ों की इस भीड़ में बिना देर किये उस अपने बुलाए हुए आदमी को खोज लेते हैं। मेरी भी खोजी निगाहें मन ही मन जमशैद को खोज रही थीं, मगर वह मुझे कहीं नज़र नहीं आया। सालेह मेरी स्थिति को भांप कर बोला:

"मैं जान बूझ कर तुम्हें उसके पास नहीं ले जा रहा। उसकी पत्नी, बच्चे, सास, ससुर सबके लिए पहले ही जहन्नम का फैसला सुनाया जा चुका है और कुछ नहीं पता कि उसका क्या अंजाम होगा। बेहतर है कि तुम उससे न मिलो, यहाँ तक कि खुदा खुद कोई फैसला करें।"

उसकी बात सुनकर होना तो यह चाहिए था कि मेरी हालत बहुत उदास और दुखी हो। लेकिन न जाने क्यों मेरे दिल में एक एहसास पैदा हुआ, मैं सालेह से कहने लगा:

'मेरे रब का जो फैसला होगा वह मुझे मंज़ूर है। मैं अपने बेटे से जितना प्यार करता हूँ मेरा मालिक मेरा अनदाता इससे हजारों गुना ज़्यादा अपने बन्दों से प्यार करता है। बल्कि सारे जीव अपने बच्चों को जितना चाहते हैं, मेरा प्रभु उससे बढ़ कर अपने बन्दों पे प्यार बरसाने वाला है। जमशैद की माफी की अगर एक प्रतिशत भी गुंजाइश है तो यकीनन उसे माफ कर दिया जाएगा। और अगर वह किसी भी तरह माफ़ करने लायक नहीं तो रब के ऐसे किसी मुजरिम से मुझे कोई सहानुभूति नहीं, चाहे वह मेरा अपना बेटा ही क्यों न हो।"

मेरी बात सुनकर सालेह मुस्कराया और बोला:

"तुम भी बहुत अजीब हो, इतने अजीब हो कि बस..."

'नहीं अजीब मैं नहीं मेरा रब है। उसने मेरे दिल पर सुकून नाज़िल कर दिया है, अब मुझे किसी की कोई परवाह नहीं। और तुम यह बताओ कि अब हम जा कहाँ रहे हैं?'

'यह हुई ना बात, अब तुम लौटे हो, अब तुम फिर एक बाप से अब्दुल्लाह बने हो। लेकिन मैं तुम्हें यह बता दूं कि अभी भी लोगों की निजात (मुक्ति) की उम्मीद है। अल्लाह तआला हश्र के मैदान की इस सख्ती को कई लोगों के गुनाहों की माफ़ी का कारण बना कर उनके नेक कामों के आधार पर उन्हें माफ़ कर रहे हैं। तुम ने इत्तिफाक से सभी तरह के मुजरिमों का हिसाब किताब होते देख लिया, लेकिन कुछ लोगों को अभी भी माफ किया जा रहा है। इसलिए कि खुदा के इन्साफ में सच्ची नेकी कभी बेकार नहीं जाती।"

मैंने सालेह की बात के जवाब में कहा:

'बेशक मेरा रब बड़ा सराहने वाला है, मगर हम कहाँ जा रहे हैं?'

"हम असल में जहन्नम (नरक) की ओर जा रहे हैं, मैं तुम्हें अब जहन्नम वालों से मिलवाना चाह रहा हूँ।"

'तो क्या हम जहन्नम में जाएंगे?'

"नहीं नहीं, यह बात नहीं। इस समय जहन्नम वालों को जहन्नम के पास पहुंचा दिया गया है, यह जो तुम मैदान देख रहे हो इसमें बाएँ हाथ की ओर एक रास्ता धीरे धीरे गहरा होकर खाई का रूप ले लेता है। जहन्नम के सातों दरवाजे इसी खाई से निकलते हैं। जैसा कि तुमने कुरआन में पढ़ा है कि सात दरवाजों में सात अलग अलग प्रकार के मुजरिम दाखिल (प्रवेश) किए जाएंगे।"

सालेह मुझे यह विवरण बता रहा था कि मैंने महसूस किया कि मैदान में नीचे की ओर एक रास्ता उतर रहा था। हम उस रास्ते पर नहीं गए बल्कि उसके साथ जो ऊँची ज़मीन थी उस पर चलते रहे, थोड़ी देर चलने के बाद यह नीचे वाला रास्ता खाई के रूप में बदल गया। हम ऊपर ही थे जहां से हमें नीचे का मंज़र (दृश्य) बिल्कुल साफ नजर आ रहा था। इस रास्ते पर जगह जगह फरिश्ते तैनात थे जो मुजरिमों को मारते घसीटते हुए ला रहे थे।

थोड़ा आगे जाकर इस छोटे रास्ते या खाई पर रश बढ़ने लगा। यहाँ खवे से खवा छिल रहा था, डरावने और बदशकल मर्द और औरत इस जगह ठसे पड़े थे। यह वो ज़ालिम, क्रूर और मुजरिम लोग थे जिनके फैंसले का ऐलान हो चूका था। जहन्नम में दाखिले (प्रवेश) से पहले उन्हें जानवरों की तरह एक जगह ठूंसा गया था।

समय समय पर जहन्नम के शोले भड़कते और उनकी लो आसमान तक उठती दिखाई देती थी। उनके असर से यहां का सारा आसमान लाल हो रहा था, जबकि उनके दहकने की आवाज़ उन मुजरिमों के दिलों को दहला रही थी। कभी कभी कोई चिंगारी जो किसी बड़े महल जितनी विशाल होती इस खाई में जा गिरती जिससे भारी हलचल मच जाती। लोग आग के गोले से बचने के लिए एक दूसरे को कुचलते और फलाँगते हुए भागते। ऐसा ज़्यादातर तब होता जब कुछ बड़े मुजरिम इस गिरोह की तरफ लाए जाते तो आग का यह गोला उनका स्वागत करने आता, जिसकी वजह से उन लोगों की दर्द और तकलीफ और बढ़ जाती थी।

सालेह ने एक ओर इशारा करके मुझसे कहा:

"वहां देखो।"

जैसे ही मैंने उस दिशा में देखा तो मुझे वहां की सारी आवाज़ें साफ सुनाई देने लगी। कुछ लीडर और उनके पैरोकार थे जो आपस में झगड़ रहे थे। पैरोकार अपने लीडरों से कह रहे थे कि हमने तुम्हारे कहने पर हक़ (सच्चाई) का विरोध किया था, तुम कहते थे कि हमारी बात मानो तुम्हें अगर कोई अज़ाब होगा तो हम बचालेंगे। क्या आज हमारे हिस्से का कुछ अज़ाब तुम उठा सकते हो या कम से कम इससे निकलने का कोई रास्ता ही बता दो? तुम तो बड़े बुद्धिमान और हर समस्या का हल निकाल लेने वाले लोग थे।

वह लीडर जवाब देते: अगर हमें कोई रास्ता मालूम होता तो पहले क्या हम खुद न बचते। वैसे हमने तो तुमसे नहीं कहा था कि जो हम कहें वह ज़रूर मानो, हमने जबरदस्ती तो नहीं की थी, हमारे रास्ते पर चलने में तुम्हारे अपने हित थे। अब तो हम सब को मिलकर इस अज़ाब को भुगतना होगा। पर इस पर पैरोकार कहते ऐ खुदा हमारे इन गुरुओं ने हम को गुमराह किया, इन्हें दोगुना अज़ाब दे। पर वह लीडर गुस्से में आकर कहते कि हमें बद दुआ दे कर तुम्हारी अपनी हालत कौन सी अच्छी हो जानी है।

इस बात पर सालेह ने टिप्पणी की:

"इन सभी के लिए दोगुना अज़ाब होगा क्योंकि जो पैरोकार थे वो बाद वाले लोगों के गुरु बन गए और उन्होंने इसी तरह उनको गुमराह किया। देखो के उनके और ज़्यादा पैरोकार आ रहे हैं।"

मैंने देखा तो वाकई भीड़ में धकम पेल शुरू हो गई क्योंकि कुछ और लोग उनकी ओर आए थे, वह लीडर बोले, इन कमबख्तों को भी यहीं आना था, पहले ही जगह इतनी कम है यह बदबू दार लोग और आ गए। नए आने वाले अपने इस बुरे स्वागत पर आपे से बाहर हो गए और एक नया झगड़ा शुरू हो गया, जो थोड़ी देर में मारपीट में बदल गया। जहन्नमी (नरक वाले) एक दूसरे को बुरा भला कहते, गालियां बकते आपस में गिरेबान पकड़ते, लातें घूँसे, धकम पेल और चीख और पुकार के इस माहौल में लोगों की जो हालत हो रही थी, जाहिर है मैं सिर्फ देख और सुन कर उसका अंदाजा नहीं लगा सकता था। लेकिन मुझे विश्वास था कि यह लोग अपनी दुनिया की ज़िन्दगी को याद करके ज़रूर रो रहे होंगे जिसमे उनके पास सारे मौके (अवसर) थे, लेकिन जन्नत की नेमत को छोड़कर उन्होंने अपने लिए जहन्नम की वहशत को पसंद कर लिया। कुछ दिन मज़ों, फ़ायदों, इच्छाओं और पक्षपात के लिए।

सालेह मुझसे कहने लगा:

"अभी तो यह लोग जहन्नम में गए ही नहीं, वहां तो इससे कहीं बढ़कर अज़ाब होगा। उनके गले में गुलामी और अपमान की निशानी के रूप में तौक़ पड़ा होगा, पहनने के लिए गंधक और तारकोल के कपड़े मिलेंगे जो दूर से आग को पकड़ लेंगे, यह आग उनके चेहरे और शरीर को झुलसा देगी। वह यातना से तड़पते रहेंगे लेकिन कोई उनकी मदद को न आयेगा न उन पर तरस खाएगा। फिर उनकी झुलस गई त्वचा की जगह नई जिल्द पैदा होगी जिससे उन्हें बहुत खारिश होगी। यह अपने आप को खुजलाते खुजलाते लहू लुहान कर लेंगे, मगर खुजली कम नहीं होगी।

जब कभी उन्हें भूख लगेगी तो उन्हें खाने के लिए खारदार झाडियां और कड़वे ज़हरीले थोहर के पेड़ के वह फल दिए जाएंगे जिन पर कांटे लगे होंगे। जबकि पीने के लिए गंदेले और बदबूदार पीप, खौलता पानी और खौलते तेल की तलछत होगी जो पेट में जाकर आग की तरह खौलेगा

और प्यास का आलम यह है कि लोग उसे तौंस लगे ऊँट की तरह पीने पर मजबूर होंगे। वह पानी उनके पेट की अतड़यों को काटकर बाहर निकाल देगा।

जहन्नम में फरिश्ते उन्हें बड़े हथोड़ों से मारेंगे, जिससे उनका शरीर बुरी तरह घायल हो जाएगा। उनके घावों से लहू और पीप निकलेगी जो दूसरे मुजरिमों को पिलाई जाएगी। फिर उन्हें जंजीरों में बांधकर किसी तंग जगह पर डाल दिया जाएगा, वहां हर जगह से मौत आएगी लेकिन वह मरेंगे नहीं। उस समय उनके लिए सबसे बड़ी खुश खबरी मौत की खबर होगी मगर वहाँ उन्हें मौत नहीं आएगी। समय समय से सारे कष्ट वह हमेशा भुगदते रहेंगे।"

मैं यह सब सुनकर लरज़ा उठा। सालेह ने कहा:

"जहन्नमियों को जहन्नम में डालने से पहले यहाँ ऊपर लाया जाएगा और उन्हें जहन्नम के आसपास घुटनों के बल बिठा दिया जाएगा। इसलिए उनके लिए सबसे पहला अज़ाब यह होगा कि वह अपनी आँखों से सारे अज़ाब देख लेंगे। फिर समूह दर समूह जहन्नमियों को जहन्नम की तंग और अँधेरी जगहों पर ले जाकर ठूंस दिया जाएगा और अज़ाब का वह सिलसिला शुरू होगा जो मैंने अभी बताया है।"

'तो क्या सारे मुजरिमों का यही अंजाम होगा?'

"नहीं यह तो बड़े मुजरिमों के साथ होगा। दूसरों के साथ हल्का मामला होगा लेकिन यह हल्का अज़ाब भी बहरहाल बर्दाश्त से बहार का अज़ाब होगा।"

फिर उसने एक ओर इशारा किया तो मैंने देखा कि वहाँ कुछ बहुत ज़्यादा बदसूरत लोग हैं। सालेह एक एक करके मुझे बताने लगा कि उनमें से कौन किस रसूल का इन्कार करने वाला और विरोधी था। मैंने खास तौर पर नमरूद और फ़िरऔन को देखा क्योंकि उनका ज़िक्र बहुत सुना था। उन्ही के साथ अबू जहल, अबू लहब और क़ुरैश के दुसरे सरदार भी मौजूद थे। इन सबकी हालत अविश्वसनीय हद तक बुरी हो चुकी थी, अपने समय के यह सरदार आज बदतरीन गुलामों से भी बुरी हालत में थे। उनका जुर्म यह था कि सच्चाई आखरी हद में उनके सामने आ चुकी थी लेकिन उन्होंने उसे क़ुबूल (स्वीकार) नहीं किया। ख़ुदा के मुकाबले में सरकशी की और और खुदा की मखलूक (प्राणी) पर ज़ुल्म व सितम का रास्ता अपनाया।

उस वक़्त सालेह ने मुझे एक अदभुद अनुभव कराया। उसके ध्यान दिलाने पर मैंने देखा कि इन सब के बीच में एक बहुत बड़ा देव नुमा आदमी खड़ा था। उसके शरीर से आग के शोले निकल रहे थे और पूरा शरीर जंजीरों से जकड़ा हुआ था। वह सबसे संबोधित होकर कह रहा था कि "देखो खुदा ने तुम से जो वादा अपनी किताबों में किया था वह सच्चा था और जो वादे मैंने किए थे वे सब झूठे थे। आज मुझे बुरा भला न कहो, मैं तुम्हारे किसी काम का जुम्मेदार नहीं हूँ, मेरी कोई गलती नहीं है, मेरा तुम पर कोई अधिकार न था। तुमने जो किया अपनी मर्ज़ी से किया, अगर तुमने मेरी बात मानी तो इसमें मेरा क्या कुसूर (दोष)। तुम लोग मुझे मत कोसो बल्कि खुद पर अफ़सोस करो, आज न मैं तुम्हारे लिए कुछ कर सकता हूँ और न तुम मेरे लिए कुछ कर सकते हो।"

मुझे उसकी बातों से अंदाज़ा हो गया कि यह बोलने वाला कौन हैं। मैंने अपने अनुमान की पुष्टि के लिए सालेह को देखा तो वह बोला:

"तुम ठीक समझे, यह शैतान है, अल्लाह का सबसे बड़ा नाफरमान। आज सबसे बढ़कर अज़ाब भी उसी को होगा, लेकिन बाकी लोगों को भी उनके किए की सज़ा मिलेगी।"

मैं ऊपर खड़ा यह सारा मंज़र देख रहा था और मन ही मन में अपने महान रब का शुक्रिया कर रहा था जिसने मुझे शैतान के असर और धोखे से बचा लिया वरना ज़िन्दगी में कई बार इसने मुझे गुमराह करने की कोशिश की थी, लेकिन खुदा ने मुझे अपनी हिफाज़त में रखा। मेरी हमेशा यह आदत रही कि मैं शैतान से बचने के लिए खुदा की पनाह मांगता था, सो मेरे अल्लाह ने मेरी लाज रखी। लेकिन जिन्होंने अपनी इच्छाओं का पालन किया और शैतान को अपना दोस्त बनाया वह बुरे अंजाम से दो चार हो गए।

इसी बीच सालेह मेरी तरफ मुड़ा और बोला:

"अब्दुल्लाह चलो तुम्हें बुलाया जा रहा है।"

मैंने पूछा क्यों?

वह बोला जमशैद को हिसाब किताब के लिए पेश किया जाने वाला है, तुम्हें गवाही के लिए बुलाया जा रहा है।

'मेरी गवाही?'

"हाँ तुम्हारी गवाही।"

'मेरी गवाही उसके पक्ष में होगा या उसके खिलाफ।?'

"देखो अगर अल्लाह तआला ने उसे माफ करने का इरादा किया है तो फिर वह तुमसे कोई ऐसी बात पूछेंगे जिसका जवाब उसके पक्ष में जाएगा। और अगर उसके गुनाहों के आधार पर उसे पकड़ने का फैसला किया है तो वह तुम से कोई ऐसी बात पूछेंगे जो उसके खिलाफ जाएगी, या हो सकता है कि कोई और मामला है। असल बात तो सिर्फ वही जानते हैं।"

मेरी हालत जो ठहर सी गई थी एक बार फिर ख़राब हो गई। मैं डरे हुए दिल और कांपते क़दमों के साथ सालेह के साथ रवाना हो गया।

****

आखिर कार....

जमशैद को अभी हिसाब के लिए पेश नहीं किया गया था। दो फरिश्ते उसे अर्श के पास लेकर खड़े हुए थे और वह अपनी बारी का इंतजार कर रहा था। उसका चेहरा उतरा हुआ था, जिस पर दुनिया के पचास साठ सालों की दौलत मंदी का तो कोई असर नजर नहीं आता था, लेकिन हश्र के हजारों साल की मुसीबतों की पूरी कहानी लिखी हुई थी। उसके पास जाने से पहले मैंने अपने दिल को मजबूत बनाने की कोशिश की, पास पहुंचा तो उसके पास खड़े फरिश्तों ने मुझे आगे बढ़ने से रोक दिया। मगर सालेह के हस्तक्षेप पर उन्होंने हमें इजाज़त दे दी। जमशैद ने मुझे देख लिया था, वह खुद मेरे पास आया और मेरे सीने से लिपट गया, फिर वह मेरी ओर देखकर बोला:

"अब्बू में इतना रोया हूँ कि अब आँसू भी नहीं निकल रहे।"

मैं उसकी कमर थपथपाने के सिवा कुछ न कह सका। फिर उसने धीरज से कहा:

"अब्बू शायद मैं इतना बुरा नहीं था।"

'मगर तुम बुरों के साथ जरूर थे बेटा! बुरों का साथ कभी अच्छे परिणाम तक नहीं पहुंचाता। तुमने शादी की तो ऐसी लड़की से जिसमे एक ही गुण था उसकी खूबसूरती और उसकी दौलत, खुदा की नजर में यह कोई गुण नहीं होते। तुम हमसे अलग हो गए और अपने ससुर के ऐसे कारोबार में शामिल हो गए जिसके बारे में तुम्हें पता था कि इसमें हराम की मिलावट है। लेकिन पत्नी, बच्चों और दौलत के लिए तुम हराम में सहयोग देते रहे। यही चीजें तुम्हें इस जगह तक ले आई।'

"आप ठीक कहते हैं अब्बू, मगर मैंने नेकियाँ भी की थी, तो क्या कोई उम्मीद है?"

मैं चुप रहा, मेरी चुप्पी ने उसे मेरा जवाब समझा दिया। वह मायूस होकर बोला:

"मुझे अंदाज़ा हो गया है अब्बू। अपने बीवी बच्चों और सास ससुर को जहन्नम में जाता देखने के बाद मुझे अंदाज़ा हो चुका है कि आज किसी के हाथ में कुछ नहीं है। सारा अधिकार उस

ईश्वर के पास है जिसके हुक्मों (आदेशों) को मैं भूला रहा। आज जिस का अमल (कर्म) उसे नहीं बचा सका उसे दुनिया की कोई ताकत नहीं बचा सकेगी। मैं हजारों साल से इस मैदान में परेशान फिर रहा हूँ, मैं अनगिनत लोगों को जहन्नम में जाता देख चुका हूँ। मुझे अपनी निजात (मुक्ति) की कोई उम्मीद नहीं है, मैंने खुदा से बहुत माफी मांगी है, मगर मैं जानता हूँ कि आज माफी मांगने का कोई फायदा नहीं। अब्बू! खुदा शायद मुझे माफ न करें, लेकिन आप मुझे ज़रूर माफ़ कर दीजिए, आप तो मेरे अब्बू हैं ना।"

यह कहकर वह फूट फूट कर रोने लगा। मैंने बहुत कोशिश की कि मेरी आंखों से आंसू न बहें, लेकिन न चाहते हुए भी मेरी आंखें बरसने लगीं। इसी बीच में जमशैद का नाम पुकारा गया, फरिश्तों ने तुरंत ही उसे मुझसे अलग किया और बारगाह इलाही में दे दिया।

वह हाथ बांध कर और सर झुकाकर सारे जहानों के परवरदिगार के सामने पेश हो गया। एक चुप्पी छाई हुई थी, जमशैद खड़ा था मगर उससे कोई सवाल नहीं किया जा रहा था। मुझे समझ में नहीं आया कि चुप्पी की वजह क्या है, थोड़ी देर में वजह भी ज़ाहिर हो गई। कुछ फरिश्तों के साथ नाएमा वहां आ गई, इसके साथ ही सालेह ने मुझे इशारा किया तो मैं नाएमा के साथ जाकर खड़ा हो गया। नाएमा के चेहरे की हवाइयाँ उड़ रही थीं, वह मुझसे कुछ पूछना चाह रही थी, मगर बारगाह इलाही का रोब इतना ज़्यादा था कि उसकी आवाज़ नहीं निकल रही थी।

कुछ देर में जमशैद से सवाल हुआ:

"मुझे जानते हो मैं कौन हूँ?"

इस आवाज़ में इतना ठहराव था कि मैं अंदाज़ा नहीं कर सका कि यह ठहराव किसी तूफान के आने का संकेत था या फिर मालिक दो जहां का सब्र था।

"आप मेरे रब हैं, सबके प्रभु हैं, यही मेरे पिता ने मुझे बताया था।"

शान बेनियाज़ के साथ पूछा गया:

"कौन है तुम्हारा पिता?"

जमशैद ने मेरी ओर देख कर कहा:

"यह खड़े हुए हैं।"

उसके इस वाक्य के साथ मेरा दिल धक से रह गया। मुझे इस बात का अंदाज़ा हो चुका था कि अब जमशैद मारा गया। क्योंकि मैंने तौहीद (एकेश्वरवाद) के अलावा और भी बहुत सी चीजों की नसीहत की थी जिनमें उसका रिकॉर्ड अच्छा नहीं था। अब मुझसे यही पूछा जाना था कि उसे किन बातों की नसीहत की थी और मेरी यही गवाही उसकी पकड़ का कारण बन जाती। मगर मेरी आशा के बिल्कुल उलट अल्लाह ने मुझे गवाही के लिए नहीं बुलाया। उन्होंने जमशैद से एक अलग सवाल किया:

"अभी तुम अपने पिता से क्या कह रहे थे.... कि खुदा शायद मुझे माफ न करें, लेकिन आप मुझे ज़रूर माफ़ कर दीजिए, आप तो मेरे अब्बू हैं ना।"

पल भर पहले जो मेरी उम्मीद बंधी थी, वह इस सवाल के साथ ही दम तोड़ गई। जमशैद को अंदाज़ा हो गया कि उसकी पकड़ शुरू हो चुकी है, डर के मारे उसका चेहरा काला पड़ गया, उसके हाथ पैर कांपने लगे। उसके वहम और गुमान में भी यह बात नहीं थी कि अल्लाह तआला जो दूसरों के हिसाब किताब में व्यस्त थे साथ साथ हमारी बात भी सुन रहे थे। न सिर्फ सुन रहे थे बल्कि उसके शब्द अल्लाह को नाराज़ करने का कारण बन गए थे। वह बड़ी बेबसी से बोला:

"जी मैंने यह बात कही थी लेकिन मेरा मतलब वह बिल्कुल नहीं था जो आप समझे हैं।"

"तुम्हें क्या पता मैं क्या समझा हूँ?"

पूछा गया, मगर आवाज़ में अभी तक वही ठहराव था।

"न...ना....नहीं मुझे बिल्कुल नहीं पता.... आप क्या समझे।" जमशैद ने लड़खड़ाती आवाज़ से जवाब दिया।

इससे ज़्यादा कोई बात कहने के बजाय नाएमा से पूछा गया:

"मेरी बंदी यह तेरा बेटा है, इसने तेरे साथ कैसा सुलूक किया?।"

नाएमा बोली:

"परवरदिगार! इसने मेरे साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया, यह बुढ़ापे तक मेरी सेवा करता रहा। इसने माल से, हाथों से और मुहब्बत से मेरी बहुत सेवा की। इसकी पत्नी इसे टोकती थी लेकिन यह मेरी सेवा से बाज नहीं आया। इसने अपना माल और अपनी जान सब कुछ मेरे लिए समर्पित कर रखा था।"

नाएमा का बस नहीं चल रहा था कि वो जमशैद के लिए और बहुत कुछ कहे, मगर उसे पता था कि जो पूछा गया है उससे एक शब्द ज़्यादा कहने पर उसकी अपनी पकड़ हो जाएगी। इसलिए वह मजबूरन इतना कह कर चुप हो गई।

परवरदिगार ने फरिश्ते से पूछा:

"क्या यह औरत ठीक कह रही है?"

फरिश्ते ने आमाल नामा देखकर कहा:

"इसने बिल्कुल ठीक कहा है।"

इसके बाद जो कुछ हुआ उस ने मेरे दिल की धड़कन तेज कर दी, हुक्म हुआ इसके आमाल (कर्म) तराजू में रखो। पहले गुनाह (पाप) रखे गए, जिनसे बाएँ हाथ का पलड़ा भारी होता चला गया। इसके बाद नेकियाँ रखी गईं, हम सब के चेहरों के रंग उड़ रहे थे। एक एक करके नेकियाँ रखी गई, मगर वह गुनाहों की तुलना में इतनी कम और हल्की थीं कि तराजू में बाँए हाथ का पलड़ा भारी ही रहा। आखिर में सिर्फ दो नेकियाँ रह गईं, लगता था कि फैसला हो चुका है। नाएमा ने मायूसी और बेकसी के मिले जुले भाव के साथ आँखें बंद कर लीं। जमशैद अपना सर पकड़ कर बेबसी से ज़मीन पर गिर गया।

मैं जिस समय से हश्र के मैदान में आया था मैंने एक बार भी अर्श की तरफ़ देखने की हिम्मत नहीं की थी। मगर न जाने क्यूँ इस समय पहली बार आपसे आप ही मेरी निगाहें मालिक ज़ुल्ज़लाल की तरफ उठ गई.... एक पल से भी कम समय के लिए ... इस लम्हे मेरे दिल से वही आवाज़ निकली जो ज़िन्दगी की हर बेबसी और मुश्किल पर मेरे दिल से निकला करती थी। ला इलाहा इल्लल्लाह (अल्लाह के सिवा कोई ईश्वर नहीं), फिर मेरी नज़र और सर दोनों फ़ौरन झुक गए।

फरिश्ते ने उसकी पहली नेकी उठाई, यह नाएमा के साथ किया हुआ उसका अच्छा सुलूक था। आश्चर्यजनक तौर पर सीधे हाथ का पलड़ा उठना शुरू हुआ, मैंने अपने बराबर खड़ी नाएमा को झिंझोड़ कर कहा:

"नाएमा! आँखें खोलो।"

मेरी आवाज़ जमशैद तक भी चली गई, उसने सर उठाकर देखा और धीरे धीरे खड़ा हो गया। उठते पलड़े के साथ उसकी आस भी बन गई, लेकिन एक जगह पहुंच कर दाएं हाथ का पलड़ा ठहर गया, बाएँ हाथ का पलड़ा अब भी भारी ही था। हमारे दिलों में जलने वाली आशा की शमा फिर बुझने लगी, फरिश्ते ने आखिरी नेकी उठाई और ऊँची आवाज़ से कहा। यह सिर्फ एक खुदा के होने का यकीन है, उसके रखते ही पलड़े का रुख बदल गया, मेरी जुबां से निकला, 'अल्लाहुअकबर व लिल्लाहिल हम्द।' (अल्लाह सबसे बड़ा है और सारी तारीफें उसी को लायक हैं)।

इसके साथ ही मद्धम स्वर में आवाज आई:

"जमशैद तुम्हारे पिता ने तुम्हें मेरे बारे में यह भी बताया था कि मैं माँ बाप से सत्तर हजार गुना ज़्यादा अपने बन्दों से प्यार करता हूँ। यह तुम थे जिसने मेरी कद्र नहीं की, इसीलिए हश्र के मैदान मैं तुम्हें इतनी सख्ती उठानी पड़ी, मेरा इन्साफ बिना भेद भाव के होता है, मगर मेरी रहमत हर चीज़ पर ग़ालिब है।"

फरिश्ते ने निजात (मुक्ति) का फैसला लिख करका आमाल नामा उसके दाहिने हाथ में दे दिया। जमशैद के मुंह से जज़्बात के बहाव में एक चीख निकली, उसे जन्नत का परवाना मिल गया था। हजारों साल जितने इस लम्बे और कड़े दिन के दर्द से उसे निजात मिल गई बल्कि हर तकलीफ से उसे छुटकारा मिल चुका था। वह भागता हुआ आया और हम दोनों से लिपट गया, नाएमा खुभी से अभी तक सुन्न खड़ी थी, जमशैद की आंखों से आंसू बहने लगे थे और मैं अपने वुजूद (अस्तित्व) के हर रेशे के साथ करीम रब की बड़ाई और शुक्र कर रहा था जिस की बढ़ी हुई रहमत ने जमशैद को माफ कर दिया था।

.....

हमारा पूरा परिवार होज़े कौसर के वीआईपी लाउंज में जमा था। मेरी तीनों बेटियां लैला, आरफा और आलया और दोनों बेटे अनवर और जमशैद अपनी माँ नाएमा के साथ मौजूद थे। जमशैद के आने से हमारा परिवार पूरा हो गया था, इसलिए इस बार खुशी और आनंद का जो आलम था वह बयान से बाहर था। यूँ अपने परिवार को इकट्ठा देखकर मैंने अपने पहलू में बैठे सालेह से कहा:

'अपनों में से एक भी आदमी रह जाए तो जन्नत का क्या मजा!'

मेरी बात का जवाब जमशैद ने दिया जिसकी पत्नी बच्चे और ससुराल वालों के बारे में जहन्नम का फैसला हो चुका था:

"हां अब्बू! मुझसे ज़्यादा यह कौन जान सकता है, आप बहुत खुश नसीब हैं।"

"ये खुश नसीब इसलिए हैं कि अपने घर वालों की तरबियत (संस्कार) को उन्होंने अपना मकसद बना लिया। वह तो तुम ही नालायक थे वरना दूसरों को देखो, सबके साथ अच्छा मामला हुआ।" इस बार नाएमा ने कहा था।

"अम्मी आप ठीक कह रही हैं, लेकिन मुझे दुनिया में यह ख्याल रहा कि मेरे अब्बू की शिफारिश मुझे बख्शवा देगी। दरअसल मेरे ससुर के पीर साहब थे जिन पर उन्हें बहुत विश्वास था, वह हमेशा मेरे ससुर से कहते थे कि मेरा दामन पकड़े रखो, मैं क़यामत के दिन तुम्हें बख्शवा दूंगा। बस वहीं से मुझे यह अहसास हुआ कि मेरे अब्बू जैसा तो कोई हो नहीं सकता, उनकी शिफारिश मेरे काम आएगी।"

उसकी बात सुनकर मैंने कहा:

"बेटा तुम बिल्कुल गलत समझे थे, देखो तुम्हारे ससुर को उनके पीर साहब नहीं बचा सके। हकीकत यह है कि सिफारिश के ज़रये निजात समझने की दावत न हमारे नबी ने दी और न कुरआन में यह कहीं बयान हुआ है कि उसे निजात का रास्ता समझो। कुरआन तो नाज़िल ही इसलिए हुआ था कि यह बताए कि आखिरत (परलोक) के दिन निजात (मुक्ति) कैसे होगी। उसने बार बार यह स्पष्ट किया था कि क़यामत में निजात का रास्ता एक ही है यानी ईमान और नेक आमाल (अच्छे कर्म)। कुरआन के उतरने के समय सारे ईसाई इस गुमराही का शिकार थे कि हज़रत ईसा की सिफारिश उन्हें बख्शवा देगी जबकि मुशरिकीन (खुदा का साझी करार देने

वाले) यह समझते थे कि उनके बुत ईश्वर के सामने उनकी शिफारिश करेंगे। इसलिए कुरआन मजीद ने बार बार यह स्पष्ट किया कि सिफारिश कोई रास्ता नहीं है निजात का, हर इंसान को वही मिलेगा जो उसने किया होगा।'

"लेकिन सिफारिश का उल्लेख कुरआन में आया तो है और हदीसों (नबी की बातें) में भी इसका जिक्र है।" जमशैद ने सवाल किया।

मैंने उसके सामने एक सवाल रखते हुए कहा:

'यह बताओ कि पूरे कुरआन या हदीस में कहीं यह कहा गया है कि सिफारिश को एक रास्ता समझ कर उस पर भरोसा करो या उसके लिए दुआ करो।'

"नहीं ऐसा तो कहीं नहीं कहा गया।"

जमशैद की जगह अनवर ने पूरे आत्मविश्वास से कहा तो जमशैद ने उससे मतभेद किया और कहा:

"नहीं भाई हम तो हर अज़ान के बाद सिफारिश की दुआ करते थे।"

मैंने जमशैद की बात का जवाब दिया:

'यह तो लोगों ने पैगम्बर की बात में खुद बढ़ाया था। पैगम्बर ने सिर्फ इतना कहा था कि मेरे लिए महमूद रुतबे की दुआ करो तो तुम्हारी सिफारिश करना मुझ पर वाजिब हो जाएगा। यह नहीं कहा था कि सिफारिश के लिए दुआ किया करो या उस पर भरोसा करके नेक काम करना छोड़ दो और मजे से गुनाह करते रहो।'

सालेह ने मुझे संबोधित करते हुए कहा:

"अब्दुल्लाह तुम रुको मैं इन्हें सिफारिश का तसव्वुर विस्तार से समझाता हूँ। देखो असल में निजात (मुक्ति) तो ईमान और नेक आमाल के बिना मुमकिन नहीं। आज अगर किसी को माफी मिल रही है तो असल में वह किसी की सिफारिश से नहीं मिल रही बल्कि खुदा के इल्म (ज्ञान), कुदरत और रहमत की वजह से मिल रही है। कुरआन में यह इस तरह बयान किया गया है कि अल्लाह बस शिर्क ही माफ नहीं करेंगे, इसके अलावा जिस गुनाह को चाहें और जिस व्यक्ति के

लिए चाहें माफ़ कर सकते हैं। छोटे मोटे गुनाहों को अल्लाह तआला दुनिया की सख़्तियों और नेकियों के बिना पर माफ कर दिया करते थे, लेकिन जिन लोगों ने गुनाह का रास्ता लगातार पकड़े रखा और तौबा नहीं की उन्हें तो बहरहाल इस राह पर चलने का अंजाम आज भुगतना पड़ रहा है। लेकिन इसके बाद अगर कोई बन्दा अपने गुनाहों की काफी सज़ा भुगत लेता है...."
सालेह ने यहीं तक बात पूरी की थी कि जमशैद ने बीच में कहा:

"जैसे मैंने भुगती या फिर लैला ने हश्र के मैदान के शुरू के समय तकलीफ उठाई थी।"

"बिल्कुल"

सालेह ने समर्थन करते हुए अपनी बात जारी रखी:

"मैं यह बता रहा था कि जब ईश्वर पर यकीन रखने वाला बन्दा हश्र की सख्तियाँ झेलने के नतीजे में खुदा के अपने इन्साफ के तहत निजात (उद्धार) के काबिल हो जाता है तो खुदा कुछ नेक लोगों की गवाही को जो दरअसल उसके अच्छे कामों ही की गवाही होती है, उसकी रिहाई का बहाना बना देते हैं। जैसे तुम्हारे लिए तुम्हारे माँ बाप की गवाही रिहाई का ज़रिया बन गई, या लैला रसूल अल्लाह की उस गवाही के कारण निजात पा गई जो आपने शुरू में दी थी। लेकिन देख लो इस में भी खुद का ईमान और खुद के नेक अमल की मौजूदगी जरूरी है और सज़ा तो बहरहाल इंसान को भुगतनी पड़ती है। तो यह बताओ कि सज़ा भुगत कर माफी का रास्ता अच्छा है या शुरू में तौबा और अच्छे काम करने का रास्ता लेना और बिना सख्ती के निजात पा जाना अच्छा है?"

"जाहिर है कि तौबा का रास्ता बेहतर है, लेकिन यह बताइये कि फिर पैगम्बर की सिफारिश का सच क्या है?" इस बार आरफा ने जवाब दिया और साथ में सालेह से एक सवाल भी कर लिया।

"पैगम्बर की सिफारिश का मतलब अगर यह होता कि लोगों के पास कोई नेक अमल न हो तब भी पैगम्बर लोगों को बख्शवा देंगे तो कुरआन नेक काम करने की कोई बात ही नहीं करता बल्कि कुरआन में अल्लाह पैगम्बर की ज़ुबान से यह कहलवा देते कि लोगों बस मुझ पर ईमान ले आओ, मैं आखिरकार तुम्हे बख्शवा दूंगा।"

"यह तो ईसाइयों का ईमान (विश्वास) था और इसका अंजाम उन्होंने आज भुगत लिया।" नाएमा ने व्यंग भरे अंदाज में कहा। सालेह ने उस के समर्थन में कहा:

"हम जानते हैं कि कुरआन में ऐसी कोई बात बयान नहीं हुई है। इसके विपरीत सारा ध्यान इस ओर दिलाया गया है कि ईमान लाओ और नेक आमाल करो और सीधा जन्नत में जाओ। बाकी रही हदीस (नबी की बातें) तो हदीसों में जो कुछ सिफारिश के बारे में आया है उसे अगर कुरआन की रौशनी में देखा जाता जो आखिरत की हकीकत बताने वाली असल किताब है तो बात स्पष्ट थी।"

"वो क्या बात है?" जमशैद ने पूछा:

"वो यही कि आज के दिन मुजरिमों ने अपने जुर्मों की पूरी पूरी सज़ा भुगती है। इसके बाद पैगम्बर की दुआ वो वजह बन गई जिसकी वजह से लोगों की निजात (मुक्ति) की उम्मीद पैदा हुई। यह पहली बार तब हुआ था जब पैगम्बर ने अल्लाह से यह दुआ की थी कि लोगों का हिसाब किताब शुरू हो, इसके नतीजे में लोगों को इंतजार की मुश्किल से छुटकारा मिला। दूसरी बार पैगम्बर और दुसरे सभी नबियों ने अपनी अपनी उम्मत को दी गई अपनी शिक्षा की गवाही दी, यह गवाही उन सब लोगों के लिए निजात (मुक्ति) का कारण बन गई जिनके आमाल (कर्म) कुल मिला कर ज़्यादातर उनकी शिक्षा के अनुसार थे।"

"जैसे कि मैं।" लैला बोली।

"हां जैसे कि तुम, और अब तीसरी बार हुज़ूर उस समय दुआ करेंगे जब कुछ लोगों का मामला टाल दिया जाएगा। उनका हिसाब किताब आखिर समय तक नहीं किया जाएगा और वह अपने गुनाहों की सज़ा में हश्र के मैदान में परेशान होते रहेंगे। पैगम्बर उन के लिए बार बार दुआ करेंगे, इसके बाद जब खुदा की हिक़मत (नीति) और इल्म (ज्ञान) के तहत उनका फैसला करना उचित होगा तब पैगम्बर को इजाज़त दी जाएगी कि वह उनके पक्ष में कोई बात करें। फिर पैगम्बर की दरख्वास्त (आवेदन) के नतीजे में उनका हिसाब किताब होगा जिसके बाद जाकर उनकी निजात की उम्मीद पैदा होगी। और यह होगा भी सबसे आखिर में जब ऐसे लोग अपने सभी गुनाहों की काफी सज़ा भुगत चुके होंगे और एक खुदा को मानने और अपने अच्छे कामों की बिना पर निजात के लायक हो जाएंगे।"

"मेरा एक सवाल है।" अनवर ने सालेह को संबोधित करके कहा।

"वह यह कि अगर सब लोग सज़ा भुगत कर ही माफी के हक़दार बन रहे हैं तो इसमें अल्लाह की रहमत कहाँ से आ गई, यह तो बस इन्साफ हो रहा है ना।"

"बहुत अच्छा सवाल है।" सालेह ने अनवर को दाद देते हुए जवाब दिया।

"देखो! वो अगर इन्साफ करते तो ऐसे लोगों की असल सज़ा जहन्नम का अज़ाब था जो हश्र के मैदान की सख़्तियों से हजारों लाखों गुना कड़ी सज़ा है। इन्साफ के तहत ऐसे सभी लोगों को जहन्नम की सज़ा भुगतनी चाहिए थी, लेकिन खुदा की रहमत (दया) यह है कि वह हश्र की सख्ती को जहन्नम के अज़ाबों का बदल बना रहे हैं, यूँ खुदा की रहमत और इन्साफ दोनों का एक साथ ज़हूर हो रहा है।"

सालेह ने बात ख़त्म की तो जमशैद ने कहा:

"तो यह है असल बात। मैं तो इस गलत फहमी में रहा कि शिफाअत (शिफारिश) का मतलब यह होता है कि हम जितने मर्जी गुनाह करें पैगम्बर और अन्य नेक लोग हमें बख्शवा देंगे।"

"यह सोचना खुदा के इन्साफ के खिलाफ है, यह बस एक गलतफहमी थी जो क़ुरआन को समझ कर न पढ़ने के वजह से लोगों को लगी। निजात तो ईमान और नेक अमल से ही होती है, बाकी रही माफी तो वो अल्लाह की रहमत से मिलती है। अल्लाह तआला बस यह करते हैं कि इस माफी की वजह किसी नेक बन्दे की गवाही या सिफारिश को बना देते हैं। इससे अल्लाह का मक़सद अपने महबूब और बुजुर्ग बन्दों को सम्मान देना है। निजात तो अपने उसूल (सिद्धांत) पर होती है, और तुम से ज़्यादा यह कौन जानता है कि इंसान जहन्नम में न भी जाए तब भी गुनाहों की कितनी सख़्त सज़ा हश्र के मैदान की सख्ती के रूप में बहरहाल भुगतनी पड़ती है।"

"क्या जहन्नम में जाने के बाद भी निजत (मुक्ति) की संभावना है?" आलया ने सवाल किया तो एक ख़ामोशी छा गई। कुछ देर बाद इस ख़ामोशी को सालेह ने तोड़ते हुए कहा:

"कुरआन कहता है ना कि अल्लाह बस शिर्क ही माफ नहीं करेंगे। इसके अलावा जिस गुनाह को चाहें और जिस आदमी के लिए चाहेंगे माग कर सकते हैं।"

"मतलब?" अनवर ने पूछा।

"मतलब यह कि कुछ गुनाह जहन्नम तक पहुँचा सकते हैं, लेकिन उन गुनाहों के बावजूद जिन लोगों में ईमान की झलक बाकी थी, उन्हें आखिरकार माफी मिल सकती है। लेकिन यह माफी किसको मिलेगी, कब मिलेगी, यह बातें खुदा के सिवा कोई जानता है और न कोई तय ही करेगा। और मेरे भाई जहन्नम (नरक) तो एक पल भी रहने की जगह नहीं है। जो लोग वहां से निकलेंगे, वे न जाने कितना समय बिताने के बाद अपनी सज़ा भुगत कर निकलेंगे। यह अवधि इतनी ज़्यादा होगी कि अरबों खरबों साल भी इस हिसाब में कुछ पलों के बराबर हैं, इस बारे में तो ना सोचना ही बेहतर है।"

"मेरे खुदाया" अनवर लरज़ कर बोला।

"जहन्नम तो दूर की बात है, हश्र के मैदान में एक पल खड़े रहना भी बर्दास्त से बाहर है।" जमशैद ने अपने अनुभव की रोशनी में कहा।

इसमें लैला ने भी कुछ बढ़ाया:

"यह गुनाह कितनी बड़ी मुसीबत होती हैं, काश यह बात हम दुनिया में समझ लेते।"

सालेह ने बहस समाप्त करते हुए कहा:

"इंसानों की दो सबसे बड़ी बदनसीबियां रही हैं। एक यह कि हश्र का दिन इन्साफ और हिसाब किताब का था, लेकिन लोगों ने उसे सिफारिशों का दिन समझा। दूसरा यह कि इंसान के लिए सबसे ज़्यादा रहम और मुहब्बत करने वाला खुदा था, जबकि लोगों ने खुदा से हट कर औरों को ज़्यादा रहम करने वाला समझा।"

मैंने सालेह का समर्थन करते हुए कहा:

'कितनी सच्ची बात कही है तुमने सालेह! काश लोग यह दुनिया में समझ लेते।'

फिर मैंने अपने बच्चों को कहा:

'मेरे बच्चों! अब दुनिया की ज़िन्दगी एक अतीत हो चुकी है, अब तुम्हारी मंजिल खत्म न होने वाली जन्नत की बादशाही है। शांति, सुकून, आसानी, प्यार, रहम (दया), आनंद और सुरूर.... तुम्हें यह सब मुबारक हो। देखा तुमने हमारा रब कितना करीम और रहीम है, आओ हम सब

मिलकर अपने रब (प्रभु) करीम की बड़ाई (स्तुति) करें और मिलकर कहें 'अल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ लमीन' (सारी तारीफ अल्लाह को लायक हैं जो सारे जहानों का रब है)।

सबने मिलकर इस को एक नारे के रूप में ऊँची आवाज़ से कहा।

.....

"अब्दुल्लाह! हश्र के दिन के मामले अपने अंत की ओर बढ़ रहे हैं, तुम्हें अगर हश्र के मामलों में कोई दिलचस्पी रह गई है तो फिर वहाँ चले चलो।" कुछ देर बाद सालेह ने मुझसे संबोधित होकर कहा।

"इस समय हिसाब किताब कहां तक पहुंचा है?" नाएमा ने पूछा।

ज़्यादातर लोग दुनिया के आखिर समय में पैदा हुए थे, उन सब का हिसाब किताब अब हो चुका है। मुसलमानों और ईसाइयों और उनके साथ रहने वालों का सामान्य हिसाब किताब हो चुका है। इस समय यहूद्यों का हिसाब चल रहा है, यूँ समझ लो कि ज़्यादातर इंसानियत की तकदीर का फैसला हो चुका है। दूसरी उम्मतों के लोगों की संख्या बहुत कम थी इसलिए अब ज़्यादा समय नहीं लगेगा।"

'मेरे उस्ताद (गुरु), फरहान अहमद का क्या हुआ। तुम्हें कुछ पता है?'

"नहीं मेरा उनसे कोई सीधा संबंध नहीं, इसलिए मैं उनके बारे में कुछ नहीं जान सकता। यह तो मैं जानता हूँ कि वह यहाँ होज़ पर नहीं हैं, बाकी अल्लाह बेहतर जानता है कि उनका क्या होगा। वैसे बेहतर है कि अब तुम उठ जाओ।"

'ठीक है, हम लोग चलते हैं।' मैंने सीट से उठते हुए कहा।

नाएमा और बच्चे भी अपनी सीटों से उठ गए, नाएमा ने उठते हुए कहा:

"मैं इन बच्चों के साथ उनके परिवारों के पास जा रही हूं। यहां वीआईपी लाउंज में तो आपके बच्चे ही आ सकते हैं, इनके बच्चे तो नीचे इंतजार कर रहे हैं। उनके पास जा रही हूँ, और हाँ मुझे अपने जमशैद के लिए कोई नई दुल्हन भी ढूँढनी है।"

इस आखिरी बात पर हम सब हंस पड़े सिवाय जमशैद के, उसकी समझ में नहीं आया कि वह नई दुल्हन की बात पर हँसे या पिछली पत्नी की तबाही पर अफसोस करे।

****

बनी इस्राइल (यहूदी) और मुसलमान

हम हश्र के मैदान की ओर जा रहे थे कि रास्ते में एक जगह नहूर और शाहिस्ता दिखे। उन्हें देख कर मुझे शरारत सूझी और मैंने सालेह से कहा:

'आओ जरा चलते चलते उन्हें तंग करते जाएं।'

उन दोनों का रुख़ झील की तरफ़ था इसलिए वो हमें पास आते हुए देख नहीं सके। मैं शाहिस्ता की ओर से उसके पास पहुंचा और जोर से कहा:

'ऐ लड़की! चलो हमारे साथ, हम तुम्हें एक गैर मर्द के साथ घूमने फिरने के आरोप में गिरफ्तार करते हैं।'

शाहिस्ता मेरी ऊँची आवाज़ और सख्त लहजे से एकदम घबरा कर पलटी, लेकिन नहूर पर मेरी बात का कोई असर नहीं हुआ। उन्होंने इत्मीनान के साथ मुझे देखा और कहा:

"फिर तो मुझे भी गिरफ्तार कर लीजिये, मैं भी इस जुर्म में शामिल हूँ।" यह कहते हुए उन्होंने दोनों हाथ आगे फैला दिए, फिर हंसते हुए कहा:

"मगर समस्या यह है कि यहां न जेल है और न सज़ा देने की जगह।"

'जेल तो यहां नहीं है, लेकिन सज़ा जरूर मिल सकती है, वह यह कि शाहिस्ता ही के साथ आप की शादी करा दी जाए। सारा जीवन एक ही औरत के साथ रहना वह भी जन्नत में बड़ी सज़ा है।'

इस पर नहूर ने एक जोरदार कहकहा लगाया, शाहिस्ता जो मेरे शुरुआती हमले के बाद संभल चुकी थी, हँसते हुए बोली:

"वैसे तो आप लोग तौहीद (एकेश्वर) पर ईमान रखने के बड़े कायल हैं, लेकिन इस मामले में आप लोगों की सोच इतनी शिर्क करने वाली क्यों हो जाती है?"

नहूर ने अपने चेहरे पर नकली गंभीरता लाते हुए कहा:

"आप जानते हैं अब्दुल्लाह! शिर्क करने वालों का अंजाम जहन्नम है, इसलिए आगे से आप शाहिस्ता के सामने ऐसी शरीक करने वाली बात मत करयेगा वरना आपकी खैर नहीं।"

सालेह ने बातचीत में हस्तक्षेप करते हुए कहा:

"शाहिस्ता! आप इत्मीनान रखें, यह व्यवहारिक रूप एक ही के कायल हैं, इनकी एक ही बेगम हैं।"

इस पर नहूर मुस्कुराते हुए बोले:

"यह इनका कारनामा नहीं, इनके जमाने में मजबूरी थी, खैर छोड़ें इसे, ये बताइये कि आपकी बेगम साहिबा हैं कहां?"

मैं अभी भी गंभीर होने के लिए तैयार नहीं था, मैंने उनकी ओर शरारत भरे अंदाज में देखते हुए कहा:

'हमें कुछ दूसरों बड़े लोगों की तरह बीवियों के साथ घूमने की फुर्सत नहीं है।'

"लेकिन दूसरों की फुर्सत को नज़र लगाने की फुर्सत ज़रूर है।" नहूर ने उसी लब व लहजे में जवाब दिया।

'हम खुश होने वाले लोग हैं, नज़र लगाने वाले कभी नहीं।'

"मगर आपने मुझे तो नज़र लगा दी है।" फिर तफसील करते हुए बोले:

"मेरे पैग़म्बर यर्मियाह नबी को गवाही देने के लिए बुला लिया गया है, क्योंकि मैं उनका करीबी साथी था, इसलिए मेरा वहां मौजूद होना ज़रूरी है।"

यह आखिरी बात कहते हुए उनके चेहरे पर गंभीरता आ गई थी।

"आप जा रहे हैं?" शाहिस्ता ने पूछा।

"हाँ, तुम अपने घर वालों के पास चली जाओ, कुछ देर तक इन मामलों में व्यस्त रहूंगा, अब्दुल्लाह ने मुझे नज़र जो लगा दी है।"

यह कहकर वह फरिश्तों के साथ रवाना हो गए जो उन्हें लेने आए थे।

'सारे नबी तो अपनी उम्मतों पर गवाही दे चुके, यह यर्मियाह नबी की गवाही किस चीज़ की हो रही है?' मैंने सालेह की ओर देखते हुए पूछा।

"जिन मुजरिमों ने उनके साथ ज़ुल्म किया था, उन्हें भी उनके अंजाम तक पहुंचना है, यह गवाही इस संबंध में है।"

सालेह ने जवाब दिया। फिर हम दोनों भी हश्र की ओर रवाना हो गए।

.....

अर्श के सामने यर्मियाह के ज़माने के सभी यहूदी जमा थे, उनका समय यहूदी इतिहास का एक महत्वपूर्ण दौर था। यहूद या बनी इस्राइल हज़रत इब्राहीम के छोटे बेटे हज़रत इसहाक़ और उनके बेटे याकूब की सन्तान में से थे। हज़रत याकूब जिन का उपनाम इस्राइल था उनके बारह बेटे थे, उन्हीं की संतान को बनी इस्राइल कहा गया। इन बारह बेटों में सबसे मशहूर हज़रत यूसुफ थे, हज़रत याकूब और उनके बारह बेटे फ़िलिस्तीन में बसे थे। मगर हज़रत यूसुफ के जमाने में यह सब मिस्र चले गए, कई सदियों तक मिस्र में रहे उनकी संख्या लाखों तक पहुंच गई।

हज़रत मूसा (अ) की पैदाइश के समय फ़िरऔन ने यहूद्यों को गुलाम बना रखा था। खुदा ने हज़रत मूसा के द्वारा लोगों को फ़िरऔन के ज़ुल्मों सितम से आज़ादी दी और लोगों को एक उम्मत बनाया। किताब और शरीयत (खुदाई क़ानून) उन पर नाज़िल हुई, लेकिन सदियों की गुलामी ने उनमें कायरता, शिर्क और दूसरी नैतिक गड़बड़ियां पैदा कर दी थीं। इसलिए उन लोगों ने अल्लाह के हुक्म के बावजूद फ़िलिस्तीन को वहां मौजूद शिर्क करने वालों से जिहाद करके जीतने से इन्कार कर दिया। बाद में हज़रत मूसा के उत्तराधिकारी यूशा बिन नून (अ) के ज़माने में फ़िलिस्तीन पर जीत हुई और यह लोग वहाँ आबाद हो गए।

इसके बाद हज़रत दाऊद और हज़रत सुलैमान (अ) के ज़माने में अल्लाह तआला ने उनको एक जबर्दस्त हुकूमत दी जिसकी शोहरत दुनिया भर में थी। मगर उसके बाद इन में नैतिक पतन आया और हर तरह की नैतिक त्रुटियाँ और शिर्क उन में फैल गया। उन्हें पैगम्बरों ने बहुत समझाया लेकिन यह बाज नहीं आए, नतीजतन उन पर हार थोप दी गई। आसपास के राज्यों ने उन पर हमले पर हमले करके उनके साम्राज्य को बहुत कमजोर कर दिया।

जब हज़रत यर्मियाह आए यहूदी उस दौर की महान महाशक्ति इराक और उसके राजा बख्त नस्र की तलवार के नीचे थे। इस दौर में बनी इसराइल का नैतिक पतन अपनी अंतिम सीमाओं को छू रहा था। उन में शिर्क आम था, जिना (व्यभिचार) मामूली बात थी, अपने ही धर्म के लोग के साथ अन्याय का मामला करते। ब्याज ख़ोरी और गुलामी की लानतें आम थीं, एक तरफ नैतिक पस्ती का यह आलम था और दूसरी तरफ राजनीतिक उमंगें अपने चरम पर थी। हर तरफ बख्त नस्र के खिलाफ नफरत का तूफान उठाया जा रहा था। उनके धार्मिक और राजनीतिक नेताओं का सारा ध्यान इस बात की ओर था कि राजनीतिक हार से छुटकारा मिल जाए। कौम में सुधार, नैतिक निर्माण, ईमान की ताक़त जैसी चीजें कहीं बहस में भी न थीं। धर्म के नाम पर हत्यारों का जोर था, ईमान और नैतिकता और नेकी की कोई कीमत न थी।

ऐसे में हज़रत यर्मियाह (अ) उठे और उन्होंने पूरी ताकत के साथ ईमान और अच्छे अख़लाक़ (नैतिकता) की सदा बुलंद की। उन्होंने धार्मिक गुरुओं और नेताओं की उनके रवय्ये पर आलोचना की। उनकी अख्लाकी (नैतिक) कमज़ोरियों, शिर्क और दुसरे गुनाहों पर उन्हें चेतावनी दी। साथ ही आपने अपनी कौम को सख्ती से यह चेता दिया कि वह बख्त नस्र के खिलाफ विद्रोह का ख्याल अपने मन से निकाल दें। उन्हें समझाया कि जज़्बात में आकर उन्होंने अगर यह कदम उठाया तो बख्त नस्र कहर इलाही बन कर उनके ऊपर नाज़िल हो जाएगा। मगर उनकी कौम बाज़ न आई, उन्होंने उन्हें कुएं में उल्टा लटका दिया और फिर जेल में डाल दिया। इसके साथ ही उन्होंने बख्त नस्र के खिलाफ विद्रोह कर दिया। जिसके नतीजे में बख्त नस्र ने हमला किया। छह लाख यहूदियों को उसने मार डाला और छह लाख को गुलाम बनाकर अपने साथ ले गया। येरुशलम की ईंट से ईंट बजादी गई, पूरा शहर धूल और खून में बदल गया। कुरआन ने इस घटना का वर्णन किया और बताया कि हमलावर लोग दरअसल कहर इलाही थे क्योंकि इस्राइलियों ने ज़मीन पर फसाद मचा रखा था।

मैं इसी सोच में था कि सालेह ने शायद मेरे ख्याल पढ़ कर कहा:

"ठीक यही काम तुम्हारे ज़माने में तुम्हारी कौम कर रही थी, वह इल्म (ज्ञान), शिक्षा, ईमान, अख़लाक़ में पस्ती का शिकार थी, लेकिन उनके तथाकथित नेता नेता यही समझाते रहे कि सारी परेशानी समय की सुपर पावर और उसकी चालों (षड्यंत्रों) की वजह से है। ईमान और अख्लाकी सुधार के बजाय ताक़त और सत्ता ही को उनकी मंजिल बनाने में लगे रहे। मिलावट, भ्रष्टाचार,

नाजाइज़ मुनाफा ख़ोरी, दोगला पन और शिर्क लोगों की मूल समस्या थी, नबुव्वत खत्म हो जाने के बाद उनकी जिम्मेदारी थी कि वह दुनिया भर में इस्लाम का पैगाम (संदेश) पहुंचाते, लेकिन उन लोगों ने कौम में सुधार और गैर मुसलमानों को इस्लाम का पैगाम पहुंचाने के बजाय गैर मुस्लिमों से नफरत को तरीका बना लिया। उनके खिलाफ जंग और जदल का मोर्चा खोल दिया, ठीक उसी तरह जैसे यहूदीयों ने अपना सुधार करने के बजाय बख्त नस्र के खिलाफ मोर्चा खोला था। इसलिए बनी इस्राइल की तरह उन्होंने भी इस तरीके का बुरा नतीजा भुगत लिया।"

इसी बीच में ऐलान हुआ:

"यर्मियाह को पेश किया जाए।"

थोड़ी देर में यर्मियाह कुछ फरिश्तों के साथ तशरीफ़ लाए। वह अर्श के सामने खड़े हो गए, लेकिन उन्होंने कुछ कहा नहीं।

सालेह ने कहा:

"अल्लाह अपने नबी का मुक़दमा खुद पेश करेंगे।"

सालेह ने ये शब्द कहे ही थे कि आसमान पर एक फिल्म सी चलने लगी। और सभी निगाहें इन मंज़रों (दृश्यों) को देखने के लिए ऊपर की ओर उठ गईं।

.....

यह एक बहुत बड़ी तबाही का मंजर था। हर तरफ आग भड़क रही थी, आग की लपटों का नाच चल रहा था, जलते हुए घर और संपत्ति से उठने वाले काले धुंए आसमान को छू रहे थे। वातावरण में आहें, चीखें और सिसकियाँ बुलंद हो रही थीं, ज़मीन मासूमों और मुजरिमों के खून से रंगीन थी, इंसानों को बुरी तरह मारा जा रहा था, घरों को लूटा जा रहा था, औरतों की गली कूचों में इज्ज़त लूटी जा रही थी। येरुशलम की गलियों में हर तरफ इराक के राजा बख्त नस्र के सैनिक दनदनाते हुए फिर रहे थे, उनके सामने एक ही मक़सद था, यहूद्यों के पाक (पवित्र) शहर और उसके वासियों को तबाह करके रख दें।

इस अराजकता और हंगामे में कुछ सिपाही एक कमांडर के साथ घोड़ों पर सवार तेजी से एक दिशा में बढ़े जा रहे थे। शहर के कोने में बने जेल खाने के पास पहुंचकर वे रुके और अपने

घोड़ों से उतर कर खड़े हो गए। उनका कमांडर आगे बढ़ा और जेल खाने में कैदियों की ओर देखते हुए पुकारा:

"तुम में से यर्मियाह कौन है?"

उसकी बात का कोई जवाब नहीं आया, लेकिन सभी कैदियों की नज़रें एक पिंजरे की ओर उठ गईं जहां एक कैदी को पिंजरे में बहुत बेरहमी से रस्सियों से जकड़ कर रखा गया था। कमांडर को अपने सवाल का जवाब मिल गया था। उसने सिपाहियों की ओर देखा, वह तेजी से आगे बढ़े, पिंजरे को खोला और यर्मियाह को रस्सियों की कैद से रिहाई दिलाई। वह इतने निढाल थे कि ज़मीन पर गिर पड़े, कमांडर उन की ओर बढ़ा और उनके सामने जाकर खड़ा हो गया और नरमी से पुकार कर कहा:

"यर्मियाह! तुम ठीक तो हो।"

कैदी ने धीरे से आंखें खोलीं, मगर ज़्यादा कमजोरी से उनकी आँखें फिर बंद हो गईं, कमांडर ने उनकी ओर देखते हुए गर्व के साथ कहा:

"यर्मियाह तुम्हारी भविष्यवाणी पूरी हो गई, हमारे राजा बख्त नस्र शाह इराक ने येरुशलम की ईंट से ईंट बजादी, आधी आबादी मौत के घाट उतारी जा चुकी है और आधी आबादी को हम गुलाम बनाकर अपने साथ ले जा रहे हैं, मगर तुम्हारे लिए राजा का विशेष आदेश है कि तुम्हें कोई नुकसान न पहुंचे, तुम एक सच्चे आदमी हो, तुमने अपनी क़ौम को बहुत समझाया, लेकिन वह बाज नहीं आए और उन्होंने उनकी सज़ा भुगत ली।"

यह कहकर वह पीछे मुड़ा और सिपाहियों को आदेश दिया:

"यर्मियाह को छोड़ कर बाकी सब कैदियों को क़त्ल कर दो। इसके बाद इस शहर के आदमियों के लहू से अपनी प्यास बुझाओ और इन की औरतों से अपने खून की गर्मी को ठंडा करो, जो चीज़ हाथ आए उसे लूट लो और जो बाकी बचे उसे आग लगा दो।"

कैदियों को क़त्ल कर दिया गया और सिपाही लूटमार के लिए दूसरी दिशाओं में निकल गए। यर्मियाह अपने शरीर की पूरी ताक़त समेट कर उठे और पिंजरे की दीवार का सहारा लेकर बैठ

गए। उनकी आंखों के सामने उनका शहर जल रहा था, उनके शरीर का जोड़ जोड़ दुःख रहा था, लेकिन उससे कहीं ज़्यादा दर्द उन्हें अपनी क़ौम की बर्बादी का था।

फिर स्क्रीन पर उनकी ज़िन्दगी और उनके दौर के कई मंज़र एक एक करके सामने आने लगे। वह कौम के नेता और जनता को समझा रहे थे, लेकिन उनकी बात कोई नहीं सुन रहा था। उनकी कौम इराक के राजा और जबर्दस्त शासक बख्त नस्र के अधीन थी, वार्षिक कर (टैक्स) बख्त नस्र को भेजना ही उनके अपने देश में ज़िन्दा रहने की वजह थी। इस गुलामी की वजह वो अख्लाकी पस्ती (नैतिक पतन) थी जो कौम की रग रग में समां गयी थी। तौहीद (एकेश्वर) को मानने वालों में शिर्क आम था। बलात्कार और किमार बाज़ी सामान्य थी, धोका और अपने लोगों पर ज़ुल्म का चलन था। झूठी कसमें खाकर माल बेचना और पड़ोसियों पर ज़ुल्म करना उनका नियम था, वे भारी ब्याज पर क़र्ज़ देते, जो कर्जदार कर्ज अदा न कर पाता उसके परिवार को गुलाम बना लेते थे। मज़हबी आलिम (धार्मिक विद्वान) लोग लोगों में सुधार करने के बजाए उन्हें कौमी गर्व से ग्रस्त किए हुए थे। ईमान, अख्लाक और शरीयत के बजाय सिर्फ जानवरों की क़ुरबानी ही को असल धर्म समझ लिया गया था। उनके नेता क्रूर और रिश्वत खोर थे, इन्साफ के बजाय ऐश परस्ती का चलन था। लेकिन पूरी कौम इस बात पर जमा थी कि हमें बख्त नस्र की गुलामी से निकल कर विद्रोह कर देना चाहिए। सच्चाई यह थी कि उन पर खुदा का अज़ाब था, मगर उन्हें यह बताने के बजाय कौमी गर्व और सुलैमान और दाऊद की महानता पाने के सपने दिखाए जा रहे थे। उन्हें सुपर पावर बन्ने की दुहाई दी जा रही थी हालांकि वह ईमान व अख्लाक से दूरी का शिकार थे।

फिर स्क्रीन पर वह मंज़र सामने आया जब यर्मियाह पर 'व्ही' (आकाशवाणी) आई कि अपनी कौम में सुधार करो, उन्हें सियासत से निकालकर हिदायत की तरफ लाओ। एक बार सच्ची खुदा परस्ती पैदा हो गई तो सियासत में भी तुमको कामयाबी मिलेगी। उन्हें हुक्म था कि वह शादी करके घर बसाने के बजाय कौम को आने वाली तबाही से खबरदार करें। मगर जब यर्मियाह (अ) यह पैगाम (संदेश) लेकर उठे तो हर तरफ से विरोध शुरू हो गया। खुदा के इस नबी ने अपने ज़माने के आम लोग, ख़ास लोग, धार्मिक गुरु और नेता सब को पुकारा, लेकिन गिनती के कुछ लोगों को छोड़कर किसी ने उनकी बात नहीं सुनी। उनकी दावत बिल्कुल आसान थी, बख्त नस्र से टकराने के बजाय अपने ईमान और अख्लाक में सुधार करो।

स्क्रीन पर सबसे नाटकीय सीन वह था जब यर्मियाह राजा के दरबार में लकड़ी का जुआ (हल का वह हिस्सा जो जानवरों को खेत जोतने के लिए उनके गले पर डाला जाता है) पहनकर पहुंचे थे। यह उन लोगों को समझाने की आखिरी कोशिश थी कि इस समय तुम पर लकड़ी का जुआ डला हुआ है उसे तोड़ने की कोशिश करोगे तो लोहे के जुए में जकड़ दिए जाओगे। मगर दरबारयों और आलिमों ने उन्हें बख्त नस्र का एजेंट करार दे दिया, बादशाह ने आगे बढ़कर लकड़ी का जुआ तलवार से काट डाला। इसके साथ ही तय हो गया, अब उनके गले में लोहे की बेड़ियाँ डाली जाएंगी।

अल्लाह के इस नबी को बख्त नस्र का एजेंट करार देकर सज़ा के तौर पर पहले कुएं में उल्टा लटकाया गया और फिर एक पिंजरे में बांध दिया गया। बख्त नस्र के ख़िलाफ़ बग़ावत कर दी गई, जवाब में बख्त नस्र अज़ाब इलाही बनकर टूट पड़ा। फिर स्क्रीन पर वही पहला मंज़र आ गया जब अज़ाब की बारिश से येरुशलम नहा रहा था। यर्मियाह ने आँखें खोल कर आसपास पड़ी बे कफ़न लाशों और चारों ओर फैली तबाही पर एक नज़र डाली और ऊँची आवाज़ से कहा:

मैंने तुम लोगों को कितना समझाया, मगर तुमने सियासी सौदे बाजों और साम्प्रदायिक जाहिल धार्मिक गुरुओं की बातों को माना। तुम समाज के अच्छे बुरे और खुदा के हुक्मों से बेपरवाह होकर ज़िन्दगी गुज़ारते रहे। आखिरकार उसकी सज़ा सामने आ गई।

फिर यर्मियाह ने आसमान की ओर नज़र उठाई और धीरे से बोले:

"पूरे इन्साफ का दिन आएगा, ज़रूर आएगा, लेकिन कुछ इंतजार के बाद।"

.....

इसके साथ ही मंज़र (दृश्य) ख़त्म हो गया और एक जोरदार डाँट फिजा में बुलंद हुई। खुदा का गुस्सा अपने चरम पर था, उनके नबी के साथ जो कुछ बनी-इस्राइल ने किया था उसकी जो सज़ा बख्त नस्र के रूप में उन्होंने भुगती थी वह बहुत मामूली थी। असल सज़ा का समय तो अब आया था। हुक्म हुआ हर उस आदमी को पेश किया जाए जो किसी रूप में भी यर्मियाह के साथ किये गए इस ज़ुल्म में शामिल था।

नेताओं और धार्मिक गुरुओं और आम लोगों का वह ग्रुप पेश हुआ जो इस सब का जिम्मेदार था। उन में सज़ा देने वाले भी थे और वे भी जो यर्मियाह (अ) को बख्त नस्र का एजेंट करार देकर उनके खिलाफ लोगों को भड़का रहे थे। इन सब के लिए जहन्नम का फैसला सुना दिया गया, फिर उसके बाद एक एक करके उस ज़माने के लोगों का घेराओ शुरू हुआ। नबी के मुजरिमों का घेराओ जिस तरह होना चाहिए था वैसे ही हुआ हरेक मुजरिम के लिए बड़ी बड़ी सज़ा का फैसला हो गया।

.....

मैं इस बार हश्र में देर तक खड़ा रहा और लोगों का हिसाब किताब देखता रहा। सच्ची बात यह है कि इससे पहले मैंने कुछ ही लोगों का हिसाब किताब देखा था। लेकिन अब अंदाज़ा हो रहा था कि खुदा सबसे पूरा पूरा और सही इन्साफ कर रहे हैं। हर आदमी के हालात, उसके माहौल और उसकी परवरिश के नतीजे में बनने वाली नफ्सियात (सोच) की रोशनी में आमाल (कर्मों) की समीक्षा की जा रही थी। लोगों ने राई के दाने के बराबर भी कोई अमल किया था तो उनकी आमाल की फाइल में वह दर्ज था। उनकी नीयत, वजह और अमल हर चीज़ को परखा जा रहा था। फरिश्तों का रिकॉर्ड, दुसरे लोग, दर और दीवार और सबसे बढ़कर इंसान के अपने शरीर के अंग गवाही दे रहे थे। इन सब की रौशनी ही में इंसान के आखिरी मुक़द्दर का फैसला सुनाया जाता, यूँ किसी इंसान पर राई के दाने के बराबर भी ज़ुल्म नहीं हो रहा था। जिसे माफ़ करने की जरा भी गुंजाइश होती उसे माफ कर दिया जाता। अल्लाह के पूरे इन्साफ और पूरी रहमत का एक साथ ऐसा ज़हूर हो रहा था कि शब्दों से उसे बताया नहीं जासकता।

मैं इसी हाल में था कि सालेह ने मेरे कान में कहा:

"नाएमा बड़ी बेचैनी से तुम्हें ढूँड रही है।"

'खैरियत?' मैंने पूछा।

"बड़ा दिलचस्प मामला है, बेहतर है तुम खुद चले चलो।"

यह कहकर सालेह ने मेरा हाथ पकड़ा और थोड़ी ही देर में हम नाएमा के पास खड़े थे। लेकिन मुझे यह देखकर हैरत हुई कि नाएमा के साथ एक सुंदर परी जैसी लड़की खड़ी थी, मैंने अपने दिमाग पर बहुत ज़ोर डाला पर मैं उसे पहचान न सका।

नाएमा ने खुद ही उसका परिचय कराया:

"यह अमूराह हैं, और हज़रत नूह की उम्मत से हैं, यह मुझे यहीं पर मिली हैं। यह आखिरी नबी या उनके किसी ख़ास उम्मती से मिलना चाह रही थीं। नबी (ﷺ) तक तो मैं इन्हें नहीं ले जा सकती थी, लेकिन मैंने सोचा कि आप से इन्हें मिलवा दूं, आखिर आप भी तो बड़े ख़ास लोगों में से हैं।"

यह कहकर वह अमूराह को मेरा परिचय देने लगी। इस परिचय में ज़मीन आसमान के जो कलाबे वह मिला सकती थी, उसने मिलाऐ। मैंने बीच में नाएमा को रोका और अमूराह से कहा:

'नाएमा मेरी पत्नी हैं, इसलिए मेरे बारे में बढ़ा चढ़ा कर बात कर रही हैं। लेकिन उनकी यह बात ठीक है कि मैं आप को इस उम्मत के ख़ास लोगों बल्कि अपने नबी से भी मिलवा दूंगा।'

नाएमा को मेरी बात पसंद नहीं आई, वह झल्ला कर बोली:

"यदि मैं बढ़ा चढ़ा रही हूँ तो बताएँ यह सालेह आपके साथ क्यों रहते हैं और आप को कहाँ कहाँ ले कर जाते हैं?"

मैंने झगड़ा खत्म करने के लिए कहा:

'अच्छा चलो मैंने हार मानी लेकिन पहले अमूराह से पूरा परिचय तो हो लेने दो।'

अमूराह हंसते हुए बोली:

"इंसान हजारों साल में भी नहीं बदले बल्कि दोबारा ज़िन्दा होकर भी वैसे ही हैं। आप दोनों वैसे ही झगड़ा कर रहे हैं जैसे मेरे अम्मी अब्बू करते थे।"

"इनके अम्मी अब्बू से भी मेरी मुलाकात हुई है।"

नाएमा बीच में बोली, मगर यह उसका खुशी से भरपूर वाक्य था जिससे मुझे अंदाज़ा हुआ कि वह अमूराह से मिलकर इतना खुश क्यों है और क्यों उसने मुझे हश्र के मैदान से वापस बुलवाया है।

"अमूराह के पति नहीं हैं।"

मेरे अंदाज़े की पुष्टि सालेह ने कर दी। वह मेरे कान में बोला:

"नाएमा ने तुम्हारी होने वाली बहू से मिलवाने के लिए तुम्हें बुलाया है।"

मेरा अंदाज़ा सही था, नाएमा जमशैद के लिए दुल्हन ढूंड रही थी और आखिरकार उसे इस कोशिश में इस हद तक सफलता मिल चुकी थी कि लड़की उसे पसंद आ गई थी। मगर लड़के लड़की ने एक दूसरे को पसंद किया या देखा भी है यह मुझे पता नहीं था। मगर नाएमा को इस से कोई ज़्यादा फर्क भी नहीं पड़ता था, उसके विचार में उसका राज़ी हो जाना ही इस रिश्ते के लिए काफी था।

मैंने पूछा:

'अमूराह आपके पति कहाँ हैं?'

अमूराह ने कुछ शरमाकर कहा:

"दुनिया में सिर्फ 15 साल की उम्र में मेरा निधन हो गया था। मैं बचपन से ही बहुत बीमार रहती थी, अल्लाह की रहमत ने उसका यह बदला दिया कि बिना किसी हिसाब किताब के शुरू ही में मेरे लिए जन्नत का फैसला हो गया।"

'और बाकी फैसले तुम्हारी होने वाली सास कर रही है।' मैंने मन ही मन में सोचा।

सालेह के चेहरे पर भी मुस्कान आ गई। फिर अमूराह बोली:

"मुझे आप लोगों से मिलकर बहुत खुशी हुई है, जन्नत में भी हम मिलते रहा करेंगे। अच्छा अब मैं चलती हूँ, मेरे अम्मीं अब्बू मुझे ढूँड रहे होंगे।"

नाएमा भी उसके साथ जाने के लिए मुड़ी तो मैंने कहा:

'ठहरो मुझे तुमसे कुछ काम है।'

नामह ने अमूराह से कहा:

"तुम वहीं रुको जहाँ हम मिले थे, मैं अभी आती हूँ।"

मैंने मज़ाक में नाएमा से कहा:

'अमूराह से उसका मोबाइल नंबर ले लो, इस भीड़ में कहाँ खोजती फिरोगी।'

"यह मोबाइल क्या है?" अमूराह ने हैरानी से पूछा।

'यह एक ऐसी बला का नाम है जिसके बाद तुम नाएमा से बच नहीं सकती।' मैंने जवाब दिया, सालेह ने बीच में दखल देते हुए कहा:

"मेरा ख्याल है कि अमूराह अपनी मंजिल तक पहुंच नहीं सकेगी, मैं उसे पहुंचा कर आता हूँ।"

.....

अमूराह और सालेह के जाने के बाद मैं नाएमा को लेकर होज़ के किनारे एक जगह बैठ गया। मैंने उससे कहा:

'तुम्हें पता है तुम क्या कर ही हो?

"हाँ मैंने जमशैद के लिए अमूराह को पसंद किया है।"

'मुझे मालूम है, लेकिन तुम्हें पता है कि तुम्हारी पसंद से कुछ नहीं होगा।'

"मुझे मालूम है, पिछली दुनिया में हुमा के तजुर्बे के बाद अब जमशैद मेरे सामने कुछ नहीं बोल सकता और अमूराह के माँ बाप से मैं बात कर चुकी हूँ।"

'यानी लड़का और लड़की दोनों की जानकारी में यह बात नहीं है, न उनकी मर्ज़ी पूछी गई और सब कुछ तुमने तय कर दिया। नाएमा यह दुनिया नहीं है, यहाँ हम माँ बाप बस औपचारिक हैसियत रखते हैं, यहां वही होगा जो उन लोगों की मर्ज़ी होगी। इसलिए अपने दिल में कोई उम्मीद बांधने से पहले उन दोनों से पूछ लो।'

"और अगर उन्होंने मना कर दिया?"

'तो और बहुत लड़कियाँ हैं आज किसी चीज़ की कमी नहीं, तुम इस मामले में बे फ़िक्र हो जाओ।'

नाएमा चुप हो गई लेकिन उसका मन अभी तक अपनी बहू में उलझा हुआ था। मैंने उसे देखते हुए कहा:

'नाएमा हमें पहली बार यहां अकेले में बैठने का मौका मिला है। तुम कुछ देर के लिए अपनी ममता को कोने में रख दो और देखो कि यहाँ कितना अच्छा माहौल है।'

फिर मैंने उससे कहा:

"तुम्हें याद है नाएमा! हमने कितने मुश्किल वक़्त साथ साथ देखे थे। खुदा का पैगाम (संदेश) उसके बन्दों तक पहुंचाने के लिए मैंने अपनी ज़िन्दगी लगा दी। अपना कैरियर, अपनी जवानी, अपना हर सांस उसी काम के लिए समर्पित कर दिया। मगर देखो नाएमा मैंने जो सौदा किया था उसमे कोई घाटा नहीं हुआ, मैं तुम से दुनिया में कहा करता था ना कि जो खुदा के साथ सौदा करता है वह कभी घाटा नहीं उठाता, देखो हम घाटे से बच गए। कितनी शानदार सफलता हमें नसीब हुई है। हम जीत गए नाएमा... हम जीत गए। अब ज़िन्दगी है, मौत नहीं, जवानी है, बुढ़ापा नहीं, अब स्वास्थ्य है, बीमारी नहीं, अब अमीरी है, गरीबी नहीं, अब हमेशा रहने वाली खुशियां हैं और कोई दुख नहीं।'

"मुझे तो कोई दुख याद नहीं आ रहा।"

'हाँ, आज किसी जन्नत में जाने वाले को न दुनिया का कोई दुख याद है और न जहन्नम में जाने वाले को दुनिया का कोई सुख याद है। दुनिया तो बस एक ख्याल था, सपना था, कहानी था। हक़ीक़त तो अब शुरू हुई है, ज़िन्दगी तो अब शुरू हुई है।'

"ज़रा सामने देखिये समां बदल रहा है।"

मैंने उसके कहने से ध्यान किया तो एहसास हुआ कि वाकई अब शाम डखलने के बिल्कुल करीब हो चुकी है। मुझे अहसास हुआ कि यह परिवर्तन किसी ख़ास बात की निशानी है।

पीछे से एक आवाज़ आई:

"हां तुम ठीक समझे।"

यह सालेह की आवाज़ थी, वह मेरे पास बैठते हुए बोला:

"इस बदलाव का मतलब है कि हिसाब किताब खत्म हो रहा है। सभी लोगों का हिसाब किताब हो चुका है।"

'पहले यह बताओ अमूराह को छोड़ कर तुम कहाँ रह गए थे। तुम न पानी पीने जा सकते हो न शौचालय जाना तुम्हारे लिए मुमकिन है, फिर तुम थे कहाँ?'

"मैं इम्साइल के साथ था।"

इसके साथ ही इम्साइल पीछे से निकल कर सलाम करता हुआ सामने आकर खड़ा हो गया। यह मेरे बाएँ हाथ का फरिश्ता था, मैंने सलाम का जवाब दिया और हंसते हुए सालेह से पूछा:

'इनकी तशरीफ़ लाने की वजह?'

"हिसाब किताब ख़त्म हो चुका है अब तुम्हें पेश होना है। हम दोनों मिलकर तुम्हें अल्लाह के हुज़ूर पेश करेंगे।"

पेशी का सुनकर मुझे पहली बार घबराहट पैदा हुई। मैंने घबरा कर सवाल किया:

'हिसाब इतनी जल्दी कैसे खत्म हो गया?'

"मैं तुम्हें पहले बता चुका कि यहां समय बहुत तेजी से बीत रहा है और हश्र में समय बहुत धीरे। इसलिए जितना समय तुम यहाँ रहे हो इतने समय में वहां हिसाब किताब ख़त्म हो चुका।"

'वहाँ मेरे पीछे क्या हुआ था?'

"सभी उम्मतों का जब सामान्य हिसाब किताब हो गया तो हश्र के मैदान में सिर्फ वे लोग रह गए जो ईश्वर के होने का यकीन तो रखते थे, लेकिन उनके गुनाहों की बिना पर उन्हें रोक लिया गया था। आखिरकार हुज़ूर की दरख्वासत (अनुरोध) पर उनका भी हिसाब हो गया। अब आखिर में सारे नबी और शाहिद पेश होंगे।"

"क्या शाहिद वे लोग हैं जो अल्लाह की राह में क़त्ल हुए?" नाएमा ने सालेह से सवाल किया।

"नहीं यह वो शाहिद नहीं, वह भी बड़े ऊँचे रुत्बों के मालिक बने हैं, लेकिन यह शाहिद हक़ की गवाही देने वाले लोग हैं। यानी उन्होंने इंसानों पर अल्लाह के दीन की गवाही के लिए अपनी ज़िन्दगी लगा दी थी, यही वह लोग हैं जिन्होंने नबियों के बाद उन की दावत को आगे पहुंचाया।

'क्या उनका भी हिसाब होगा?' मैंने पूछा क्योंकि मुझे हिसाब के ख्याल से ही घबराहट हो रही थी।

"नहीं बस बारगाह इलाही में उनकी पेशी होगी और उनकी निजात (मुक्ति) का ऐलान होगा। लेकिन अल्लाह तआला सारे आलमों के रब और हर चीज़ के मालिक हैं। वह जब चाहें जो चाहें हिसाब कर सकते हैं, कोई भी उन्हें रोक नहीं सकता।"

मेरे मुंह से निकला:

'रब्बिग फिर वरहम।' (ऐ मेरे रब मुझे बख्श दे और रहम कर)।

"मैं खुदा के इख्तियार (अधिकार) का बयान कर रहा हूं, यह नहीं कह रहा कि खुदा यह करेंगे। दरअसल अब जन्नत और जहन्नम में दाखिले (प्रवेश) का समय आ रहा है। इसलिए अब जन्नती और जहन्नमी सब को हश्र के मैदान में जमा कर दिया जाएगा। उन सबके सामने नबियों और शहीदों की सफलता की घोषणा होगी। फिर गिरोह दर गिरोह नेक और मुजरिम लोगों को जन्नत और जहन्नम में भेजा जाएगा, जिसके बाद खत्म न होने वाली ज़िन्दगी शुरू हो जाएगी।

****

आखिरी अंजाम की तरफ रवानगी

मैं अन्य शोहदा और नबियों के साथ एक बार फिर आराफ की ऊंचाई पर खड़ा था। इस उंचाई से हश्र का मैदान बिल्कुल साफ नज़र आ रहा था, नज़र की हद तर फैले हुए इस मैदान में लोगों को दो समूहों में जमा कर दिया गया था। मैदान के दाहिने तरफ नज़र की हद तक लोगों की एक के पीछे एक लाइन बनी हुई थी, यह जन्नत वाले थे। उनके चेहरे रोशन, आंखों में चमक और होंटों पर मुस्कान थी। उनके दिल खुशी से नाच रहे थे और उनकी रूहें शुक्र गुज़ारी (आभार)

के अहसास में डूबी हुई थी। यह दाहिने हाथ वाले थे, दाहिने हाथ वालो की खुशकिस्मती का क्या कहना!

मैदान के बाईं ओर लोग एक हुज्जूम के रूप में घुटनों के बल बैठे थे, उनके हाथ पीछे करके बांधे गए थे और जहन्नम का नज़ारा उनके सामने था। यह जहन्नमी थे जिनके लिए हमेशा के घाटे का फैसला सुनाया जा चुका था। वह अपने अंजाम की आहट को महसूस कर रहे थे, उनके चेहरे उतरे हुए, आँखें बुझी हुई सर गर्द गुबार से भरे हुए और गर्दन झुकी हुई थी। उनकी रंगत स्याह पड़ चुकी थी, शरीर पर गर्द गुबार अटा हुआ था। यह बाएं हाथ वाले थे, बाएं हाथ वालों की बदनसीबी का क्या कहना!

सामने अर्श इलाही था। उसके जलाल व जमाल (महिमा) का क्या कहना! अर्श के आसपास लाइनों में फरिश्ते खड़े हुए थे। उनके बीच में अर्श से मिले हुए आठ बहुत ख़ास (असाधारण) फरिश्ते खड़े हुए थे, यह अर्श को उठाने वाले फरिश्ते थे। फरिश्तों की ज़ुबानों पर खुदा की तारीफ़ और बड़ाई (स्तुति) के शब्द जारी थे, जबकि अर्श के पीछे कुछ ऊंचाई पर जन्नत और जहन्नम दोनों का नज़ारा साफ दिख रहा था। दाहिने ओर जन्नत थी जिससे उठने वाली खुशबुओं ने हश्र के दाहिने हिस्से को महका रखा था और वहां के नगमों ने दिलों के तारों को छेड़ दिया था। जन्नत की बस्ती के खुबसूरत मंज़र, हरे हरे बाग़, बागीचे, महल, नदियाँ, नौकर साफ़ तौर से नजर आरहे थे, इस जन्नत का मंज़र (दृश्य) हर आदमी की आंखों को ललचा रहा था। जन्नती अपनी खुश नसीबी पर रश्क करते, जन्नत की आरज़ू मन में लिए एक दूसरे के साथ खुशियाँ बाँट रहे थे।

दूसरी तरफ जहन्नम का सबसे भयानक नज़ारा अर्श के बाएँ तरफ दिखता था। आग के शोले साँप के फन की तरह बार बार लपक रहे थे। जहन्नम में दिए जाने वाले तरह तरह के आज़बों का नज़ारा दिलों को दहला रहा था। बदबू, सड़न, आग, ज़हरीले कीड़े, वहशी जानवर, कड़वे कसीले फल, काँटेदार झाड़, पीप और लहू का खाना, खोलता हुआ पानी, उबलते हुए तेल की तलछत, उन जैसे अनगिनत अज़ाब और सबसे बढ़कर बहुत खौफनाक फरिश्ते जो हाथों में कोड़े, ज़नजीरें, तौक़ और हतोड़े जैसे हथियार लेकर जहन्नम वालों का स्वागत करने के लिए मौजूद थे।

जहन्नम वालों की बदहाली पहले ही कुछ कम न थी कि अब जहन्नम को उन्होंने अपनी आंखों से देख लिया था। इस मंज़र ने उनकी हिम्मत को आखिरी दर्जे में तोड़ डाला था। वह वहशत भरी नज़रों से यह मंज़र देख रहे थे, उनमे से हर आदमी की सबसे बड़ी ख्वाहिश (इच्छा) थी कि किसी तरह उनकी मौत का फैसला सुना दिया जाए। मगर अफसोस कि जहन्नम में हर अज़ाब था सिवाय मौत के, क्योंकि जहन्नम वालों के लिए मौत सबसे बड़ी राहत थी लेकिन जहन्नम अज़ाब की जगह थी, राहत की नहीं।

जन्नत वालों और जहन्नम वालों के बीच में एक पारदर्शी पर्दा था। जिससे दोनों एक दूसरे को देख सकते और बातचीत कर सकते थे, लेकिन उस परदे के पार नहीं जा सकते थे। जन्नत वाले जहन्नम वालों से पूछते कि हमने तो अपने रब के वादों को सच पाया जो उस ने हमसे किये थे। क्या तुमने भी जहन्नम के सारे वादे और विवरण सच पाए जो ईश्वर ने तुम से किए थे। जहन्नम वालों के पास जवाब में स्वीकार कर गर्दन झुका देने और हां कहने के अलावा कोई और चारा ही नहीं था ।

वह भूख और प्यास से बिलख रहे थे, इसलिए सामने जन्नत वालों के मेवे, और तरह तरह के पकवान खाते और पीते देखते तो कहते कि पानी और दूसरी चीज़े जो खुदा ने तुम्हें दी हैं, कुछ हमें भी खाने के लिए दे दो, जवाब मिलता कि खुदा ने जहन्नम वालों पर यह सब चीज़े हराम कर रखी हैं।

हम ऊपर खड़े यह सब देख और सुन रहे थे, हालांकि हमारे फैसले का ऐलान एक रस्मी सी बात थी, लेकिन न जाने क्यों मेरा दिल डर रहा था। मैं अल्लाह तआला से उसकी रहमत और माफ़ी का सवाल कर रहा था। मैं दुआ कर रहा था कि परवरदिगार हमें जहन्नम वालों का साथी न बना बल्कि जन्नत में दाखिल फ़रमा, यही दुआ दूसरे लोग भी कर रहे थे।

यह मेरी हालत थी जबकि कुछ दूसरे साथी इस मौके पर आगे बढ़े और पुकार कर जन्नत वालों को बधाई देने लगे। वह कह रहे थे कि आप पर खुदा की रहमत और सलामती (सुरक्षा) हो। इस मौके पर नबी आगे बढ़े और अपनी क़ौम के काफ़िर सरदारों को पहचान कर कहने लगे:

"कहाँ है आज तुम्हारी सरदारी, तुम्हारी फौज और तुम्हारा घमंड?"

फिर वह जन्नत वालों की तरफ़ इशारा करके कहते कि क्या यह वही गरीब लोग हैं जिन्हें तुम नीच समझते थे और सोचा करते थे कि उन्हें खुदा की रहमत से कोई भाग ना दुनिया में मिला है और न कभी मिलेगा। देख लो आज वह किस ऊँचे मक़ाम (स्थान) पर हैं।

इसी बीच में ऐलान हुआ कि हमारे नबियों और शोहदा को उनका आमाल नामा उन्हें दे दिया जाए। मेरी उम्मीद से उलट इस मौके पर हिसाब किताब या पेशी नहीं हुई, सिर्फ यह हुआ कि हर आदमी को आगे सामने की ओर बुलाया जाता जहां से हर जन्नती और जहन्नमी उसे देख सकता था। वह आदमी अपने साथ मौजूद फरिश्तों के साथ चलता हुआ आगे आता। फरिश्ते बहुत इज्ज़त के साथ उसे अर्श के सामने ले जाते, जहां ज़िन्दगी में उसके कारनामों और आखिरत (परलोक) में उनकी सफलता की घोषणा की जाती।

जब कोई आदमी पेश होता, उसके ज़माने के सारे हालात, जिन लोगों को उन्होंने दीन पहुँचाया उनकी प्रतिक्रिया और सब कुछ विस्तार से बताया जाता। बाकि लोग यह सब सुनते और दाद देते। आखिर में जब उसकी सफलता और दर्जे का ऐलान होता तो मुबारक बाद की गूंज उठती। जन्नत वाले तालियां बजाते और कुछ सीटियाँ और चीखें मार कर अपनी खुशी का इजहार करते।

जब मेरा नाम पुकारा गया तो साथ खड़े हुए सारे लोगों ने बधाई दी। मैं सालेह और इम्साइल के साथ किनारे पर पहुँचा जहाँ से मैदान में खड़े सभी लोग मुझे देख सकते थे। इम्साइल ने मेरा आमाल नामा उठा रखा था, जबकि सालेह मेरे आगे आगे चल रहा था। वहां पहुंच कर मैं सर झुका कर खड़ा हो गया। आवाज आई:

"अब्दुल्लाह सर झुकाने का समय बीत गया, अब सर उठाओ, लोग तुम्हें देखना चाहते हैं।"

मैंने सर उठाया इस तरह कि मेरी आंखों में शुक्र गुज़री (आभार) के आंसू और मेरे होंठों पर जीत की मुस्कान थी। सालेह और इम्साइल ने बारगाह इलाही से इशारा पाकर मेरी ज़िन्दगी का विवरण बताना शुरू किया। मैंने मैदान की ओर नज़र दौड़ाई तो देखा कि मेरे परिवार वाले, दोस्त, मेरा साथ देने वाले खुदा के बन्दे, मेरी दावत कुबूल करने वाले ईमान ला चुके लोग, एक ईश्वर और आखिरत की बातें सुन कर गुनाहों से तौबा करने वाले मर्द और औरतें सब मुझे देख कर हाथ हिला रहे थे। मैं भी जवाब में हाथ हिलाने लगा, मगर मेरी नज़र नाएमा को खोज रही

थी। वह अपने बच्चों के बीच खड़ी थी, उसकी आंखों में आंसू थे और वे भी हंस रही थी। उसे जब लगा कि मैं उसे देख रहा हूँ तो उसने शरमाकर नज़र झुका दी। लैला उसके बराबर में खड़ी थी, वह सबसे ज़्यादा जोश में थी और अपनी कुर्सी पर चढ़ी तालियां बजा रही थी, जबकि आरफा, आलया, अनवर और जमशैद अपनी सीटों पर खड़े उत्साहित अंदाज में हाथ हिला रहे थे।

मैंने कुछ देखने के लिए नज़रें मैदान की बाईं ओर घुमाई। यहाँ एक दूसरा ही मंज़र था। शर्मिंदगी, अपमान, पछतावे, अंदेशे, निराशा, परेशानी, यातना, मुसीबत, मलामत, लज्जा और हसरत की खत्म न होने वाली काली रात थी जो जहन्नम वालों पर छाई हुई थी। अगर ज़मीन आसमान में बोलने की शक्ति होती तो वह जहन्नम वालों के हाल पर नोहा पढ़ते। मेरा दिल चाहा कि मैं किसी तरह समय का पहिया उल्टा घुमाकर पुरानी दुनिया में लौट जाऊँ और यह मंज़र दुनिया वालों को दिखा सकूँ। मैं चीख चीख कर उन्हें बताऊँ कि मेहनत करने वालो! एक दूसरे से मुकाबला करने वालो! माल और सामान की रेस लगाने वालो! मुकाबला करना है तो उस दिन की कामयाबी के लिए करो, रेस लगानी है तो जन्नत पाने के लिए लगाओ, योजना बनानी है तो जहन्नम से बचने की योजना बनाओ। प्लाट, दुकान, मकान, बंगले, स्टैटस, कैरियर, गाड़ी, जेवर और कपड़े के दिखावे में एक दूसरे को पीछे छोड़ने वालो! दुनिया के मिलने पर हंसने और उसकी नुक्सान पर रोने वालो! हंसना है तो जन्नत की उम्मीद पर हंसो और रोना है तो जहन्नम के अंदेशे पर रोओ। मरना है तो उस दिन के लिए मरो और जीना है तो उस दिन के लिए जिओ.... जब ज़िन्दगी शुरू होगी.... कभी न खत्म होने के लिए।

मेरी आंखों से बहने वाली आंसुओं की लड़ी और तेज हो गई, इस बार यह आँसू खुशी के नहीं थे, इस एहसास के थे कि शायद मैं थोड़ी सी मेहनत और करता तो ज़्यादा लोगों तक मेरी बात पहुंच जाती और कितने ही लोग जहन्नम में जाने से बच जाते। मेरे दिल में तड़प कर एहसास हुआ, काश एक मौका और मिल जाए, काश कोई गुज़रा हुआ समय फिर लौट आए, ताकि मैं एक एक आदमी को झिंझोड़ कर उस दिन के बारे में खबर दार कर सकूं। मेरे दिल की गहराइयों से तड़प कर एक आह निकली, मैंने बड़ी बेबसी से नज़र उठाकर अर्श की ओर देखा, वहाँ हमेशा की तरह रुख-ए-अनवर पर जलाल (महिमा) का पर्दा था। मेरी नज़र उन कदमों पर आकर ठहरगई, जहां से मैं कभी नामुराद नहीं लौटा था। इस हकीर और गरीब बन्दे की सारी पहुंच इन क़दमों तक ही थी। सारे जहां से बेनियाज़ (जिसे कुछ ज़रुरत ना हो) शहंशाह के लिए इस बात

का कोई महत्व हो तब भी, और उसका कोई महत्व ना हो तब भी। यही मेरी कुल जमा पूँजी थी, यही मेरी कुल पहुंच थी।

दिल को कुछ करार हुआ तो मेरी नज़र फिर जहन्नम वालों की तरफ फिर गई, इनमें से बहुत से लोग ऐसे थे जिन्हें मैं जानता था, उनकी संख्या बहुत अधिक थी। यह आपस में घुस कर गुलामों कि तरह बैठे हुए थे। यह लोग नज़र नहीं मिला रहे थे बल्कि बहुत सौं ने तो पीठ फेर ली थी। इसलिए मैं अपने जानने वाले ज़्यादा लोगों को वहां नहीं देख सका। लेकिन उनको देख कर उस नेमत का अहसास हुआ कि किस तरह अल्लाह ने मुझे अपने रहम और कर्म से इस बुरे अंजाम से बचा लिया। मुझे महसूस हुआ कि जन्नत की अनगिनत नेमतों में से दो सबसे बड़ी नेअमतें शायद यह है कि इंसान को जहन्नम से बचा लिया जाएगा और दूसरा उसे बड़े सम्मान के साथ जन्नत में ले जाया जाएगा।

.....

ज़्यादा देर न गुजरी थी कि एक एक करके आराफ पर खड़े सारे लोग निपट गए। अब फैसला सुनाने के लिए कुछ भी नहीं रहा था, लेकिन शायद अब भी कुछ बाकी था। सब अपनी जगह खड़े थे कि हश्र के मैदान में एक जानवर को लाया गया, यह जानवर बहुत मोटा ताज़ा था जिसके गले में रस्सी पड़ी हुई थी और फरिश्ते उसे खींचते हुए अर्श के सामने ले जा रहे थे। सालेह ने मेरे कान में कहा:

"यह मौत है जिसके खातमे (अंत) के लिए उसे लाया गया है।"

अर्श से ऐलान हुआ कि आज मौत को मौत दी जा रही है। अब किसी जन्नती को मौत आएगी ना किसी जहन्नमी को।

इसके साथ ही फरिश्तों ने उस जानवर को लेटाया और उसे ज़िब्ह (कुर्बान, बलि) कर दिया। मौत के ज़िब्ह हो जाने पर जन्नत वालों ने जोरदार तालियां बजाकर इसका स्वागत किया, जबकि जहन्नम वालों में मातम शुरू हो गया। उनके दिल में उम्मीद की कोई शमा अगर रोशन थी तो वह भी मौत की मौत के साथ अपनी मौत आप मर गई।

अर्श से आवाज़ आई कि जहन्नम वालों को समूह दर समूह उनके अंजाम तक पहुंचाया जाए। फरिश्ते तेजी के साथ हरकत में आ गए, हश्र के बाएं किनारे पर एक जबरदस्त हलचल मच

गई। चीख और पुकार और आहों के बीच फरिश्ते पकड़ पकड़ कर मुजरिमों और ना फर्मानों का एक जत्था बनाते और उन्हें जहन्नम की ओर हांक देते। हर गिरोह जहन्नम के दरवाज़े पर पहुंचता जहां जहन्नम के दारोगा 'मालिक' उन का स्वागत करते और उनके आमाल (कर्मों) के अनुसार जहन्नम के सात दरवाजों में से किसी एक दरवाज़े को खोल कर उन्हें उस में धकेल देते।

इस दौरान समय समय पर अर्श की ओर से जहन्नम को संबोधित करके पूछा जाता:

"क्या तू भर गई?"

वह ग़ज़बनाक आवाज़ में अर्ज़ करती:

"परवरदिगार! क्या और लोग भी हैं? उन्हें भी भेज दें।"

यह सुनकर हश्र में एक आह और उठती। रह जाने वाले मुजरिमों पर फरिश्ते फिर झपट पड़ते और उनकी आखिरी मंजिल तक पहुँचा देते। यूं थोड़ी ही देर में सारे मुजरिम अपने अंजाम तक जा पहुँचे।

इसके बाद अर्श से सदा बुलंद हुई:

"जन्नत वालों को उनकी मंजिल तक पहुंचा दिया जाए।"

जब आदेश हुआ तो मैंने देखा कि कुछ लोग अभी तक बाएँ दिशा में मौजूद थे। मैंने सालेह से पूछा:

'यह कौन लोग हैं। इन्हें जहन्नम में क्यों नहीं भेजा जा रहा?'

उसने जवाब दिया:

"यह मुनाफिकीन (दोगले) हैं, यह जहन्नम के सबसे निचले दर्जे में होंगे। यह दुनिया में खुदा को धोखा देते थे। आज उन्हें न सिर्फ बड़े से बड़ा अज़ाब मिलेगा बल्कि उनकी धोखाधड़ी के बदले में उनका अंजाम एक धोखे से शुरू होगा।"

'धोखा.... क्या मतलब?'

उसने कहा:

"ये लोग देखने से यह समझे कि उन्हें जहन्नम में नहीं फेंका गया और जन्नतियों को जन्नत में जाने का हुक्म हो गया है तो शायद उन्हें भी दिखावे के ईमान के आधार पर छोड़ा जा रहा है। लेकिन यह उनकी गलतफहमी है जो जल्द ही दूर हो जाएगी।

इसी पल मेरे कानों में अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन (सारी खूबयाँ और तारीफ़ उस के लिए हैं जो सारे जहानों का रब है) के पढ़ने की बहुत आकर्षक आवाज़ आना शुरू हो गई। यह अर्श को उठाने वाले और दूसरे फरिश्ते थे जिन्होंने अपनी खूबसूरत आवाज में शुक्र का कलमा पढ़ना शुरू किया था। सालेह ने मुझे बताया:

"यह हश्र के दिन के ख़त्म होने का ऐलान है।"

इसके साथ ही हश्र के मैदान में अंधेरा फैलना शुरू हो गया, सिवाय अर्श के और कहीं रोशनी बाकी नहीं रही। मैं कुछ भी देखने के लायक नहीं रह गया था। मैंने घबरा कर सालेह से पूछा:

'यह क्या हो रहा है?'

"अंधेरा।" उसने संक्षिप्त में उत्तर दिया।

'भाई यह तो मुझे भी पता है, मगर ऐसा क्यों हो रहा है?'

"यह इसलिए हो रहा है कि अंधेरे को पार करके जन्नत तक सिर्फ वही लोग पहुंचेगे जिनके पास अपने ईमान और आमाल (कर्म) की रोशनी होगी।"

यह कहकर उसने मेरे हाथ में मेरा आमाल नामा थमा दिया। इसमें एक अजीब सी रोशनी थी जिसकी वजह से मेरी आँखें फिर से रोशन हो गईं और मैं अंधेरे में भी साफ़ साफ़ से देखने के काबिल हो गया।

"हर आदमी को उसका आमाल नामा दिया गया है और यही आमाल नामा अब हश्र के मैदान की काली रात में रोशनी बन चुका है। अब सिवाय मुनाफिकों के हर आदमी के पास रोशनी है।" सालेह ने मेरी जानकारी को बढ़ाते हुए बताया।

'अब क्या होगा?' मैंने पूछा।

"अब यहां से हम लोग नीचे जाएंगे। सभी उम्मतें अपने नबी के नेतृत्व में जन्नत की ओर रवाना होंगी।"

'जन्नत का रास्ता किस तरफ़ है?' मैंने पूछा।

"अर्श के बिल्कुल करीब है। अर्श के पीछे दाहिने हाथ की ओर जहां आसमान पर जन्नत का नज़ारा दिख रहा था वहीं से जन्नत का रास्ता है। लेकिन यह रास्ता जहन्नम की खाई के ऊपर से जाता है जहां हर तरफ अंधेरा ही अंधेरा है। जिसके पास जितनी ज़्यादा रोशनी है वह उतनी ही आसानी और तेजी से जहन्नम के ऊपर से गुजर जाएगा।"

'इसका मतलब है कि एक इम्तिहान अभी और बाकी है।'

"नहीं यह इम्तिहान नहीं, दुनिया की ज़िन्दगी की तस्वीर है। जो दुनिया में जितना ज़्यादा खुदा का वफादार और बात मानने वाला रहा और ज़िन्दगी के पुल पर सच्चाई और एक अल्लाह के लिए उसकी की ओर बढ़ता रहा वह इतनी ही आसानी और तेजी से जन्नत की ओर बढ़ेगा। लेकिन हल्के या तेज़ सारे दाहिने हाथ वाले यहां से गुजर जाएंगे, सिवाय मुनाफिकों के जो ईमान और आमाल की रोशनी के बिना खाई को पार करने की कोशिश करेंगे और जहन्नम के सबसे निचले गड्ढे में जा गिरेंगे जहां उन्हें बहुत बुरा अज़ाब दिया जाएगा।"

'मेरे घर वाले मेरे साथ होंगे?' मैंने पूछा।

"आज यह आखिरी सफ़र सबको अकेले ही तय करना है।" सालेह ने दो टूक जवाब दिया।

'फिर वह समूह समूह होकर जन्नत में जाने वाली बात का क्या हुआ?' मैंने सवाल उठाया।

"समूह दर समूह का मतलब यह है कि हर उम्मत अपने नबी के नेतृत्व में जन्नत के दरवाज़े तक पहुंचेगी। लेकिन जन्नत में दाखिला एक एक करके अपने निजी आमाल (कर्म) के आधार पर होगा।" फिर उसने कुछ देर टहर कर पूछा:

"क्या तुम अभी भी कोई तमाशा देखने में रुचि रखते हो?"

मेरे हां कहने से पहले ही वह मुझे लेकर तेजी से आगे बढ़ गया। यहां तक कि हम एक ऐसी जगह आ गए जहाँ लोगों के पास बेहद तेज रोशनी थी। उनकी रोशनी उनके आगे आगे और दाएँ

दिशा में उनके साथ चल रही थी। वह ऊँची आवाज में कह रहे थे ऐ हमारे रब! हमारी रौशनी को पूरा रख और हमें माफ कर, तू हर चीज़ पर क़ादिर (सक्षम) है। मैं सालेह से कुछ पूछे बिना ही उन लोगों को पहचान गया, यह सहाबा हज़रात (नबी के साथी) थे। सबसे आगे रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम थे जिनका वुजूद सरापा नूर बना हुआ था। मैं उन लोगों की नक़ल में उन्ही के शब्द दोहराने लगा, यह वो कुरआन की दुआ थी जो मैं ज़िन्दगी भर पढ़ता रहा था, लेकिन इस दुआ को पढ़ने का असल समय अब आया था। हम इसी तरह चल रहे थे कि सालेह ने कहा:

"अब तमाशा देखो।"

उसके साथ मैंने देखा कि कुछ लोग दौड़ते, गिरते पड़ते सहाबा हज़रात के पास आए। मगर उनके पास कोई रोशनी नहीं थी। उन्होंने आते ही दुहाई देना शुरू कर दिया कि हमें भी अपनी रोशनी से थोड़ा सा हिस्सा दे दो। सहाबा में से कुछ ने अपने पीछे हश्र के मैदान के सीधे हाथ की तरफ़ इशारा करते हुए जवाब दिया कि हम तो यह रोशनी वहाँ से लेकर आए हैं तुम भी वापस लोटो और वहां से रोशनी ले लो। यह सुनकर सारे मुनाफिक जल्दी से उस दिशा में भागे, लेकिन जैसे ही उन्होंने दाहिने ओर जाने की कोशिश की उन्हें पता चला कि यहां तो एक दीवार है। इस दीवार में कुछ जंगहों पर दरवाज़े बने हुए थे जिन पर फ़रिश्ते तैनात थे। इन लोगों ने उन दरवाजों से अंदर जाने की कोशिश की लेकिन फरिश्तों ने उन्हें मार मार कर वहां से भगा दिया। उनके पास रोशनी हांसिल करने का कोई रास्ता नहीं रहा। इसलिए वो लौटकर सहाबा हज़रात के पास वापस आ गए और उनसे कहने लगे कि देखिये हम भी मुसलमान हैं और दुनिया में आपके साथ ही थे। आपको तो पता है, हमारी रोशनी के लिए कुछ करें। जवाब मिला: बेशक तुम हमारे साथ थे लेकिन तुमने अपने आपको धोके में डाला, तुम इस दिन के बारे में शक (संदेह) में रहे और तुम्हारा असली मकसद दुनिया की ज़िन्दगी ही था। तुमने शैतान की बात मानी और उसने तुम्हें धोखे में डाले रखा। सो न आज तुम कुछ दे दिलाकर छूट सकते हो और न कोई काफ़िर।

यह सुनकर मुनाफिकों को विश्वास हो गया कि उनका अंजाम भी काफिरों (इंकार करने वालों) से अलग नहीं है। वापस जाने में उन्हें नुकसान लगा, इसलिए उन्होंने अंधेरे में रास्ता पार करने की कोशिश की, लेकिन रौशनी के बिना कोशिश का नतीजा जहन्नम की खाई थी। इस तरह एक एक करके सारे मुनाफिक चीख़ते चिल्लाते हुए जहन्नम में जा गिरे जहां नीचे अज़ाब के फरिश्ते

उनका इंतजार कर रहे थे। हम सारा मंज़र (दृश्य) देखते हुए और ऊँची आवाज़ से यह दुआ पढ़ते हुए अर्श की ओर बढ़ते रहे:

'ऐ हमारे रब हमारे नूर को बुझने न दे और मुनाफिकों के अंजाम से हमें बचाते हुए हमारी बख्शिश फ़रमा। बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर (ताकत रखने वाला) है।

****

जन्नत की बादशाही में दाखिला

हमने जहन्नम की खाई को बहुत इत्मीनान और आराम से पार किया था। उसे पार करके मैंने पीछे देखा तो दूर दूर तक रोशनियों का एक काफिला था जो ऊँची आवाज़ से यही दुआ पढ़ते हुए हमारे पीछे चला आ रहा था। जिसकी रोशनी जितनी ज़्यादा तेज थी, वह उतनी ही आसानी के साथ खाई को पार कर रहा था। मैंने आगे देखा तो हम अर्श के बिल्कुल करीब पहुंच चुके थे। अर्श क्या था नूर ही नूर था, यह रौशनी और नूर का एक सैलाब था जिस की हकीकत

(वास्तविकता) को शब्दों में बयान करना मुमकिन नहीं था। यहां पहुंचकर हमारी अपनी रोशनी अर्श की रोशनी के सामने बे नूर हो गई। अर्श के आसपास फरिश्तों की कतारें थीं जो अदब से हाथ बांधे, 'अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन' पढ़ रहे थे। हम बिल्कुल करीब पहुंचे तो मैंने देखा कि फरिश्तों ने अपने बीच से जगह छोड़ रखी है जिससे गुजर कर लोग कतार दर कतार अर्श के नीचे दाखिल हो रहे हैं। हम करीब पहुंचे तो आवाज आई:

"मेरे बन्दों! तुम्हारा स्वागत है, तुम आज ख़त्म न होने वाली बादशाही में दाखिल (प्रवेश) हो रहे हो। अपने रब की सलामती में तुम हमेशा के लिए दाखिल हो रहे हो।"

हम फरिश्तों के पास से गुजर कर आगे बढ़े तो मैंने सालेह की तरफ सवालिया अंदाज में देखा। उसने वजाहत (वर्णन) करते हुए कहा:

"जन्नत का रास्ता अर्श के नीचे से होकर दाहिने ओर मुड़कर आएगा।"

'मगर हम अर्श के नीचे से क्यों जा रहे हैं, सीधे दाईं ओर मुड़जाएँ?'

सालेह हंस कर बोला:

"तुम हर बात समय से पहले समझना चाहते हो, खैर मैं बताता हूँ। अर्श के नीचे जाकर हर इंसान का आखिरी तज़किया हो जाएगा।"

'मगर तज़किया तो हम दुनिया में करते थे।'

"तज़किया यानी पाकी (पवित्रता) हांसिल करना दीन के हर अमल (कर्म) का मकसद था। दीन की पूरी जद्दो जहद (संघर्ष) इसलिए थी कि इंसान का नफ्स (उसका खुद) पाक हो। खुदा को मानने वाला दुनिया में अपने शरीर को साफ रखता था वह अपनी खुराक को पाक रखता था। वह इबादत (पूजा) के ज़रिये अपनी रूह को और शरीयत का पालन करके अपने समाज, अर्थव्यवस्था और नैतिकता को पाक रखता था। शैतानी ख्यालात, बुरी इच्छाओं, हैवानी जज़्बात, यह सब नापाकियाँ थीं जिनसे बच कर बन्दा खुद को पाक रखने की कोशिश करता था। यह दुनिया में ईमान वालों की कोशिश थी, जिसका बदला आज रब की पाकीज़ा जन्नत के रूप में दिया जा रहा है, लेकिन इस पाकीज़ा जन्नत में जाने से पहले अल्लाह खुद ईमान वालों को पाक

करेंगे। जिसके बाद उनकी रूह, शरीर और अख़लाक़ (नैतिकता) हर नापाकी से धुल जाएगी, यानि तुम अन्दर से बाहर तक बिल्कुल पवित्र हो जाओगे।"

'क्या मतलब?'

"मतलब यह कि तुम्हारा शरीर जो दुनिया में खून, गंध और दूसरी नापसंद चीजों से भरा हुआ था अब नूर से भर जाएगा। जिसके बाद तुम्हारे शरीर से गंध नहीं निकलेंगी, न बदबू आएगी और न बदबू दार पसीना बहेगा। तुम्हारी सांस के साथ खुशबू आएगी, पेशाब मल की जगह खुशबूदार पसीना आएगा। तुम्हारे कान, नाक, आंख, मुंह और शरीर से गंदगी नहीं निकलेगी।

इसी तरह तुम्हारे मन से हर नापाक सोच (नकारात्मक भावना) जैसे दूसरों से जलन, अहंकार, कीना, परायी औरत पर बुरी गिगाह, नफरत, भेदभाव वगैरह ख़त्म हो जाएंगे। तुम्हारी सोच, नज़र, शरीर और रूह सब पाक हो जाएंगे।

मैंने खुश होकर कहा:

'सुब्हान अल्लाह! फिर तो जीने का मज़ा आ जाएगा।'

"यही नहीं बल्कि तुम्हारी सलाहियत (कौशल) और ताकतें असाधारण रूप से बढ़ जाएंगी। तुम्हें नींद की जरूरत होगी न आराम की, तुम थकोगे न निढाल होगे। बोर होगे न परेशान होगे, डिप्रेस होगे न टेंशन का शिकार होगे। तुम जितना चाहोगे खाओगे, जितना चाहोगे पियोगे, तुम्हें बदहजमी होगी न शौचालय जाने की जरूरत। तुम्हारे अन्दर शक्ति का भंडार भर जाएगा। तुम हमेशा स्वस्थ रहोगे, हमेशा जवान रहोगे और सबसे बढ़कर इतने हैंडसम और खुबसूरत हो जाओगे कि कुछ हद नहीं। यह सब तुम्हारे अन्दर होने वाले कुछ बदलाव की बात है बाहर की नेअमतें तो अभी सामने आनी हैं।"

'क्या सबके साथ यही होगा?'

"हां सब के साथ ऐसा होगा लेकिन जिस के आमाल (कर्म) जितने ज़्यादा अच्छे रहे होंगे, उसकी ताकत, खूबसूरती और कमाल इतना ही होगा।"

मेरे मुंह से निकला:

"अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।"

हम बातचीत करते हुए अर्श के बिल्कुल करीब पहुंच चुके थे। सालेह ने यहां पहुंच कर मुझसे कहा:

"अब्दुल्लाह! अब मैं तुमसे अलग हो रहा हूँ, तुम यहाँ दाखिल होगे तो जन्नत के दरवाज़े पर निकलोगे। मैं वहीं जन्नत के दरोगा के साथ तुम्हें मिल जाऊँगा। तुम इत्मीनान से आगे बढ़ो।"

यह कहकर वह विदा हो गया।

मैं एक लम्हे के लिए खड़ा सोचता रहा, अचानक मेरे सामने एक दरवाज़ा खुल गया। आवाज़ आई:

"ऐ नफ़्स ! अपने रब की ओर लौट आ, इस तरह की तू उससे खुश है और वह तुझ से। फिर शामिल हो जा मेरे बन्दों में और दाखिल हो जा मेरी जन्नत में।"

मैं इन शब्दों से हौसला पाकर आगे बढ़ा और दरवाजे के अंदर दाखिल हो गया। मेरी जुबां पर आप से आप यह शब्द जारी थे।

"अल्लाहुअकबर अल्लाहुअकबर लाईलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहुअकबर अल्लाहुअकबर व लिल्लाहिल हम्द"

भीतर दाखिल होते ही मुझे यह महसूस हुआ कि मैं एक गैलरी में आगे बढ़ रहा हूँ। यहाँ फर्श, छत और दीवारें सब बिल्कुल सफेद दूधया रंग की थी। अंदर दाखिल होते ही मुझे एक सुखद एहसास हो रहा था। मेरा अंदाजा था कि यह रास्ता गैर महसूस तरीके पर दाहिने दिशा में मुड़ रहा है। मैं कुछ ही दूर गया था कि अचानक रंग और नूर के गोलों ने मेरा घेराव कर लिया, तरह तरह के रंग मेरे आसपास जगमगाने लगे। मैं पूरे आराम और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ता गया, तभी नूर की एक चादर मेरे आरपार हो गई। इसके साथ ही मेरे वुजूद (अस्तित्व) का रेशा रेशा लुत्फ़ (आनंद) और सुरूर के अहसास में डूब गया। मुझे लगा कि मैं हवाओं में उड़ रहा हूँ, मेरा शरीर बिल्कुल हल्का हो गया, मुझे लगा कि मेरा शरीर गायब हो गया है और मैं सिर्फ रूह (आत्मा) के रूप में शेष हूँ। मैं बेखुद होकर आगे बढ़ता रहा, कुछ ही देर बाद फिर वही दूधया गैलरी मेरे सामने थी और मैं उस में चला जा रहा था। मगर अब मेरे अहसास (भावनाओं)

में ज़मीन आसमान का फर्क आ चुका था। मुझे लग रहा था कि मैं बदल कर कुछ से कुछ हो चुका हूँ। ताक़त, सुकून और संतोष और आत्मविश्वास की एक ऐसी हालत थी जिसे ज़ुबान से बताया नहीं जा सकता। मैं उसमे चला जा रहा था कि अचानक मुझे ठहरना पड़ा, मेरे सामने एक ऐसी जगह आ गई थी जहां से आठ रास्ते निकल रहे थे। हर रास्ते पर ये लिखा था कि यह रास्ता जन्नत के किस दरवाजे पर निकलेगा। मैं पढ़ने की कोशिश कर रहा था कि क्या लिखा है कि एक आवाज़ आई:

"शोहदा के दरवाजे से अन्दर चले जाओ।"

मैंने गौर किया तो दाहिनी ओर पहला दरवाजा नबियों का था और इसके बराबर में दूसरा दरवाजा नबियों के साथियों का था और फिर शोहदा का दरवाज़ा था। मैं उसी में दाखिल हो गया। यह भी एक रास्ता था जो एक दरवाजे पर खत्म हो रहा था। मैं इस दरवाजे से बाहर आ गया, इससे पहले कि मैं बाहर निकल कर कुछ देखता, मैंने अपने सामने सालेह को मौजूद पाया। उसके साथ एक फरिश्ता खड़ा हुआ था, सालेह के बजाय उस फरिश्ते ने आगे बढ़ कर मेरा स्वागत किया और कहा:

"अस्सलामु अलैकुम, हमेशा बाक़ी रहने वाली जन्नत की बस्ती में आपका स्वागत है। सालेह ने मुझे आपका आमाल नामा दिया जिसमें आपका नाम अब्दुल्लाह लिखा हुआ है। मगर इसके साथ सम्मान के नाम इतने लिखे हुए थे कि समझ में नहीं आता कि आप को क्या कह कर संबोधित करूं।"

सालेह ने हस्तक्षेप करते हुए कहा:

"फिलहाल सरदार अब्दुल्लाह से काम चलाइये, क्योंकि मुझे खुदा ने इनकी मौत के बाद यह कह कर उनके स्वागत के लिए भेजा था कि मेरा बन्दा अब्दुल्लाह सरदार है, उसे लेकर मेरे पास आओ।"

"ठीक है, सरदार अब्दुल्लाह! खत्म न होने वाली बादशाहत में आना मुबारक हो।" यह कहते हुए उसने मुझ से मुसाफा किया।

'हमारे मेजबान (होस्ट) का नाम क्या है?' मुसाफा करते हुए मैंने सालेह से पूछा।

"यह मेजबान नहीं दरबान हैं और इनका नाम रिज़वान है।"

रिजवान हँसते हुए बोले:

"यहां मेजबान आप हैं सरदार अब्दुल्लाह, यह आपका राज्य है। जरा देखिये तो आप कहां हैं।"

उनके कहने पर मैंने नज़र दौड़ाई तो देखा कि मैं एक बिल्कुल नई दुनिया में आ चुका हूँ। यहाँ आसमान और ज़मीन बदल कर कुछ के कुछ हो चुके थे। नए आसमान और नई जमीन पर बनी यह एक ऐसी दुनिया थी जहां सब कुछ था। मगर उसकी खूबसूरती और मुकम्मल (सम्पूर्ण) होने का बयान (वर्णन) करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं थे। मैं ज़िन्दगी भर अच्छा बोलने वाला आदमी रहा। मुझे भाषा व बयान पर महारत हासिल थी, ख़ुदा ने मुश्किल से मुश्किल तथ्यों के बयान को हमेशा मेरे लिए बेहद आसान किए रखा था। लेकिन इस पल मुझे अंदाज़ा हुआ कि दुनिया की हर भाषा इन हकाइक (तथ्यों) का बयान करने से आजिज़ (असमर्थ) है जो मेरे सामने मौजूद थीं। मैं बिल्कुल ऐसी स्थिति में था जो किसी पत्थर के ज़माने के किसी इंसान को अचानक किसी आधुनिक शहर में लाकर खड़ा कर दिया जाए तो उसकी हो सकती है। जो आदमी हमेशा अपनी गुफा में लकड़ी जलाकर रौशनी करता रहा हो वह अचानक लेजर लाइट की तेज और ट्यूब लाइट की दूधया रोशनी के जलवे देख लेता तो कभी उसकी सच्चाई को बयान करने के लिए शब्द नहीं पा सकता था। यही स्थिति इस समय मेरी थी।

.....

सालेह मेरी बे सुधी देखकर बोला:

"सरदार अब्दुल्लाह! बे खुदी के लिए अभी बहुत कुछ है, बेहतर है कि आप अपनी मंजिल की ओर चलिए।"

रिजवान ने एक रास्ते की ओर इशारा करते हुए कहा:

"चलिए, आप की रिहाइश का इलाका (आवास क्षेत्र) इस दिशा में है।"

हम आगे बढ़े, एक तेज़ लाल रंग का कालीन इस रास्ते में बिछा हुआ था, हम उस पर चलने लगे। इस रास्ते में दोनों ओर फरिश्तों की कतारें थी जो हाथों में गुलदस्ते लिए, रेशमी रूमाल लहराते, फूलों और खुशबू का छिड़काव करते सलाम और मरहबा कहते मेरा स्वागत कर रहे थे।

यह एक लम्बा रास्ता था जो दूर तक चलता चला जा रहा था। बचपन में परिस्तान कि कल्पना की कहानियाँ शायद सब सुनते पढ़ते हैं, यह रास्ता ऐसे ही किसी परिस्तान पर जाकर खत्म हो रहा था। दूर से परिस्तान की ऊँची और भव्य इमारतें नजर आ रही थीं। यह आलीशान इमारतों और शानदार महलों का मंज़र (दृश्य) था जो हरयाली से लदे पहाड़ों, उसके दामन में फैले पानी के फर्श और नीले आसमान की छत के साथ एक कल्पना की दुनिया की तस्वीर लग रहा था।

मैंने रिजवान से पूछा:

'इस समय अनगिनत लोग जन्नत में दाखिल हो रहे हैं, आपके पास क्या इतना समय है कि सब को छोड़ कर आप मेरे साथ आ गए हैं?'

वह हंस कर बोले:

"यहां समय रुका हुआ है, आप यूं समझें कि दो जन्नती एक के बाद एक करके अंदर आ रहे हैं, उनके अन्दर आने में काफी समय होता है। और जो जन्नती ज़रा कम दर्जे (स्तर) के हैं, तो महीनों और सालों नहीं बल्कि सदियों के अंतर से अंदर आएंगे।"

मैंने सालेह की ओर देख कर कहा:

'नाएमा?'

मेरी बात का जवाब रिजवान ने दिया:

"सरदार अब्दुल्लाह! आप तो बहुत पहले अंदर आ गए हैं। आपकी पत्नी नाएमा और अन्य लोग कुछ समय में ही यहां आ जाएँगे, लेकिन इस समय आपके करने का यहाँ बहुत काम है। अपनी जन्नत, अपनी दुनिया, उसका राज्य, यहां के नौकर और दूसरे संबंधित लोगों कि जानकारी हासिल करनी है।"

'अच्छा! यहाँ और कौन है?'

"देखो यह आपकी सेवा करने वालों में से कुछ ख़ास लोग खड़े हैं।"

रिजवान के ध्यान दिलाने पर मैंने देखा कि फरिश्तों के बाद कतार में दोनों ओर ऐसे लड़के खड़े थे जो अपनी टीन एज की शुरुआत में थे। मुझे अंदाज़ा हो गया कि यह गुलामान हैं और यही

वह लड़के हैं जिनके लिए कुरआन ने मोती की परिभाषा उपयोग की थी। यह सचमुच ऐसे ही थे, बल्कि शायद मोती से भी ज़्यादा साफ, पारदर्शी और चमकते हुए। मुझे अंदाज़ा हुआ कि कुरआन ने जिन हक़ाइक (तथ्यों) का बयान (वर्णन) करने की जिम्मेदारी उठाई थी, इंसानी भाषाओं में उनके बताने और समझाने के लिए कितने कम शब्द थे। आज जो तथ्य सामने थे वह बयान के नहीं सिर्फ देखने और आनंदित होने की चीज़ें थे। यह गुलामान भी एक ऐसी ही हकीक़त थे। फरिश्तों की तरह गुलामान भी उत्साहित अंदाज में मेरा स्वागत कर रहे थे, लेकिन जैसे ही मैं उनके पास पहुंचता वह घुटनों के बल एक के बाद एक बैठ कर अपना सर झुका देते थे। जैसे यह मोतियों की एक लड़ी थी जो मेरे स्वागत में बिछी जा रही थी।

कतार जब काफी लंबी हो गई तो मैंने सालेह से कहा:

'भाई यह ख़ास लोग ही इतनी बड़ी संख्या में हैं तो सारे सेवक संख्या में कितने होंगे, और इतने सारे लोगों का मैं क्या करूंगा?'

सालेह के बजाय रिजवान ने जो जन्नत के रहस्य से ज़्यादा परिचित थे, जवाब दिया:

"आप धरती से आकाश तक फैले हुई एक बहुत बड़े राज्य के प्रमुख हैं। अनगिनत काम हैं जो आपको इस नई ज़िन्दगी में खुदा कि तरफ से बताए जाएंगे। आप उन कामों के लिए इन सेवकों का इस्तेमाल करेंगे। यह आपकी व्यक्तिगत सेवा से लेकर आपके महान साम्राज्य की देख भाल और प्रशासन तक के सारे इंतज़ाम करेंगे।"

'तो मानो जन्नत भी ठाली बैठ कर ऐश करने की जगह नहीं है, यहां भी काम करना होगा।' मैंने हंसते हुए टिप्पणी की।

"आप बेफ्रिक रहें, यहां का काम मेहनत का नहीं शान का होगा। बाकी जिस ऐश और खाली समय को जो लोग दुनिया में ढूंढने थे, उसकी भी यहां कोई कमी नहीं है।"

'मगर यह काम होगा क्या?'

"मैं तो यह जानता हूँ कि आप को राज्य में आने वाली समस्याओं के बिना ही राज करना है। बाकी असल हकीक़त तो अल्लाह जानते हैं और दरबार के दिन ये सारी बातें आपको सीधे खुद बता देंगे।"

हम कुछ दूर और चले तो सालेह ने कहा:

"अब हूरें आ रही हैं।"

सालेह के इस वाक्य के साथ ही मुझे हूरों के बारे में वह शायराना तारीफ याद आ गई जो उसने हश्र के मैदान में की थी। उस समय सालेह की बातों को मैंने बढ़ा चढ़ा हुआ समझा था। अब महसूस हुआ कि उसकी बातों में बढ़ा चढ़ा नहीं बल्कि कुछ कमी थी, हकीक़त उससे कहीं ज़्यादा थी। हम जैसे ही उनके पास पहुंचे तो गुलामान के विपरीत उन्होंने एक अलग काम किया। वह घुटनों के बल बैठने के बजाय दो ज़ानो बैठीं और सर झुका दिया।

मैंने रुककर सालेह से पूछा:

'यह क्या कर रही हैं?'

"यह तुम्हारा दिल बहला रही हैं।" उसने हंसते हुए कहा।

रिजवान ने स्पष्ट करते हुए कहा:

"असल में उन्होंने आपके क़दमों को राहत पहुंचाने के लिए अपने बाल फर्श पर बिछाए हैं। इसलिए यह इस तरह झुकी हुई हैं।"

उनके कहने पर मैंने गौर किया कि वो इस तरह सर को झटका देकर झुक रही हैं कि दोनों तरफ से उनके बाल जमीन पर बिछ कर एक रेशमी फर्श बनाते जा रहे हैं। हुस्न की यह अदा मैंने ज़िन्दगी में पहली बार देखी थी, मैं पूरे आत्मविश्वास और सम्मान के साथ मुस्कुराता हुआ आगे बढ़ रहा था। जब मेरे कदमों ने रेशमी जुल्फों से बने इस फर्श को छुआ तो सुरूर की एक लहर मेरी रूह के अंदर तक तैरती चली गई। मुझे पहली बार अहसास हुआ कि हालांकि मेरे शरीर पर बहुत सूक्ष्म, मखमली और शाही लिबास (ड्रैस) था लेकिन मैंने जूते नहीं पहन रखे थे।

इस दौरान रिजवान ने मुझे इन हूर और गुलामान के बारे में और ज़्यादा बताते हुए कहा:

"इन हूरों और गुलामान के प्रदर्शन से इनके बारे में किसी गलतफहमी का शिकार न होईयेगा। यह लड़के और लड़कियाँ बहुत असमान्य शक्तियों और क्षमताओं के मालिक हैं। वे आपके हुक्म पर जमीन और आसमान एक कर देने की ताक़त रखते हैं, यह अलग बात है कि आप से यह

इतनी मुहब्बत करते है कि आप के लिए जाम का गिलास भरने को भी अपने लिए इज्ज़त कि बात समझते हैं। अल्लाह ने जो कुछ इनको दिया है अभी आपको उसका कुछ अंदाजा भी नहीं है।"

मैं रिजवान की बात के जवाब में चुप रहा। मेरा ध्यान शुक्र के एहसास के साथ उस हस्ती के क़दमों में सजदे (प्रणाम) में चला गया था जिसने एक गरीब बन्दे को बहुत मामूली अमल (कर्म) के बदले में यह सम्मान और यह इज्ज़त दी थी। मेरी आंखों से आंसू बहने लगे और मैं भी सजदे में जा गिरा। मेरी ज़ुबान पर उसकी तारीफ और बड़ाई के शब्द थे। मैं उसी हाल में था कि अचानक बारिश की बूंदों सी आवाज़ आना शुरू हो गई, सालेह ने मेरी पीठ थपथपाकर कहा:

"अब्दुल्लाह! उठो और अपने सजदे की मक़बूलयत (लोकप्रियता) देखो।"

मैं उठा तो एक हेरत अंगेज़ मंज़र मेरे सामने था। मैंने देखा कि हूर और गुलामान के चेहरों पर मुस्कराहट और खुशी की लहर दौड़ रही थी और उनकी झोलियाँ बहुत खुबसूरत मोतियों से भरी हुई थीं, मैं कुछ नहीं समझ पाया। सालेह ने मेरी हैरत दूर करते हुए कहा:

"ईश्वर ने तुम्हारी ओर से उन्हें बख्शिश दी है। तुम्हारी आंखों से तो आंसू ही बहे थे, मगर खुदा ने उन्हें कुबूल कर के मोतियों की बरसात बरसादी। यह उनके लिए तुम्हारे आने पर एक उपहार है जो उनकी ज़िदगी की सबसे कीमती दौलत है।"

हम फिर चलने लगे और आखिरकार यह स्वागत करने वालों की कतार एक ऊँचे और बड़े दरवाजे पर समाप्त हुई। हमारे करीब पहुंचने से पहले ही दरवाजे के दोनों पाट खुल चुके थे। यहां से रिजवान लौट गए और मैं सालेह के साथ अपने आवास की जगह में दाखिल हो गया, आवास शब्द मैंने इसलिए कहा कि कॉटेज, हट, घर, मकान, भवन, बिल्डिंग, बांग्ला, कोठी और महल जैसे सभी शब्द मेरे इस आवास को बताने के लिए बिल्कुल पर्याप्त नहीं थे। यह नज़र कि हद तक फैला हुआ एक बहुत बड़ा क्षेत्र था जो हरे हरे पहाड़ों, उन पर बने गगनचुम्बी महल, उनके दामन में मीलों तक फैले बाग़, उनके नीचे बहती नदियों और दरयाओं का एक ऐसा जत्था था जिनके बयान करने के लिए शायद शब्द तो वही हैं जो मेरे मन में थे, लेकिन उनकी सच्चाई, उनकी खूबसूरती और उनकी शान व शौकत एक अलग चीज़ थी।

मैंने इस बड़े मंज़र पर नज़र डालते हुए सालेह से पूछा:

'इतने सारे महल में से मेरे रहने का महल कौन सा है?'

उसने हंसते हुए कहा:

"यह इतने सारे महल तुम्हारे आवास नहीं, यह तुम्हारे करीबी सेवकों के घर हैं। तुम्हारा घर यहां से काफी दूर है। तुम चाहो तो पैदल भी जा सकते हो, लेकिन बेहतर है कि अपनी सवारी में जाओ।"

यह कहकर उसने एक तरफ बढ़ने का इशारा किया। मैंने उस तरफ देखा तो एक बहुत शानदार मगर कुछ छोटा घर बना हुआ था, छोटा इस दुनिया के हिसाब से था वरना पिछली दुनिया के हिसाब से यह किसी बड़े महल जितना ही व्यापक था। लेकिन अजीब बात यह थी कि सालेह अगर ध्यान न दिलाता तो मैं कभी उसकी मौजूदगी (उपस्थिति) महसूस नहीं कर सकता था क्योंकि यह पूरी तरह शीशे का बना हुआ और इतना पारदर्शी था कि उसके आर पार सब कुछ दिख रहा था। सालेह आगे बढ़ा तो मैं उस के पीछे इस ख्याल से चला कि इस घर में कोई गाड़ी वगैरह जैसी सवारी खड़ी होगी। लेकिन वह सीधा मुझे इस घर के बीच में एक कमरे में ले गया जहां हीरे जवाहरात से सजी शाही अंदाज की आलीशान कुर्सियां बिछी हुई थीं। सालेह ने मुझे इशारे से बैठने के लिए कहा, फिर वह बोला:

"यह तुम्हारी सवारी है जो तुम्हें तुम्हारी मंजिल तक पहुंचा देगी। मैं तुम्हें अकेले छोड़ रहा हूँ ताकि तुम्हें यह मालूम हो कि यहां के असल राजा तुम हो। तुम्हें किसी सहारे किसी सेवक किसी फ़रिश्ते की मदद की ज़रुरत नहीं है। तुम जो चाहोगे वह खुद ही हो जाएगा। अब मैं तुम्हें तुम्हारे घर में मिलूँगा।"

इससे पहले कि मैं कुछ कहता वह बाहर निकल गया। सालेह की इस बात पर मैं शॉक में आ गया था। बल्कि सच्ची बात तो यह है कि जन्नत में दाखिल होने के बाद से मैं लगातार शॉक की हालत में था। हर पल मिलने वाले ख़ुशी के झटकों ने मुझे हिला दिया था।

मैं कुछ देर में खुद को संभाल कर सोचने लगा कि मैं कहाँ हूँ और क्यों? और यह कि सालेह ने मुझ से अभी क्या कहा था। सालेह के शब्द को मैंने मन में दुहराया और उसकी बात का मतलब समझ में आते ही मुझ में बहुत आत्मविश्वास पैदा हो गया। मुझे लगा कि मेरी बादशाहत इस पल से शुरू होती है, लेकिन सवाल यह था कि यह घर या सवारी चलेगी कैसे। मैंने दिल में

सोचा कि सालेह नहीं है तो क्या हुआ वह रब तो इस लम्हे भी मेरे साथ है जो दुनिया में ज़िन्दगी भर मेरे साथ रहा था। इसके साथ ही मुझे कुरआन का यह बयान याद आ गया कि जन्नत में बन्दों को हर चीज़ 'सुब्हानअल्लाह' कहने से मिल जाया करेगी। मैंने धीरे से कहा:

'सुब्हान अल्लाह।'

इसके साथ ही यह घर जो एक सवारी थी हवा में ऊँचा होने लगा। मैं खुशी से खिलखिला उठा और मैंने जोर से पुकार कर कहा:

"बिस्मिल्लाह मुज्रीहा व मुर्सिहा"

यह पैगम्बर नूह अलैहिस्सलाम के शब्द थे जो आप ने अपनी नाव में बैठ कर कहे थे। मेरी सवारी धीरे धीरे एक दिशा में बढ़ने लगी, मैं चुपचाप सर टिकाकर नीचे फैले हुए हसीं मंज़र (दृश्य) का मज़ा लेने लगा। घर धीरे धीरे उड़ रहा था कि मुझे महसूस हुआ कि नीचे शाम का सा धुंद फैलने लगा है। कुछ ही देर में हर तरफ पूरा अँधेरा छा गया। इसके साथ ही शीशे का घर दूधया रंग की रौशनी से जगमगा उठा जिसका स्रोत कहीं नज़र नहीं आता था।

.....

अंधेरे में मेरा सफ़र जारी था, बाहर दूर तक गहरा अँधेरा छाया हुआ था, मगर इस अंधेरे में कोई भय.... कोई डर नहीं था। अंधेरे की इस परत पर एक सन्नाटे की परत जमी हुई थी, मगर इस सन्नाटे में भी कोई वहशत कोई खौफ नहीं था। अंधेरे की तरह सन्नाटा भी अपने भीतर एक अजीब तरह का सुकून और सुरूर लिए हुए था। ऐसा लगता था कि खामोसी में बिना आवाज़ के ही नगमे बिखरे हुए हैं जो कानों के बजाय दिल के दरवाजों से वुजूद पर हौले हौले दस्तक दे रहे हैं। जैसे बगैर साज़ के कुछ सुर हैं जो फिजा में बिखरे हुए सीधे मेरे दिल की दुनिया में दाखिल होकर झूम रहे हैं।

रहा अँधेरा तो मुझे इसका मकसद एक नज़र आता था, वह यह कि यह अँधेरा उस रौशनी को खूब साफ़ करके दिखाने के लिए है जो बहुत दूर फिजा में उंचाई पर एक दिए की तरह रौशन थी। यह रौशनी आसमान के किसी तारे की न थी कि उस समय धरती की तरह आसमान भी अंधेरे की चादर ओढ़े हुए था। यह रौशनी एक ऊँचे पहाड़ की चोटी से उठ रही थी। अंधेरे में रौशनी काफी खुबसूरत और आकर्षक लग रही थी इतनी कि उससे नजर हटाने का दिल ही नहीं

चाहता था। फिर मैंने सोचा इस अंधेरे में देखने को और रखा ही क्या है। मेरे दिल में इच्छा जागी कि क्या ही अच्छा होता कि मैं देख सकता कि इस रौशनी में नीचे का मंज़र कैसा दिख रहा है। मैंने 'सुब्हानअल्लाह' कहा जिसके साथ ही अँधेरा छट गया और नीचे का मंज़र साफ दिखने लगा।

नीचे नज़र की हद तक एक बहुत बड़ा हरा भरा मैदान फैला हुआ था जिसके ठीक बीच में संग मरमर का सफेद पहाड़ दिख रहा था। यह किसी पहाड़ी श्रंखला का हिस्सा नहीं बल्कि अकेला एक ही संग मरमर का ऊँचा टीला था जो इस ज़मीन के सीने में अकेले किसी स्तम्भ की तरह गड़ा था। इस पहाड़ की चोटी ऊँची होते होते एक बारीक नोक की तरह बारीक होकर खत्म हो रही थी। लेकिन यह पहाड़ का अंत नहीं थी बल्कि यह नोक उस विशाल और आलीशान महल की बुन्याद का काम कर रही थी जो ठीक उसके सिरे पर बना हुआ था। मुझे यह मंज़र हकीकत से ज़्यादा किसी चित्रकार के कल्पना का शाहकार लग रहा था। क्योंकि ऐसे मैदान फिर उसमे ऐसे पहाड़, पहाड़ की इतनी बारीक चोटी और चोटी के सहारे खड़े ऐसे महल हकीकत में नहीं हुआ करते।

लेकिन वह पिछली दुनिया की बातें थीं, अब तो परीक्षण और भौतिक नियमों की वह पहली दुनिया खत्म हो चुकी थी। एक नई दुनिया वुजूद में आ चुकी थी जिसमे मेरी बादशाही थी और मैं था। मैंने सोचा कि मानव इतिहास हजारों लाखों साल का सफर तय करके एक ईश्वर के दौर में दाखिल (प्रवेश) हो चूका है.... जब ज़मीन का इन्तिज़ाम (व्यवस्था) खुदा के फरिश्तों ने संभाल कर हर नामुमकिन को मुमकिन कर दिया है। और एक ऐसी दुनिया बना दी है जिसका अँधेरा हर डर और ख़ामोशी हर अंदेशे से पाक (मुक्त) है। जिसका अंधेरा रौशनियों का हिस्सा और ख़ामोशी सुकून का सामान हुआ करती है।

.....

मेरे चाहने पर एक बार फिर अँधेरा छा चुका था। अंधेरे से मुझे ख्याल आया कि कुछ जहन्नम वालों का हाल भी देखूँ, मैंने 'सुब्हान अल्लाह' कहा और उसके साथ ही मेरे बाईं ओर नीचे की ओर एक स्क्रीन सी दिखाई गई, उस पर जो सीन चला वह बहुत ही दहशत नाक था। यह जहन्नम के बीच के हिस्से का मंज़र (दृश्य) था। भयानक और बड़े बड़े फरिश्ते भड़कती हुई आग से कुछ बहुत बुरी शकल वाले इंसानों को घसीट घसीट कर बाहर निकाल रहे थे। उनके गलों में

तौक़ थे और हाथ पैरों में भारी और नुकीली जंजीरें बंधी हुई थीं, उनके चेहरे का मांस आग में झुलस गया था। उनके शरीर पर तारकोल का बना हुआ कपड़ा था, जिससे सुलगती आग उनके मांस को जला रही थी। वह तकलीफ के मारे चीख रहे थे, रो रो कर अल्लाह से फरियाद कर रहे थे कि उन्हें एक बार दुनिया की ज़िन्दगी में जाने का मौका दिया जाए फिर कभी वे अत्याचार, कुफ़्र और नाइंसाफी के पास भी नहीं फटकेंगे। मगर वहां चीख़ना, रोना और दांत पीसना सब बेकार था।

फिर जहन्नम वालों ने चिल्ला चिल्ला कर पानी मांगना शुरू किया तो फरिश्ते उनको घसीटते हुए पानी के कुछ चश्मों तक ले गए। यहां उबलते पानी से भाप उठ रही थी, लेकिन यह जहन्नमी इतने प्यासे थे कि उसी पानी को पीने पर मजबूर थे। वह खोलते हुए पानी को पीते और चीख़ते जा रहे थे, वह पानी से मुंह हटाते लेकिन कुछ ही देर में इतनी ज़्यादा प्यास लगती कि फिर जानवरों की तरह उसी पानी को पीने पर खुद को मजबूर पाते। इस के नतीजे में उनके चेहरे की खाल उतर गई और उनके होंठ नीचे तक लटक गए थे।

यह मंज़र देख कर मैंने खुदा की पनाह (शरण) मांगी और उसका शुक्र अदा किया कि उसने मुझे इस भयानक अंजाम से बचा लिया। फिर मैं इस मंज़र से नज़र हटा कर उस रौशनी को देखने लगा जो पहाड़ की चोटी पर बने मेरे महल से उठ रही थी। मेरी सवारी धीरे धीरे इस महल की ओर बढ़ रही थी। मेरे दिल में इच्छा जागी कि महल पहुंचने से पहले ही यहां बैठे बैठे उसे देख लूँ। मैंने फिर सुब्हान अल्लाह कहा, अचानक मेरा कमरा सिनेमा घर में बदल गया। लेकिन इस सिनेमा की स्क्रीन सामने ही न थी बल्कि दाहिने बाएँ नीचे और ऊपर की ओर भी थी, महल का मंज़र किसी थ्री डी फिल्म की तरह चलने लगा। मुझे लगा कि मैं खुद महल के भीतर मौजूद हूँ और सब कुछ देख और सुन सकता हूँ।

आज यहां जश्न का माहोल था, ऊँचे पहाड़ की चोटी पर मेरा यह शानदार महल नूर का घर बना हुआ था। बिना बल्ब के फूटती हुई रोशनियाँ और बिना किसी शमा के चमकते हुए झूमर इस शानदार महल को अंधेरे के सागर में रौशनी का एक जज़ीरा (द्वीप) बनाए हुए थे। यह रौशनी हर दिशा और हर रुख से फूट रही थी। यह रौशनी से ज़्यादा रंग और नूर की वह बरसात लगती थी जो आँखों के रस्ते अहसासात (भावनाओं) की दुनिया को हर पल एक नई लज़्ज़त हा अहसास करा रही थी। रौशनी कभी आँखों को इतनी अच्छी भी लग सकती है यह कभी किसी ने

नहीं देखा होगा। समय समय पर यहां नगमों का तरन्नुम छिड़ता और दिलों के तारों को छेड़ता हुआ वातावरण में बिखर जाता। संगीत इतना मदहोश करने वाला भी हो सकता है, किसी ने कभी इसका गुमान न किया होगा। वातावरण में धीमी धीमी खुशबू भी महक कर फिजा को और मदहोश बनाए हुए थी। खुशबू इतनी राहत देने वाली भी हो सकती है, किसी इंसान ने कभी इसकी कल्पना नहीं की होगी।

इस बड़े महल की सीढ़ियों पर गुलामान (नौकरों) की चहल पहल बिखरे मोतियों का सा मंजर लग रही थी। उनके चेहरों पर रौशनी, खुबसूरत कपड़े और अंदाज़ में मुस्तैदी थी। इन की मंजिल महल के एक कोने पर बना विशाल बाग था, यह बाग क्या था हरयाली, फूलों और पेड़ों का एक गुलदस्ता था जिसने अपनी खूबसूरती से बागीचे बनाने वालों की हर कारीगरी को मात दे दी थी। हज़ारों रंग इस बाग में बिखरे हुए थे, एक हरे रंग ने ही इतने अलग अलग रूप लिए थे कि उन्हें गिना नहीं जा सकता था। बड़े बड़े घने पेड़ और उन पर लगे अनगिनत तरह (प्रकार) के फल, हर पेड़ पर अलग रंग के पत्ते, हजारों तरह के पौधे जिन पर लगे रंग बिरंगे फूल और कलियाँ। फिर यह सब कुछ ऐसे ही नहीं था बल्कि असल खूबसूरती डिजाइन की थी जिस डिजाइन के साथ पेड़ों, पौधों और फूलों को लगाया गया था। यह बाग किसी शायर की दिल को छू लेने वाली ग़ज़ल की तरह था जिसमें अलग अलग शब्दों को एक ख़ास लड़ी में पिरो कर खुबसूरत ग़ज़ल बनाई जाती है। इस हसीन और खुबसूरत बाग में बने खुबसूरत रास्ते और क़यामत ढा रहे थे जो याकूत और नीलम जैसे कीमती पत्थरों से बनाए गए थे। इस पर चार चाँद वह झरने, नदियां और नहरें लगा रही थीं जो बाग के बीच में बहरही थीं। देखने में खुबसूरत लगने के साथ साथ उन की आवाज़ भी कुछ कम खुबसूरत नहीं थी। इन नहरों में से किसी में सफेद दूध, किसी में झाग उड़ाता पानी, किसी में लाल शरबत किसी में बहते शहद की मोजें और ना जाने कितनी तरह की पीने की चीज़ों थीं। हर नहर से एक अलग तरह की खुशबू उठ रही थी जो करीब जाने वाले को अपने जादू में जकड़ लेती। नहरों के साथ और पेड़ों के नीचे जगह जगह बैठने वालों के लिए हीरे जवाहरात से जड़े हुए तख्त, शाही सीटें, कालीन और आरामदेह तकये रखे हुए थे।

यह खुबसूरत बाग चारों ओर से खुला हुआ था, जब कभी हवा का कोई झोंक उठता एक नई खुशबू को अपने साथ लाता था। बाग से दूर तक का नज़ारा बिल्कुल साफ दिख रहा था। बाहर जो अंधेरा था यहां उसका कोई असर महसूस नहीं होता था, दूर तक विशाल शहर की सी ऊँची

इमारतें और उनमें जगमगाती रोशनियाँ थीं जो रात में चमकते हुए कंडील लग रहे थे। आसमान पर छोटे छोटे तारे जगमगा रहे थे जिनकी दूधया रौशनी ने आसमान को और हसीन बना दिया था। एक दिशा में एक जगमगाती हुई रौशनी थी जो धीरे धीरे महल की ओर बढ़ रही थी। मुझे मालूम हो गया कि यह दरअसल मेरी ही सवारी थी जिसे खुदा की कुदरत से अंदर बैठा हुआ होने के बावजूद मैं बाहर से महल की ओर बढ़ता हुआ देख रहा था।

बाग के एक हिस्से में मैंने सालेह को बैठे हुए देखा और मन में कहा कि तुम मुझसे पहले ही यहां पहुंच चुके हो। वह जिस जगह बैठा हुआ था वह शायद बाग का सबसे सुंदर हिस्सा था, उसके आसपास का फर्श पारदर्शी शीशे की तरह था। फर्श इतना पारदर्शी था कि दूर तक नीचे का मंज़र साफ दिख रहा था। फर्श के नीचे एक ढलती हुई हसीन शाम का मंज़र था जिसमें हरी भरी घास और रंगीन फूलों से ढके मैदान और उनके बीच में बहते दरया बहुत खुबसूरत लग रहे थे।

यहाँ से नज़र नीचे दौड़ा पर हसीन शाम नज़र आती तो आसपास एक महकती और चमकती हुई रात थी। नीचे अगर दरया बह रहे थे तो ऊपर पेड़ों की फलों से लदी डालियाँ थीं जो इशारा पाकर नीचे आने और मनपसंद मेवों की भेंट पेश करने के लिए बेकरार थी। कुछ सेवक एक कोने पर तरह तरह के पकवान पका रहे थे, उससे उठने वाली महक खाने के स्वादिष्ट होने का ऐलान कर रही थी। साथ ही शीशे से अधिक पारदर्शी पर चांदी के बने हुए बर्तन खूबसूरती से रखे हुए थे.... इस इंतजार में कि कब महफिल गर्म हो और हम अपने मालिक को खुश करें।

यह मंज़र देखने से मुझे एहसास हो रहा था कि यह सब कुछ मेरे लिए अजनबी नहीं है। मुझे याद आया कि ब्रज़ख की ज़िन्दगी में मैं इसको देख चुका था। इसी बीच में मुझे महसूस हुआ कि सवारी की गति धीमी हो रही है, मैंने इशारा किया और स्क्रीन गायब हो गई। मेरी सवारी मंजिल पर पहुंच रही थी। ऊंचाई से जगमगाता हुआ महल इतना खुबसूरत लग रहा था कि मेरा दिल चाहा कि मैं यहाँ ठहर कर यह मंज़र देखता रहूं। इस मंज़र को देखने के लिए मैंने महल के आसपास तीन चक्कर लगाए, फिर मुझे खयाल आया कि सालेह नीचे मेरा इंतज़ार कर रहा है। इसलिए मैंने उतरने का फैसला किया, मेरी सवारी या शीश महल उसी जगह धीरे से उतर गया जहां सालेह मौजूद था।

मैं बाहर निकला तो सालेह ने हंस कर मेरा स्वागत किया और बोला:

"मैं यह समझ रहा था कि तुम उसे अर्श समझ कर उसका तवाफ़ कर रहे हो, अच्छा हुआ तुम ने सात चक्कर नहीं लगाए।"

उसके दिलचस्प टिप्पणी करने पर मैं भी उसकी हँसी में शामिल होकर उसके गले लग गया। फिर वह मुझसे अलग होते हुए बोला:

"तुम पहले अपने महल का निरीक्षण करोगे या खाने पीने का इरादा है?"

'मैं तो इस घर की खूबसूरती से हैरान होकर रह गया मैं सोच भी नहीं सकता कि किसी चीज़ को इतनी खूबसूरती में भी बनाया जा सकता है।'

"अब्दुल्लाह! यह तो सिर्फ शुरुआत है। अब से लेकर दरबार वाले दिन तक जो कुछ भी तुम देखोगे कुरआन उस सब को शुरूआती महमान नवाजी का सामान कहता है। जो इसके बाद मिलेगा वह तो न किसी कान सुना है न किसी आँख ने देखा है और न किसी दिमाग पर कभी उसका ख्याल ही गुज़रा है।"

'तुम ठीक कहते हो, ये बातें कुरआन और हदीस में बयान हुई थीं, लेकिन जन्नत उस से अलग है जो नक्शा कुरआन में बयान हुआ है। मेरा मतलब है कि उस बयान से कहीं ज़्यादा खूबसूरत जगह है।'

"इसकी वजह यह है कि जन्नत का कुरआन में ज़िक्र कुरआन नाजिल (उतरने) होने के समय के अरब वासियों के दिमाग के हिसाब से हुआ है। यानी जिन चीजों को उस वक़्त अरब वाले ज़्यादा से ज़्यादा बड़ी नेमत और ऐश की चीज़ें समझ सकते थे, उसी का बयान (वर्णन) किया गया। वह आदमी मूर्ख होगा जो जन्नत को सिर्फ उन्ही चीज़ों तक समझेगा।"

'तुम सही कहते हो, कुरआन नाजिल होने के ज़माने के अरब वासी तो शायद बहुत सी उन चीज़ों का अंदाज़ा भी नहीं कर सकते थे जो मेरे जमाने यानी सूचना युग में आविष्कार हो चुकी थी। कुरआन ने अरबों की सोच के हिसाब से ही जन्नत के ऐश का नक्शा खींचा था, लेकिन भाई जिस सवारी पर मैं सवार होकर आया हूं, उसने तो मेरी कल्पना को भी हिला दिया।'

"इस तरह की बहुत सी चीजें तुम अब और देखोगे। खैर अभी क्या इरादा है?"

मैं उसकी बात सुनी अनसुनी करते हुए आसपास फैले हुए हसीन माहौल में खोगया। मैं एक एक चीज़ और एक एक मंज़र को अपनी आंखों में समेट लेना चाहता था। सालेह ने मेरे मूड को देखा तो शरारत भरी मुस्कान के साथ कहने लगा:

"तुम शायद हूरों को ढूंढ रहे हो। वह तुम्हारा स्वागत करने बाहर आईं थी, अब सब अपने महलों में लौट गई हैं। लेकिन तुम चाहो तो"

मैंने उसे वाक्य पूरा करने का मौका दिए बिना पूरी संजीदगी से जवाब दिया:

'मेरे समय में इंसानयत के दो बड़े पेशवा हुआ करते थे। एक कार्ल मार्क्स जो पेट को ही ज़िन्दगी की असल बताते थे और दूसरे फ़्रायड जो.... "

मैंने वाक्य अधूरा छोड़ कर पल भर के लिए रुका जिस पर सालेह ने जोरदार ठहाका लगाया। मैंने खाने की खुशबू को सूंघते हुए कहा:

'मैं फिलहाल कार्ल मार्क्स की बात मानने का इरादा रखता हूं।'

.....

दुनिया में तमाम इंसानों की ज़िन्दगी समय की गुलामी में बीता करती थी। समय का पहिया पल, दिनों और महीनों और साल का सफ़र तय करता हुआ आगे बढ़ा करता था। पहरों और मोसमों के बदलने से समय के गुजरने का एहसास हुआ करता था। मगर मैं अब जिस दुनिया में था, वहां समय गुलाम था और इंसान आक़ा। पल, दिन और सप्ताह, महीने और साल,और सदियाँ इनके दिन खत्म हो चुके थे। समय बीतने का ज़माना पिछली दुनिया की तरह गुज़र चुका था। समय और काल के अवशेषों से अब जो कुछ बाकी था वह सिर्फ मौसम थे। और वह भी सारे हमारे काबू में थे। जन्नत के इंसानी राज्य में कहीं हमेशा सुबह की रौशनी छाई रहती, कहीं दोपहर के सन्नाटे, कहीं शाम की फैलती डूबती लाली, कहीं आधी रात की स्याह ख़ामोशी और कहीं पूरे बड़े चाँद की चांदनी, कहीं तारों भरी रातें, कहीं बहारों की घनी छाओं। हांलाकि जन्नत का मौसम बहुत अच्छा रहता था, लेकिन लोगों की मर्ज़ी के हिसाब से सर्दियां थीं तो कहीं गर्मी और कहीं बरखा की रुत थी, यानि जो भी दिल चाहे हर तरह का मौसम इंसान के लिए मौजूद था।

मैं एक बहुत बड़ी सल्तनत का अकेला राजा बन चुका था। मेरा प्यारा दोस्त सालेह इस नए संसार में मेरा साथी था। उसी ने मुझे बताया कि यह इतनी बड़ी सल्तनत बहुत बड़ी और फैली हुई काएनात का एक हिस्सा थी। इस नई व्यवस्था में बटवारा कुछ इस तरह था कि सभी जन्नत वालों की रहने की जगह इसी धरती पर थी जहां हजारों लाखों साल तक इंसान की आज़माइश होती रही। जन्नत वालों में दो कक्षाएं थीं। एक आम लोग दुसरे ख़ास लोग, आम लोग या कम दर्जे (स्तर) के आमाल वाले वो लोग थे जिन्हें इनाम में एक या एक से ज़्यादा सितारे दे दिए गए थे। यह बताने की शायद जरूरत नहीं कि यह सितारे अब वेसे नहीं रहे थे जिनको हम दुनिया में जानते थे बल्कि बदलकर खुबसूरत जन्नतों और वादियों में बदल चुके थे।

ख़ास लोगों में पहले शोहदा और नबियों के साथी थे। उनको अरबों खरबों सितारों की आकाशगंगा (गैलेक्सी) की बादशाही दी गई थी, मैं ऐसी ही एक आकाशगंगा का राजा था। उनके ऊपर नबियों की क्लास थी जो अनगिनत आकाशगंगाओं के शासक थे।

फिलहाल यह एक राज़ था कि किसे कौन सी जगह की बादशाही मिलनी है, वहाँ क्या करना होगा। सालेह ने मुझे बताया कि यह सब कुछ अल्लाह दरबार के दिन बयान करेंगे। इसी दिन हर इंसान को उसके साम्राज्य औपचारिक रूप से दे दिए जाएंगे। फिलहाल तो लोग केवल पृथ्वी पर रहते थे और कहना सालेह का के उनको जो नेअमतें यहां मिल रही थीं वे शुरुआती महमान नवाज़ी की चीजें थीं। असल नेअमतें जो किसी आँख ने देखी, न किसी कान ने सुनी न किसी दिमाग में उनका ख्याल गुज़रा वह दरबार वाले दिन के बाद ही मिलना शुरू होंगी। लेकिन तब तक लोगों को प्रोटोकॉल उन की हैसियत के अनुसार ही दिया जा रहा था।

इस प्रोटोकॉल का इज़हार उन समारोहों, मजलिसों और दावतों में होता जो जन्नत वाले आपस में एक दूसरे को दे रहे थे। हालांकि अभी तक सारे जन्नती जन्नत में नहीं आए थे, मगर यहाँ भरपूर जीवन शुरू हो चुका था। पीछे हश्र में सिर्फ इतना हो रहा था कि एक के बाद एक करके नेक लोग जन्नत में दाखिल हो रहे थे, मगर यहाँ समय चूंकि रुका हुआ था इसलिए सिर्फ दो लोगों के दाखिल (प्रवेश) होने के बीच भी अनगिनत साल गुज़र जाते थे। मेरा तो अंदाज़ा यही था और जिसका सालेह ने भी समर्थन किया था कि दरबार उसी समय लगेगा जब सारे जन्नती जन्नत में आ जाएँगे। यही जन्नत की शरुआती ज़िन्दगी थी, इसी दौरान में मजलिसे और

समारोह हो रहे थे। ज़्यादा तर नबी हज़रात ही थे जो अपनी और दुसरे नबियों की उम्मतों के शुरू में आने वाले नेक लोगों के सम्मान में दावतें कर रहे थे।

इन्हीं मजलिसों में मेरी कई लोगों से मुलाकात हुई। मैं हालांकि दुनिया में बहुत कम लोगों से मिला करता था, लेकिन जन्नत में आने के बाद मैंने महसूस किया कि मैं आदत के खिलाफ बहुत सोशल किस्म का हो चुका हूं। इसलिए मेरे नए नए दोस्त बनने लगे, लोगों के हालात और उनकी पिछली ज़िन्दगी के तजुर्बे मिलने लगे। मेरे लिए ये बात अजीब तो नहीं थी मगर फिर भी मुझे थोडा आश्चर्य हुआ कि शुरूआती सफल लोगों में अधिकतर गरीब और परेशान हाल लोग थे। यह वो लोग थे जिन्होंने दुनिया में बहुत परेशानी और दुख झेले, लेकिन हमेशा सब्र (धैर्य) और शुक्र से काम लिया। मैंने यह बात खास तौर पर नोट की कि ऊँचे दर्जे के इन शुरूआती जन्नतियों की एक बात समान थी। यह सब सब्र करने वाले थे जिन्होंने बुरे से बुरे हालात में भी अल्लाह पर भरोसा किया और इत्मिनान और खुदा पर भरोसे का दामन कभी नहीं छोड़ा।

****

जब ज़िन्दगी शुरू होगी

जन्नत में धीरे धीरे मेरे जानने वाले लोग भी आते जा रहे थे। अलग अलग मजलिसों में उनसे मुलाकात हो रही थीं, उन में दुनिया में मेरे समझाने पर ऊँची इमानी और अख्लाकी (नैतिक) ज़िन्दगी गुज़ारने वाले लोग भी थे और ख़ुदा के दीन (धर्म) में मेरा साथ देने वाले मेरे साथी भी। इनमें से हर आदमी से मिलकर यूँ लगता था कि ज़िन्दगी में खुशी और मुहब्बत का एक दरवाज़ा और खुल गया है। लेकिन वो अभी तक नहीं आई थी जिसका मुझे इंतजार था, हालांकि इस इंतजार में कोई परेशानी नहीं थी बल्कि मजा ही था। फिर एक दिन, हालांकि इस नई दुनिया में रात और दिन नहीं रहे थे, सालेह मेरे पास आकर कहने लगा:

"सरदार अब्दुल्लाह तुम्हारे लिए एक बुरी खबरी है।"

मुझे हैरत हुई कि जन्नत में मुझे यह क्या बुरी खबर सुनाऐगा। लेकिन इसका लहजा ऐसा था कि मैं पूछने पर मजबूर हो गया:

'क्यों भाई! यहाँ क्या खबर बुरी खबर हो सकती है?'

"सरदार अब्दुल्लाह बुरी खबर यह है कि तुम्हारे ऐश के दिन ख़त्म हो गए। तुमने नाएमा के पीछे आज़ादी के बहुत दिन देख लिए, अब तुम्हारी निगरानी के लिए नाएमा खुद आ रही है।"

'क्या सच?' मैंने जल्दी से ख़ुशी के मारे सालेह को गले लगाते हुए कहा।

"और क्या मैं झूठ बोलूंगा?"

फिर मेरे सर को सहलाते हुए बोला:

"मुझे छोड़ दो, मैंने नाएमा के आने की खुश खबरी दी है, मगर मैं खुद नाएमा नहीं हूँ।"

'तुम हो भी नहीं सकते।' मैंने उसे छोड़ते हुए कहा।

'लेकिन यह बताओ कि इतनी अच्छी खबर तुम मुझे धमकी के अंदाज में क्यों सुना रहे हो। वैसे तुम्हें नाएमा से अगर यही उम्मीदें हैं तो मुझे विश्वास है कि तुम्हें बहुत निराशा होगी। खैर छोड़ो इन बातों को, मैं नाएमा के आने पर उसे एक बहतरीन तोहफा देना चाहता हूं।'

"क्या तोहफा देना चाहते हो?"

'एक बहतरीन घर।'

"भाई तुम्हारे पास तुम्हारा घर है और उसके पास उसका घर है। अब इस नई दुनिया में खानदानी निज़ाम (व्यवस्था) तो है नहीं कि घर देना तुम्हारी जिम्मेदारी हो, न उसे तुम्हारे बच्चों को घर बैठकर पालना है, फिर नया घर क्यों बनाते हो?"

'मुझे पता है कि हर जन्नती का अपना घर और अपनी सल्तनत होगी, लेकिन मेरी इच्छा है कि अपनी पसंद से नाएमा के लिए घर बनाऊँ जो मेरी सल्तनत में हो। और फिर उस घर को नाएमा को गिफ्ट करूँ।'

"जानते नहीं खुदा ने ज़्यादा बढ़ने वालों को शैतान का भाई कहा है?" वो इस समय मुझे तंग करने के मूड में था।

'जन्नत में शैतान नहीं आ सकता, लेकिन उसके कुछ चेले जरूर हैं जो मियाँ बीवी में प्यार पैदा करने के बजाय दूरी पैदा करते हैं।' मैंने बनावटी गुस्से के साथ उसे घूरते हुए कहा।

"ठीक है ठीक है।" वह हाथ जोड़ते हुए बोला

"मुझे बताओ क्या करना चाहते हो?"'

उसके बाद मैंने उसे सारी स्कीम समझाई। मेरी बात ख़त्म हुई तो वह बोला:

"चलो महल देखने चलो।"

मैंने हैरान होकर पूछा:

'क्या मतलब?, क्या महल बन गया?'

"तुम क्या समझते हो तुम दुनिया में खड़े हो कि पहले जमीन ख़रीदोगे, फिर नक्शा पास कराओगे, फिर कोई ठेकेदार ढूँडोगे और फिर कई महीनों में महल तैयार होगा। सरदार अब्दुल्लाह! यह तुम्हारी सल्तनत है, खुदा की शक्ति तुम्हारे साथ है। तुमने कहा और सब हो गया, यही यहाँ का कानून है।

.....

हम दूर तक फ़ले हुए सागर के ऊपर सफ़र कर रहे थे। सालेह और मैं समुद्री जहाज जैसी किसी चीज में सवार थे। सवारी का यह तरीका सालेह के कहने पर ही अपनाया गया था। उसका कहना था जन्नत में जितना सुखद मंजिल पर पहुँचना है इतना ही मज़ेदार वहां तक पहुंचने का रास्ता है। उसकी बात ठीक थी, मुझे दुनिया की ज़िन्दगी में समुद्री सफ़र कभी पसंद नहीं आया था, लेकिन इस सफ़र की बात ही कुछ और थी। यह जहाज़ एक तैरता हुआ महल जैसा था जिसके ऊपर हम दोनों खड़े थे। धीमी हवा और खुशगवार (सुखद) मौसम में आगे बढ़ते हुए हम अपनी मंजिल के करीब पहुंच रहे थे।

हमारी मंज़िल वह पहाड़ी द्वीप था जिसे एक महल के रूप में नाएमा के लिए तैयार किया गया था। यह महल बिल्कुल वैसा ही था जैसा मैं सालेह को बता रहा था। बीच समुद्र में एक बहुत बड़ा द्वीप, जहां हरे हरे पहाड़, दरया, नदियां, समुद्र के साथ चलने वाले पहाड़ी रास्ते, घास के

बड़े बड़े मैदान और इन सबके बीच एक घर। जिसका फर्श पारदर्शी हीरे का बना हुआ। ऐसा फर्श जो हीरे की तरह चमकदार और शीशे की तरह पारदर्शी हो, इतना पारदर्शी कि उसके नीचे बने होज़ों में बहता पानी और उनमें तैरती रंग बिरंगी मछलियों साफ़ नज़र आएं। जिसकी दीवारें पारदर्शी चांदी की बनी हों जो बाहर का हर मंज़र दिखाई दे और जिसकी ऊँची और बड़ी छत सोने की हो और छत पर मोती, जवाहरात और कीमती पत्थर जड़े हों। यह महल कई मंजिल ऊँचा हो, इतना ऊँचा कि आसपास के पहाड़ों से भी ऊँचा हो जाए। जिसकी हर मंजिल से कुदरत और उसकी खूबसूरती का एक नया मंज़र दिखाई दे।

यहाँ आकर जो कुछ मैंने अपने सामने देखा मेरे बताने और अंदाज़े से कहीं ज़्यादा खुबसूरत था। इसकी वजह शायद यह थी कि मेरे शब्द उन नेमतों का बयान (वर्णन) करने के लिए बहुत कम थे जो मुझे हासिल थीं। मैंने तो एक सामान्य नक्शा या ख्याल बताया था, लेकिन उस नक़्शे में डिज़ाइन, रंग और रूप रौशनी और दूसरी आराम की चीज़ें मेरे बयान और कल्पनाओं दोनों से ही कहीं ज़्यादा थी। सालेह ने मेरी बात को उसूल में समझा और उसके बाद महल बनवा दिया जो खुबसूरत बिल्डिंग का एक शाहकार था जो उम्मीद से भी ज़्यादा दिल को मोह लेने वाला था। यह महल इतना बड़ा था कि उसे पूरा देखने के लिए बहुत समय चाहिए था। मैंने सालेह से कहा:

"मुझे इत्मिनान (संतोष) हो गया है, ऐसा है कि अभी तो चलते हैं, नाएमा आएगी तो उसके साथ....'

मेरा वाक्य यहीं तक पहुंचा था कि खनक सी एक आवाज़ आई:

"मगर मैं तो यहाँ आ चुकी हूँ।"

मैंने पीछे मुड़कर देखा तो बस देखता ही रह गया, यह नाएमा थी और नाएमा नहीं भी थी। हश्र के दिन मैंने नाएमा को जवान और सुंदर देखा था, मगर यहाँ मेरे सामने जो लड़की खड़ी थी उसकी खूबसूरती बताने के लिए हुस्न, सौंदर्य, युवा, शबाब, रूप, आकर्षण,सुन्दरता जैसे शब्द कोई हैसियत नहीं रखते थे। मैं अभी इसी हालत में था कि सालेह की आवाज़ आई:

"आप से मिलिये, आप सरदार अब्दुल्लाह! हैं। यह नाएमा हैं, और मुझे पता है कि आप को एक दूसरे से मिलकर बहुत खुशी हुई है।"

'तुमने मुझे बताया क्यों नहीं कि नाएमा पहले से यहां होगी।' मैंने कुछ नाराज़ होकर सालेह की तरफ देखते हुए कहा।

नाएमा सालेह की सफाई पेश करते हुए बोली:

"उन्हें मैंने ही मना किया था, आपको सरप्राइज़ देना चाहती थी।"

"यह भी आपको सरप्राइज़ देना चाहते थे। देखा आपने, आपके लिए कितना ख़ास घर बनवाया है इन्होंने।"

"हाँ मैंने देख लिया, मुझे तो अपनी आंखों पर यकीन ही नहीं आता।"

'और मुझे अपनी आँखों पर यकीन नहीं आ रहा।' मैंने नाएमा को देखते हुए कहा। फिर सालेह को संबोधित करते हुए कहा:

'आपकी पत्नी तो है नहीं, आप विदा होने का क्या लेंगे?'

उसने हंसते हुए जवाब दिया:

"मैं दुनिया में हमेशा तुम्हारे साथ रहा था, अभी भी चाहता हूं कि हमेशा तुम्हारे साथ रहूँ।"

'मगर भाई, तब आप नज़र नहीं आया करते थे।'

वह शरारती अंदाज में बोला:

"यह अब भी मुमकिन है कि मैं गायब रहकर यहां मौजूद रहूं।"

यह कहते ही वह हमारी नज़रों से गायब हो गया और फिर उसकी आवाज़ आई:

"ऐसे ठीक है?"

"नहीं भई नहीं, ऐसे नहीं चलेगा।" नाएमा एकदम बोली।

सालेह फिर सामने आ गया। नाएमा ने उसे देख कर राहत (संतोष) की सांस ली और बोली:

"आप वादा करें कि जब भी आएंगे इंसानों की तरह सामने आएंगे और जाएंगे तो इंसानों की तरह ही जाएंगे।"

" अच्छा भई अच्छा!" उसने सर हिलाकर जवाब दिया, लेकिन उसकी आंखों में अभी भी शरारत चमक रही थी। वह बड़ी मासूमियत से बोला:

"मुश्किल यह है कि इंसान तो मैं हूं नहीं, फिर इंसानों वाले नियम मुझ पर कैसे लागू हो सकते हैं?"

'सोच लो! मेरी पहुँच तुम्हारे सरदार तक है, मेरी एक शिकायत पर वह तुम्हें वाकई इंसान बना सकते हैं।' मैंने मुस्कुरा कर कहा तो वह लहजे में उदासी लाते हुए बोला:

"यार धमकी क्यों देते हो, मैं वादा करता हूँ कि मैं आऊँगा और जाऊँगा तो इजाज़त (अनुमति) ले लिया करूंगा। और अगर तुम कहो तो मैं अभी चला जाता हूँ।"

यह कहकर वह पीठ फेर कर मुड़ा, दो चार कदम चला, फिर घूमकर नाएमा से बोला:

"हालांकि मेरे जाने से कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि तुम दोनों के बच्चे यहां आ चुके हैं और उनका फैसला है कि हम अपनी माँ की शादी खुद करेंगे। उसके बाद ही तुम अब्दुल्लाह के घर आ सकती हो।"

"सालेह ने सही कहा।" लैला अंदर आते हुए जोर से बोली, और तीर की तरह भाग कर मेरे पास आ गई। उसके पीछे ही अनवर, जमशैद, आलया और आरफा भी थे। उन को देखकर मेरी खुशी कई गुना बढ़ गई। मैंने सबको अपने गले लगाकर प्यार किया। मिलना मिलाना ख़त्म हुआ तो नाएमा ने कुछ गुस्से के साथ कहा:

"यह क्या बचपने वाली बात तुम लोग कर रहे हो कि हमारी दुबारा शादी होगी?"

आलया ने कहा:

"अम्मी पिछली दुनिया में हम में से कोई भी आप की शादी में मौजूद नहीं था। इसलिए हम सब भाई बहनों की एक ही राय है कि हम आप लोगों की शादी बड़ी धूमधाम से करेंगे। हम आप को खुद दुल्हन बनाकर विदा करेंगे और तब तक आपका अब्बू से पर्दा रहेगा।"

अनवर ने हस्तक्षेप करते हुए कहा:

"पर्दे वाली बात तो बड़ी सख्त है, बस इतनी शर्त लगादो कि अकेले में नहीं मिलेंगे।"

'इस महरबानी का बहुत बहुत शुक्रिया। यह बताओ कि शादी कब होगी।' मैंने बेबसी से पूछा।

"जब तैयारियां हो जाएंगी।" आरफा ने बड़ी गंभीरता से कहा।

'और क्या तैयारियां होंगी।' मैंने पूछा।

"मैं बताती हूँ।" लैला बोली।

"जगह तो यही अच्छी है, बस कपड़े, गहने आदि का इन्तिज़ाम करना है।"

'और मुझे भी ज़रा अपने अच्छे कपड़े बनवाने हैं.... अब्बू जैसे। मुझे तो अब्बू के कपड़े देखने के बाद अपने कपड़े अच्छे नहीं लग रहे।" जमशैद ने भी मांगों में अपना हिस्सा डाला।

'अच्छा यह सब तैयारियां हो गईं तो शादी हो जाएगी?' मैंने पूछा।

"क्यों नहीं।" सब ने मिल कर कहा।

'चलो फिर अभी चलो, मैं तुम्हें जन्नत के सबसे बड़े शॉपिंग के इलाक़े में ले चलता हूँ। वैसे तो तुम लोग वहां घुस भी नहीं सकते, लेकिन मेरी तरफ से जो दिल चाहे आज शॉपिंग करलो।'

इस पर सारे बच्चों ने खुशी का नारा लगाया। फिर हम शॉपिंग के लिए रवाना हो गए।

.....

यह एक और अलिफ़ लैला की सी जगह थी। मैं इससे पहले सालेह के साथ यहां कई बार आ चुका था, लेकिन हर बार यहां हमेशा नई चीजें मौजूद हुआ करती थीं। इस जगह के लिए शॉपिंग सेंटर या बाजार जैसी शब्दावली बिल्कुल ठीक नहीं थीं। यह सैकड़ों मील फैला हुआ एक इलाका था जो रंग और नूर के सैलाब से रौशन था। यहां रात का समय ही रहा करता था। खाने पीने, पहनने और बरतने की यहां इतनी चीज़ें थीं कि उनकी संख्या गिनना तो दूर की बात है, उनकी विभिन्न प्रकार और वेराईटी ही करोड़ों में थी। हर जगह यहाँ फरिश्ते तैनात थे, लोग डिसप्ले से कुछ पसंद कर लेते और फिर फरिश्तों को नोट करा देते, जिसके बाद यह चीजें लोगों के घरों में पहुंचा दी जातीं। फरिश्ते हर आदमी का रिकॉर्ड चेक करके उसके बारे में सब कुछ जान लेते। इस बाजार के दो हिस्से थे एक हिस्से में आम जन्नती खरीदारी कर सकते थे। दूसरा हिस्सा ख़ास

लोगों के लिए विशेष था, आम लोग यहां जा तो सकते थे, मगर यहाँ खरीदारी की इजाज़त सिर्फ ऊँचे दर्जे के जन्नतियों को थी।

यह सब पहली बार यहां आए थे। पहले मैं उन्हें आम लोगों के हिस्से में ले गया। ये लोग उसे देख कर खुशी से पागल हो गए। उसके बाद उन्होंने जो दिल चाहा खरीदना शुरू कर दिया। लेकिन नाएमा सारा समय मेरे साथ ही रही, उनकी खरीदारी ख़त्म हो गई तो मैंने कहा कि मैं तुम्हें खाना खिलाने ले जाता हूँ। खाने के लिए मैं उन्हें ऊपर ले गया। यहां छत से दूर दूर तक सुंदर रोशनियाँ दिखाई दे रही थीं। जबकि ऊपर तारों भरा आसमान था, दुनिया से उलट जहां शहर की रोशनियाँ तारों की चमक को फीका कर देती थीं यहाँ ज़मीन और आसमान पर एक जैसी जगमगाहट थी।

तारों की दूधया रोशनी और ठंडी हवा में खाने की सुगंध ने वातावरण को बेहद प्रभावी बना रखा था। बाजार की तरह यहां भी धीमी सी आवाज़ में नगमे चल रहे थे। खाने की इतनी वेराईटी थी कि किसी को समझ में नहीं आता था कि क्या खाएं। जो चीज़ लेते वह इतनी लज़ीज़ (स्वादिष्ट) होती कि छोड़ने का दिल ही नहीं चाहता था। मगर शुक्र खुदा का कि यहां पेट भरने का कोई मसला ही नहीं था जिस की वजह से जब तक दिल चाहता रहा हम लोग बैठकर खाते रहे।

वापसी पर मैं जानबूझ कर इन लोगों को बाजार के उस इलाके से ले गया जहाँ सिर्फ ऊँचे दर्जे के जन्नती खरीदारी कर सकते थे। उसे देख कर उन लोगों की आंखें फट गईं। जमशैद ने कहा:

"यह भी शॉपिंग सेंटर का हिस्सा है?"

'हां यह भी शॉपिंग का इलाका है।' मैंने जवाब दिया।

मेरी बात पूरी तरह सुने बिना ही सब लोग शॉपिंग के लिए बिखर गए। मेरे साथ केवल नाएमा ही रह गई।

'क्यों, तुम कुछ नहीं ख़रीदोगी? पहले भी तुमने कुछ नहीं लिया और अब भी यहीं खड़ी हो।'

मेरी बात सुनकर नाएमा धीरे से मुस्कराकर बोली:

"मेरे लिए सबसे कीमती चीज़ आपका साथ है, यह अनमोल चीज आपके साथ के सिवा कहीं नहीं मिलेगी।" यह कहते हुए नाएमा का रौशन चेहरा और रौशन हो गया।

हम दोनों एक जगह ठहर कर ख्वाब और ख्याल से ज़्यादा हसीन इस जगह और इस के माहोल को एन्जोए करने लगे। दूर तक फैला हुआ यह बाजार अपने भीतर हर तरह की दुकानें लिए हुए था। कपडे, फैशन, जूते, आराम के सामान, उपहार और न जाने कितनी ही दूसरी चीजों की दुकानें यहां थीं। हर दुकान इतनी बड़ी थी कि कई घंटों में भी नहीं देखी जा सकती थी। दुनिया का बड़े से बड़ा शॉपिंग सेंटर भी इसकी एक दुकान के सामने कुछ नहीं था। लेकिन यहां की असल कशिश (आकर्षण) यह दुकानें नहीं बल्कि मदहोश कर देने वाला माहौल था जो हर तरफ छाया हुआ था। मन को अपनी ओर खींचती चीजों से भरी दुकानें, उनमें जगमग जगमग करती रोशनियाँ, खुशबूदार फिज़ा (वातावरण), सुंदर फ़वारे और खुबसूरत लोगों की चहल पहल, सब मिलकर एक बहुत प्रभावशाली माहौल बना रहे थे। यहां का माहौल आने वालों की देखने, सुनने, सूंघने और दूसरी हर तरह की शक्ति पर जिससे उसका दिमाग किसी चीज़ को महसूस करता है इस तरह हमला कर रहा था कि उसे मदहोश कर देता था। दूसरों के लिए यह जगह चीज़े खरीदने की जगह थी जबकि मेरे लिए यह जगह खूबसूरती के कमाल देखने की थी। मगर फिलहाल नाएमा के साथ ने यहां के हर रंग को मेरी नज़र में फीका कर दिया था। लेकिन हमारी तन्हाई में मिलने के पल बहुत कम रहे क्योंकि थोड़ी ही देर में लैला लौट आई और कहने लगी:

"अब्बू वह जो हीरों का ताज है मुझ पर कैसा लगेगा?"

'बहुत प्यारा लगेगा।'

"मगर अब्बू यह लोग कह रहे हैं कि आप इसे खरीद नहीं सकते।"

'अच्छा!' मैंने इतना ही कहा था कि बाकी लोग भी मुंह लटकाए लौट आए। अनवर ने कहा:

"अब्बू चलें यहाँ ज़्यादा अच्छी चीजें नहीं हैं।"

"दूसरे शब्दों में अंगूर खट्टे हैं।" नाएमा हंसते हुए बोली।

'नहीं यह अंगूर इतने खट्टे भी नहीं हैं, चलो मेरे साथ चलो।'

मैं इन सबको लेकर उस जगह गया जहाँ फरिश्ता मौजूद था। मैंने उससे कहा:

'मेरा नाम अब्दुल्लाह है, यह मेरे बीवी बच्चे हैं, इन्हें जो चाहिए आप दे दें।'

फरिश्ते ने मुस्कुराते हुए कहा:

"सरदार अब्दुल्लाह! मैं माफ़ी चाहता हूँ आपको खुद आने की तकलीफ उठानी पड़ी। उन्हें जो चाहिए वे ले सकते हैं।"

इन सब का चेहरा खुशी से दमक उठा और यह लोग एक बार फिर खरीदारी मिशन पर निकल खड़े हुए।

.....

दरबार शुरू होने वाला था। जन्नत के आम लोग, खास लोग, सारे नबी, शहीद, सहाबा, शोहदा दरबारी सब अपनी अपनी जगह पर आकर बैठ रहे थे। दरबार से पहले खुदा की तरफ से एक खास दावत का आयोजन था। यह दावत अभी तक होने वाली सबसे बड़ी दावत थी जिसमें हज़रत आदम से लेकर क़यामत तक के सभी जन्नती एक साथ जमा थे। पांच बड़े नबियों को अल्लाह की ओर से दावत की मेजबानी की जिम्मेदारी दी गई थी। नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा और मोहम्मद अलैहिम सलाम इस दावत के मेजबान (host) थे।

यह दावत एक बहुत ऊँचे पहाड़ के दामन में आयोजित हुई थी। यह बहुत विशाल मैदान था जो एक बाग के रूप में फैला हुआ था। यहाँ से दूर दूर तक फैला हुआ हरा भरा क्षेत्र आँखों को ठंडक दे रहा था। इस मैदान के बीच में नदियाँ बह रही थीं। इस दावत का पूरा इन्तिज़ाम अरब की परंपरा और शान व शौकत के अनुसार किया गया। इसी लिए सीटें शाही सिंहासन के रूप में थीं जिन पर हीरे और मोती जड़े हुए थे। ज़मीन पर दूर दूर तक नर्म कालीन और गलीचे बिछे हुए थे। गुलामान (सेवकों) की एक बड़ी संख्या हाथों में तरह तरह के शरबत के जग लिए फिर रहे थे। जन्नती को जिस प्रकार का शर्बत चाहिए होता वह नज़र उठाते और गुलामान पल भर में हाज़िर होकर उनकी इच्छा के अनुसार जाम भर देते। यह शरबत क्या था एक पारदर्शी ड्रिंक था जिसमें बहुत स्वाद था। इसके अलावा बहुत से लज़ीज़ खाने, सोने और चांदी के बर्तनों में लगातार पेश किए जा रहे थे। पेड़ों की डालयाँ फलों से लदी थी और जब फल का जी चाहता वह डाली झुक जाती और लोग फल को तोड़ लेते।

अच्छे अच्छे कपड़े पहने खुबसूरत लड़के और लड़कियां हर तरफ नजर आ रहे थे। उनके चेहरे रोशन, आंखें चमकदार और होंठो पर मुस्कुराहटें थीं। यह मंज़र देखकर मुझे दुनिया की महफ़िलें याद आ गईं जहां औरतें मेकअप का ताम झाम किये, खुदा की बनाई हुई हदों को तोड़ती अपने जिस्म की नुमाइश करती महफ़िलों में शामिल हुआ करती थीं। मर्द अपनी निगाहों को झुकाने के बजाय इस नुमाइश से मज़ा लिया करते थे। अपने जिस्म का प्रदर्शन ना करने वाली औरतों और अपनी निगाहों को नीचा रखने वाले मर्दों को कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ता था।

लेकिन अब सारी मुश्किलें ख़त्म, मैंने दिल में सोचा। यह महफ़िल खुबसूरत औरतों से भरी हुई थी जिनके कपड़े भी और गहने अपनी खूबसूरती में बे मिसाल और हर नज़र को अपनी और खींच लेने के लिए काफी थे। लेकिन अल्लाह ने इंसानों के मन इस तरह पाक (पवित्र) कर दिए थे कि निगाहों में बेशर्मी और दिलों में बेईमानी की कल्पना भी कोई नहीं कर रहा था। हर मर्द और हर औरत खुबसूरत पर पाकी (पवित्रता) के अहसास में जिन्दा था, अब न अपनी खूबसूरती को छुपाने का कोई हुक्म था न निगाहों को नीचा रखने की ज़रूरत थी। कितनी थोड़ी थी वह महनत और कितना ज़्यादा है यह बदला।

मेरे साथ मेरे घर वाले और दुनिया में रहे मेरे दोस्त और करीबी रिश्तेदार बैठे थे। मेरे बच्चे मेरी फिर शादी करवाकर बहुत खुश थे, उसी मौके (अवसर) पर जमशैद व अमूराह की रजामंदी से उनकी भी शादी कर दी गई और वह भी हमारे परिवार का हिस्सा बन चुकी थी। ज़िन्दगी ख़ुशियों की राह पर तेज़ी से दौड़ रही थी, मेरे दिल में बस एक बेनाम सा एहसास था। वह यह कि मेरे सारे प्यार करने वाले लोग मेरे साथ आ चुके थे, सिवाय मेरे उस्ताद (गुरु) फरहान अहमद साहब के, एक मामूली सी उम्मीद थी कि शायद मैं दरबार में उनसे मिल सकूं।

दावत खाने के बाद लोग दरबार में अपनी निर्धारित सीटों पर आकर बैठना शुरू हो गए। अर्श इलाही के बिल्कुल करीब ख़ास लोग बैठे हुए थे, जिस में अम्बिया हज़रात, नबियों के सहाबा और शहीद और सालेहीन की एक बड़ी संख्या शामिल थी। जबकि बाक़ी जन्नत वाले उन के पीछे बैठे हुए थे। इस बैठक की सबसे खास बात यह थी कि आज पहली बार लोगों को खुदा के दीदार (दर्शन) की नेमत से फैज़याब (लाभान्वित) होना था जो जन्नत वालों का सबसे बड़ा सम्मान था। नबी (ﷺ) ने खबर दी थी कि जिस तरह दुनिया में चौध्वी के चांद का दीदार किया जाता है, उसी तरह जन्नत में दीदार इलाही होगा, इसलिए लोगों में बहुत उत्साह था। इसके अलावा

आज ही के दिन लोगों का सम्मान और उनके पद औपचारिक रूप से उन्हें दिए जाने थे, इसलिए हर आदमी दरबार के शुरु होने की राह देख रहा था।

लोग अपनी अपनी सीटों पर बिराजमान हो चुके थे, हर जुबान व दिल पर अपने रब की तारीफ़ बड़ाई की तसबीह थी। लोग बार बार यह कह रहे थे कि यह सब अल्लाह का एहसान है कि उसने हमें सीधी सच्ची राह दिखाई वरना हम कभी जन्नत में नहीं पहुंच सकते थे।

दरबार की शुरुआत पर फरिश्तों ने अल्लाह की तसबीह और तमजीद (स्तुति) की। इसके बाद दाऊद अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाये और अपनी मीठी आवाज़ में एक खुदा की तारीफ का गीत इस तरह गाया कि समां बंध गया। इसके बाद अर्श को उठाने वाले फरिश्तों ने ऐलान किया कि आलम के परवरदिगार अपने बन्दों से बातचीत करेंगे। कुछ ही देर में अल्लाह ने बहुत प्यार और नरमी के साथ बन्दों से बातचीत फ़रमाना शुरू की।

इस बातचीत में अल्लाह ने अपने बंदों की तारीफ़ फ़रमाई जो अपनी मेहनत, संघर्ष और धैर्य से इस जगह तक पहुंचे थे। बन्दों से पूछा गया कि क्या वह इस सिले से राज़ी हैं जो उनकी मेहनत के बदले उन्हें मिला है। सब ने एक जुबान होकर जवाब दिया कि हमने अपनी उम्मीदों से बढ़कर बदला पाया है और वो सब कुछ पाया है जो किसी प्राणी को नहीं मिला, हम क्यों तुझ से राजी न हों। इस पर इरशाद हुआ अब मैं तुम्हें वह दे रहा हूँ जो हर चीज़ से बढ़कर है, मैं तुम्हें अपनी रज़ामंदी से नवाजता हूँ। इसके साथ ही फिज़ा में अल्लाह की बड़ाई के नारे गूंजने लगे।

फिर रुतबे और सम्मान का सिलसिला शुरू हुआ। यह एक लंबी प्रक्रिया थी, लेकिन यहां अनगिनत नेअमतें लगातार मिल रही थीं जिनकी वजह से लोग इत्मीनान के साथ बैठे हुए थे। दुसरे लोगों की तरह मेरे घर वाले भी मेरे साथ ही अगली सीटों पर बैठे थे। मैं यह सब कुछ देख रहा था और मन में सोच रहा था कि दुनिया की कितनी कम परेशानी उठाकर आज कितना बड़ा इनाम इंसानों को मिल रहा है। लेकिन फिर मुझे ख्याल आया कि इंसानों की ज़्यादा बड़ी संख्या तो परीक्षा में असफल ही गई। फिर मुझे अपने उस्ताद फरहान साहब का ख्याल आया, वह आज भी मुझे नहीं मिल सके थे हालांकि मेरा ख्याल था कि आज के दिन तो कहीं न कहीं मिल ही जाएंगे। मैंने सोचा कि सालेह से पूछूँ पर वह यहाँ मेरे साथ नहीं था लेकिन उसी समय वह मेरे पास आ खड़ा हुआ।

उसे देख कर मैंने कहा:

'मुझे लगता था कि मैं दरबार में अपने उस्ताद (गुरु) को देख सकता हूँ, लेकिन वह मुझे नहीं मिल सके। तुम्हे मेरे उस्ताद का कुछ पता चला?'

"नहीं जन्नत की इस बस्ती में अभी तक वे मुझे कहीं नहीं मिल सके, मुझे लगता है कि अब तुम भी उनके बारे में सोचना छोड़ दो। लगता है उनके बारे में ख़ुदा अपना फैसला कर चुका है, दुनिया की कोई ताकत अब इस फैसले को नहीं बदल सकती, खुदा का इन्साफ बहरहाल लागू होकर रहता है।"

'और उसकी रहमत?'

"तुम अच्छी तरह जानते हो कि खुदा का रहम, इन्साफ और हर चीज़ उसूल (सिद्धांत) पर आधारित है। किसी की इच्छा से यहाँ कुछ भी नहीं बदल सकता।"

'मगर जन्नत की यह दुनिया तो मुमकिन की दुनिया है, यहाँ सब कुछ मुमकिन है।'

सालेह झल्ला कर बोला:

"यार तुम क्यों बहस कर रहे हो, फैसला हो गया है। वैसे तुम खुद खुदा से बात क्यों नहीं करते, तुम्हारी बात तो बहुत सुनी जाती है। मैं तो तुम्हें अर्श तक ले जाने आया हूँ, चलो और समय का पहिया उल्टा घुमाने की दुआ करो।"

खबर नहीं कि सालेह ने गुस्से में आकर मुझ से यह कहा था या सचमुच मुझे सुझाव दिया था। लेकिन इस बात पर अमल करने की मूर्खता करने के लिए मैं तैयार नहीं था। लेकिन उसकी यह बात ठीक थी कि मुझे बुलाया जा रहा है, कुछ ही देर में मेरा नाम पुकारा गया। मैं जो अभी तक इत्मीनान से बैठा था लरज़ते दिल के साथ खड़ा हो गया, मैं धीरे धीरे क़दमों से चलता हुआ उस हस्ती के सामने पेश हो गया जिसके अहसानों के बोझ तले मेरा रोआं रोआं दबा हुआ था। करीब पहुँच कर मैं सजदे में गिर गया।

कुछ देर बाद आवाज़ आई:

"उठो!"

मैं धीरे धीरे उठा और झुकी नज़र के साथ हाथ बांधकर खड़ा हो गया।

अल्लाह ने बहुत नरमी के साथ पूछा:

"अब्दुल्लाह! आज के दिन मेरे लिए क्या लाए हो?"

मैं तो यहां लेने आया था, कुछ देने के लिए नहीं, इसलिए यह सवाल मेरी उम्मीद के बिलकुल उलट था। लेकिन जो मेरे पास था वह मैंने कह दिया:

'मालिक जो अच्छा काम मैंने किया वह हकीकत में तेरी ही तौफीक (करने,मदद) से था, उसे तो मैं पेश नहीं कर सकता। रहा मेरा वुजूद तो मेरे पास तेरी आला (उच्च) हस्ती के सामने पेश करने के लिए.... बहुत सारी नदामत (लज्जा) और इल्तिज़ा के सिवा कुछ नहीं।'

जवाब मिला:

"अच्छा किया कि नदामत और इल्तिज़ा ले आए, यह चीजें मेरे पास नहीं होती, उन्हें मैं तुम्हारे नाम से अपने पास रख लूँगा। अब बोलो क्या मांगते हो?"

मैंने अर्ज़ किया:

'आपकी दी हुई हर चीज़ और आप की रज़ा मन्दी दोनों मिल गए हैं, मेरा ज़र्फ़ इतना छोटा है कि उसके बाद मांगने के लिए कुछ नहीं बचता। लेकिन जो भी भलाई और भीख आप अता (प्रदान) करेंगे मैं उसका का मोहताज (ज़रुरत मन्द) हूँ।'

करीब मोजूद अर्श के उठाने वाले फरिश्ते को इशारा हुआ, उसने मेरे इनाम और रुतबे बयान करना शुरू कर दिए। यह तो मुझे पता था कि मैं इस नई दुनिया का हुक्मरान (राजा) और हाई क्लास का हिस्सा हूँ, मगर जो दिया गया वह मेरी हैसियत, अपेक्षाओं और मेरी औक़ात से बहुत ज़्यादा था। फरिश्ता बोले जा रहा था और मैं शर्म से सर झुकाकर यह सोच रहा था कि आलमों के परवरदिगार की करीम हस्ती मुझ जैसे गुनाह गार (पापी) के साथ ऐसी है तो नेक लोगों के साथ कैसी होगी?

फरिश्ता चुप हुआ तो मुझे संबोधित करके कहा:

"अब्दुल्लाह! गुनाह गार तो सब हैं, पर वापस लौट आने वालों और तौबा करने वालों को मैं गुनाह गार नहीं लिखता, और तुमने तो मुझसे और मेरी मुलाक़ात से बंदों को परिचित कराने के लिए अपनी ज़िन्दगी लगा दी थी। तुम्हें तो मैंने वफादार लिखा है।"

पल भर की ख़ामोशी के बाद कहा गया:

"मुझे पता है जो कुछ अभी तुम सालेह से कह रहे थे, मैं वह भी जानता हूँ जो तुम हश्र में अपने आमाल नामे के पेश होने के वक़्त सोच रहे थे। तुम यही सोच रहे थे ना कि काश एक मौका और मिल जाए। काश किसी तरह गुज़रा हुआ समय फिर लौट आए, ताकि मैं एक एक इंसान को झिंझोड़ कर इस दिन के बारे में चेता सकूं।

अब्दुल्लाह! मैं तुम्हारी तड़प को अच्छी तरह जानता हूँ और मुझ से जुड़ी तुम्हारी उम्मीदों को भी। यह तुमने ठीक समझा कि बेशक मुझे किसी की ज़रुरत नहीं और यह भी कि मैं जमाल व कमाल और जलाल (महिमा) वाला हूं। मैं यह भी जानता हूँ कि तुम्हारी कुल सम्पत्ति यही है कि तुम्हारी पहुँच मेरे क़दमों तक है। मेरे लिए तुम्हारी भी अहमियत (महत्व) है और तुम्हारी इस बात की भी, लेकिन..."

फिर एक ख़ामोशी छाई और मैं लरज़ते दिल के साथ सोच रहा था कि मेरे रब (प्रभु) से न ज़ुबान से निकलने वाले शब्द छुपे रहते हैं और न दिल में आने वाले ख्याल ही उसके इल्म (ज्ञान) से बाहर रह सकते हैं। बे इख़्तियार मेरी ज़ुबान से निकला:

'मेरे रब आप पाक (पवित्र) हैं।'

"मुझे मालूम था कि तुम अपनी दिली तमन्ना दर्शाने के लिए बयान का यही तरीका अपनाओगे। देखो! लोगों को फिर दुनिया में भेजना मेरी योजना का हिस्सा नहीं। उस दुनिया में न तुम जा सकते हो और न दूसरे इंसान। मगर समय मेरा गुलाम है, मैं चाहूं तो उसका पहिया उल्टा घुमा सकता हूँ।"

फिर एक फरिश्ते को इशारा हुआ। वह हाथों में चांदी के पन्नों का पुलिंदा लेकर मेरे पास आया, मैंने देखा तो पहले पेज पर सोने के तारों से लिखा था:

"जब ज़िन्दगी शुरू होगी"

आवाज़ आई:

"अब्दुल्लाह! यह तुम्हारी दास्तान है, इस नई दुनिया में जो तुम्हारे साथ हुआ, उसका कुछ हिस्सा इसमें महफूज़ (सुरक्षित) कर दिया गया है। तुम्हारी खातिर अब तुम्हारी इस कहानी को समय की खिड़की से दोबारा पिछली दुनिया में भेजा जा रहा है। इस बात का इन्तिज़ाम किया जाए कि यह दास्तान इंसानों तक पहुंचा दी जाए। मैं अपने बन्दों और बंदियों के दिलों में डाल दूंगा कि वह तुम्हारी इस कहानी को अपने हर चाहने वाले तक पहुँचा दें.... हर इंसान तक जिसे वह आखिरत (परलोक) की रुसवाई से बचाकर जन्नत की मंजिल तक पहुंचाना चाहते होंगे। अजब नहीं कि कोई खुश किस्मत इस पैगाम (संदेश) को पढ़ कर अपने अमल (कर्म) सुधार ले। अजब नहीं कि किसी की ज़िन्दगी बदल जाए, अजब नहीं कि किसी का भविष्य बदल जाए। मैं लोगों को तुम्हारी दुआ पर एक मौका और देना चाहता हूँ। आखिरी घाटे से पहले, आखिरी बर्बादी से पहले, आखिरी तबाही से पहले इस क़यामत से पहले।"

मैं बे इख़्तियार 'अल्लाहुअकबर कहता हुआ सजदे में गिर गया।

.....

अल्लाहुअकबर अल्लाहुअकबर। मौअज़्ज़न (अज़ान पढने वाला) ने अभी यह शब्द पढ़े ही थे कि अब्दुल्लाह एक झटके के साथ 'अल्लाहुअकबर कहता हुआ जाग गया। वह खाली खाली नज़रों से आसपास देख रहा था। कुछ देर तक वह नहीं समझ सका कि वह कहाँ है, वह तो अल्लाह के सामने खड़ा था, उसने गोर किया, वह अभी भी अल्लाह के सामने मौजूद था। ठीक बैतुल्लाह हराम में काबे के सामने, फज्र (सुबह) का समय था और मस्जिदुल हराम में लोगों की चहल पहल जारी थी।

'तो क्या मैंने सपना देखा था?' अब्दुल्ला ने खुद से सवाल किया।

'मगर वह तो बिल्कुल सच था। वह हश्र का दिन, वह जन्नत की महफ़िल और खुदा के सामने मेरी पेशी... अगर वह सच था तो फिर यह क्या है? और अगर यह सच है तो फिर वह हकीकत से ज़्यादा यकीनी चीज़ क्या थी, वह सपना था या सपना है।'

वह लगातार बड़बड़ाए जा रहा था:

'ऐसा न हो कि अचानक एक दिन आंख खुले और मुझे मालूम हो कि जो कुछ दुनिया में देखा था सपना तो दरअसल वह था और सच आखिरत की ज़िन्दगी थी।'

आसमान से नूर उतर रहा था, सफेद जगमगाती हुई रोशनियों से हरम (क़ाबा) की फिज़ा दूध्या हो रही थी। आसमान अभी काला ही था, लेकिन इस जगह दिन की रौशनी से ज़्यादा चहल पहल थी। यह हरम मक्का था, ईमान वालों का काबा, दिल वालों का केंद्र और मुहब्बत वालों का क़िबला, ख़ुदा के बन्दे और बंदिआं.... हर जाति, हर समुदाय के लोग यहां जमा थे, ईश्वर की स्तुति, बड़ाई और तारीफ करते हुए।

आज हरम पाक में अब्दुल्लाह की आखिरी रात थी, लेकिन यह आखिरी रात अब्दुल्लाह के ज़िन्दगी की सबसे कीमती रात बन चुकी थी। अब्दुल्लाह कुछ देर पहले हैरानी की जिस स्थिति में था, अब उससे बाहर आ चुका था। उसने हरम को देखा और फिर आसपास नज़र डाली। हरम से बाहर हर तरफ ऊँची ऊँची इमारतों का मंज़र था। यह देख कर उस पर एक दूसरी कैफियत छा गई, उसकी आंखों से आंसू बहने लगे, उसका दिल मालिक ज़ुलजलाल के लिए खुद एक विनती बन गया:

'मालिक! क़यामत का समय सर पर आ खड़ा हुआ है। नंगे पैर बकरियां चराने वाले (अरब वाले) ऊँची ऊँची इमारतें बना रहे हैं। तेरे महबूब रसूल की भविष्यवाणी पूरी हो चुकी है, अब मुझे तेरे बन्दों तक तेरा पैगाम (संदेश) पहुंचाना है। क़यामत से पहले उन्हें क़यामत के हादसे से खबरदार करना है। मुझे लोगों को झिंझोड़ना है, आज दुनिया की मुहब्बत आखिरत की फ़िक्र पर ग़ालिब आ चुकी है, तेरी मुलाकात से बेपरवाही आम है, शासक क्रूर और जनता जाहिल, अमीर माल में मस्त हैं और ग़रीब अपने हाल में पस्त। व्यापारी मुनाफा खोर और झूठे हैं, नेता बेईमान हैं, कर्मचारी कामचोर हैं, मर्दों का जीने का मकसद सिर्फ रुपया कमाना बन चुका है और औरतों का मकसद सिर्फ फैशन मेकप और जिस्म दिखाना।'

अब्दुल्लाह की आंखों से आंसू जारी थे। उसके दिल से लगातार दुआएं और मिन्नतें निकल रही थी, वह दुआ जिसका क़ुबूल होना शायद मुक़द्दर बन चुका था।

'मौला! आज लोग तुझ से ग़ाफ़िल और बे परवाह होकर अत्याचार और दुनिया परस्ती में ज़िन्दगी गुजार रहे हैं। धर्म के नाम पर खड़े लोग सांप्रदायिकता के अधीन या राजनीति में उलझे

हुए हैं। कोई नहीं जो तेरी मुलाकात से सावधान कर रहा हो। तू मुझे इस सेवा के लिए क़ुबूल फरमाले, तू मुझे अपने पास से ऐसी सलाहियत (क्षमता) अता कर कि मैं तेरी मुलाक़ात और आने वाली दुनिया का नक्शा तेरे बन्दों के सामने खींच कर रख दूं। जो कुछ तू ने कुरआन में बयान किया तेरे महबूब नबी ने जिस घटना की खबर दी है, उस दिन की एक जीवित तस्वीर तेरे बन्दों तक पहुँचा दूँ। इंसानियत को पता नहीं कि उसके पास मोहलत ख़त्म हो चुकी है, मुझे क़ुबूल कर कि मैं इस बात से तेरे बन्दों को खबरदार कर सकूं। मेरे रब! सारी इंसानियत को सीधी राह की हिदायत दे और अगर तूने सब कुछ खत्म करने का फैसला कर लिया है तो फिर मेरे लिए आसानी कर दे कि जितने लोग हो सकें, मैं उन्हें जन्नत की राह दिखा सकूँ। उन्हें तुझ तक पहुँचा सकूँ.... इससे पहले कि सूर फूंक दिया जाए.... इससे पहले कि अमल की मोहलत खतम होजाए..."

****

आखिरी बात

प्रिय पाठकों

यह कहानी अगर आप ने पूरी पढ़ ली है तो उम्मीद है कि ज़्यादा तर पाठकों की तरह आपके लिए भी एक नई दुनिया का परिचय साबित हुई होगी। लेकिन मेरी तम्मना है कि यह नॉविल आप के लिए सारे आलम के रब की आखिरी किताब का भी एक नया परिचय बन जाए।

मैंने जो कुछ लिखा है वह कुरआन और हदीसों के बयानों और संकेत वजाहतों (विवरण) में लिखा है। अल्लाह बदले के दिन का मालिक है, जन्नत असल कामयाबी है। जहन्नम का अज़ाब असल विफलता है। दुनिया का जीवन थोड़ा और धोखा है। इन्सानयत की आखिरी कामयाबी सिर्फ ईमान (ईश्वर पर यकीन) और नेक आमाल (कर्म) की कुरानी दावत की पैरवी में है। यही सब नबियों की दावत और कुरआन का सार है। मुझे विश्वास है कि इस उपन्यास को पढ़ने के बाद जब आप कुरआन मजीद को समझ कर अनुवाद के साथ पढ़ेंगे तो कुरआन मजीद के बयान के मायने बड़ी हद तक आप पर स्पष्ट होने लगेंगे। कुरआन आपके लिए अनदेखी दुनिया का नहीं बल्कि एक जानी पहचानी दुनिया का परिचय बन जाएगा। यदि आपने कुरआन को इस तरह पा लिया तो यह मेरी सबसे बड़ी सफलता होगी।

उम्मीद है कि इस नॉविल के पढ़ने के बाद आप कम से कम एक बार पूरे कुरआन को अनुवाद के साथ पढ़ने की कोशिश जरूर करेंगे।

अच्छी उम्मीद के साथ।

अबू याह्या

.....

मेरे कलम से

प्रिय पाठकों

मुझे अपने भाषा का ज्ञान कम होने का पूरा अहसास है। मैं इस अनुवाद में होने वाली गलतियों की पूरी जुम्मेदारी लेता हूँ, अगर भाषा की वजह से कोई बात गलत समझ ली गई है तो उसका भी जुम्मेदार सिर्फ मैं हूँ।

अगर आप को ये जरा भी पसंद आई है तो अपने सभी दोस्तों और रिश्ते दारों को जिस तरह भी हो सके उनसे इसको पढ़ने की गुज़ारिश करें, के अच्छी बात फैलाना भी सदका (दान) है।

अपनी नेक दुआओं में मुझे भी याद रखें, खुदा हाफ़िज़ वस्सलाम।

मुशर्रफ अहमद।

www.iqbalkalmati.blogspot.com : مزید کتب پڑھنے کے لئے آج ہی وزٹ کریں